॥ श्रीहरिः ॥

1783

भजन-सुधा

गीताप्रेस गोरखपुर

GITA PRESS, GORAKHPUR [SINCE 1923]

गीताप्रेस, गोरखपुर

विषय-सूची

क्र०सं० भजन	पृष्ठ-संख्या
[१] स्वामी रामसुखदासजीका गोसेवा सम्बन्धी लेख	१२
[२] गोवंशकी दुर्दशा और उसपर विचार	१३
प्रातः स्मरण	
[३] नित्य स्तुतिः	१७
[४] नित्य पठनीय गीताजीके पाँच श्लोक	२५
[५] प्रार्थना	२६
[६] मंगलाचरण	२८
[७] सर्वदेव-वन्दना	२९
[८] दैनिक दिनचर्या के मन्त्र	३५
प्रार्थना-भजन	
१. कर प्रणाम तेरे चरणों	३९
२. इतनी शक्ति हमें देना दाता	३९
३. तुम्हीं हो माता पिता तुम्ही	४०
४. दया कर दान भक्ति	४०
५. वह शक्ति हमें दो दया	४१
६. हे ईश सब सुखी हों	४१
७. गुरुदेव दया करके	४२
८. ऐसे दया करो गुरु देवा	४३
९. माता-पिता गुरु प्रभु	४४
१०. और सब भूलो भले माँ	४४
श्रीगणेशजी	
११-श्रीगणेश-वन्दना	४६
१२-आनन्द करन आवत है गणपति	४६
१३-गाइये गनपति जगबन्दन	४७
१४-गजानन्द सरकार पधारो	४७
१५-घरमें पधारो गजानन्दजी	४८
१६-घूमतड़ा घर आवो ओ हो, म्हारां	४८
१७-घूमतड़ा घर आवो विनायक	४९
१८-म्हाने बुद्धि दीज्यो महाराज,	४९
१९-म्हारा प्यारा गजानन्द आईजो	५०
२०-मेरा विघ्न हरो महाराज	५०
२१-रूनक झुनक पग नेवर	५१
२२-सूंड सूंडाला दूंद दूंदाला, मस्तक	५१
श्रीमाताजी	
२३-हे चौसठ जोगणी ऐ	५२
२४-श्रीसरस्वती-स्तोत्रम्	५३
२५-हे शारदे माँ, हे शारदे माँ	५४
२६-अम्बे कहो दुर्गा काली	५४
२७-अम्बे तू है जगदम्बे काली	५५
२८-आज अम्बे मेरी तूं कर दे	५६
२९-ऐसा प्यार बहा दे मैय्या	५६
३०-जगदम्बे भवानी मैया, तेरा	५७
३१-तेरे कोमल-कोमल चरणोंमें	५७
३२-तेरे नाम का पुजारी आया	५८
३३-भज अम्बे भगवती	५९
३४-भागीरथ लायो मैया भाव	५९
३५-मेरे मन-मन्दिर में, माँ तेरा	६०
श्रीशिवजी	
३६-श्रीशिव-स्तुति-वन्दना	६१
३७-श्रीशिव-मानस-पूजा	६१
३८-शिव-द्वादशज्योतिर्लिंगानि	६२
३९-श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्	६२
४०-शिव-लिङ्गाष्टकम्	६३
४१-शिव-रुद्राष्टकम्	६४
४२-शिवताण्डवस्तोत्रम्	६४
४३-शिव-महिम्नःस्तोत्रम्	६७
४४-ॐ महादेव शिवशंकर शम्भो	७४

क्र०सं०	भजन	पृष्ठ-संख्या
४५-	आज अयोध्याकी गलियोंमें	७४
४६-	ओ डमरूवाले बाबाजी तेरा	७४
४७-	एक दिन वो भोला भण्डारी	७५
४८-	कर दे दीनों का दुःख दूर	७६
४९-	कैलाशके निवासी नमो	७७
५०-	चालो हे सखियाँ चालां	७८
५१-	जय जय हरिहर गौरी शंकर	७९
५२-	(जय शिव शंकर) २ जय	८०
५३-	डमरु वाले बाबा	८०
५४-	देखो री एक बाला जोगी	८१
५५-	भोलानाथ अमली, म्हारा	८२
५६-	भोलेनाथ चले आवो	८३
५७-	शिव आये यशोदाके द्वार	८४
५८-	हरि ॐ नमः शिवाय	८५
५९-	जय बोलो शिव	८५
	श्रीरामजी	
६०-	भए प्रगट कृपाला दीनदयाला	८६
६१-	जय-जय सुरनायक	८६
६२-	जय राम रमारमनं	८७
६३-	श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु	८८
६४-	आया आया आया! म्हारे राम	८९
६५-	कभी-कभी भगवानको भी	९०
६६-	कभी राम बनके, कभी	९१
६७-	घर आवेंगे एक दिन राम,	९१
६८-	जग में सुन्दर हैं दो नाम	९२
६९-	तेरे मन में राम तन में राम	९२
७०-	तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार	९३
७१-	बेटा श्रवण पाणीड़ो पिलाय	९३
७२-	भज मन रामचरन सुखदाई	९४
७३-	भजो रे मन, राम-नाम सुख	९५
७४-	मेरी छोटी सी है नाव	९५
७५-	यो धनुष बड़ो विकराल	९६
७६-	रघुपति राघव राजाराम	९६
७७-	रघुपति राघव राजाराम	९९
७८-	रघुवरजी! थारा दरसण री	९९
७९-	राम चरण चित लाना	१००
८०-	राम नाम के हीरे मोती	१००
८१-	राम बनासा म्हारी सिया	१०१
८२-	राम सुमिरि ले सुकृत कर ले	१०२
८३-	रामादल में सुलोचना आई	१०३
८४-	रामा रामा रटते रटते बीती	१०४
८५-	शबरी सुगन मनावे जी	१०५
८६-	सालगराम! सुनो विनती मोरी	१०५
८७-	सीताराम ने भजे रे नाँही	१०५
८८-	सीताराम सीताराम सीताराम कहिये	१०६
८९-	हरे राम हरे रामा रटते थे	१०७
	श्रीहनुमान्‌जी	
९०-	मंगल-मूरति मारुत-नन्दन	१०८
९१-	उठे तो बोले राम	१०८
९२-	एक मनसा पूर्ण हनुमान	१०८
९३-	ओ सुन अंजनी के लाला	१०९
९४-	चालो चालो आपां सारा	११०
९५-	छम छम नाचै देखो	१११
९६-	जय श्रीसालासर हनुमान	१११
९७-	थारी सांचो है दरबार	११२
९८-	थारे झांझ नगारा बाजे	११३
९९-	दुनिया चले न श्रीराम के	११३
१००-	दुनिया में देव हजारों हैं	११४
१०१-	ना स्वर है ना सरगम	११५
१०२-	प्रभु मेरा बजरंग बाला है	११५
१०३-	बालासा म्हारे कीर्तन में	११६
१०४-	भरत भैया कपि से उरिन	११७
१०५-	मंगल-मूरति राम दुलारे	११७
१०६-	मेरी विनती सुनो हनुमान	११८
१०७-	मोह माया और काम वासना	११८
१०८-	लाल लँगोटो हाथ में घोटो	११९
१०९-	वीर हनुमाना अति बलवाना	१२०

क्र०सं०	भजन	पृष्ठ संख्या
११०	श्रीहनुमानचालीसा	१२१
१११	श्रीसंकटमोचन हनुमानाष्टक	१२३
	श्रीकृष्णाजी जन्मोत्सव भजन	
११२	भये प्रगट कृपाला, दीन	१२५
११३	नन्द घर आनन्द भयो	१२५
११४	आज बधैय्या बाज रही रे..	१२६
११५	आली जसुमति लाला जायो	१२६
११६	जुग-जुग जिओ री यशोदा.	१२७
११७	जय बोलो जसोदा नन्दन ...	१२८
११८	बाजे-बाजे रे बधाई	१२८
११९	ब्रज में है रही जय	१२९
१२०	यशोदा के हुयो नन्दलाल...	१३०
१२१	मैं आरती तेरी गाऊ	१३०
	श्रीकृष्णजी भोगके भजन	
१२२	अरोगो नरसिंह महाप्रभु	१३१
१२३	आरोगो म्हारा साँवरा	१३२
१२४	काना लाडुड़ो सो लेवो रे...	१३२
१२५	कान्हा ने माखण भावे	१३३
१२६	छप्पन भोगका थाल	१३३
१२७	जीमो श्याम सुन्दर	१३४
१२८	थाली भरके ल्याई	१३५
१२९	थे तो अरोगोजी मदन	१३६
१३०	म्हारो मदन मोहन घनश्याम	१३६
१३१	श्याम रसिया मेरे मन	१३७
१३२	हे गिरधर गोपाल लाल	१३८
	श्रीकृष्णजी	
१३३	अधरं मधुरम्	१३९
१३४	अच्युतं केशवं कृष्ण	१३९
१३५	अपना चन्दा सा मुखड़ा	१४०
१३६	अपनी वाणी में अमृत	१४१
१३७	आज हरि आये विदुर	१४१
१३८	आजा मनमोहन मीरा	१४२
१३९	आना मदनगोपाल हमारे घर	१४३
१४०	आली! म्हाँने लागे बृंदावन	१४३
१४१	आवोजी कृष्ण मेरे प्राण के	१४३
१४२	आवो मनमोहना, आवो	१४४
१४३	आओ कन्हैया, आओ मुरारी	१४५
१४४	इतना तो करना स्वामी	१४५
१४५	उभी बाई सरवरिये री पाल	१४६
१४६	ओ मुरली वाले, तू मुरली.	१४७
१४७	ओजी म्हारा नटवर	१४८
१४८	ओजी हो साँवरिया, थाँरी..	१४९
१४९	ओ कुण सिनगार्‌यो	१५०
१५०	कलियुगमें एक बार	१५०
१५१	कीर्तन की है रात बाबा	१५१
१५२	कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते	१५२
१५३	कन्हैया कन्हैया पुकारा करेंगे ...	१५३
१५४	कन्हैया, एक बार सुना	१५३
१५५	कहाँ जायगो रे लीन्यो	१५४
१५६	कानूड़ा लाल घड़ियो म्हारो	१५५
१५७	किशोरीजी इतना तो कीजो	१५५
१५८	कैसी लागी लगन, मीरा	१५६
१५९	कोई कहे गोविन्दा, कोई...	१५७
१६०	गोकुल जिनका ग्राम है	१५७
१६१	गोविन्द जय जय, गोपाल.	१५८
१६२	गोपाल हो तुम मैं बाल	१५९
१६३	घनश्याम म्हारे हिवड़े में	१६०
१६४	घनश्याम थारी झाँकी	१६१
१६५	घणी दुरसु दोडों आयो	१६१
१६६	चालो श्रीजी रे शरणे चालो	१६२
१६७	छुप छुप आये श्याम	१६३
१६८	छैल छबीलो प्यारो नन्दजी	१६४
१६९	छोटी छोटी गइया छोटे	१६४
१७०	जग जननी गौ माता को अरे	१६५
१७१	जमुना जल में केसर	१६६
१७२	जय गोविन्दा गोपाला, मन.	१६७
१७३	जमुना किनारे मेरो गाँव	१६७
१७४	जरा क गाड़ी डाट भगत..	१६८

क्र०सं०	भजन	पृष्ठ-संख्या
१७५-	जरा इतना बता दे कान्हा..	१७०
१७६-	जरीकी पगड़ी बाँधे	१७१
१७७-	तुम ढुण्ढ़ो मुझे गोपाल, मैं.	१७१
१७८-	तुम हमारे थे प्रभुजी	१७२
१७९-	तू ही, तू ही, तू ही तो है	१७३
१८०-	तेरे बिना श्याम हमारा	१७४
१८१-	तेरे लाला ने माटी खाई	१७५
१८२-	थाँरो भरौसो भारी	१७६
१८३-	दर्शन दो घनश्याम नाथ	१७६
१८४-	दूर नगरी बड़ी दूर	१७६
१८५-	धारा है मुरलीवालेने	१७७
१८६-	नंदगाँव की राह चलो	१७७
१८७-	नटवर नागर नन्दा, भजो...	१७८
१८८-	नथ म्हारी दीज्यो जी	१७८
१८९-	नन्दलाल गोपाल दया	१७९
१९०-	नाचे नन्दलाल	१८०
१९१-	निकुञ्ज में बिराजे घनश्याम..	१८१
१९२-	पग घुंघरू बाँध मीरा	१८१
१९३-	फूलोंसे सज रहे हैं, श्री	१८२
१९४-	बंशी बजाय गयो श्याम	१८२
१९५-	बनवारी, ओ कृष्ण मुरारी..	१८३
१९६-	बड़ी देर भई नन्दलाला	१८४
१९७-	बनवारी रे जीने का सहारा	१८४
१९८-	बार-बार जब कहे	१८५
१९९-	बंसीवारा आज्यो म्हारे	१८६
२००-	बाँसुरिया कहाँ भूल गये	१८६
२०१-	बाँसुरी बजाई आज रंग	१८७
२०२-	बसो मेरे नयननमें नन्दलाल	१८८
२०३-	बापू म्हाने भुलाय गयो	१८८
२०४-	बिन काज आज महाराज..	१८९
२०५-	बीरा बेगा-बेगा थे तो आज्यो	१९१
२०६-	बनवारी म्हारा कृष्ण	१९१
२०७-	भूल गयो भक्तारो भीड़ी	१९१
२०८-	मंदिर जाती मीरा न	१९२
२०९-	श्याम मने चाकर राखो जी	१९३
२१०-	म्हारा कानुड़ा गिरधारी	१९३
२११-	मन मोहन घनश्याम, प्रीत..	१९५
२१२-	माई री मैं तो लियो गोविन्दो	१९५
२१३-	मेरे तो गिरधर गोपाल	१९६
२१४-	मेरा आपकी कृपासे	१९६
२१५-	मेरे सिर पर रख दो बाबा	१९७
२१६-	मोहे लगी श्याम संग	१९८
२१७-	मोहन मुरलीवाले, तुमको	२००
२१८-	मुकुटपर वारी जाऊँ	२००
२१९-	मीठे रस से भरोड़ी राधारानी	२००
२२०-	मैं तुझ बिन कृष्ण कन्हैया..	२०१
२२१-	मैं तो गोवर्धन को जाऊँ	२०२
२२२-	मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो	२०२
२२३-	मुरली प्रेम री बजाई	२०३
२२४-	मीरा नाचे रे, आ मेड़तणी.	२०३
२२५-	म्हारी अबके अबके अटकी	२०४
२२६-	मुरली बजा के मोहना	२०४
२२७-	मेरे बाँके बिहारी लाल	२०५
२२८-	मैं श्री राधे-राधे	२०६
२२९-	मैं तुमको श्याम बुलाऊँ	२०७
२३०-	मैं तो गोविन्दका गुण	२०७
२३१-	मैंने ओढ़ी री माई! अनमोल	२०८
२३२-	यशोमति मैया से बोले	२०९
२३३-	यो तो मीठी बेन	२०९
२३४-	ये तो प्रेमकी बात	२१०
२३५-	यमुना किनारे, झिलमिल	२११
२३६-	राधा का नाम अनमोल	२१२
२३७-	राधे तेरे चरणों की, अगर.	२१२
२३८-	राधाके मनमें बस गये	२१३
२३९-	राधिका गोरीसे, बिरजकी	२१३
२४०-	राणोजी रूठे तो म्हारो काँई	२१४
२४१-	राधा ढुण्ढ़ रही, किसी ने मेरा ..	२१५
२४२-	राधे-राधे जपो चले आएँगे	२१५

क्र०सं० भजन	पृष्ठ-संख्या
२४३-राधे रानी म्हे तो थांरे ब्रज	२१६
२४४-रे माखन की चोरी छोड़ ...	२१६
२४५-रंग दे चुनरिया हे गिरधारी	२१७
२४६-वृन्दावन की टिकट कटा...	२१७
२४७-श्यामा आन बसो वृंदावन.	२१८
२४८-श्याम तेरी बंशी पुकारे	२१९
२४९-श्याम पिया मोरी रंग दे.....	२१९
२५०-श्याम से मिलने का सत्संग	२२०
२५१-साँवरिया ले चल पल्ली पार	२२०
२५२-साँवरे की ज्योत जगा	२२१
२५३-सरवरीया के तीर खड़ी	२२१
२५४-सांवरा आओ तो सही, मोहन ...	२२३
२५५-साँवरिया मीठी-मीठी	२२३
२५६-साँवरिया है सेठ, म्हारी	२२४
२५७-सुन सुन रे म्हारा	२२५
२५८-श्रीकृष्णः शरणम् मम	२२६
२५९-श्री राधे गोविन्दा मन..........	२२६
२६०-श्रीराधे गोविन्दा गोपाला	२२७
२६१-श्री राधे गोविन्द गोपाल	२२८
२६२-श्रीराधे रानी दे डारो नी.....	२२९
२६३-हे म्हारा घट मा बिराजता..	२२९
२६४-हे गोविन्द हे गोपाल..........	२३०
२६५-हे कान्हो बैठो कदम	२३०
२६६-हो हो मैं तो गिरधर...........	२३१
२६७-लोरी लालनै देसों (लोरी भजन)	२३२
२६८-जागो हर जी द्वारका रणछोड़ (जागरण)	२३२
२६९-पोढ़ो हरजी द्वारका रणछोड़ (शयन)	२३३
२७०-गोपिका गीत........................	२३४
झूलेके भजन	
२७१-आवो आवो नी राधा सँग .	२४२
२७२-कन्हैया हिण्डो घाल्यो रे....	२४२
२७३-घनश्याम थारी झूलन छबि	२४३
२७४-चालो ऐ सखियाँ	२४४
२७५-जरा चलके वृंदावन देखो.	२४४
२७६-झूला झुलावो कान्हा	२४५
२७७-झूलत राधा प्यारीजी संग...	२४६
२७८-झूलेमें सज रहे हैं, श्रीवृन्दा.	२४६
२७९-झूलो रे म्हारा प्यारा...........	२४७
२८०-झूलने में झूले नन्दलाल.....	२४७
२८१-झूलो झूलोजी वृषभानु दुलारी	२४८
२८२-राधा धीरे झूलो चूंदड़ी.......	२४८
२८३-रिमझिम-रिमझिम बरखा	२४९
२८४-श्याम श्यामा की झूलन	२४९
२८५-श्याम म्हाने वृंदावन ले	२५०
होलीके भजन और धमाल	
२८६-अ र... र..... र लारो छोड़	२५२
२८७-आज बिरज में होरी रे.......	२५२
२८८-आया होली का त्यौहार	२५४
२८९-उठ मिलन भरत भैया हर.	२५४
२९०-उड़ती कुरजलीयां सन्देशो..	२५५
२९१-ओढ़ चुनड़ मैं तो गई........	२५५
२९२-ओ तीखा नैणावाली श्याम	२५६
२९३-कठे सू आयो कन्हैयो........	२५७
२९४-कान्हा फाग रमण ने..........	२५७
२९५-कान्हा होरी में मरोरी..........	२५८
२९६-कीर्तन मैं उड़े गुलाल	२५९
२९७-कोमी मान रे यशोदा	२५९
२९८-खेलोजी खेलो घनश्याम	२६०
२९९-गोपालनाथ म्हे तो थारे	२६१
३००-घनश्याम बुलायै ए राधा	२६१
३०१-चालो-चालोजी साँवरिया ...	२६२

क्र०सं०	भजन	पृष्ठ-संख्या
३०२-	तुम झोली भर लो भक्तों	२६३
३०३-	नखरालो सांवरिया	२६३
३०४-	पगल्यां री पायलड़ी	२६४
३०५-	फाग खेलन बरसाने	२६४
३०६-	ब्रजमें उडे रे गुलाल	२६५
३०७-	बाबा नन्दके दरबार मची	२६५
३०८-	भरवा दे रे मदन गोपाल	२६६
३०९-	भर दे मायरो सांवरियाँ	२६७
३१०-	माखन दुँगी रे साँवरियाँ	२६७
३११-	म्हाने फागणियो रंगा दे	२६८
३१२-	म्हारी चुनरी बसन्ती रंगा	२६९
३१३-	मुरली वाले ने घेर लई	२७०
३१४-	रंग में कैसे होली खेलुँगी	२७०
३१५-	रंग डाल गयो री	२७१
३१६-	रंग मत डारे रे साँवरिया	२७२
३१७-	राधे रानी की नथ पे मोर	२७२
३१८-	लक्ष्मणके बाण लग्यो	२७३
३१९-	श्याम म्हारी गलियन	२७३
३२०-	साँवरिया आपां होली	२७४
३२१-	होली खेलण आयो	२७५
३२२-	होलिया में उड़े रे गुलाल	२७५
३२३-	हाँ रे महीनो फागण रो	२७६

विविध भजन

क्र०सं०	भजन	पृष्ठ-संख्या
३२४-	अब सौंप दिया इस	२७७
३२५-	अजब रचा है खेल	२७७
३२६-	आसरा इस जहाँ का मिले	२७८
३२७-	आप आये नहीं और	२७८
३२८-	इक इक बार सभी संग बीती	२७९
३२९-	इस योग्य हम कहाँ	२८०
३३०-	ईश्वरको अपना मान लो	२८१
३३१-	उठ उठ रे म्हारा प्यारा	२८१
३३२-	उठ जाग मुसाफिर भोर	२८२
३३३-	उठ नाम सिमर मत सोय	२८२
३३४-	उड़ जायगा रे हंस	२८३
३३५-	ऐ मालिक तेरे बन्दे	२८३
३३६-	कभी प्यासे को पानी	२८४
३३७-	कछु नहीं मेरा जगत	२८५
३३८-	कबीरा जब हम पैदा	२८६
३३९-	कहो कैसे तुम्हारी बन	२८७
३४०-	करता रहूँ गुणगान	२८७
३४१-	क्या तन माँजता रे	२८८
३४२-	क्या लेके आया बन्दे	२८८
३४३-	क्या पता फिर कभी	२८९
३४४-	किसीके काम जो आये	२९०
३४५-	कुण जाणे आ माया रे	२९०
३४६-	कैसे बैठ्यो रे आलस	२९१
३४७-	घणा दिन सोय लियो	२९२
३४८-	चार दिनों का जीना रे	२९२
३४९-	चरण-कमल बंदौं हरि	२९३
३५०-	चलो मन गंगा यमुना	२९३
३५१-	चाली म्हारी सूरताँ गिगन	२९४
३५२-	छोड़ मन तूँ मेरा	२९४
३५३-	जगमें होनहार बलवान	२९६
३५४-	जपो राम-नाम सुखदाई	२९६
३५५-	जलसे पतला कौन है	२९७
३५६-	जगतके रंग क्या देखूँ	२९७
३५७-	जीयो रे कबीरा ने राम	२९८
३५८-	जीव तू मत करना	२९८
३५९-	जीवन का भरोसा नहीं	२९९
३६०-	जब संत मिलन हो जाये	२९९
३६१-	डस गयो कालो रे	३००
३६२-	तुम मेरे जीवनके धन	३०१
३६३-	तूने हीरा सो जनम गवायो	३०१
३६४-	तू प्यारका सागर है	३०२
३६५-	तूँ मोह मायाने छोड़	३०२
३६६-	तूही तूही याद म्हाने	३०३

क्र०सं०	भजन	पृष्ठ-संख्या
३६७	तेरी बन जैहैं गोविन्द गुन	३०३
३६८	तेरे पूजनको भगवान	३०४
३६९	तेरे फूलोंसे भी प्यार	३०४
३७०	तोरा मन दर्पण कहलाए	३०५
३७१	द्वार आये दीनको तो	३०५
३७२	दीनानाथ दयानिधि	३०६
३७३	दुनियाका बनकर देख	३०७
३७४	दूसरों का दुखड़ा दूर	३०७
३७५	नन्हा-सा फूल हूँ मैं	३०८
३७६	नमस्कार प्रभु बारम्बारा	३०८
३७७	नहीं चाहिये रंग महल	३०९
३७८	नाथ! थारे सरणे आयोजी	३०९
३७९	नाथ! थारै सरण पड़ी दासी	३१०
३८०	नाथ मैं थारोजी थारो	३१०
३८१	नाम हरिका जप ले	३११
३८२	प्रभु! मैं द्वार तुम्हारे	३११
३८३	प्रभु तुम साँचे मनके	३१२
३८४	प्रभु तेरी महिमा	३१३
३८५	प्रबल प्रेमके पाले	३१३
३८६	प्रभु मेरे अवगुन चित	३१४
३८७	पायोजी म्हे तो राम रतन	३१४
३८८	पिंजरेके पंछी रे तेरा	३१४
३८९	बँगला अजब बन्या	३१५
३९०	बाँधा था द्रोपदी ने, तुम्हें	३१५
३९१	बोल सूवा राम राम	३१६
३९२	बोल हरि बोल हरि	३१६
३९३	भगवान भक्तके वश	३१७
३९४	भज भज रे भज	३१७
३९५	भजता क्यूँ ना रे हरि	३१८
३९६	भगवान् तुम्हारे मंदिर	३१८
३९७	भज मन चरणकँवल	३१८
३९८	भज ले पंछीड़ा हरि नाम	३१९
३९९	भजो रे भैया राम गोविन्द	३१९
४००	भाव का भूखा हूँ मैं	३२०
४०१	मत बाँधो गठरिया अपजस	३२०
४०२	मन तूँ क्यों पछतावै रे	३२१
४०३	मन लाग्यो मेरो यार	३२१
४०४	म्हारा हरियल बन रा	३२२
४०५	म्हारे पतिसा रा प्राण	३२२
४०६	मने इबके बचाले मोरी	३२३
४०७	मन में तो आवे कान्हा	३२३
४०८	माटी कहे कुम्हारसे	३२४
४०९	माटी री आ काया आखिर	३२४
४१०	मान मेरा कहना नहीं	३२५
४११	मिलता है सच्चा सुख	३२६
४१२	मीठो मीठो बोल थारो	३२६
४१३	मुझे है काम ईश्वरसे	३२७
४१४	मेरी नैया पड़ी मझधार	३२८
४१५	मेरे मालिकके दरबार	३२८
४१६	मैं अपणे सैयाँ सँग साँची	३२९
४१७	मैं तो ढूँढ्यो जग सारो	३२९
४१८	मैं तो हूँ भक्ताँको दास	३३०
४१९	मैं तो साँवरेके रंग राची	३३१
४२०	मैली चादर ओढ़के कैसे	३३१
४२१	लागी राम भजन से प्रीत	३३२
४२२	लिख दो म्हारे रोम रोम	३३३
४२३	लेल्योजी थे लेल्योजी	३३३
४२४	वाह वाह रे मौज फकीरांदी	३३४
४२५	वैष्णव जन तो तेने कहिये	३३४
४२६	राम नाम अति मीठा	३३५
४२७	राम मिलण कद होसी	३३६
४२८	शरणमें आये हैं हम	३३६
४२९	सजन रे झूठ मत बोलो	३३७
४३०	संध्या सुमिरन करो रे	३३८
४३१	सबसे ऊँची प्रेम सगाई	३३९
४३२	साधो! यह जग भर्म	३३९

क्र०सं०	भजन	पृष्ठ-संख्या
४३३	साधो! सहज समाधि	३४०
४३४	हरिःशरणम् हरिःशरणम्	३४०
४३५	सुने री मैंने निरबल	३४१
४३६	सुवा भज ले हरि को	३४१
४३७	सुखके सब साथी	३४१
४३८	सैयाँ निकल गये मैं ना	३४२
४३९	हम आये शरण	३४२
४४०	हरि जी थांरा नाम हजार	३४३
४४१	हरि शरणम् हरि शरणम्	३४४
४४२	हरि का गुण गायले रे	३४४
४४३	हेरी मैं तो प्रेम दिवाणी	३४५
४४४	श्रीमन्नारायण नारायण (कीर्तन)	३४५
	विविध कीर्तन	
४४५	श्रीकृष्ण गोविन्द हरे	३४६
	बाबा रामदेवजी भजन	
४४६	अर्जी थे म्हारी सुणल्यो	३४८
४४७	खमा खमा हो धणियाँ	३४८
४४८	थे युग युग लेवो अवतार	३४९
४४९	पिछम धरा सूं म्हारा	३५०
	चारों धामकी महिमा	
४५०	कौन दिशा में जगन्नाथ	३५१
	भजन गणगौर	
४५१	गणपति को शीश नवाऊँ	३५२
	गृहस्थ के लिये उपयोगी बातें	
४५२	आतिथ्य ही घरका	३५३
४५३	योगी बनो, पर रोगी	३५३
४५४	स्मरणीय बातें	३५४
४५५	जीवन के मूल आधार	३५४
	आरती एवं पुष्पाञ्जलि	
४५६	जय गणेश जय गणेश	३५६
४५७	गणपति की सेवा, मंगल	३५६
४५८	आरती गैया मैया की	३५७
४५९	आरती जुगलकिसोर की	३५८
४६०	आरती कुंजबिहारी की	३५८
४६१	ॐ जय जानकिनाथा	३५९
४६२	जानकी बल्लभलाल की	३६०
४६३	ॐ जय जगदीश हरे	३६१
४६४	जय शिव ओंकारा	३६२
४६५	शीश गंग अर्धङ्ग पार्वती	३६३
४६६	ॐ जय लक्ष्मी माता	३६४
४६७	जय लक्ष्मीरमणा	३६४
४६८	ॐ जय अम्बे गौरी	३६५
४६९	'मंगल' की सेवा सुन	३६६
४७०	ॐ जय आद्याशक्ति माँ	३६८
४७१	साँवल सा गिरधारी	३७०
४७२	सब आरती उतारो मेरे	३७१
४७३	हे राजा राम तेरी आरती	३७२
४७४	हे गिरिधर तेरी आरती	३७२
४७५	ॐ जय गंगाधर जय	३७३
४७६	पवन मंद सुगंध शीतल (बद्रीजी)	३७५
४७७	श्रित कमलाकुच (लक्ष्मीनारायणजी)	३७६
४७८	श्रीभागवत मुक्तिकी	३७७
४७९	श्री तुलसीजीकी आरती	३७८
४८०	आरती श्री रामायणजीकी	३७८
४८१	आरती कीजै हनुमानललाकी	३७९
४८२	हे रामा: पुरुषोत्तमा नरहरे	३७९
४८३	दोहे	३८१
४८४	पुष्पाञ्जलि	३८२
४८५	क्षमा-प्रार्थना	३८३

गोवंशकी दुर्दशा और उसपर विचार

(श्रीरामनारायण चाण्डक)

भारतीय संस्कृतिमें गायको माँका स्वरूप माना गया है। वैज्ञानिकोंने भी यह सिद्ध किया है कि बच्चेके लिये माँके दूधके बाद गायका दूध ही सबसे अच्छा आहार है।

हमारे कृषिप्रधान देशमें गोपालन अर्थ-उपार्जनमें भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। गोपालकोंके लिये तो मुख्य रूपसे गाय ही परिवार चलाने (जीविकोपार्जन)-का मुख्य साधन है। शास्त्रोंमें जो गौकी महिमा आयी है, वह छिपी नहीं है। लोकजीवनमें भी गौ हर तरहसे अनुस्यूत है। इतना सब होते हुए भी क्या कारण है कि गायोंकी दिनोंदिन दुर्दशा ही हो रही है?

इसपर विचार करें तो एक बात समझमें आती है कि आजके इस आर्थिक युगमें गाय जबतक आर्थिक दृष्टिकोणसे उपयोगी साबित नहीं होगी तबतक इसकी दशा सुधरनी मुश्किल है। गायके साथ गोपालकके परिवारकी आर्थिक व्यवस्था प्रत्यक्ष रूपसे जुड़ी हुई है।

अब प्रश्न यह आता है कि गायको किस प्रकार आर्थिक दृष्टिकोणसे उपयोगी बनाया जाय?

इसपर विचारके लिये हमें थोड़ा पीछेका इतिहास पलटना होगा कि पहले लोग बड़ी संख्यामें किस प्रकार गायोंको रखते थे? हर घरमें गायका होना मानो जरूरी था, दूध-दहीकी नदियाँ बहती थीं। राजस्थानमें तो साख-सम्बन्ध करते वक्त यह कहावत थी कि ***'धीणो घणोही है बेटी सोरी रेसी'*** जिसके यहाँ जितनी अधिक गायें होतीं, वह परिवार उतना ही आर्थिकसम्पन्न माना जाता। नन्द बाबाके पास नौ लाख गायें थीं। उनके राज्यमें सारी प्रजा सुखी-समृद्ध थी। लोगोंमें परस्पर इतना अपनत्व और प्रेम था कि किसीके घर किसी कारणवश दूध-दही या बिलौना नहीं होता तो उन्हें छाछ ले जानेका संदेश भिजवाते। आज गाय पालना महँगा पड़नेके कारण धीरे-धीरे सभी जन

इस व्यवसायसे पीछे हट रहे हैं और गायोंकी स्थिति दयनीय होती जा रही है।

अब पुनः प्रश्न उठता है कि हमारे पूर्वज किस व्यवस्थाके अन्तर्गत इतनी संख्यामें गायें रखते थे। इसके लिये निम्न चार बातोंपर हमें ध्यान देना होगा—(१) स्वयंद्वारा परिश्रम, (२) गोचरभूमियोंको सुधारकर उसमें चरागाह विकसित करना, (३) अच्छे किस्मके साँड़ तैयार करके देशी नस्लमें सुधार लाना ताकि गायें दुधारू हों और (४) गोपालकोंको दूध, घी अथवा पंचगव्य उत्पादोंका सही भाव मिल सके, ऐसी व्यवस्था करना। यहाँ इन्हीं चार बातोंपर कुछ विचार प्रस्तुत हैं—

(१) इसमें सबसे पहला कारण है कि हमारे पूर्वज निष्ठापूर्वक अपने हाथोंसे गायोंकी देखभाल करते थे। अपने खेतोंमें गायोंके खानेका चारा उगानेके लिये अलगसे व्यवस्था रखते थे, जिससे गायें खेतोंमें विचरण करके हरी घास चर लेतीं, खेती समाप्त होनेके बाद खलिहानोंसे तथा खेतोंमें उगा हुआ घास-फूस इकट्ठा करके घरपर लाकर सालभरके लिये गायोंके लिये घासकी व्यवस्था कर लेते। इसके पश्चात् खेतोंमें बचे-खुचे घास-फूसको चरनेके लिये गाँवोंमें चरवाहे (गौरी)-की व्यवस्था होती थी जो गायोंको खेतोंमें चरानेके लिये ले जाता, करीब दो माहतक पेट भरकर गायें सभी खेतोंमें खुलेमें चरकर आतीं, इससे गोपालकको घास-चारा खरीदनेका आर्थिक बोझ नहीं पड़ता, साथ ही इनके गोबरसे खेतोंकी जमीनकी उर्वरा शक्ति भी अच्छी रहती थी। उस समय खेती बैलोंद्वारा की जाती थी, लेकिन आज बैलोंका स्थान ट्रैक्टरोंने ले लिया है। ट्रैक्टरोंद्वारा खेती होनेसे गोवंश तथा किसान दोनोंका भयंकर नुकसान हुआ है।

बेकार बैल बूचड़खानोंमें कटने जाने लगे और किसान कम परिश्रमी होता गया। ट्रैक्टरोंद्वारा खेती होनेसे घास-फूसके पौधे जड़सहित उखड़नेके कारण खेतोंमें घास होना प्रायः बन्द हो गया है। आज ऊर्जाके स्रोतकी न्यूनताके कारण ट्रैक्टर और रासायनिक खादद्वारा

खेती बहुत महँगी पड़ने लगी। साथ ही घास-चारेके नहीं उगनेके कारण गोवंशकी दुर्दशा होने लगी। खेतीमें रसायनोंके प्रयोगसे पशुधन और मानव अनेक तरहकी बीमारियोंका शिकार होते जा रहे हैं।

परिवारमें गायें पालनेमें घरकी महिलाओंका भी बड़ा योगदान रहता था। दूध दुहना, बिलौना करना, घरपर गायोंकी देख-रेखका कार्य प्रायः महिलाएँ कर लेती थीं, लेकिन आज यह बात नहीं रह गयी है। परिवारोंमें गायें रखना धीरे-धीरे बन्द-सा हो गया।

अतः हमें चाहिये कि हम सरकार एवं दानदाताओंके भरोसे न रहकर स्वयंद्वारा परिश्रम करके पूर्वजोंकी इस प्रक्रियाको पुनः दोहराकर जैविक खेती—बैलोंद्वारा खेतोंमें घास उगाकर, परिवारमें गायें रखकर गोवंशको बचायें।

(२) पहले हर गाँवमें गायोंके चरानेके लिये गोचरभूमियोंकी व्यवस्था होती थी, जिसका अच्छी तरहसे रखरखाव और उसकी सुरक्षा करना हर व्यक्ति अपना कर्तव्य समझता था। आज गोचरभूमियाँ हम खत्म करते जा रहे हैं और बची हुई भूमिकी कोई देखभाल नहीं है। यह बात भी सही है कि पिछले वर्षोंमें अकालकी स्थितिके कारण गोचरभूमियोंकी भी बड़ी दुर्दशा हुई है।

फिर भी हाथ-पर-हाथ रखकर बैठनेसे इस समस्याका समाधान नहीं होगा। हमें गोचरभूमियोंको जोतकर और उसमें प्रकृतिके अनुरूप घास लगाकर पुनः विकसित करना होगा। गोचरभूमिमें स्वच्छन्द वातावरणमें गायें चरनेसे गायें जहाँ स्वस्थ रहती हैं, वहीं उन्हें तरह-तरहकी वनस्पति चरनेके लिये मिलनेसे दूध स्वास्थ्यवर्धक एवं ज्यादा होता है, जिससे गोपालकपर आर्थिक बोझ कम आता है।

(३) पहले हर गाँवमें अच्छे नस्लके देशी साँड़ पूर्वज लोग रखा करते थे। साँड़को गुड़, रोटी देना तथा उसकी देख-रेख करना हर ग्रामवासी अपना धर्म समझता था। अच्छी नस्लके साँड़से गायें भी स्वस्थ एवं दुधारू होती थीं, लेकिन अब गाँवोंमें नस्लकी बात तो दूर

साँड़ भी देखनेको कम मिलते हैं। निरन्तर अकालकी स्थितिके कारण पौष्टिक आहार नहीं मिलनेसे गोवंश कमजोर होता चला गया। आज गायोंका दूध इतना कम हो गया कि गोपालकको दूधकी मिलनेवाली कीमतसे पौष्टिक आहार तो दूर घास-चारेकी व्यवस्था करना भी मुश्किल पड़ता है।

इसके लिये उपयोगी साँड़ तैयार करके नस्लसुधार करना बहुत जरूरी हो गया है। हर गाँवमें अच्छी नस्लके साँड़ रखकर हमें पुन: दुधारू गाय तैयार करना होगा।

(४) गो-उत्पादोंका उचित मूल्य नहीं मिल रहा है। आज शहरोंकी अपेक्षा गाँवोंमें दूध-घीका मूल्य गोपालकको बहुत कम मिलता है।

इसके लिये गाँवोंमें सहकारी समितियाँ बनाकर गोपालकोंको अपने उत्पादनका उचित मूल्य मिल सके, ऐसी व्यवस्था करनी होगी।

हमारे शास्त्रोंमें गायके पञ्चगव्यसे स्वास्थ्यलाभ एवं वातावरण शुद्ध होनेका बहुत महत्त्व बताया गया है। दूध, दही, घीके अलावा देशी गायका गोमूत्र तथा गोमय अनेक तरहकी बीमारियों; जैसे—दमा, सूगर, कैंसरमें बहुत लाभकारी सिद्ध हुआ है।

हम सभीको तथा सरकारको चाहिये कि देशी गायके गोमूत्र और गोमयके गुणवत्ताकी अच्छी तरह जाँचकर इसका फार्मूला तैयार करके जिन रोगोंमें यह लाभकारी हो, उसकी दवाइयाँ बनाकर जनमानसको स्वास्थ्यमें होनेवाले लाभके बारेमें जानकारी दें। आज करोड़ों रुपये अंग्रेजी दवाइयोंमें खर्च होते हैं, किंतु यदि यह सस्ता इलाज जनताके लिये लाभकारी हो तो इससे मानव तथा गोवंश दोनोंकी रक्षा हो सकती है।

॥ श्रीहरिः ॥

नित्यस्तुतिः

गजाननं भूतगणादिसेवितं
कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकं
नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ॥

गजके आकारके समान बदनवाले, भूतगणोंसे सेवित कपित्थ और जम्बूके फलको भक्षण करनेवाले, उमा (पार्वती) के पुत्र, समस्त शोकोंको दूर करनेवाले, सम्पूर्ण विघ्नोंको नष्ट करनेवाले! मंगल देनेवाले, सिद्धिदाता श्रीगणेशजी महाराजके पवित्र चरणकमलोंमें नमस्कार करता हूँ।

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः ।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥

(गीता २। ७)

कायरतारूप दोषसे तिरस्कृत स्वभाववाला और धर्मके विषयमें मोहित अन्तःकरणवाला मैं आपसे पूछता हूँ कि जो निश्चित कल्याण करनेवाली हो, वह बात मेरे लिये कहिये। मैं आपका शिष्य हूँ। आपके शरण हुए मुझे शिक्षा दीजिये।

कविं पुराणमनुशासितार-
मणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूप-
मादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥

(८। ९)

जो सर्वज्ञ, अनादि, सबपर शासन करनेवाला, सूक्ष्म-से-

सूक्ष्म, सबका धारण पोषण करनेवाला, अज्ञानसे अत्यन्त परे, सूर्यकी तरह प्रकाश स्वरूप अर्थात् ज्ञानस्वरूप ऐसे अचिन्त्य स्वरूपका चिन्तन करता है।

पश्यामि देवांस्तव देव देहे
सर्वांस्तथा भूतविशेषसङ्घान्।
ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थ-
मृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान्॥ (११।१५)

हे देव! मैं आपके शरीरमें सम्पूर्ण देवताओंको तथा प्राणियोंके विशेष-विशेष समुदायोंको और कमलासनपर बैठे हुए ब्रह्माजीको, शंकरजीको, सम्पूर्ण ऋषियोंको और दिव्य सर्पोंको देख रहा हूँ।

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं-
पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम्।
नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं
पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप॥ (११।१६)

हे विश्वरूप! हे विश्वेश्वर आपको मैं अनेक हाथों, पेटों, मुखों और नेत्रोंवाला तथा सब ओरसे अनन्त रूपोंवाला देख रहा हूँ। मैं आपके न आदिको, न मध्यको और न अन्तको ही देख रहा हूँ।

किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च
तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम्।
पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ता-
द्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम्॥ (११।१७)

मैं आपको किरीट (मुकुट), गदा, चक्र (तथा शंख और पद्म) धारण किये हुए देख रहा हूँ। आपको तेजकी राशि, सब

ओर प्रकाशवाले, देदीप्यमान अग्नि तथा सूर्यके समान कान्तिवाले, नेत्रोंके द्वारा कठिनतासे देखे जाने योग्य और सब तरफसे अप्रमेयस्वरूप देख रहा हूँ।

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं
त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता
सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे॥ (११।१८)

आप ही जाननेयोग्य परम अक्षर (अक्षर ब्रह्म) हैं, आप ही इस सम्पूर्ण विश्वके परम आश्रय हैं, आप ही सनातन धर्मके रक्षक हैं और आप ही अविनाशी सनातन पुरुष हैं—ऐसा मैं मानता हूँ।

अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्य-
मनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम्।
पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं
स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम्॥ (११।१९)

आपको मैं आदि, मध्य और अन्तसे रहित, अनन्त प्रभावशाली, अनन्त भुजाओंवाले, चंद्र और सूर्यरूप नेत्रोंवाले, प्रज्वलित अग्निरूप मुखोंवाले और अपने तेजसे संसारको तपाते हुए देख रहा हूँ।

द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि
व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः।
दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं-
लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन्॥ (११।२०)

हे महात्मन्! यह स्वर्ग और पृथ्वीके बीचका अन्तराल और सम्पूर्ण दिशाएँ एक आपसे ही परिपूर्ण हैं। आपके इस अद्भुत और उग्ररूपको देखकर तीनों लोक व्यथित (व्याकुल) हो रहे हैं।

अमी हि त्वां सुरसङ्घा विशन्ति
केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति।
स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसङ्घाः
स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः॥

(११। २१)

वे ही देवताओंके समुदाय आपमें प्रविष्ट हो रहे हैं। उनमेंसे कई तो भयभीत होकर हाथ जोड़े हुए आपके नामों और गुणोंका कीर्तन कर रहे हैं। महर्षियों और सिद्धोंके समुदाय 'कल्याण हो! मङ्गल हो!' ऐसा कहकर उत्तम-उत्तम स्तोत्रोंके द्वारा आपकी स्तुति कर रहे हैं।

रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या-
विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च।
गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसङ्घा-
वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे॥

(११। २२)

जो ग्यारह रुद्र, बारह आदित्य, आठ वसु, बारह साध्यगण, दस विश्वेदेव और दो अश्विनीकुमार तथा उनचास मरुद्गण, सात पितृगण तथा गन्धर्व, यक्ष, असुर और सिद्धोंके समुदाय हैं, (वे) सभी चकित होकर आपको देख रहे हैं।

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या
जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।

रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः॥
(११।३६)

हे अन्तर्यामी भगवन्! आपके (नाम, गुण, लीलाका) कीर्तन करनेसे यह सम्पूर्ण जगत् हर्षित हो रहा है और अनुराग (प्रेम)-को प्राप्त हो रहा है। (आपके नाम, गुण आदिके कीर्तनसे) भयभीत होकर राक्षसलोग दसों दिशाओंमें भागते हुए जा रहे हैं और सम्पूर्ण सिद्धगण आपको नमस्कार कर रहे हैं। यह सब होना उचित ही है।

कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन्
गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे।
अनन्त देवेश जगन्निवास
त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत्॥ (११।३७)

हे महात्मन्! गुरुओंके भी गुरु और ब्रह्माके भी आदिकर्ता आपके लिये (वे सिद्धगण) नमस्कार क्यों नहीं करें? क्योंकि हे अनन्त! हे देवेश! हे जगन्निवास! आप अक्षर-स्वरूप हैं; आप सत् भी हैं, असत् भी हैं और (सत्-असत्से) पर भी जो कुछ है, वह भी आप ही हैं।

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराण-
स्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम
त्वया ततं विश्वमनन्तरूप॥ (११।३८)

आप ही आदिदेव और पुराणपुरुष हैं तथा आप ही इस संसारके आश्रय हैं। आप ही सबको जाननेवाले, जाननेयोग्य

और परम धाम हैं। हे अनन्तरूप! आपसे ही सम्पूर्ण संसार व्याप्त है।

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः
प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः
पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते॥ (११।३९)

आप ही वायु, यमराज, अग्नि, वरुण, चन्द्रमा, दक्ष आदि प्रजापति और प्रपितामह (ब्रह्माजीके भी पिता) हैं। आपको हजारों बार नमस्कार हो! नमस्कार हो ! और फिर भी आपको बार-बार नमस्कार हो! नमस्कार हो!!

नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते
नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं
सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः॥ (११।४०)

हे सर्वस्वरूप! आपको आगेसे भी नमस्कार हो और पीछेसे भी नमस्कार हो! आपको सब ओरसे (दसों दिशाओंसे) ही नमस्कार हो! हे अनन्तवीर्य! असीम पराक्रमवाले आपने सबको (एक देशमें) समेट रखा है; अतः सब कुछ आप ही हैं।

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं-
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं-
मया प्रमादात्प्रणयेन वापि॥ (११।४१)

आपकी इस महिमाको न जानते हुए 'मेरे सखा हैं' ऐसा भी मानकर मैंने प्रमादसे अथवा प्रेमसे भी हठपूर्वक (बिना सोचे-समझे) 'हे कृष्ण! हे यादव ! हे सखे !' इस प्रकार जो कुछ कहा है;

यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि
विहारशय्यासनभोजनेषु ।
एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं-
तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ॥ (११।४२)

और हे अच्युत! हँसी-दिल्लगीमें, चलते-फिरते, सोते-जागते, उठते-बैठते, खाते-पीते समय अकेले अथवा उन (सखाओं, कुटुम्बियों आदि)-के सामने (मेरे द्वारा आपका) जो कुछ तिरस्कार (अपमान) किया गया है, हे अप्रमेयस्वरूप वह सब आपसे मैं क्षमा करवाता हूँ अर्थात् आपसे क्षमा माँगता हूँ।।

पितासि लोकस्य चराचरस्य
त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो-
लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ॥ (११।४३)

आप ही इस चराचर संसारके पिता हैं, आप ही पूजनीय हैं और आप ही गुरुओंके महान् गुरु हैं। हे अनन्त प्रभावशाली भगवन्! इस त्रिलोकीमें आपके समान भी दूसरा कोई नहीं है, फिर अधिक तो हो ही कैसे सकता है।

तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं
प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः
प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम् ॥ (११।४४)

इसलिये स्तुति करनेयोग्य आप ईश्वरको मैं शरीरसे लम्बा पड़कर, प्रणाम करके प्रसन्न करना चाहता हूँ। पिता जैसे पुत्रका, मित्र जैसे मित्रका और पति जैसे पत्नीका (अपमान सह लेता है), ऐसे ही (आप मेरे द्वारा किया गया अपमान) सहनेमें अर्थात् क्षमा करनेमें समर्थ हैं।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

हे प्रभो! आप ही माता और आप ही पिता हैं, आप ही बन्धु और आप ही सखा हैं, आप ही विद्या और आप ही धन हैं; हे देवोंके देव! आप ही मेरे सर्वस्व हैं।

हरिः शरणम् हरिः शरणम् हरिः शरणम्
हरिः शरणम् हरिः शरणम् हरिः शरणम्
हरिः शरणम् हरिः शरणम् हरिः शरणम्
हरिः शरणम् हरिः शरणम् हरिः शरणम्
हरिः शरणम् हरिः शरणम् हरिः शरणम्
हरिः शरणम् हरिः शरणम् हरिः शरणम्
हरिः शरणम् हरिः शरणम् हरिः शरणम्

पञ्चामृत

हे नाथ! हे मेरे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं।

१. हम भगवान्‌के ही हैं।
२. हम जहाँ भी रहते हैं, भगवान्‌के ही दरबारमें रहते हैं।
३. हम जो भी शुभ काम करते हैं, भगवान्‌का ही काम करते हैं।
४. शुद्ध, सात्त्विक जो भी पाते हैं, भगवान्‌का ही प्रसाद पाते हैं।
५. भगवान्‌के दिये प्रसादसे भगवान्‌के ही जनोंकी सेवा करते हैं।

—ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराजके वचनामृतसे

॥ श्रीहरिः ॥

नित्य पठनीय गीताजीके पाँच श्लोक

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्। देवकीपरमानंदं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया॥

मैं अजन्मा और अविनाशी स्वरूप होते हुए भी तथा सम्पूर्ण प्राणियोंका ईश्वर होते हुए भी अपनी प्रकृतिको अधीन करके अपनी योगमायासे प्रकट होता हूँ।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

हे भरतवंशी अर्जुन! जब-जब धर्मकी हानि और अधर्मकी वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने-आपको साकाररूपसे प्रकट करता हूँ।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

साधुओं-(भक्तों) की रक्षा करनेके लिये, पापकर्म करनेवालोंका विनाश करनेके लिये और धर्मकी भलीभाँति स्थापना करनेके लिये मैं युग-युगमें प्रकट हुआ करता हूँ।

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥

हे अर्जुन! मेरे जन्म और कर्म दिव्य हैं। इस प्रकार (मेरे जन्म और कर्मको) जो मनुष्य तत्त्वसे जान लेता है अर्थात् दृढ़तापूर्वक मान लेता है, वह शरीरका त्याग करके पुनर्जन्मको प्राप्त नहीं होता, प्रत्युत मुझे प्राप्त होता है।

वीतरागभयक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिताः।
बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः॥

राग, भय और क्रोधसे सर्वथा रहित, मुझमें तल्लीन, मेरे ही आश्रित तथा ज्ञानरूप तपसे पवित्र हुए बहुत-से भक्त मेरे स्वरूपको प्राप्त हो चुके हैं।

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्। देवकीपरमानंदं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥

प्रार्थना

हे नाथ! आपसे मेरी प्रार्थना है कि आप मुझे प्यारे लगें। केवल यही मेरी माँग है और कोई माँग नहीं।

हे नाथ! अगर मैं स्वर्ग चाहूँ तो मुझे नरकमें डाल दें, सुख चाहूँ तो अनन्त दुःखोंमें डाल दें, पर आप मुझे प्यारे लगें।

हे नाथ! आपके बिना मैं रह न सकूँ, ऐसी व्याकुलता आप दे दें।

हे नाथ! आप मेरे हृदयमें ऐसी आग लगा दें कि आपकी प्रीतिके बिना मैं जी न सकूँ।

हे नाथ! आपके बिना मेरा कौन है? मैं किससे कहूँ और कौन सुने?

हे मेरे शरण्य! मैं कहाँ जाऊँ? क्या करूँ? कोई मेरा नहीं।

मैं भूला हुआ कइयोंको अपना मानता रहा। उनसे धोखा खाया, फिर भी धोखा खा सकता हूँ, आप बचायें!

हे मेरे प्यारे! हे अनाथनाथ! हे अशरणशरण! हे पतितपावन! हे दीनबन्धो! हे अरक्षितरक्षक! हे आर्तत्राणपरायण! हे निराधारके आधार! हे अकारणकरुणावरुणालय! हे साधनहीनके एकमात्र साधन! हे असहायके सहायक! क्या आप मेरेको जानते नहीं, मैं कैसा भग्नप्रतिज्ञ, कैसा कृतघ्न, कैसा अपराधी, कैसा विपरीतगामी, कैसा अकरण-करणपरायण हूँ। अनन्त दुःखोंके कारणस्वरूप भोगोंको भोगकर-जानकर भी आसक्त रहनेवाला, अहितको हितकर माननेवाला, बार-बार ठोकरें खाकर भी नहीं चेतनेवाला, आपसे विमुख होकर बार-बार दुःख पानेवाला,

चेतकर भी न चेतनेवाला, जानकर भी न जाननेवाला मेरे सिवाय आपको ऐसा कौन मिलेगा?

प्रभो! त्राहि माम्! त्राहि माम्!! पाहि माम्! पाहि माम्!! हे प्रभो! हे विभो! मैं आँख पसारकर देखता हूँ तो मन-बुद्धि-प्राण-इन्द्रियाँ और शरीर भी मेरे नहीं हैं, फिर वस्तु-व्यक्ति आदि मेरे कैसे हो सकते हैं! ऐसा मैं जानता हूँ, कहता हूँ, पर वास्तविकतासे नहीं मानता। मेरी यह दशा क्या आपसे किञ्चिन्मात्र भी कभी छिपी है? फिर हे प्यारे! क्या कहूँ! हे नाथ! हे नाथ!! हे मेरे नाथ!!! हे दीनबन्धो! हे प्रभो! आप अपनी तरफसे शरणमें ले लें। बस, केवल आप प्यारे लगें।

॥ श्रीपरमात्मने नमः ॥

एक बार सरल हृदयसे दृढ़तापूर्वक स्वीकार कर लें कि—

सर्वकालमें मैं स्वयं केवल भगवान्‌का ही अंश हूँ

और

सर्वकालमें केवल भगवान् ही मेरे अपने हैं

कारण यह है कि

शरीर-संसार कभी किसीके साथ रहते ही नहीं क्योंकि इनकी सत्ता विद्यमान नहीं है—'नासतो विद्यते भाव'। (गीता २। १६)

और

परमात्मा कभी किसीका साथ छोड़ते ही नहीं; क्योंकि उनकी सत्ता नित्य विद्यमान है—'ना भावो विद्यते सतः।' (गीता २। १६)

—श्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराजके प्रवचनसे

मन्त्रोंका महामन्त्र

हे नाथ! मैं आपकी शरणमें हूँ। हे मेरे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं।

मंगलाचरण

॥ कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥

'जो वसुदेवजीके पुत्र, दिव्यरूपधारी, कंस एवं चाणूरका नाश करनेवाले और देवकीजीके लिये परम आनन्दस्वरूप हैं, उन जगद्गुरु भगवान् श्रीकृष्णकी मैं वन्दना करता हूँ।'

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम्।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः॥

जिनके मस्तकपर कस्तूरीका तिलक है, वक्षःस्थलमें कौस्तुभमणि है, नासिकाग्रमें अति सुन्दर मोतीकी बुलाक है, करतलमें वंशी है, हाथोंमें कङ्कण है, सम्पूर्ण शरीरमें हरिचंदनका लेप हुआ है और कण्ठमें मनोहर मोतियोंकी माला है, व्रजाङ्गनाओंसे घिरे हुए ऐसे गोपालचूडामणिकी बलिहारी है।

फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियं
श्रीवत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम्।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसङ्घावृतं
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्याङ्गभूषं भजे॥

जिनका मुखचंद्र विकसित कमलके सदृश है, जिनको मोर-मुकुट अति प्रिय है, जिन्होंने वक्षःस्थलपर श्रीवत्सचिह्न और सुन्दर कौस्तुभमणि धारण किये हैं, जो पीताम्बरधारी एवं सुन्दर हैं, गोपाङ्गनाओंके नयनकमलोंसे जिनका सुन्दर शरीर सम्पूजित है, गौ और गोपियोंके समूहसे आवृत हैं, उन मधुर मुरलिका बजाते हुए दिव्य भूषणभूषित गोविन्दको मैं भजता हूँ।

॥ श्रीगणेशजी ॥

वक्रतुंड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्॥

गजके आकारके समान बदनवाले, भूतगणोंसे सेवित कपित्थ और जम्बूके फलको भक्षण करनेवाले, उमा (पार्वती) के पुत्र, समस्त शोक और विघ्नोंको नष्ट करनेवाले! मंगल देनेवाले, सिद्धिदाता श्रीगणेशजी महाराजके पवित्र चरणकमलोंमें नमस्कार करता हूँ।

॥ गुरुजीको नमस्कार॥

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

संसारके दुःखोंको दूर करने और मोक्षको मार्ग बतानेवाले गुरु ही ब्रह्मा हैं। वही (सर्वव्यापक) विष्णु हैं, वही महादेव हैं। सच्चा ज्ञान देनेवाला गुरु ही साक्षात् परब्रह्म हैं। मैं गुरुको प्रणाम करता हूँ।

॥ श्रीविष्णुजी ॥

सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्।
सहारवक्षःस्थलकौस्तुभश्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्॥

उन चतुर्भुज भगवान् विष्णुको मैं सिरसे प्रणाम करता हूँ, जो शङ्ख-चक्र धारण किये हैं, किरीट और कुण्डलोंसे विभूषित हैं, पीताम्बर ओढ़े हुए हैं, सुन्दर कमल-से जिनके नेत्र हैं और जिनके वक्षःस्थलमें वनमालासहित कौस्तुभमणिकी अनूठी शोभा है।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

जिनकी आकृति अतिशय शान्त है, जो शेषनागकी शय्यापर शयन किये हुए हैं, जिनकी नाभिमें कमल है, जो देवताओंके भी ईश्वर और सम्पूर्ण जगत्‌के आधार हैं, जो आकाशके सदृश सर्वत्र व्याप्त हैं, नील मेघके समान जिनका वर्ण है, अतिशय सुन्दर जिनके सम्पूर्ण अङ्ग हैं, जो योगियोंद्वारा ध्यान करके प्राप्त किये जाते हैं, जो सम्पूर्ण लोकोंके स्वामी हैं, जो जन्म-मरणरूप भयका नाश करनेवाले हैं, ऐसे लक्ष्मीपति, कमलनेत्र भगवान् श्रीविष्णुको मैं (सिरसे) प्रणाम करता हूँ।

॥ श्रीशिवजी ॥

॥ श्रीशिवजीको नमस्कार॥

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥

कपूरके समान सुन्दर गौर वर्ण, दयाके अवतार, गलेमें सर्प माला धारण किए हुए हैं, सदा हृदय कमलमें रहनेवाले भगवान् शंकरको पार्वती सहित मैं हृदयसे नमस्कार करता हूँ।

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्॥
मन्दारमाला कलितालकायै कपालमालाङ्कितशेखराय।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय।

॥ सरस्वतीजीको नमस्कार ॥

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥

जो कुन्दके फूल, चन्द्रमा, बर्फ और हारके समान श्वेत हैं; जो शुभ्र वस्त्र धारण करती हैं; जिनके हाथ उत्तम वीणासे सुशोभित हैं; जो श्वेत कमलासनपर बैठती हैं; ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देव जिनकी सदा स्तुति करते हैं और जो सब प्रकारकी जड़ता हर लेती हैं, वे भगवती सरस्वती मेरा पालन करें॥

॥ श्रीदुर्गाजीको नमस्कार ॥

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥

जयन्ती, मंगला, काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा और स्वधा—इन नामोंसे प्रसिद्ध जगदम्बिके! आपको नमस्कार हैं।

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

नारायणि! तुम सब प्रकारका मंगल प्रदान करनेवाली मंगलमयी हो। कल्याणदायिनी शिवा हो। सब पुरुषार्थोंको सिद्ध करनेवाली, शरणागतवत्सला, तीन नेत्रोंवाली गौरी हो। तुम्हें नमस्कार है॥

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

जो देवी सब प्राणियोंमें शक्तिरूपसे स्थित है उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है॥

(मातृरूपेण, बुद्धिरूपेण, लक्ष्मीरूपेण, दयारूपेण, क्षमारूपेण, शान्तिरूपेण)

॥ श्रीमहालक्ष्मीजीको नमस्कार॥

महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे॥
नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥

श्रीपीठपर स्थित और देवताओंसे पूजित होनेवाली हे महामाये! तुम्हें नमस्कार है। हाथमें शंख, चक्र और गदा धारण करनेवाली हे महालक्ष्मि! तुम्हें प्रणाम है॥

॥ गंगाजीको नमस्कार॥

नमामि गङ्गे! तव पादपङ्कजं
सुरासुरैर्वन्दितदिव्यरूपम्।
भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यं
भावानुसारेण सदा नराणाम्॥

हे गंगाजी! मैं देवताओं और दैत्योंद्वारा पूजे जानेवाले तेरे अलौकिक चरणकमलोंको नमस्कार करता हूँ। तू मनुष्योंको हमेशा उनकी भावनाके अनुसार संसारके भोग और मोक्ष देती है।

॥ सप्तपुरीको बारम्बार नमस्कार ॥

अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः॥

अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार), काशी, कांची, अवन्तिका

(उज्जयिनी) तथा द्वारका—इन सात मोक्ष देनेवाली पुरियोंको मैं प्रणाम करता हूँ।

॥ चारों धामको बारम्बार नमस्कार ॥

श्रीजगन्नाथजी, श्रीरामेश्वरजी, श्रीबद्रीनारायणजी, श्रीद्वारकाधीशको मैं प्रणाम करता हूँ।

॥ श्रीरामजी ॥

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम्॥

नीले कमलके समान श्याम और कोमल जिनके अंग हैं, श्रीसीताजी जिनके वाम भागमें विराजमान हैं और जिनके हाथोंमें अमोघ बाण और सुन्दर धनुष है, उन रघुवंशके स्वामी श्रीरामचन्द्रजीको मैं नमन करता हूँ।

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये॥

मनसे श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंका चिन्तन, वचनसे श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंका गुणगान, सिरसे श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंमें नमन और अन्ततः उन्हीं चरणोंकी शरण लेता हूँ।

लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं
राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं
श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये॥

जो सम्पूर्ण लोकोंमें सुन्दर, रणक्रीडामें धीर, कमलनयन, रघुवंशनायक, करुणामूर्ति और करुणाके भण्डार हैं, उन श्रीरामचन्द्रजीकी मैं शरण लेता हूँ॥

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने॥

(श्रीमहादेवजी पार्वतीजीसे कहते हैं) हे सुमुखि! रामनाम विष्णुसहस्रनामके तुल्य है। मैं सर्वदा 'राम, राम, राम' इस प्रकार मनोरम राम-नाममें ही रमण करता हूँ।

॥ श्रीहनुमान वन्दना ॥

प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानघन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर॥

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि॥

अतुल बलके धाम, सोनेके पर्वत (सुमेरु)-के समान कान्तियुक्त शरीरवाले, दैत्यरूपी वनके लिये अग्निरूप, ज्ञानियोंमें अग्रगण्य, सम्पूर्ण गुणोंके निधान, वानरोंके स्वामी, श्रीरघुनाथजीके प्रिय भक्त पवनपुत्र श्रीहनुमान्‌जीको मैं प्रणाम करता हूँ।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥

जिनकी मनके समान गति और वायुके समान वेग है, जो परम जितेन्द्रिय और बुद्धिमानोंमें परम श्रेष्ठ हैं उन पवननन्दन, वानरोंमें अग्रगण्य श्रीरामजीके दूत हनुमान्‌जीकी मैं शरण लेता हूँ।

॥ सूर्य-नमस्कार ॥

आदिदेव! नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर! नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तु ते॥

हे आदिदेव भास्कर! आपको प्रणाम है आप मुझपर प्रसन्न हों हे दिवाकर! आपको नमस्कार है, हे प्रभाकर! आपको प्रणाम है।

॥ दैनिक दिनचर्याके मन्त्र ॥

प्रात:काल ब्राह्ममुहूर्तमें सबसे पहले अपनी हथेलियोंको देखकर यह मंत्र बोलना चाहिये।

॥ प्रात: कर-दर्शन ॥

कराग्रे वसते लक्ष्मी: करमध्ये सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्॥

हाथके अग्रभागमें लक्ष्मी, हाथके मध्यमें सरस्वती और हाथके मूलभागमें ब्रह्माजी निवास करते हैं, इसलिये प्रात:काल दोनों हाथोंका दर्शन करना चाहिये।

॥ पृथ्वी माताकी प्रार्थना ॥

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे॥

समुद्ररूपी वस्त्रोंको धारण करनेवाली, पर्वतरूपी स्तनवाली, विष्णु भगवान्‌की पत्नी—हे पृथ्वी देवी! तुम्हें नमस्कार करता हूँ। तुम्हें मेरे पैरोंका स्पर्श होता है, इसलिये क्षमा-याचना करता हूँ।

॥ स्नान करते समय बोले जानेवाले श्लोक ॥

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिंधुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

हे गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिंधु और कावेरी नदियो! आप सभी मेरे स्नान करनेके पानीमें पधारिये।

॥ सूर्यभगवान्‌को अर्घ्य ॥

एहि सूर्य! सहस्त्रांशो तेजोराशे! जगत्पते!
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर!

॥ तुलसीमाताको नमस्कार ॥

तुलसि श्रीसखि शुभे पापहारिणि पुण्यदे।
नमस्ते नारदनुते नारायणमनःप्रिये॥

॥ दीपदर्शन ॥

शुभं करोतु कल्याणमारोग्यं धनसंपदः।
शत्रुबुद्धिविनाशाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥
दीपज्योतिः परब्रह्म दीपज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु मे पापं दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

॥ चरणामृत-ग्रहण मंत्र ॥

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्।
विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥

॥ तुलसी-ग्रहण मंत्र ॥

पूजनानन्तरं विष्णोरर्पितं तुलसीदलम्।
भक्षये देहशुद्ध्यर्थं चान्द्रायणशताधिकम्॥

॥ भोजन करनेसे पहले ॥

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति॥

॥ रात्रिमें शयनसे पहले ॥

अच्युतं केशवं विष्णुं हरिं सोमं जनार्दनम्।
हंसं नारायणं कृष्णं जपेद् दुःस्वप्नशान्तये॥

॥ सब समयके लिये महामन्त्र ॥

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव।

॥ गायत्री मंत्र ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

सूर्यदेवके उस दिव्य तेजको ध्यानसे धारण करते हैं जो हमारी बुद्धिको दिव्य बनायें।

॥ महामृत्युंजय मंत्र ॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

तीन नेत्रोंवाले, सुगन्धयुक्त एवं पुष्टिके वर्धक शंकरका हम पूजन करते हैं, वे शंकर हमको दुःखोंसे ऐसे छुड़ायें जैसे खरबूजा पककर बन्धनसे अपने-आप छूट जाता है, किंतु वे शंकर हमें मोक्षसे न छुड़ायें।

ॐ मृत्युंजय महादेव त्राहि मां शरणागतम्
जन्ममृत्युजराव्याधिं पीडितं कर्मबंधनैः।

मृत्युसे जय देनेवाले परमात्मा शिव, हे परमात्मा, मैं आपके शरणमें आकर त्राहि पुकारता हूँ। मंत्र जपनेसे मृत्यु, जरा तथा व्याधिका नाश करनेवाले, अपने पूर्व कर्म तथा कर्मबंधनसे मुक्त करते हैं।

॥ द्वादशाक्षर मंत्र ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

॥ समर्पण मंत्र ॥

ॐ त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

हे ईश्वर! तुम्हीं मेरे माता हो और तुम्हीं पिता। तुम्हीं भाई हो और तुम्हीं मित्र। तुम्हीं विद्या और द्रव्य (धन) भी हो। तुम्हीं मेरे सर्वस्व हो।

त्रिदेवोंके साथ नवग्रह मन्त्र

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥

त्रिदेव—ब्रह्मा, विष्णु, महादेव एवं सूर्य, चन्द्र, भूमिपुत्र (मंगल), बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु—ये सारे ग्रह हमें; शान्ति प्रदान करें।

॥ सर्वमंगलकामना ॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

हे ईश्वर! आप पूर्ण हैं। यह विश्व भी (अमर्याद) पूर्ण है। पूर्णमेंसे पूर्णका प्रादुर्भाव होता है। (पूर्ण ब्रह्मसे पूर्ण लेकर इस पूर्ण सृष्टिका निर्माण हुआ है) पूर्णमेंसे पूर्ण लेनेके पश्चात् पूर्ण ही शेष रहता है। हे ईश्वर! सभी ओर शान्ति, शान्ति, शान्ति हो।

प्रार्थना-भजन

(१)

कर प्रणाम तेरे चरणोंमें लगता हूँ अव तेरे काज।
पालन करनेको आज्ञा तव मैं नियुक्त होता हूँ आज॥
अन्तरमें स्थित रहकर मेरे बागडोर पकड़े रहना।
निपट निरंकुश चंचल मनको सावधान करते रहना॥
अन्तर्यामीको अन्तःस्थित देख सशंकित होवे मन।
पाप-वासना उठते ही हो नाश लाजसे वह जल-भुन॥
जीवोंका कलरव जो दिनभर सुननेमें मेरे आवे।
तेरा ही गुणगान जान मन प्रमुदित हो अति सुख पावे॥
तू ही है सर्वत्र व्याप्त हरि! तुझमें यह सारा संसार।
इसी भावनासे अन्तरभर मिलूँ सभीसे तुझे निहार॥
प्रतिपल निज इन्द्रिय-समूहसे जो कुछ भी आचार करूँ।
केवल तुझे रिझानेको बस तेरा ही व्यवहार करूँ॥

(२)

इतनी शक्ति हमें देना दाता।
मनका विश्वास कमजोर हो ना॥
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे।
भूलकर भी कोई भूल हो ना॥

दूर अज्ञानके हों अँधेरे।
तू हमें ज्ञानकी रोशनी दे॥
हर बुराईसे बचते रहें हम।
जितनी भी दे भली जिन्दगी दे॥

बैर हो ना किसीका किसीसे।
भावना मनमें बदले की हो ना॥
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे।
भूलकर भी कोई भूल हो ना॥

हम न सोचें हमें क्या मिला है।
हम ये सोचें किया क्या है अर्पण॥
फूल खुशियोंके बाँटें सभीको।
सबका जीवन ही बन जाए मधुबन॥

अपनी करुणाका जल तू बहाके।
कर दे पावन हरएक मनका कोना॥
इतनी शक्ति हमें देना दाता।
मन का विश्वास कमजोर हो ना॥

(३)

तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो
तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं हो

तुम्हीं हो साथी तुम्हीं सहारे, कोई न अपना सिवा तुम्हारे।
तुम्हीं हो नैया तुम्हीं खेवैया, तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं हो॥
जो खिल सके ना वो फूल हम हैं, तुम्हारे चरणोंकी धूल हम हैं।
दयाकी दृष्टि सदा ही रखना, तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं हो॥

(४)

दया कर दान भक्तिका, हमें परमात्मा देना।
दया करना हमारी आत्माको शुद्धता देना॥ १॥
सदासे आप दीनोंका, प्रभु उद्धार करते हैं।
हमारी दीन हालतको, पतित पावन मिटा देना॥ २॥

बहा दो प्रेमकी गंगा, दिलोंमें प्रेमका सागर।
हमें आपसमें मिल-जुल कर, प्रभु रहना सिखा देना॥ ३॥
हमारे ध्यानमें आओ, प्रभु आँखोंमें बस जाओ।
अँधेरे दिलमें आ करके, परम ज्योति जगा देना॥ ४॥
वतनके वास्ते जीना, वतनके वास्ते मरना।
वतनपर जाँ फिदा करना, प्रभु हमको सिखा देना॥ ५॥
हमारा कर्म हो सेवा, हमारा धर्म हो सेवा।
सदा ईमान हो सेवा, हमें सेवक बना देना॥ ६॥

(५)

वह शक्ति हमें दो दयानिधे, कर्तव्य मार्गपर डट जावें।
पर-सेवा, पर उपकार करें, निज जीवन सफल बना जावें॥
अति दीन-दुःखी निबलों-विकलोंके, सेवक बन सन्ताप हरें।
जो हैं अटके भूले-भटके, उनको तारें खुद तर जावें॥
छल, दंभ, द्वेष, पाखण्ड, झूठ, अन्यायसे निशिदिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना, शुचि प्रेम सुधा नित बरसावें॥
निज आन मान मर्यादाका, प्रभु ध्यान रहे, अभिमान रहे।
जिस देश जातिमें जन्म लिया, बलिदान उसीपर हो जावें॥

(६)

हे ईश सब सुखी हों, कोई न हो दुखारी।
सब हों नीरोग भगवन, धन-धान्यके भण्डारी॥
सब भद्रभाव देखें, सन्मार्गके पथिक हों।
दुखिया न कोई होवे, सृष्टिमें प्राण धारी॥
हे ईश सब सुखी हों०

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहै न कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी, भगवन पूरी होय॥
विद्या-बुद्धि-तेज-बल, सबके भीतर होय।
दूध-पूत-धन-धान्य से, वंचित रहै न कोय॥
आपकी भक्ति प्रेमसे, मन होवे भरपूर।
राग द्वेषसे चित्त मेरा, कोसों भागे दूर॥
मिले भरोसा आपका, हमें सदा जगदीश।
आशा तेरे नामकी, बनी रहे मम ईश॥
पापसे हमें बचाइए, करके दया दयाल।
अपना भक्त बनाइकै, सबको करो निहाल॥
दिलमें दया उदारता, मनमें प्रेम अपार।
हृदयमें धारे दीनता, हे मेरे करतार॥
हाथ जोड़ विनती करूँ, सुनिए कृपा निधान।
साधु संगत दीजिए, दया धर्मका दान॥

(७) गुरु, मात-पिता वन्दना

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

गुरुदेव दया करके मुझको अपना लेना।
मैं शरण पड़ा तेरी चरणों में जगह देना॥ टेर॥
करुणानिधि नाम तेरा करुणा दिखला जावो।
सोये हुए भागों को हे नाथ जगा जावो।
मेरी नाव भँवर डोले इसे पार लगा देना॥ १॥
तुम सुख के सागर हो निर्धन के सहारे हो।
इस तन में समाये हो मुझे प्राणों से प्यारे हो।
नित माला जपूँ तेरी नहीं दिल से भुला देना॥ २॥

पापी हूँ या कपटी हूँ जैसा भी हूँ तेरा हूँ।
घर-बार छोड़ कर मैं जीवन से खेला हूँ।
दुःखों का मारा हूँ मेरे दुखड़े मिटा देना॥ ३॥
मैं सब का सेवक हूँ तेरे चरणों का चेला हूँ।
नहीं नाथ भुलाना मुझे इस जग में अकेला हूँ।
तेरे दर का पुजारी हूँ मेरे दोष मिटा देना॥ ४॥

(८)

ऐसे दया करो गुरु देवा, मेरो जनम मरण मिट जाय।
जनम मरण मिट जाय, मेरो जीवन सफल हो जाय॥
ऐसी दया करो....
मोहमाया डारे है डेरा, डग मग डोले मनवा मेरा।
ऐसी कृपा करो मेरे स्वामी, भव सागर तर जाय॥
ऐसी दया करो....
गुरू बिन कोन जो राह दिखावे, जग जंजाल से मुक्ती दिलावे।
आस लगाये बैठा चरनन, मैं झोली फैलाय॥
ऐसी दया करो....
किन द्वारे पर अलख जगाऊँ, प्रभु-सा दीन दयालु पाऊँ।
एक कोर मोहे भक्ती ज्ञान की, जूठन ही मिल जाय॥
ऐसी दया करो....
चरण कमल की बक्षो सेवा, अंगीकार करो गुरु देवा।
धरो दीप कर दे उजियारो, मन मंदिर के माँय॥
ऐसी दया करो....
आप ही मात पिता अरु स्वामी, हो सर्वेश्वर अंतरयामी।
गुरूमण्डल में मगन रहूँ तोरी, महिमा के गुण गाय॥
ऐसी दया करो....

(९)

माता पिता गुरु प्रभु चरणों में प्रणवत बारम्बार।
हम पर किया बड़ा उपकार, हम पर किया.........॥ टेर॥
माता ने जो कष्ट उठाया, वह ऋण जाये न कभी चुकाया,
अंगुली पकड़कर चलना सिखाया, ममता की दी शीतल छाया,
जिनकी गोद में पलकर हम, कहलाते हैं हुशियार॥
हम पर......॥ १॥

पिता ने हमको योग्य बनाया, कमा-कमाकर अन्न खिलाया,
पढ़ा-लिखा गुणवान बनाया, जीवन पथ पर चलना सिखाया,
जोड़-जोड़ अपनी सम्पत्ति का, बना दिया हकदार॥
हम पर......॥ २॥

तत्त्व ज्ञान गुरु ने बतलाया, अन्धकार सब दूर भगाया,
हृदय में भक्ति दीप जलाकर, हरि दर्शन का मार्ग बतलाया,
बिना स्वार्थ ही कृपा करें ये, कितने बड़े हैं उदार॥
हम पर......॥ ३॥

प्रभु कृपा से नर तन पाया, संत मिलन का साज सजाया,
बल बुद्धि और विद्या देकर, सब जीवों में श्रेष्ठ बनाया,
जो भी इनकी शरण में आता-२, कर देते उद्धार॥
हम पर......॥ ४॥

(१०)

और सब भूलो भले माँ-बापको भूलो नहीं।
उपकार इनके हैं अनेकों बात यह भूलो नहीं॥
पूज पत्थर व्रत किये मुखड़ा लखा तब लालका।
इन पुनीतोंका हृदय पाषाण बन तोड़ो नहीं॥

ग्रास निज मुखका बचा तुमको खिला पाला तुम्हें।
अमृत सदृश उनके हृदयमें विष कभी घोलो नहीं॥
लाडसे तुमको पढ़ा कर्त्तव्य सब पूरे किये।
कर्त्तव्य इनके प्रति तुम्हारे तुम कभी भूलो नहीं॥
लाखों कमाता हो भले माँ-बाप जिसके ना हँसे।
वे लाख नहीं खाक हैं यह मानना भूलो नहीं॥
संतानसे सेवा चहो संतान सो सेवा करो।
जैसी करे वैसी भरे यह भावना भूलो नहीं॥
सूखे सुला तुमको सदा गीलेमें खुद वे सो गये।
स्नेह पूरित नैन ये गीले कभी करना नहीं॥
फूल जिनने हैं खिलाये नेहके तव राह पर।
उन राहियोंकी राहका कण्टक कभी बनना नहीं॥
धन दिये सब कुछ मिले माँ-बाप फिर मिलते नहीं।
दिन-रात इनके चरणकी तुम चाहना छोड़ो नहीं॥
माता-पिताकी भक्ति जो सुत श्रवण-सा बनकर करे।
कारज सकल 'आनन्द भैरव' सिद्ध माँ चण्डी करे॥

सच्चे हृदय से प्रार्थना जब भक्त सच्चा गाय है।
तो भक्त वत्सल कान में, वह पहुँच झट ही जाय है॥
नारायण हरि लगन में, ये पाँचों न सुहात।
विषय, भोग, निद्रा, हँसी, जगत प्रीत बहु बात॥
दौड़ सके तो दौड़ ले, जब लगि तेरी दौड़।
दौड़ थक्या धोखा मिट्या बस्तु ठौड़ की ठौड़॥
एक भरोसो एक बल एक आस बिस्वास।
एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास॥
बिगरी जनम अनेक की सुधरै अबही आजु।
होहि राम को नाम जपु तुलसी तजि कुसमाजु॥

श्रीगणेशजी

(११) श्रीगणेश-वन्दना

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

(१२)

आनन्द करन आवत है गणपति।
विघ्न हरन आवत है गणपति॥ टेर॥
गौरी रो पुत्र विनायक आवे, विनायक आवे।
और आवे रिद्धि सिद्धि, आनन्द करन॥ टेर॥
रामजी आवे, सीताजी आवे, सीताजी आवे।
और आवे लछमनजी, आनन्द करन॥ टेर॥
वेद पढ़न्ता ब्रह्माजी आवे, ब्रह्माजी आवे।
और आवे सावित्री, आनन्द करन॥ टेर॥
गंग जटा शिवशंकर आवे, शिवशंकर आवे।
और आवे पारवती, आनन्द करन॥ टेर॥
बांध घुघरा भैरूजी आवे।
और आवे हनुमन्ता, आनन्द करन॥ टेर॥
तुलसिदास आशा रघुवरकी।
हरि के चरण चित्त लावे आनन्द करन॥ टेर॥

(१३)

गाइये गनपति जगबन्दन।
संकर-सुवन भवानी-नन्दन॥
सिद्धि-सदन, गजबदन, बिनायक।
कृपासिंधु सुन्दर सब लायक॥
मोदक-प्रिय, मुद-मंगल-दाता।
बिद्या-बारिधि बुद्धि-बिधाता॥
माँगत तुलसिदास कर जोरे।
बसहिं रामसिय मानस मोरे॥

(१४)

गजानन्द सरकार पधारो, कीर्तन की सब त्यारी है,
आओ आओ, बेगा आओ, चाव दरश को भारी है॥ टेर॥

थे आओ जद काम बणैला, थां पर सारी बाजी है,
रणत भंवरगढ़ वाला सुणल्यो, चिन्ता म्हारे लागी है,
देर करो मत, ना तरसाओ, चरणां अर्ज हमारी है॥
गजानन्द सरकार पधारो॥ १॥

रिद्धि-सिद्धि संग ले आओ विनायक, द्यो दर्शन थारे भक्तां ने,
भोग लगावां, धोक लगावां, पुष्प चढ़ावा थारे चरणां में,
गजानन्द थारे हाथां में, अब तो लाज हमारी है॥
गजानन्द सरकार पधारो॥ २॥

भक्तां की तो विनती सुणलो, शिव-सुत प्यारो आयो हैं,
जय जयकार करो गणपति की, आकर मन हरषायो है,
बरसैलो रस अब भजनां में, 'थारी' महिमा न्यारी है॥
गजानन्द सरकार पधारो॥ ३॥

(१५)

घर में पधारो गजानन्दजी, म्हारे घर में पधारो।
रिद्धि-सिद्धि ले के आवो गणराजा, मेरे घर में पधारो॥
रामजी आवो लक्ष्मणजी आवो-२।
संग में लाओ सीता मैया, म्हारे घर में पधारो॥
ब्रह्माजी आवो, विष्णुजी आवो-२।
भोले शंकरजी चले आओ, म्हारे घर में पधारो॥
लक्ष्मीजी आवो, गौराजी आवो-२।
सरस्वती मैया को ले आवो, म्हारे घर में पधारो॥
विघ्न हर दो, मंगल कर दो-२।
कारज शुभ कर जाओ, म्हारे घर में पधारो॥

(१६)

घूमतड़ा घर आवो ओ हो, म्हारां प्यारा गजानन्द।
सभा में रंग बरसावो ओ हो, म्हारां प्यारा गजानन्द॥ १॥
रणक भवन से आप पधारो देवा रिद्धि-सिद्धि संग में लावो।
शिवजी संग गौरामाँ ने लावो, ओ हो म्हारां प्यारा गजानन्द...... ॥ २॥
ब्रह्मा पधारो देवा विष्णु पधारो देवा, संग में सरस्वती लावो।
संग में लक्ष्मी मैया लावो ओ हो म्हारां प्यारा गजानन्द........ ॥ ३॥
रामजी पधारो देवा लक्ष्मण जी पधारो संग में सीयासती लावो।
संग में हनुमानजी लावो -ओ हो म्हारां प्यारा गजानन्द........ ॥ ४॥
अगर चन्दन से करूँ आरती मोदक भोग लगावो।
लड्डुवन भोग लगावो. ओ हो म्हारां प्यारा गजानन्द........ ॥ ५॥
तानसेन तुमरो यश गावे, चरणों में शीश नवाओ।
भगतां री आश पुरावो, ओ हो म्हारां प्यारा गजानन्द...... ॥ ६॥

(१७)

घूमतड़ा घर आवो विनायक॥ टेक॥
रणत भँवर से आप पधारो,
रिद्धि सिद्धि ने संग ल्यावो विनायक॥ १ ॥
चन्दन चौकी बैठन देस्याँ,
मोतियन चौक पुरावां विनायक॥ २ ॥
कर असनान सिंहासन बैठो देवा,
केशर तिलक लगावां विनायक॥ ३ ॥
धूप दीप नैवेद्य आरती,
मोदक भोग लगावां विनायक॥ ४ ॥
"तानसेन" थारों यश गावे,
बेड़ा पार लगावो विनायक॥ ५ ॥

(१८)

दोहा—जय गणेश आनन्द करण विघ्न विनाशक हार।
रिद्धि सिद्धि दीज्यो प्रभु लाभ होय व्यापार॥
म्हाने बुद्धि दीज्यो महाराज, गजानन्द गौरी के नन्दा।
गौरी के नन्दा हो गजानन्द, गौरी के नन्दा॥ म्हाने०॥
पिता तुम्हारा है शिवशंकर, मस्तक पर चन्दा।
माता तुम्हारी पारवती है, ध्यावै सब बंदा॥ म्हाने०॥
मूषक वाहन दूँद दूँदाला, फरस हाथ लेन्दा।
गल बैजन्तीमाल बिराजे, चढ़े पुष्प गेन्दा॥ म्हाने०॥
जो नर तुमको नहीं मनावे, उसका भाग्य मंदा।
जो नर थारी करे ध्यावना चले रिजक धंधा॥ म्हाने०॥
विघ्न-निवारण, मंगल-कारण, विद्या वर देन्दा।
कहता 'कालूराम' भज्यां से, कटे पाप फन्दा॥ म्हाने०॥

(१९)

म्हारा प्यारा गजानन्द आईजो,
रिद्धि सिद्धि ने सागे लाईजो जी॥ म्हारा प्यारा……
थाने सब से पहला मनावाँ,
लड्डूवन को भोग लगावाँ,
थे मूसे चढ़कर आईजो जी॥ म्हारा प्यारा……
माँ पार्वती का प्यारा,
शिव शंकर लाल दुलारा,
थे बाँध पागड़ी आईजो जी॥ म्हारा प्यारा……
थे रिद्धि सिद्धि का दातारी,
थाने ध्यावे दुनिया सारी,
म्हारा अट्क्या काज बनाईजो जी॥ म्हारा प्यारा……
थारो भक्त मण्डल यश गावे,
थारे चरणां शीश नवावे,
म्हारी नैया पार लगाईजो जी॥ म्हारा प्यारा……

(२०)

मेरा विघ्न हरो महाराज, मनाऊँ आज।
गजानन्द प्यारा, गिरिजा के लाल दुलारा॥ टेर॥
पहले मैं तुझे मनाता,
फिर ध्याऊँ शारदा माता,
मेरे कण्ठ पे आय विराजो
हँस असवारा, गिरिजा॥ १॥
थारे सोहे मुकुट हजारी,
और ऋद्धि सिद्धि आज्ञा कारी,
थे सब देवन सरताज
करो निसतारा, गिरिजा॥ २॥

थारे सोहे दूंद दुन्दाला,
और गल वैजयन्ती माला,
थारे एक दन्त और सूण्ड
सोहे भुज चारा, गिरिजा॥ ३॥
अब 'सेवक' तुझे मनावे,
और 'भक्त सब' शीश नवावे,
मेरी नैया पड़ी मझधार, करो भवपारा
गिरिजा के लाल दुलारा॥ ४॥

(२१)

दोहा—सदा भवानी दाहिने सनमुख देव गणेश।
चार देव रक्षा करें ब्रह्मा विष्णु महेश॥

रूनक झुनक पग नेवर बाजे गजानन्द नाचे
गजानन्द नाचे भवन में गणपति जी नाचे……… । टेर।
मूषक वाहन सुण्ड-सुण्डाला एक दन्त साजे
गल पुष्पों की माला बिराजे कोटि काम ल्याजे……… ॥ १॥
रूनक………
पिता तुम्हारा हैं शिवशंकर नन्देश्वर साजे
माता तुम्हारी हैं श्री गिरजा सिंह चढ़ी गाजे……… ॥ २॥
रूनक………
बिघन निवारण मंगल कारण राजन पति राजे
तुलसिदास गणपति जो सुमरे दुःख दरिद्र भाजे……… ॥ ३॥

(२२)

सूंड सूंडाला दूँद दूँदाला, मस्तक मोटा कान,
गणपति देव बड़ा बलवान॥ टेक॥

जो गणपति को प्रथम मनाता, उसका सारा दुख मिट जाता।
रिद्धि सिद्धि सुख सम्पति पाता, भव से बेड़ा पार उतरता।
मेरी नैया पार करो मैं तेरा लगाऊँ ध्यान॥ १ ॥
पारवती के पुत्र हो प्यारे, सारे जग के तुम रखवारे।
भोलेनाथ हैं पिता तुम्हारे, सूर्य चन्द्रमा मस्तक धारे।
मेरा सारा दुख मिट जावे, देवो यही वरदान॥ २ ॥
रिद्धि सिद्धि तेरे संग में सोहे, मूस सवारी मन को मोहे।
तेरी दया जिस पर हो जावे, उसका दुख सुख में मिल जावे।
माला जपूँ मैं तेरी गणपति करूँ तेरा गुणगान॥ ३ ॥
अन्न धन में प्रभु बरकत तुम हो, विद्या में तुम बड़े निपुण हो।
प्रथम सभी में तुम्ही बने हो, नाम गजानन्द पाहि गये हो।
दूर करो प्रभु कष्ट हमारे, देव दया के निधान॥ ४ ॥

(२३)

हे चौसठ जोगणी ऐ भवानी मन्दिरये रमजाय,
घुमर घालणी ऐ देवी रे देवलीये रमजाय......॥ टेर॥
मन्दिरीये रमजाय ऐ भवानी देवलीये रमजाय-घुमर घालणी॥
हंस संवारी करी (जगदम्बे ब्रह्मा रूप बनायो)-२
चार वेद मुख चार कहीजे चारु वेद जस गायो॥ टेर॥
गरूड़ सवारी करी जगदम्बे विष्णु रूप बणायो,
विष्णु रूप बणायो नवदुर्गा विष्णु रूप बणायो।
गदा पदम और चक्र बिराजे, मधुबन बंशी बजायो॥ टेर॥
नन्दी सवारी करी जगदम्बे (शिवजी रो रूप बनायो)-२,
जटा मुकुट में गंगा सोवे शेषनाग लिपटायो॥ टेर॥
सिंह सवारी करी जगदम्बे (शक्ति रूप बणायो)-२
सीयाराम थारी करे स्तुति भगत मंगल जस गायो॥ टेर॥

श्री माताजी

(२४) श्रीसरस्वती-स्तोत्रम्

रविरुद्रपितामहविष्णुनुतं । हरिचन्दनकुंकुमपंकयुतम् ।
मुनिवृन्दगणेंद्रसमानयुतं । तव नौमि सरस्वति पादयुगम्॥ १ ॥
शशि-शुद्ध-सुधा-हिम-धाम-युतं । शरदंबर-बिंब-समान-करं।
बहुरत्न - मनोहर - कान्तियुतं । तव नौमि सरस्वति पादयुगम्॥ २ ॥
कनकाब्ज-विभूषित-भूति-भवं । भव-भाव-विभाषित-भिन्नपदं।
प्रभु-चित्त-समाहित-साधु-पदं । तव नौमि सरस्वति पादयुगम्॥ ३ ॥
भवसागर - मज्जन - भीति - नुतं । प्रतिपादित-संततिकारमिदं।
विमलादिकशुद्धविशुद्ध - पदं । तव नौमि सरस्वति पादयुगम्॥ ४ ॥
मतिहीन - जनाश्रय - पादमिदं । सकलागमभाषित-भिन्न पदं।
परिपूरित - विश्वमनेक - भवं । तव नौमि सरस्वति पादयुगम्॥ ५ ॥
परिपूर्ण- मनोरथ - धाम - निधिं । परमार्थ-विचार-विवेक-निधिं।
सुरयोषित - सेवित - पाद - तलं । तव नौमि सरस्वति पादयुगम्॥ ६ ॥
सुर-मौलि मणिद्युति-शुभ्र करं । विषयादिमहाभय-वर्णहरं।
निज कांति-विलेपित चन्द्र-शिवं । तव नौमि सरस्वति पादयुगम्॥ ७ ॥
गुण-नैककुल स्थिति भीति पदं । गुणगौरव-गर्वित-सत्य-पदं।
कमलोदर - कोमल - पाद - तलं । तव नौमि सरस्वति पादयुगम्॥ ८ ॥

त्रिसन्ध्यं यो जपेन्नित्यं जले वापि स्थलेस्थितः।
पाठमात्रभवेत्प्राज्ञो ब्रह्मनिष्ठः पुनः पुनः ॥ ९ ॥

(२५)

[हे शारदे माँ] २
अज्ञानता से हमें तार दे माँ॥ टेर॥
तू स्वर की देवी ये संगीत तुझसे
हर शब्द तेरा है हर गीत तुझसे। ऽ आ ऽ आ ऽ
हम हैं अकेले, हम हैं अधूरे
तेरी शरण हम, हमें तार दे माँ
हे शारदे माँ............... ॥ १ ॥
मुनियों ने समझी, गुणियों ने जानी
वेदों की भाषा, पुराणों की वाणी। ऽ आ ऽ आ ऽ
हम ही तो समझे, हम ही तो जाने
विद्या का हमको, अधिकार दे माँ
हे शारदे माँ............... ॥ २ ॥
तू श्वेत वरणी, कमल पे विराजे
हाथों में वीणा, मुकुट सर पे साजे। ऽ आ ऽ आ ऽ
मन से हमारे, मिटा दे अँधेरे
हमको उजालों का संसार दे माँ
हे शारदे माँ............... ॥ ३ ॥

(२६)

अम्बे कहो दुर्गा काली ओ मैया ढुढण वाली
करके कृपा थे पधारो (स्वागत) २ बोले नर नारी॥ टेर॥
आयी है भक्तों की टोली दर्शन की आस लगाये
बच्चे जवान और बूढ़े बैठे हैं नजरें बिछाये
दीपों की है जगमगाहट, आरती उतारे तुम्हारी॥ १॥
फल फूल मिष्टान मेवा, ल्याई हैं भक्तों की टोली

केसर भरे अरज लेकर, ल्याये हैं मेंहदी और रोली
अर्पित है सब ये तुम्हें माँ, श्रद्धा की भेंट हमारी॥ २॥
स्वागत करे साज मिलाकर, संगीत हैं जिनकी भाषा
दर्शन दे पूर्ण करो माँ, तुम अपने भक्तों की आशा
राग और सरगम सारे, समवेद महिमा तुम्हारी॥ ३॥
विनती करे बालमण्डल मैया तुम एक बार आवो
इन्कार करके न अपने भक्तों का दिल तुम दुखाओ
प्यासे हैं सबके नयन ये व्याकुल खड़ी भीड़ भारी॥ ४॥
करके कृपा थे पधारो........

(२७)

दोहा— जगतमात मातेश्वरी जग की पालनहार।
कृपा राखियो दास पर करियो भव से पार॥

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्परवाली।
तेरे ही गुण गाये आरती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती॥
तेरे जगत के भक्त जनन पर, पीड़ पड़ी है भारी।
दानव दल पर टूट पड़ो माँ, करके सिंह सवारी॥
सौ सौ सिंहों सी बलशाली, हे दश भुजाओंवाली,
दुष्टों को तू ही तो सँवारती, ओ मैया हम सब उतारें........॥
माँ बेटे का है इस जग में, बड़ा ही सुन्दर नाता।
पूत कपूत सुने हैं जग में, माता सुनी ना कुमाता।
सब पे अमृत बरसानेवाली, सबको हरसानेवाली,
मैया भँवर से उबारती, ओ मैया हम सब उतारें........॥
नहीं माँगते धन और दौलत, ना चाँदी ना सोना।
हम तो माँगे माँ तेरे मन में, एक छोटा सा कोना।

सब पे करुणा बरसानेवाली, विपदा मिटानेवाली,
सतियों के सत को सँवारती, ओ मैया हम सब उतारें……॥

(२८)

आज अम्बे मेरी तूँ कर दे पूरण कामना॥ टेर॥
धन-धन है दुर्गे महाराणी, अगम निगम है वेद बखानी।
तेरी महिमा का है अम्बे, कठिन पार है पावना॥ १॥
नित उठ माँ मैं तुम्हें मनाऊँ, आ चरणा में शीश झुकाऊँ।
दर्शन कर तेरा सुख पाऊँ, और नहीं कुछ चाहना॥ २॥
शाकम्भरी को भजे सबेरे, क्षमा, शिवा माँ नाम है तेरे।
महिषासुर मर्दनी है मैया, अरि की मार भगावना॥ ३॥
शैल सुता माँ शिव पटराणी, जया, सुधा तूँ ही रुद्राणी।
काली, लक्ष्मी और मृडाणी, शारद का गुण गावना॥ ४॥
करती दास पर दया घनेरी, आता माँ जो शरण में तेरी।
'सीताराम' सहारा चाहता, भक्तका मान बढ़ावणा॥ ५॥

(२९)

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥
दुर्गा दुर्गति दूर कर मंगल कर सब काज
मन मंदिर उज्ज्वल करो किरपा करके आज
ऐसा प्यार बहा दे मैय्या चरणों से लग जाऊँ मैं
सब अंधकार मिटा दे मैय्या दरश तेरा कर पाऊँ मैं
जग में आकर जग को मैय्या अब तक ना पहचान सका अब·····
क्यों आया हूँ कहाँ है जाना ये भी ना मैं जान सका ये·····
तू है अगम अगोचर मैय्या कहो कैसे लख पाऊँ मैं·····ऐसा०॥
करो कृपा जगदम्बे भवानी मैं बालक नादान हूँ मैं·····

नहीं आराधन जप तप जानू मैं अवगुण की खान हूँ मैं·····
दे ऐसा वरदान हे मैय्या सुमिरण तेरा गाऊँ मैं·····ऐसा० ॥
मैं बालक तू मैय्या मेरी निशदिन तेरी ओट है·····निश
तेरी किरपा ही में से ही भीतर जो भी खोट है·····भीतर
शरण लगा लो मुझको मैय्या तुझ पर बलि बलि जाऊँ मैं·····ऐसा० ॥

(३०)

जगदम्बे भवानी मैया, तेरा त्रिभुवन में छाया राज है
सोहे वेष कसुमल नीको, तेरे रत्नों का सिर पे ताज है ॥ टेर ॥
जब जब पीड़ पड़ी भक्तन पर, तब तब आय सहाय करे
अधम उद्धारण तारण मैय्या, युग युग रूप अनेक धरे
सिद्ध करती तूँ भक्तों के काज है, नाम तेरो गरीब नवाज है ॥ १ ॥ सोहे ॥
जल पर थल और थल पर सृष्टि, अद्भुत थांरी माया है
सुर नर मुनिजन ध्यान धरै नित, पार नहीं कोई पाया है
थारे हाथों में सेवक की लाज है, लियो शरण तिहारो मैय्या आज है ॥ २ ॥ सोहे ॥
मैं तुमको बुलाऊँ, तुम नहीं आवो, ऐसा कभी ना हो सकता,
बालक अपनी मैय्या से बिछुड़कर, सुख से कभी ना सो सकता,
मेरी नैय्या पड़ी मझधार है, अब तूँ ही तो खेवनहार है,
आजा रो रो पुकारे मेरी आत्मा, मेरी आत्मा की ये आवाज है ॥ ३ ॥ सोहे ॥

(३१)

तेरे कोमल-कोमल चरणों में, माँ मस्तक नवाता रहूँ। मात अम्बे ॥
हृदय से लगावो जगदम्बे, तेरा गुण जो मैं गाता रहूँ। मात अम्बे ॥
दर पे तुम्हारे आता हूँ, श्री फल भेंट चढ़ाता हूँ।
सुन जगदम्बे कर न विलम्बे, टेर सुनो दुःख पाता हूँ।
तेरे चरण-कमल में जग जननी,
नव पुष्प चढ़ाता रहूँ। मात अम्बे ॥

सिंह वाहिनी, अम्बे हो, विश्व मोहनी अम्बे हो।
चाँद सा मुखड़ा आन दिखा दो,
माँ जग की प्रतिपालक हो।
सब दोष माफ कर दे मेरा,
तेरी सेवा निभाता रहूँ। मात अम्बे॥
धरती का भार हटाती हो, कष्ट भक्त का ढोती हो।
जब सुरनर मुनि टेर सुनाते, माँ तुम दौड़ के आती हो।
मुझको ऐसा वर दो मैया,
तेरी सेवा निभाता रहूँ। मात अम्बे॥
जो तेरा ध्यान लगाता है, मुक्ति मार्ग वो पाता है।
देख के तेरा रूप सलोना, शेर खड़ा मुस्काता है।
मुझको भव पार लगा मैया,
तेरी ज्योति जगाता रहूँ। मात अम्बे॥

(३२)

तेरे नाम का पुजारी आया तेरे दर का भिखारी आया।
मैया दे दे दर्शन काटो सारे मेरे गम॥ टेर०॥
बिन देखे तुझे नींद आती नहीं माँ नहीं,
धोक खाये बिना याद जाती नहीं माँ नहीं,
होंठों पे है तेरा नाम रहता सुबह और शाम,
मेरे सिर पर हाथ फिरा जा……मैया दे दे॥ १ ॥
दर छोड़ तेरा माँ जाऊँ कहाँ माँ कहाँ,
दु:ख दरद मेरा माँ सुनाऊँ कहाँ माँ कहाँ,
माँ तूँ ही तो आधार तेरी महिमा अपार,
होके सिंह पे सवार माँ आजा……मैया दे दे॥ २ ॥

तेरे चरणों में कैसे लिपट जाऊँ माँ मेरी माँ
तुम कहाँ हो छुपी किस दर जाऊँ माँ मेरी माँ,
क्यों है इतनी खफा मुझे इतना बता,
मेरे नयनों में आके समा जा……मैया॥ ३ ॥

(३३)

भज अम्बे भगवती मकरन कल्याणी।
आदि शक्ति अविनाशी हो, दुर्गे महारानी।
सिंह चढ़ी पर्वत पर गाजे,
देशनोक में करणी विराजे।
दे बुद्धि वरदान, हे दुर्गे महारानी
भज अम्बे भगवती……… ॥
विघ्न निवारण आन भवानी
संकट टारो हे महारानी।
करते जै-जै कार हे दुर्गे महारानी
भज अम्बे जगदम्बे……… ॥
प्रेम सहित उमा को मनावो
निश-दिन गुण दुर्गे का गावो।
कर दो दारिद्र दूर हे दुर्गे महारानी,
भज अम्बे जगदम्बे……… ॥

(३४)

भागीरथ लायो मैया भाव से-२, भलाई जुगतारण हे गंगा॥
थाँरे नहायाँ सूं मैया पाप कटत है-२
निर्मल होय जाये अंगा भलाई जुगतारन हे गंगा।
भागीरथ लायो मैया…… ॥
हरि के चरण से निकली सुरसरि-२

रहती शिवजी के संगा, भलाई जुगतारन हे गंगा।
भागीरथ लायो मैया······ ॥
राजा सगर के पुत्र जो तारे-२
बह-बह लहरी तरंगा, भलाई जुगतारन हे गंगा।
भागीरथ लायो मैया······ ॥
ध्रुव प्रह्लाद की यही है विनती-२
तेरे चरणों में चित चंगा, भलाई जुगतारण हे गंगा।
भागीरथ लायो मैया······ ॥

(३५)

मेरे मन-मन्दिर में, माँ तेरा उजियारा है,
जगदम्बे, माँ दुर्गे मुझे तेरा सहारा है॥ टेर॥
तूँ ही ब्रह्माणी है, तूँ ही रुद्राणी है।
तूँ ही कमला राणी, तूँ वीणा-पाणी है।
तूँ सिंहवाहिनी है, तूँ ही माँ तारा है॥ जगदम्बे·········
तूँ सर्व मंगला है, महामाया काली है।
कोई पार नहीं पाया, तेरी महिमा निराली है।
जब जब भीड़ पड़ी, माँ तुझको पुकारा है॥ जगदम्बे·········
तूँ संकट-तारिणी है, तूँ भव-भय हारिणी है।
अपने भक्तों के लिए, अवतार धारिणी है।
भक्तों को तारा है, दुष्टों को संघारा है॥ जगदम्बे·········
सब नाम जपे तेरा, और ध्यान धरे तेरा।
'ताराचन्द' भी निशदिन, गुणगान करे तेरा।
ऐसा ही माँ वर दो, यह दास तुम्हारा है॥ जगदम्बे·········

श्रीशिवजी

(३६) श्रीशिवस्तुतिः

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी-सहितं नमामि॥

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवशङ्करम्॥

मन्दारमाला कलितालकायै कपालमालाङ्कितशेखराय।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय।

(३७) श्रीशिवमानसपूजा

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम्।
जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम्॥ १॥

सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम्।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु॥ २॥

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा।
साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया
सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो॥ ३॥

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्॥ ४॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो॥ ५॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचिता शिवमानसपूजा समाप्ता॥

(३८) द्वादशज्योतिर्लिङ्गानि

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम्॥ १॥
परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने॥ २॥
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये॥ ३॥
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥ ४॥

(३९) श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय॥ १॥
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय॥ २॥
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय॥ ३॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय॥ ४॥
य(क्ष)ज्ञस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय॥ ५॥
पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥ ६॥

(४०) लिङ्गाष्टकम्

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गं निर्मलभासितशोभितलिङ्गम्।
जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ १॥
देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गं कामदहं करुणाकरलिङ्गम्।
रावणदर्पविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ २॥
सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गं बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गम्।
सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ३॥
कनकमहामणिभूषितलिङ्गं फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम्।
दक्षसुयज्ञविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ४॥
कुङ्कुमचन्दनलेपितलिङ्गं पङ्कजहारसुशोभितलिङ्गम्।
सञ्चितपापविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ५॥
देवगणार्चितसेवितलिङ्गं भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम्।
दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ६॥
अष्टदलोपरि वेष्टितलिङ्गं सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम्।
अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ७॥
सुरगुरुसुरवरपूजितलिङ्गं सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम्।
परात्परं परमात्मकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ८॥
लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥ ९॥

(४१) श्रीरुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं॥
निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं। गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं॥
करालं महाकाल कालं कृपालं। गुणागार संसारपारं नतोऽहं॥
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं। मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं॥
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा। लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा॥
चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं। प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं। प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि॥
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं॥
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं। भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी। सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी॥
चिदानंद संदोह मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं। भजंतीह लोके परे वा नराणां॥
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां। नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं॥
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं। प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति॥

॥ इति श्रीगोस्वामीतुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं सम्पूर्णम्॥

(४२) शिवताण्डवस्तोत्रम्

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्॥ १॥

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी-
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्द्धनि।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम॥ २॥
धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर-
स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि॥ ३॥
जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा-
कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनोविनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि॥ ४॥
सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर-
प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः॥ ५॥
ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा-
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम्।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं
महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः॥ ६॥
करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल-
द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम॥ ७॥
नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुर-
त्कुहूनिशीथिनीतमःप्रबन्धबद्धकन्धरः।

निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः ॥ ८ ॥

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा-
वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम्।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥ ९ ॥

अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी-
रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम्।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥ १० ॥

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वस-
द्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट्।
धिमिद्धिमिद्धिमिद्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल-
ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ॥ ११ ॥

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्त्रजो-
र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम् ॥ १२ ॥

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन्।
विलोललोललोचनो ललामभाललग्नकः
शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥ १३ ॥

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम्।

हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम्॥ १४॥

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं
यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः॥ १५॥

इति श्रीरावणकृतं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

(४३) शिवमहिम्नःस्तोत्रम्

पुष्पदन्त उवाच

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः॥ १॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः॥ २॥

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता॥ ३॥

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः॥ ४॥

किमीहः किं कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥ ५ ॥

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥ ६ ॥

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥ ७ ॥

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति च भवद्भ्रूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥ ८ ॥

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥ ९ ॥

तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥ १० ॥

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद् बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम्॥ ११॥

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः॥ १२॥

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः॥ १३॥

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः॥ १४॥

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः॥ १५॥

मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम्।
मुहुर्द्यौर्दौःस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता॥ १६॥

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते।
जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः॥ १७॥

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः॥ १८॥

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्॥ १९॥

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः॥ २०॥

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः।
क्रतुभ्रेषस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः॥ २१॥

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः॥ २२॥

स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः॥ २३॥
श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि॥ २४॥
मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किल भवान्॥ २५॥
त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि॥ २६॥
त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत् तीर्णविकृति।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम्॥ २७॥
भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहितनमस्योऽस्मि भवते॥ २८॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः॥ २९॥

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः॥ ३०॥

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम्॥ ३१॥

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति॥ ३२॥

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
र्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य।
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार॥ ३३॥

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च॥ ३४॥

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्॥ ३५॥
दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः।
महिम्नः स्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥ ३६॥
कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुशशिधरमौलेर्देवदेवस्य दासः।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्यदिव्यं महिम्नः॥ ३७॥
सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम्॥ ३८॥
आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम्।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम्॥ ३९॥
इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः॥ ४०॥
तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः॥ ४१॥
एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते॥ ४२॥
श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः॥ ४३॥

॥ श्रीशिवमहिम्नःस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

(४४) ॐ महादेव शिवशंकर

ॐ महादेव शिवशङ्कर शम्भो उमाकान्त हर त्रिपुरारे।
मृत्युञ्जय वृषभध्वज शूलिन् गङ्गाधर मृड मदनारे॥
हर शिव शंकर गौरीशं वन्दे गङ्गाधरमीशं।
रुद्रं पशुपतिमीशानं कलये काशीपुरिनाथं॥
जय शम्भो जय शम्भो शिव गौरीशङ्कर जय शम्भो।
जय शम्भो जय शम्भो शिव गौरीशङ्कर जय शम्भो॥

(४५)

आज अयोध्या की गलियोंमें घूमे जोगी मतवाला,
अलख निरंजन खड़ा पुकारे देखूँगा दशरथ लाला॥ टेक॥
शैली सिंगी लिये हाथमें, अरु डमरू त्रिशूल लिये,
छमक छमाछम नाचे जोगी, दरस की मन में चाह लिये,
पगके घुघरू छमछम बाजे कर में जपते हैं माला॥ १ ॥
अंग भभूत रमावे जोगी, बाघम्बर कटि में सोहे,
जटा जूट में गंग बिराजे, भक्त जनोंके मन मोहे,
मस्तक पर श्रीचन्द्र बिराजे गल में सर्पन की माला॥ २ ॥
राज द्वार पे खड़ा पुकारे, बोलत है मधुरी बानी,
अपने सुतको दिखा दे मैया, ये योगी मनमें ठानी,
लाख हटाओ पर ना मानूँ, देखूँगा तेरा लाला॥ ३ ॥
मात कौशल्या द्वार पे आई, अपने सुत को गोद लिये,
अति विभोर हो शिव जोगी ने बाल रूप के दरस किये,
चले सुमिरत राम नाम को, कैलासी काशी वाला॥ ४ ॥

(४६)

ओ डमरू वाले बाबाजी
तेरा डमरू बजे डम-डम, अगड़ बम-बम (टेक)

तेरा रूप अनूप निराला है, गले में मुण्डन माला है।
तेरे जोरे साधु सन्त, तू ऊँचे परवत वाला है॥
माथे पर निर्मल चन्दा को, चमके है चमक चम-चम
॥ अगड़ बम-बम॥

तेरी जटा में गंगा साजे है, कर में त्रिशूल विराजे है।
देवन के संग नृत्य करे जब, डम-डम डमरू बाजे है॥
तेरे तन के ऊपर भस्मी की, रमके है रमक रम-रम।
॥ अगड़ बम-बम॥

जय जय शंकर कैलाशपति, वरदाता पुरन ब्रह्मजती।
चौमुख दिवला लेकर कर में, करे आरती पारवती॥
आँखों में बिजिया माता की, दमके है दमक दम-दम।
॥ अगड़ बम-बम॥

(४७)

एक दिन वो भोला भण्डारी बन करके बृज नारी
गोकुल में आ गये हैं।
पारवती भी मना के हारी, ना माने त्रिपुरारी,
गोकुल में आ गये हैं॥ १॥

पारवती से बोले मैं भी चलूँगा तेरे संग में।
राधा संग श्याम नाचे, मैं भी नाचूँगा तेरे संग में॥
रास रचेगी बृज में भारी मुझे दिखाओ प्यारी—
गोकुल में आ गये हैं॥ २॥

ओ मेरे भोले स्वामी, कैसे ले जाऊँ अपने साथ में।
मोहन के सिवा वहाँ कोई पुरुष न जाये रास में॥
हँसी करेगी, वृज की नारी, मानो बात हमारी—
गोकुल में आ गये हैं॥ ३॥

ऐसा बना दो मुझे, जाने ना कोई इस राज को।
मैं हूँ सहेली तेरी, ऐसे बताना बृजराज को॥
लगा के बिन्दिया, पहन के साड़ी, चाल चले मतवाली—
गोकुल में आ गये हैं॥ ४॥

हँस कर सखी ने कहा, बलिहारी जाऊँ इस रूप में।
एक दिन तुम्हारे लिए, आए मुरारी इस रूप में॥
मोहनी रूप बने बनवारी, अब है तुम्हारी बारी—
गोकुल में आ गये हैं॥ ५॥

देखा मोहन ने, समझ गये वो सब बात रे।
ऐसी बजाई बंशी, सुध-बुध भूले भोलेनाथ रे॥
सर से खिसक गई जब साड़ी, मुस्काये गिरधारी—
भोले शरमा गये हैं॥ ६॥

दीन दयालु तेरा, तब से गोपेश्वर हुआ नाम रे।
ओ भोले बाबा तेरा वृन्दावन में बना धाम रे॥
'ताराचन्द' कहे ओ त्रिपुरारी, रखियो लाज हमारी—
शरण में आ गये हैं॥ ४॥

(४८)

कर दे दीनों का दुःख दूर, ओ बाघम्बर वाले।
कर दे तू मेरा बेड़ा पार ओ शिवशंकर भोले॥
कोई चढ़ावे शिवजी जल की ओ धारा,
कोई चढ़ावे कच्चा दूध॥ ओ बाघम्बर॥
हरी हरी बेल की पत्तियाँ चन्दन चावल,
और चढ़ाऊँ फल फूल॥ ओ बाघम्बर॥
आक धतुरा शिवजी भोग लगत हैं,
भंगिया पीओ भरपूर॥ ओ बाघम्बर॥

नन्दी रे गण असवारी ओ शिवजी,
हाथ लिये हैं त्रिशूल॥ ओ बाघम्बर॥
गोरे गोरे अंग पर भस्मी रमावे,
गले सर्पों का हार॥ ओ बाघम्बर॥
बायें अंग मां गिरिजा बिराजे,
गोदी लियो है गणेश॥ ओ बाघम्बर॥
कंचन थाल कपूर की बात्ती भोला,
आरती करता नरनार॥ ओ बाघम्बर॥
सेवा न जानूं बाबा पूजा न जानूं,
जानूं तुम्हारो एक नाम॥ ओ बाघम्बर॥
सत्यनारायण स्वामी शरण तिहारी भोला,
शरण आये री राखो लाज॥ ओ बाघम्बर॥
अर्जी हमारी भोला मर्जी तुम्हारी,
अर्जी करो मंजुर॥ ओ बाघम्बर॥

(४९)

कैलाश के निवासी (नमो बार बार हूँ)-२।
आयो शरण तिहारी शंभो तार तार तू॥ टेर॥
भक्तों को शिव तूने कभी नाराज ना किया।
माँगा जिन्हें जो चाहा वरदान दे दिया।
बड़ा तेरा है दायरा (दातार बड़ा तू)-२।
आयो शरण......
बखान क्या करूँ, राखों के ढेर का।
चपटी भभूत में है, खजाना कुबेर का॥
हे गंगाधर, मुक्ति द्वार (ॐकार तू)-२।
आयो शरण......

क्या क्या नहीं दिया, भोले हम क्या प्रमाण दें,
बस गये हैं त्रिलोक शंभु तेरे दान से,
जहर पीया, जीवन दीया (कितना दातार तू)-२।
आयो शरण......

तेरी कृपा बिना ना हिले, एक भी तिनका,
चलता है श्वांस तेरी दया से हम सबका,
कहे भक्त एक बार (मोहे निहार तू)-२।
आयो शरण......

(५०)

चालो हे सखियाँ चालां हिमाचल के द्वारे राज।
गौरां बाई को बीन्द निरखस्याँ, गोरो है या कालो राज॥
चालो हे सखियाँ······॥

ऐसा कामण म्हारै, शिव भोले न सोहे राज।
शिव भोले न सोहे ये तो, गोरा बाई न मोहे राज॥
चालो हे सखियाँ······॥

बाघम्बर के वस्त्र पहने, अंग विभूति रमाये राज।
मस्तक पर तो चन्दा सोहे, जटा में गंग बिराजै राज॥
चालो हे सखियाँ······॥

कानां में कुण्डल सोहे, गल सर्पों की माला राज।
नन्दी की असवारी सोहे, त्रिशूल हाथ में धार्‌या राज॥
चालो हे सखियाँ······॥

भाँत-भाँत का आया बराती, कोई लूला कोई लंगड़ा राज।
भूत प्रेत न सागे ल्याया, शिव को रूप अनोखो राज॥
चालो हे सखियाँ······॥

भांग धतुरा को करै कलेवो, बिजिया खूब चढ़ावे राज।
शिव भोला का आया बराती, पापड़ पातल खावे राज॥
आया बराती पातल ने तो पापड़ समझ कर खावे राज॥
चालो हे सखियाँ······॥
शिव भोला को रूप देखकर, सखियाँ पाछी भागी राज।
सखियाँ यूँ कहवण लागी, बीन्द घणों ही भुण्डो राज।
चालो हे सखियाँ······॥
म्हे नहीं जाना म्हारो जोशी, जोशी कामण गारो राज।
जोशी जी को नेग चुकास्यां, कामणं ढीला छोड़ो राज॥
चालो हे सखियाँ······॥

(५१)

जय जय हरिहर गौरी शंकर ईश्वर दीन दयाला है
राम नाम में समय बिताना सच्चा धर्म हमारा है,
हरि भजन में चित्त लगाना सच्चा धर्म हमारा है॥ जय०॥
सुबह शाम दिन रात जपे, तब ही कल्याण हमारा है,
कैलाशी काशी के वासी, भोला डमरूवाला है॥ जय०॥
जटा जूट में गंग बिराजे, शीश चन्द्रमा न्यारा है,
गले बीच लिपटे है विषधर, कानन कुण्डलवाला है॥ जय०॥
नाव पड़ी मझधार बीच में, दीखता नहीं किनारा है,
भोलानाथ महेश्वर शम्भु, पार लगानेवाला है॥ जय०॥
अलख निरंजन भव दुख भंजन, भक्तों का प्रतिपाला है,
जो ध्यावे इच्छा फल पावे, पल में करत निहाला है॥ जय०॥
नैन खोलकर देख रे मनवा, जग में कौन तुम्हारा है,
भजन किये भव बन्धन टूटे, छूटै सब संसारा है॥ जय०॥

(५२)

[जय शिव शंकर-२] जय शंकर भोले
सब देवों में देव निराले जय बम-बम भोले॥ टेर॥
महादेव तू ने ही तो सब देवों का सन्ताप हरा
सागर-मन्थन में निकला विष तू ने अपने कण्ठ धरा
इसीलिए हर प्राणी तुझको नील कण्ठ बोले
सब देवों..........
तेरे नाम अनेकों बाबा तेरी महिमा न्यारी
तेरे भेद अनोखे सबसे क्या जाने संसारी
तू ही है कैलाशपति तू पर्वत पर डोले
सब देवों..........
शीश तुम्हारे गंगा मैया चन्द्र शिखर में सोहे
तन पे सर्प विचरते रहते, भक्तों के मन मोहे
उसको कैसा कष्ट जगत में नाम तेरा जो ले
सब देवों..........

(५३)

डमरुवाले बाबा तुमको आना होगा,
डम डम डमरु बजाना होगा,
माँ गोरां संग गणपतिजी को लाना होगा,
डम डम डमरु बजाना होगा॥ टेर॥
सावन के महीनेमें हम काँवड़ लेके आयेंगे-२
पावन गंगा जलसे बाबा तुमको नहलायेंगे,
कावड़ियों को पार लगाना होगा, डम-डम डमरु...॥ १॥

भाँग धतुरा दूध बाबा तुमपे चढ़ायेंगे,
केशरिया चंदन से बाबा तिलक लगायेंगे,
भगतों का कष्ट मिटाना होगा, डम-डम डमरु... ॥ २ ॥
तुम तो भोले दानी बाबा, जग से निराला है,
हाथों में त्रिशूल गल सर्पों की माला है,
नान्दिये पे चढ़कर आना होगा, डम-डम डमरु... ॥ ३ ॥
जैसा भी रखोगे बाबा वैसा ही मंजूर है,
तेरी दया तो बाबा पाना भी जरूर है,
भगतों को गलेसे लगाना होगा, डम-डम डमरु... ॥ ४ ॥
माँ गोरा संग गणपतिजीको लाना होगा,
डमरु वाले बाबा तुमको आना होगा॥

(५४)

देखो री एक बाला जोगी, द्वारे मेरे आया री।
बाघम्बर का ओढ़ दुशाला, शेषनाग लिपटाया री॥ टेर॥
माथे वाके तिलक चन्द्रमा, योगी जटा बढ़ाया री॥ १ ॥
देखो री एक बाला…… ॥
ले भिक्षा नन्द रानी निकसी, मोतियन थाल भराया री।
जा जोगी अपने आश्रम को, मेरा लाल डराया री॥ २ ॥
देखो री एक बाला…… ॥
ना चहिये तेरा हीरा मोती, ना चहिये धन माया री।
तेरे लाल का दरश दिखादे, काशी से चल आया री॥ ३ ॥
देखो री एक बाला…… ॥
ले बालक निकली नन्दरानी, जोगी दरशन पाया री
सात बेर परिकम्पा कीन्हीं, सींगी नाँद बजाया री॥ ४ ॥
देखो री एक बाला…… ॥

धन्य यशोदा माया री।
'सूरदास' गौ लोकधाम में, धन्य यशोदा माया री।
तीन लोक के कर्ता हर्ता, तेरी गोदमें आया री॥ ५ ॥
देखो री एक बाला……॥

(५५)

भोलानाथ अमली, म्हारा शङ्कर अमली।
हो जटाधारी अमली, बगियाँ माँय भँगिया घोटाय राखूँली।
रे छणाय राखूँली........

रत्न कटोरे बिजियां छाण राखूँली रे छणाय राखूँली। भोलानाथ अमली
कांई बोऊँ काशीजी में, कांई जी प्रयाग। (रामजी)
कांई बोऊँ हरकी पेड़ी, कांई जी कैलाश॥ शिवशंकर अमली
काशी जी में केशर बोऊँ, चन्दन प्रयाग। (रामजी)
हर की पेड़ी बिजियां बोऊँ, धतूरो कैलाश। शिवशंकर अमली
कांई माँगे नांदियोजी, कांई जी गणेश। (रामजी)
कांई माँगे भोलाशम्भु योगिया को वेश॥ शिवशंकर अमली
दुर्वा माँगे नांदियोजी, मोदक गणेश। (रामजी)
बिजियां माँगे भोलाशम्भु योगिया को वेश॥ शिवशंकर अमली
घोटे-घोटे नांदियोजी, छाणत गणेश। (रामजी)
भर-भर प्याला देवे गवरजा, पीवे भोलानाथ॥ शिवशंकर अमली
आकड़े की रोटी पोऊँ, धतुरा को साग। (रामजी)
बिजियां की तरकारी छमकूं, जीमो भोलानाथ॥ शिवशंकर अमली
चन्दन चढाऊँ, चावल चढाऊँ और चढाऊँ बील। (रामजी)
धतुरा को फूल चढाऊँ, गंगाजी को नीर॥ शिवशंकर अमली
नाचे नाचे नांदियोजी, नाचे रे गणेश। (रामजी)
नाचे म्हारो भोला शम्भू, योगियां को भेष॥ शिवशंकर अमली

निर्धनियां तो धनड़ो माँगे, राजा माँगे रूप। (रामजी)
कुष्ठी माँगे निर्मल काया, बाँझ माँगे पूत॥ शिवशंकर अमली
निर्धनियां ने धनड़ो देवे, राजा देवे रूप।(रामजी)
कुष्ठी देवे निर्मल काया, बाँझ देवे पूत॥ शिवशंकर अमली
आगे-आगे नांदियोजी, लारे रे गणेश। (रामजी)
बीच बिचाले चाले गवरजा, जोगियां को भेष॥ शिवशंकर अमली
कैलाश पर्वत तपे महादेव, नांदियो चेलो साथ। (रामजी)
भक्त-मण्डल-भगवान से माँगे, भक्ति ज्ञान वैराग्य॥ शिवशंकर अमली

(५६)

भोलेनाथ चले आवोऽऽ 2
शिव शंकर भोले भंडारी, आकर दर्श दिखावो॥ टेर ॥
बैल चढ़े शिवशंकर आये, हर-हर बम-बम गावो,
सिंह चढ़ी माँ गौरां आई, पुष्पन हार पहरावो,
मूषक ऊपर आये गजानन्द, मोदक भोग लगावो। भोलेनाथ……
गंगाजल अभिषेक करावो, केशर तिलक लगावो,
आक धतूरा भोग लगावो, बिल्व पत्र भी चढ़ावो,
धूप दीप से करो आरती, बिजिया गहरी घुटावो। भोलेनाथ……
मस्तक उपर शीतल चन्दा, जटा से गंग बहाये,
कटि में है बाघम्बर सुन्दर, नीलकण्ठ कहलाये,
नन्दीश्वर की सजे सवारी, डम-डम डमरु बजावो। भोलेनाथ……
सब देवन में देव बड़े हैं, भस्मी अंग रमाये,
भीख माँग भूतल पर लोटे, विषधर गल लिपटाये,
सुर-नर असुर मनाये सबही, गुण भोले के गावो। भोलेनाथ……
गिरिजापति, कैलाशपति हो, त्रिभुवनपति कहलावो,
निराकार साकार बनो प्रभु, दर्श की प्यास बुझावो,

युग-युग से हम बिलख रहे हैं, अब तो धीर बँधावो। भोलेनाथ·····
ऐसे हैं वरदानी बाबा, जो माँगो सो देते,
भले बुरे में भेद न रखते, शरण में सबको लेते।
"भक्तों" की बिनती सुन कर, सबकी आश पुरावो। भोलेनाथ·····

(५७)

शिव आये यशोदा के द्वार मात मोहे दर्शन करा।
मेरा सोया हुआ है कुमार बाबा ले भिक्षा जा॥ टेर॥
कैलाश पर्वत से आया मैं आता
जन्मा तेरे घर में जग का विधाता
दर्शन करा माँ अपार-मात मोहे दर्शन करा॥ १॥
तेरे गले में बाबा सर्पों की माला
जिसे देख डर जायेगा मेरा लाला
हट ना करो बार बार बाबा ले भिक्षा जा॥ २॥
डरता है जिससे जगत माँ ये सारा
उसको डराऊँगा मैं क्या बेचारा
महिमा बड़ी है अपार-मात मोहे दर्शन करा॥ ३॥
मुश्किल से यह दिन मेरे घर में आया
बीती उमरिया में बेटा जो पाया
वन्दन करूँ बार-बार बाबा ले भिक्षा जा॥ ४॥
बेटा समझती है जिसको तू माता
वो ही तो है सारे जग का विधाता
अर्चन करूँ बार-बार मात मोहे दर्शन करा॥ ५॥
डरती यशोदा मैया अन्दर को धाई
गोदी में अपने कन्हैया को लाई
देवों ने कीन्हीं जय-जयकार मात मोहे दर्शन करा॥ ६॥

(५८)

हरि ॐ नमः शिवाय-२ ॥ टेर ॥
मेरी टेर सुनो त्रिपुरारी, अब तो लो खबर हमारी,
तेरे द्वार पे हैं आये ॥ हरि ॐ.............. ॥ १ ॥
तेरी जटामें गंगा विराजे, माथे पर चन्दा साजे,
और डम-डम डमरू बजाये ॥हरि ॐ.......... ॥ २ ॥
तेरी लीला सबसे न्यारी, जिसे जाने दुनिया सारी,
तेरी महिमा वरणी ना जाये ॥ हरि ॐ................ ॥ ३ ॥
करूँ अर्पन तन मन तुझको, खुशहाल करो प्रभु मुझको,
बाबा अब क्यों देर लगाये ॥ हरि ॐ................ ॥ ४ ॥
क्यों करता है मुझसे बहाने, क्या खाली हुए खजाने,
बाबा औघड़ दानी कहाए ॥ हरि ॐ................ ॥ ५ ॥
बाबा अंग विभूति रमाये, नित भांग धतूरा खाये,
श्रीराम का ध्यान लगाये ॥ हरि ॐ................ ॥ ६ ॥
ये भक्त तेरा गुण गाये, तेरे चरणोंमें शीश नवाये,
गुणगान करे चित लाय ॥ हरि ॐ .... ॥ ७ ॥

(५९)

जय बोलो शिव शंकर की, कर त्रिशूल डमरू धर की।
माथे चन्द्र छटा धारी, शोभा सुरपुर से भी न्यारी।
जय गिरिजापति नटवर की ॥ कर त्रिशूल डमरू.....
गौरीपति कुण्डल वाले, अंग विभूति मुण्डमाले।
शीश पर शोभा विषधर की ॥ कर त्रिशूल डमरू....
अन्तर्यामी घट घट के, जटा में श्री गंगा छटके।
आएँ शरण सदा हर-हर की। कर त्रिशूल डमरू....
दिल में दर्श की आशा मेरे, विश्वम्भर है अब शरण तेरे।
हो दया दृष्टि श्री प्रभुवर की ॥ कर त्रिशूल डमरू....

श्रीरामजी

(६०) श्रीराम प्रार्थना

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्‌भुत रूप बिचारी॥
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी॥
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता॥
करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता॥
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा॥

दोहा—बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार॥

(६१) श्रीराम प्रार्थना

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंता॥
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानइ कोई।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सोई॥

जय जय अबिनासी सब घट बासी ब्यापक परमानंदा।
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा॥
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगत मोह मुनिबृंदा।
निसि बासर ध्यावहिं गुनगन गावहिं जयति सच्चिदानंदा॥
जेहिं सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई संग सहाय न दूजा।
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा॥
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरूथा।
मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी सरन सकल सुरजूथा॥
सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहुँ कोउ नहि जाना।
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना॥
भव बारिधि मंदर सब बिधि सुंदर गुनमंदिर सुखपुंजा।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा॥

जानि सभय सुर भूमि सुनि बचन समेत सनेह।
गगनगिरा गंभीर भइ हरनि सोक संदेह॥

(६२) शिवद्वारा श्रीरामस्तुति

जय राम रमारमनं समनं। भवताप भयाकुल पाहि जनं॥
अवधेस सुरेस रमेस बिभो। सरनागत मागत पाहि प्रभो॥
दससीस बिनासन बीस भुजा। कृत दूरि महा महि भूरि रुजा॥
रजनीचर बृंद पतंग रहे। सर पावक तेज प्रचंड दहे॥
महि मंडल मंडन चारुतरं। धृत सायक चाप निषंग बरं॥
मद मोह महा ममता रजनी। तम पुंज दिवाकर तेज अनी॥
मनजात किरात निपात किए। मृग लोग कुभोग सरेन हिए॥
हति नाथ अनाथनि पाहि हरे। बिषया बन पावँर भूलि परे॥
बहु रोग बियोगन्हि लोग हए। भवदंघ्रि निरादर के फल ए॥
भव सिंधु अगाध परे नर ते। पद पंकज प्रेम न जे करते॥

अति दीन मलीन दुखी नितहीं। जिन्ह कें पद पंकज प्रीति नहीं॥
अवलंब भवंत कथा जिन्ह कें। प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह कें॥
नहिं राग न लोभ न मान मदा। तिन्ह कें सम बैभव वा बिपदा॥
एहि ते तव सेवक होत मुदा। मुनि त्यागत जोग भरोस सदा॥
करि प्रेम निरंतर नेम लिएँ। पद पंकज सेवत सुद्ध हिएँ॥
सम मानि निरादर आदरही। सब संत सुखी बिचरंति मही॥
मुनि मानस पंकज भृंग भजे। रघुबीर महा रनधीर अजे॥
तव नाम जपामि नमामि हरी। भव रोग महागद मान अरी॥
गुन सील कृपा परमायतनं। प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं॥
रघुनंद निकंदय द्वंद्वघनं। महिपाल बिलोकय दीनजनं॥

बार बार बर मागउँ हरषि देहु श्रीरंग।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग॥
बरनि उमापति राम गुन हरषि गए कैलास।
तब प्रभु कपिन्ह दिवाए सब बिधि सुखप्रद बास॥

(६३) श्रीराम-स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं।
नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज पद कंजारुणं॥
कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील-नीरद सुन्दरं।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं॥
भजु दीनबन्धु दिनेश दानवदैत्यवंश-निकंदनं।
रघुनंद आनँदकंद कोशलचंद दशरथ-नंदनं॥
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूषणं।
आजानुभुज शर-चाप-धर संग्राम-जित-खरदूषणं॥

इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खलदल-गंजनं॥
मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली॥
सो०— जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥

॥ सियावर रामचन्द्रकी जय॥

(६४)

आया आया आया! म्हारे राम-लखन घर आया॥ टेर ॥
जब देख्या रघुवर आता, ज्यारे सँग में लक्ष्मण भ्राता।
वा दौड़ी-दौड़ी आई, हरि-चरण गई लिपटाई॥ घर०॥
उठ-उठ ये शबरी माई, यूं कहन लग्या रघुराई।
तनकी सुध-बुध बिसराई, उठ प्रेममें गई समाई॥ घर०॥
घर पर प्रभुको ले आई, तुमड़ी में जल भर लाई।
हरिचरण पखारण लागी, धन-धन शबरी बड़भागी॥ घर०॥
आसण पर दिया बिठाई, छबड़ीमें फल भर लाई।
चुन-चुनकर प्रभु को देवे, हरि माँग-माँग कर लेवे॥ घर०॥
सुन-सुन रे लक्ष्मण भाई, ले मीठा फल तूं खाई।
म्हे बन-बनमें फिर आया, नहीं इस्या तो भोजन पाया॥ घर०॥

(६५)

कभी कभी भगवान को भी भक्तों से काम पड़े
जाना था गंगा पार प्रभु केवट के नाव चढ़े-२
अवध छोड़ प्रभु वन को धाए
सिया राम लखन गंगातट आए
केवट मन ही मन हरसाये
घर बैठ प्रभु दर्शन पाए
हाथ जोड़ कर प्रभु के आगे केवट मगन खड़े
जाना था.......
प्रभु बोले तुम नाव चलाओ
पार हमें केवट पहुँचाओ
केवट कहता सुनो हमारी
चरण धूल की माया भारी
मैं गरीब नैया मेरी नारी न होय पड़े
जाना था.......
केवट दौड़ के जल भर लाया
चरण धोय चरणामृत पाया
वेद ग्रन्थ जिनके यश गाये
केवट उनको नाव चढ़ाये
बरसे फूल गगन से ऐसे भक्ति के भाग बड़े
जाना था.......
चली नाव गंगा की धारा
सिया राम लखन को पार उतारा
प्रभु देने लगे नाव उतराई
केवट कहे नहीं रघुराई
पार किया मैंने तुमको अब तू मोहे पार करे
जाना था.......

(६६)

कभी राम बनके, कभी श्याम बनके
चले आना, प्रभुजी चले आना-२
तुम राम रूप में आना-२ प्रभु
सीता साथ ले के, धनुष हाथ ले के-२
चले आना, प्रभुजी चले आना-२
तुम श्याम रूप में आना-२ प्रभु
राधा साथ ले के, मुरली हाथ ले के-२
चले आना, प्रभुजी चले आना-२
तुम शिव के रूप में आना-२ प्रभु
गौरा साथ ले के, डमरु हाथ ले के-२
चले आना, प्रभुजी चले आना-२
तुम विष्णु रूप में आना-२ प्रभु
लक्ष्मी साथ ले के, चक्र हाथ ले के-२
चले आना, प्रभुजी चले आना-२
तुम गणपती रूप में आना-२ प्रभु
रिद्धि साथ ले के, सिद्धि साथ ले के-२
चले आना, प्रभुजी चले आना-२

(६७)

घर आवेंगे एक दिन राम, शबरी के हरष भयो॥ टेर॥
बोले बचन मतंग ऋषि तूँ सुन शबरी दे कान।
एक समय तेरे घर शबरी, आवेंगे लछमन राम॥ १ ॥
वचन सुनत निश्चय मन कीन्हो, छोड्यो घरको काम।
बार बार घर बाहर आवे, देखन लछमन राम॥ २ ॥

चाख चाख नित ही फल लावे, नित ही बनमें जाय।
खड़ी खड़ी वो बाट निहारे, कब दरशन दे आय॥ ३॥
श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई, घर पर पहुँचे आय।
प्रेम मगन मुख बचन न आवे, चरनो में गई लपटाय॥ ४॥
चरन धोइ चरनामृत लीन्हो, आसन दियो बिछाय।
कन्द मूल फल प्रभु को दीन्हा, रुचि रुचि भोग लगाय॥ ५॥
ऐसी अधम जाति शबरी को, दी निज धाम पठाय।
श्याम कहे विशवास रखे से, दे दरशन घर आय॥ ६॥

(६८)

जग में सुन्दर हैं दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम।
बोलो राम, राम, राम, बोलो श्याम, श्याम, श्याम॥
माखन बृज में एक चुरावे, एक बेर भिलनी के खावे।
प्रेम भाव से भरे अनोखे दोनों के हैं काम॥ चाहे०॥
एक कंस पापी को मारे, एक दुष्ट रावण संहारे
दोनों दीन के दुःख हरत हैं दोनों बल के धाम॥ चाहे०॥
एक राधिका के संग राजे, एक जानकी संग विराजे
चाहे सीताराम कहो, या बोलो राधेश्याम॥ चाहे०॥

(६९)

तेरे मन में राम तन में राम, रोम रोम में राम रे
राम सुमिर ले ध्यान लगा ले छोड़ जगत के काम रे...
माया में तू उलझा उलझा दर-दर धूल उड़ाये
अब करता क्यों मन भारी जब माया साथ छुड़ाये
दिन तो बीता दौड़ धूप में ढल जाए ना शाम रे...

तन के भीतर पांच लुटेरे डाल रहे हैं डेरा
काम क्रोध मद लोभ मोह ने मुझको ऐसा घेरा
भूल गया तू राम रटन भूला पूजा का काम रे...
बचपन बीता खेल खेल में भरी जवानी सोया
देख बुढ़ापा सोचे अब तू क्या पाया क्या खोया
देर नहीं है अब भी बन्दे ले ले उसका नाम रे...

(७०)

तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार, उदासी मन काहे को करे।
काहे को डरे रे काहे को डरे॥ टेर॥
नैया तेरी राम हवाले, लहर लहर हरि आप सम्भाले।
हरि आप ही उठावे तेरा भार॥ उदासी०॥
काबू में मंझधार उसीके, हाथों में पतवार उसीके।
तेरी हार भी नहीं तेरी हार, उदासी मन काहे को करे॥ उदासी०॥
सहज किनारा मिल जायेगा, परम सहारा मिल जायेगा।
डोरी सौंप दे तूँ उन्हीं के हाथ॥ उदासी०॥
तूँ निर्दोष तुझे क्या डर है, पग-पग पर साथी ईश्वर है।
जरा भावना से कर ले पुकार॥ उदासी०॥

(७१)

बेटा श्रवण पाणीड़ो पिलाय बन में लाला प्यास लगी॥
मात पिता की काँवर ढोकर, विकट जंगल में जाय।
हरिये पेड़ कदम के नीचे काँवर दीनी रे उतार॥ बन०॥
ना कोई कुँवा बावड़ी रे ना कोई समुद्र तालाब।
श्रवण बन में सोच करे रे, आछी करी रे भगवान॥ बन०॥
उत्तर दिशा में देखियो कोई बगुलो उड़तो जाय।
ले झारी श्रवण बोल्यो अब जल ल्याऊ ए मोरी माँय॥ बन०॥

ले झारी अब श्रवण चाल्यो, सरयू नदी के तीर।
नीचे होके भरने लाग्यो, दशरथजी मारयो उण र तीर॥ बन०॥
लग्यो बाण पर्‍यो धरती पर राम नाम मुख माय।
दशरथ मन में सोच करत है दिन्यो कोई भगत सताय॥ बन०॥
मरतो-मरतो श्रवण बोल्यो, सुन राजा मेरी बात।
माता-पिता मेरा तिसाया, उनको जल भर पाय॥ बन०॥
ले झारी अब दशरथ चाल्यो, माता पिता के पास।
धीरे-धीरे बोलन लाग्यो अब जल पीवो मोरी माँय॥ बन०॥
ना श्रवण री बोली रे लाला, ना श्रवण की चाल।
थे तो म्हान दीखो पराया, साची-साची थे देवो बताय॥ बन०॥
अयोध्या रो राजा हूँ मैं दशरथ म्हारो नाम।
लाग्यो बाण पर्‍यो धरती पर, श्रवण पधार्‍यो धाम॥ बन०॥
तू हत्यारो श्रवण को रे, म्हाने मत बतलाय।
म्हे तो मरां बेटे के पीछे, ऐसे ही तू मर जाय॥ बन०॥

(७२)

भज मन रामचरन सुखदाई॥ ध्रु०॥
जिहि चरननसे निकसी सुरसरि संकर जटा समाई।
जटासंकरी नाम पर्‍यो है, त्रिभुवन तारन आई॥
जिन चरननकी चरनपादुका भरत रह्यो लव लाई।
सोइ चरन केवट धोइ लीने तब हरि नाव चलाई॥
सोइ चरन संतन जन सेवत सदा रहत सुखदाई।
सोइ चरन गौतमऋषि-नारी परसि परमपद पाई॥
दंडकबन प्रभु पावन कीन्हो ऋषियन त्रास मिटाई।
सोई प्रभु त्रिलोकके स्वामी कनक मृगा सँग धाई॥

चरणामृत मैं सबको पिलाऊँ, तुम्हें फूलों की भेंट चढ़ाऊँ!
ऐसा समय बारबार, आता नहीं सरकार, सुनो सुनो प्राणाधार,
कैसे बिठाऊँ तुम्हें नाव में॥ ४॥

धीरे धीरे वो नाव चलाता, वह तो गीत खुशी के गाता!
कहता मन में यूँ हो जाता, नहीं होनी चाहिये रात,
सूरज सुन लो मेरी बात, कैसे बिठाऊँ तुम्हें नाव में॥ ५॥
ले लो मल्लाह ये उतराई, मेरे पल्ले नहीं कुछ भाई!
यह तो कर लो स्वीकार, तेरा होगा बेड़ा पार,
तेरी होगी जय-जयकार, कैसे बिठाऊँ तुम्हें नाव में॥ ६॥
जैसे तुम हो खिवइया, वैसे हम हैं, भाई-भाई से लेना शरम है।
मैंने नदी की है पार, करना भवसागर तुम पार,
'परमानन्द' की पुकार, कैसे बिठाऊँ तुम्हें नाव में॥ ७॥

(७५)

यो धनुष बड़ो विकराल, रघुबर छोटो-सो।
बड़ो कठिन पण पिता कियो, कोई रँच न कियो विचार॥ रघु०॥
कमल जिसो तन राम रो, यो धनुष बजर सो जान॥ रघु०॥
धनुष चढ़ो चाहे ना चढ़ो, म्हारो राम भँवर-भरतार॥ रघु०॥
छोटो-छोटो मती कहो, यो पूरण ब्रह्म औतार॥ रघु०॥
सूरज छोटो सो लगै, सब जगमें करे प्रकाश॥ रघु०॥
रघुवर चाप चढ़ावसी, सखि! इनमें फेर न सार॥ रघु०॥

(७६)

रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीताराम।
पीड़ पड़ी भक्तों ने पुकारा, आन हरो प्रभु कष्ट हमारा,
तब दशरथ घर जन्मे राम, पतित पावन...... ॥ १ ॥

विश्वामित्र महामुनि आए, दशरथ जी को वचन सुनाए,
संग भेज दो लक्ष्मण राम, पतित पावन...... ॥ २ ॥
ताड़क वन में ताड़िका मारी, गोतम नारी अहिल्या तारी,
सब ऋषियों के सारे काम, पतित पावन...... ॥ ३ ॥
जाय जनकपुर शिव धनु तोड़ा, जनकसुता से नाता जोड़ा,
कैसी सुन्दर जोड़ी राम, पतित पावन...... ॥ ४ ॥
सीता व्याह राम घर आए, घर घर आनन्द मंगल छाए,
मात कौशल्या करे आरती, पतित पावन...... ॥ ५ ॥
राज तिलक की भई तैयारी, कैकयी ने सब बात बिगाड़ी,
चौदह वर्ष गये वन में राम, पतित पावन...... ॥ ६ ॥
श्रृंगवेर पुर गए रघुराई, केवट ने नैया पार लगाई,
गंगापार हुए भगवान, पतित पावन...... ॥ ७ ॥
चित्रकूट में आए राम, सब देवन के सारे काम,
भरत मिलाप करे भगवान, पतित पावन...... ॥ ८ ॥
अयोध्या जी में भरत जी आए, नंदीग्राम एक नया बसाए,
पादुका राज चलाए राम, पतित पावन...... ॥ ९ ॥
पंचवटी में आए रघुराई, सूर्पनखा की नाक कटाई,
खरदूषण को मारे राम, पतित पावन...... ॥ १० ॥
मृग मारने राम जी सिधाये, सीताने लक्ष्मण को पठाए,
रावण ले गया सीता-राम, पतित पावन...... ॥ ११ ॥
ऋष्यमूक पर्वत गए रघुराई, सुग्रीव से किन्हीं मित्राई,
बाली को मार गिराए राम, पतित पावन...... ॥ १२ ॥
सीता खोजन हनुमान जी सिधारे, समुद्र लांघ कर लंका आए,
मुद्रिका गोद गिराए हनुमान, पतित पावन...... ॥ १३ ॥

मेघनाद से युद्ध मचायो, ब्रह्मपास में बंधकर आयो,
लंका दहन करी हनुमान, पतित पावन...... ॥ १४ ॥
सीता कंगन दियो उतार, लेकर चले पवन कुमार,
आए उतरे सागर के पार, पतित पावन...... ॥ १५ ॥
कंगन लाय रघुवर को दीन्हा, समाचार सीताजी का दीन्हा,
सीता विकल सुने भगवान, पतित पावन...... ॥ १६ ॥
सीता विकल सुने रघुराई, अँखियाँ प्रेम नीर भरि आई,
हनुमत कंठ लगाए राम, पतित पावन...... ॥ १७ ॥
सागर ऊपर शिला तिराई, बानर सेना पार लगाई,
रामेश्वर को थरपै राम, पतित पावन...... ॥ १८ ॥
मेघनाद से हुई लड़ाई, लक्ष्मणजी को मुरछा आई,
हनुमत को पठाए राम, पतित पावन...... ॥ १९ ॥
हनुमान संजीवन लाए, ले बूटी लक्ष्मण को पिलाए,
सूत्यो सिंह जगाए राम, पतित पावन...... ॥ २० ॥
लंकापति रावण को मारे, राज्य विभीषण को दे डारे,
सीता लेकर लौटे राम, पतित पावन...... ॥ २१ ॥
मात कौशल्या आरती उतारे, सब देवन जय जयकार पुकारे,
राज सिंहासन बैठे राम, पतित पावन...... ॥ २२ ॥
अखिल जगत के हो तुम मालिक, राघव रूप चराचर नायक,
भव सागर से तारो राम, पतित पावन...... ॥ २३ ॥
तुलसीदास भजौ भगवान, हरि चरणों में ध्यान लगाना,
पूरन होसी सबका काम, पतित पावन...... ॥ २४ ॥
रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम

(७७)

रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम॥ १ ॥
सीताराम सीताराम, भज प्यारे तू सीताराम॥ २ ॥
राम कृष्ण हैं तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान॥ ३ ॥
दीन-दयालु राजा राम, पतित पावन सीताराम॥ ४ ॥
जय रघुनन्दन जय सियाराम, जानकी बल्लभ सीताराम॥ ५ ॥
जय रघुनन्दन जय घनश्याम, रुक्मिणी-बल्लभ राधेश्याम॥ ६ ॥
जय मधुसूदन जय गोपाल, जय मुरलीधर जय नन्दलाल॥ ७ ॥
जय दामोदर कृष्ण मुरार, देवकीनन्दन सर्वाधार॥ ८ ॥
जय गोविन्द जय गोपाल, केशव माधव दीनदयाल॥ ९ ॥
राधाकृष्ण जय कुंजबिहारी, मुरलीधर गोबर्धन धारी॥ १० ॥
दशरथ नन्दन अवधकिशोर, यशुमतिसुत जय माखन चोर॥ ११ ॥
कौशल्या के प्यारे राम, यशुमति सुत जय नव घनश्याम॥ १२ ॥
बृन्दावन मथुरा में श्याम, अवधपुरी में सीताराम॥ १३ ॥
जय गिरिजापति जय महादेव, जय जय शम्भो जय महादेव॥ १४ ॥
जय जय दुर्गा, जय माँ तारा, जय गणेश जय शुभ आगारा॥ १५ ॥

(७८)

रघुवर जी! थारा दरसण री बलिहारी म्हारा श्याम॥ टेर॥
धनुष भँवारा बाँकड़ा नैण तुम्हारा तीर।
ईणासू जे घायल हुआ, वे नहीं धरसी धीर॥
रघुवर जी! फिर थे धनुष बाण क्यों धारो॥ म्हारा श्याम॥
राम पधारया पावणा, कांई करूँ मनवार।
आपोही अरपण करूँ, तन-मन-धन सब वार॥
साँवरा जी! थांरा चरणाँ सू चित लाग्यो॥ म्हारा श्याम॥
मनसाने कर माछली, नेह तुम्हारो नीर।
छिन भर ही छूटे नहीं, रंग थारो रघुवीर॥

रघुवीर जी! म्हारी ईण विध लगन लगावो॥ म्हारा श्याम॥

पणिहारी भूले नहीं, सिर पर घड़े को ज्ञान।

यूँ म्हाने बणियो रहे, निशदिन थांरो ध्यान।

साँवरा जी! म्हारी सांची सुरत लगावो॥ म्हारा श्याम॥

(७९)

राम चरण चित लाना कभी न भूलाना

कि जीवन दो दिन का॥ टेर॥

ये जीवन है जंगल की लकड़ी-२

आग लगे जल जाना, कभी न भूलाना॥ कि जीवन दो...॥

ये जीवन है कागज का पुतला-२

हवा लगे उड़ जाना, कभी न भूलाना॥ कि जीवन दो...॥

ये जीवन है माटी का ढेला-२

पानी लगे गल जाना, कभी न भूलाना॥ कि जीवन दो...॥

(८०)

राम नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊँ गली गली।

लूट सको तो लूटल्यो कोई बिन दाम लूटाऊँ गली गली।

राम नाम......

जिस जिस ने लूटे ये मोती वो नर माला माल हूवे

जो माया के बने पुजारी आखिर वो कंगाल हूवे

राम नाम तेरे संग जायेगा मैं समझाऊँ घड़ी घड़ी

राम नाम......

दौलत के दिवानो सुन लो एक दिन ऐसा आयेगा

धन यौवन और रूप खजाना यहीं पड़ा रह जायेगा

सुन्दर काया राख बनेगी चर्चा होगी गली गली

राम नाम......

जब तक आशा झूठे जग की तब तक होता ज्ञान नहीं
इस जगत में हैं सभी भिखारी यहाँ कोई धनवान नहीं
जगत सेठ उस साँवल साह का नाम जपाऊँ गली गली
राम नाम......

तेरा अपना कहने वाले एक दिन तुझे भुलायेंगे
कल तक अपना कहने वाले आग में तुझे जलायेंगे
दो दिन का ये चमन खिला है फिर मुरझाये कली कली
राम नाम......

याद करो भक्तों ने कैसे हरि का दर्शन पाया है
और प्रभु ने कैसे अपने भक्तों को अपनाया है
तुलसी मीरा नरसी का इतिहास सुनाऊँ गली गली
राम नाम......

(८१)

राम बनासा म्हारी सिया सुकुमारी ने
चरणाँरी दासी कीज्योजी ॥ टेर ॥
म्हांरी बाई सीता भोली भाली,
माफ गुनाह सब कीज्योजी।
भूल चूक अपराध बणे तो,
रे कारो मत दीज्योजी ॥ १ ॥
सुघड़ सलोना श्याम साँवरिया,
अरज हमारी सुन लीज्योजी।
सीता ने लेवण मिस बेगा,
मिथिला आता रीज्योजी ॥ २ ॥
म्हें नूगरी थाँने भूल भी ज्यावां,
आप बिसर मत ज्यायोजी।

बेगा-बेगा म्हानें दरशण दीज्यो,
नैण शीतल म्हारा कीज्योजी॥ ३॥
जावो जठे म्हारी सीता नें थे,
संग में सदा रख लीज्योजी।
पाहुणा सिया रा म्हारा सुघड़ मनोरथ,
आप पूरण कर दीज्योजी॥ ४॥

(८२)

दोहा—तुलसी या जग आयके कर लीजे दो काम।
देनेको टुकड़ा भला लेनेको हरि नाम॥
खबर ना या जगमें पलकी॥ टेर॥
राम सुमिरि ले सुकृत कर ले कुण जाने कलकी॥
रैन अँधेरी निर्मल चन्दा ज्योति झलाझलकी।
चार दिनोंकी चटक चाँदनी ज्यों बिजली झलकी॥ १॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी कर बातें छलकी।
सिरपर गठरी धरी पापकी कौन करे हलकी॥ २॥
भवसागरकी त्रास कठिन है थाह नहीं जलकी।
धर्मी धर्मी पार उतरि गये डूबे अधम जनकी॥ ३॥
यह संसार स्वप्नकी माया ओस बूँद जलकी।
ढलक जाय कछु बार न लागे दुनियाँ है छलकी॥ ४॥
धीरे धीरे पाप कटत है होत मुक्ति तनकी।
काम क्रोध मद लोभ निवारो आस तजो मनकी॥ ५॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो काया मण्डलकी।
भज भगवान आन नहिं कोई आशा रघुबरकी॥ ६॥

(८३)

रामादल में सुलोचना आई अरज सुनो रघुराई।
मेरे सुसरे ने झगड़ा ये मोल लिया,
अनजाने प्रभु को कष्ट दिया।
ये तो हर लाया सीता माई॥ अरज सुनो रघुराई॥
मेरे पति से लक्ष्मण का युद्ध हुआ,
कोई हारे कोई जीते ये जंग जुवा॥
मेरे प्रियतम ने मुक्ति पाई॥ अरज सुनो रघुराई॥
भुजा कट कर मेरे आंगन में गिरी,
शीश कट के प्रभु के शरण में गिरा॥
कटी भुजा ने बात बताई॥ अरज सुनो रघुराई॥
कटी भुजा लिखे बात कैसे जाने,
सेना बोली हँसी शीश सब जाने।
यह तो अनहोनी बात बताई॥ अरज सुनो रघुराई॥
झूठ ना बोलूँ मेरा विश्वास कीजिये,
शीश मेरे पति का मुझे दीजिये।
अभी देती हूँ शङ्का मिटाई॥ अरज सुनो रघुराई॥
दु:खी जीवन का कोई सहारा नहीं,
चाँद कैसे खिले जब तारा नहीं।
मेरी सासु ने मोय समझाई॥ अरज सुनो रघुराई॥
राम बोले जरा धीरज धरना,
इस दुनियाँ में है सबको मरना।
अभी देता हूँ शीश मँगाई॥ अरज सुनो रघुराई॥
हुई आज्ञा शीश अंगद लाया,

लेकर सुलोचना ने अपनाया॥
हँसा शीश सभा चकराई॥ अरज सुनो रघुराई॥
शीश लेकर सुलोचना, लंका को चली,
सती होकर पति से स्वर्ग में मिली।
प्रभु कैसी ये लीला दिखलाई॥ अरज सुनो रघुराई॥
शिव मण्डल वालों ने यह कथ गाया,
धर्म नारी का इसमें बतलाया।
सब भक्ति करो माई, बाई॥ अरज सुनो रघुराई॥

(८४)

रामा रामा रटते रटते बीती रे उमरिया,
रघुकुल नन्दन कब आवोगे भिलनीकी डगरिया॥ टेर॥
मैं शबरी भिलनी की जाई, भजन भाव नहीं जानूँ रे,
राम तुम्हारे दरसन के हित, बन में जीवन पालूँ रे,
चरण कमल से निर्मल कर दो दासीकी झुँपड़िया॥ १॥
रोज सबेरे बन में जाकर, रस्ता साफ करती हूँ,
अपने प्रभु के खातिर बन से, चुन-चुन के फल लाती हूँ,
मीठे-मीठे बेरन की भर ल्याई मैं छबड़िया॥ २॥
सुन्दर श्याम सलोनी सूरत, नैनन बीच बसाऊँगी,
पदपंकजकी रज धर मस्तक, चरणोंमें सीस नवाऊँगी,
प्रभुजी मुझको भूल गये क्या, ल्यो दासीकी खबरिया॥ ३॥
नाथ तुम्हारे दरसन के हित मैं अबला एक नारी हूँ,
दरसन बिन दोउ नैना तरसे, दिलकी बड़ी दुख्यारी हूँ,
मुझको दरसन देवो दयामय, डालो म्हैर नजरिया॥ ४॥

(८५)

शबरी शगुन मनावे जी मेरे घर राम आवेंगे॥ टेर॥
बीन बीन फल लाई शबरी, दोना न्यारे न्यारे।
आरति साज प्रार्थना कीन्ही, छिन मन्दिर छिन द्वारे॥ १ ॥
ऋषि के बचन सुनत मनमाहीं, हर्ष न हृदय समाई।
घरका काम सकल तज दीन्हा, गुन रघुपति का गाई॥ २ ॥
अनुज सहित प्रभु दरशन दीन्हा, परी चरन लपटाई।
'तुलसीदास' प्रभु अधम उधारन, दीन जानि अपनाई॥ ३ ॥

(८६)

सालगराम! सुनो बिनती मोरी, यो वरदान दया कर पाऊँ॥
प्रातः समय उठ मज्जन करके, प्रेम सहित असनान कराऊँ।
चन्दन धूप दीप तुलसी-दल, बरन-बरनके पुष्प चढ़ाऊँ॥
आप विराजो प्रभु! रतन सिंहासन, घण्टा, शंख, मृदंग बजाऊँ।
एक बूँद चरणामृत लेके, कुटुम्ब सहित बैकुण्ठ पठाऊँ॥
जो कुछ भोग मिले प्रभु मोकूँ, भोग लगाकर भोजन पाऊँ।
जो कुछ पाप किया काया से, परकम्माके साथ बहाऊँ॥
डर लागत मोहि भव-सागरको, जमके द्वार प्रभु! मैं नहीं जाऊँ।
'माधोदास' आस रघुबरकी, हरिदासनको दास कहाऊँ॥

(८७)

सीताराम ने भजे रे नाँही ज्यारा दर्शन खोटा है
राधेश्याम ने भजे नहीं ज्यारा दर्शन खोटा है
जो नर सुमरण करे राम का बारे कांई रा टोटा है
माँग माँग कर भिक्षा लावे इन्द्रासन से मोटा है
जो नर निन्दा करे राम की वो पशुओं में मोटा है

थोड़ी सी विधाता भूल्यो सिंग पूंछ का टोटा है
पशु घड़न्ता नर घड़ दिन्हो नाहीं पूंछ सिंगोटा है
घास तो वे खावे नहीं भाग गऊओं का मोटा है
मोटा मोटा तिलक काढ लिया लांबा राखे चोटा है
जम सिरहाणे आय खड़ो है हाथ में मुगदर मोटा है
थारी म्हाँरी में आगे लिजे राम भजण में टोटा है
रामानन्द को भजे न कबीरा यही अकल का टोटा है

(८८)

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये।
जाही बिधि राखे राम, ताही बिधि रहिये॥ टेर॥
मुखमें हो राम-नाम, जन-सेवा हाथमें।
तू अकेला नाहीं प्यारे राम तेरे साथमें॥
बिधिका बिधान जान हानि-लाभ सहिये।
जाही बिधि राखे राम, ताही बिधि रहिये॥ १॥
किया अभिमान तो फिर मान नहीं पायेगा।
होगा प्यारे वही जो श्रीरामजीको भायेगा॥
फल-आशा त्याग शुभ कर्म करते रहिये।
जाही बिधि राखे राम, ताही बिधि रहिये॥ २॥
जिन्दगीकी डोर सौंप, हाथ दीनानाथके।
महलोंमें राखें चाहे, झोपड़ीमें बास दे॥
धन्यवाद निर्विवाद राम राम कहिये।
जाही बिधि राखे राम, ताही बिधि रहिये॥ ३॥
आशा एक रामजीकी, दूजी आशा छोड़ दे।
नाता एक रामजीसे, दूजा नाता तोड़ दे॥

साधु-संग, राम-रंग अंग-अंग रँगिये।
काम-रस त्याग प्यारे राम-रस पगिये॥ ४॥
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये।
जाही बिधि राखे राम, ताही बिधि रहिये॥

(८९)

हरे राम हरे रामा रटते थे हनुमाना
इस मंत्र की महिमा को शंकर ने है जाना
हरे राम हरे रामा रटते.........
इस मंत्र से हनुमंत ने सागर को पार किया
सोने की लंका को एक पल में जार दिया
हरे राम हरे रामा रटते.........
इस मंत्र के आगे ही रावण ने हार मानी
इस मंत्र से तुलसी ने रामायण लिख डाली
हरे राम हरे रामा रटते.........
इस मंत्र के ही कुछ बोल केवट ने मन से पढ़े
वनवासी श्री रघुवर केवट की नाव चढ़े
हरे राम हरे रामा रटते.........
इस महामंत्र का जाप भीलनी ने नित्य किया
घर आये श्री रघुवर माता का प्यार दिया
हरे राम हरे रामा रटते.........
इस महामंत्र का ज्ञान शंकर ने जग को दिया
जो अन्त समय लेवे उसे अपना धाम दिया
हरे राम हरे रामा रटते थे हनुमाना

श्रीहनुमान्‌जी

(९०)

मंगल-मूरति मारुत-नंदन। सकल-अमंगल-मूल-निकंदन॥
पवनतनय संतन-हितकारी। हृदय बिराजत अवध-बिहारी॥
मातु-पिता, गुरु, गनपति, सारद। सिवा-समेत संभु, सुक, नारद॥
चरन बंदि बिनवौं सब काहू। देहु रामपद-नेह-निबाहू॥
बंदौं राम-लखन-बैदेही। जे तुलसीके परम सनेही॥

(९१)

उठे तो बोले राम, बैठे तो बोले राम।
यो तो रामभक्त हनुमान, बोले राम राम राम॥ टेर॥
राम नाम की भक्ति, याके राम नाम की शक्ति।
आकों राम चरण में धाम, बोले राम राम राम॥
आकें नैणा मांही राम, आकें हृदय मांही राम।
आकें रोम रोम में राम, बोले राम राम राम॥
है राम सिया का प्यारा, है भरत समान दुलारा।
आंको राम शरण में धाम, बोले राम राम राम॥
कोई भक्ति नहीं है ऐसो, मेरे बालाजी के जैसो।
गावे 'भक्त मण्डल' गुणगान, बोले राम राम राम॥

(९२)

एक मनसा पूर्ण हनुमान पंच तीरथ के बीच पाये
सियाराम लक्ष्मण के काज अष्टसिध नवनिधि ले आये
एक शरद पूनम की रैन प्रकट भए अन्जनी के लाला
एक सिर कंचन का टोप गले बिच पुष्पन की माला
एक कसे लाल लंगोट भुजा पर जरियल दूसाला
एक लीनी हाथ में गदा करे सन्तन की बोलबाला

एक नेम धर्म होशियार जिन्हों के ठाकुर रघुराई
सियाराम लक्ष्मण के काज.......
जब खबर पड़ी रघुवर को अठारह पदम से दल जोड़े
जब श्वेत बन्द रामेश्वर से गढ़ लंका के तोड़े
जब लग्यो लक्ष्मण के बाण कपी संजीवनी को दौड़े
और बचा लिया लक्ष्मण को शीश दस रावण के तोड़े
जब लंका फतह कर राम, सिया को अवधपुरी लाये
सियाराम लक्ष्मण के काज.......
जो ध्यान तुम्हारा रटे कटे यमदूतों का फेरा
एक ब्रह्मरूप जगदीश ईश प्रभु त्रिगुण रूप तेरा
एक महाकपी हनुमान, बाली तूँ है मालिक मेरा
एक सेवक मंगलदास प्रभु तेरे चरणों का चेरा
एक दस इन्द्रीय बस कीन्ह आप रघुवर मुख सरसाई
सियाराम लक्ष्मण के काज.......

(९३)

ओ सुन अंजनी के लाला, मुझे तेरा एक सहारा,
मुझे अपनी शरण में ले लो, मैं बालक हूँ दुखियारा॥ टेर॥
माथे पर तिलक बिशाला, कानों में सुन्दर बाला
थारे गले राम की माला, ओ लाल लंगोटे वाला
थारा रूप जगत से न्यारा, लगता है सबको प्यारा॥ १ ॥
प्रभु सालासर के माँही, थारो मन्दिर है अति भारी
नित दूर-दूर से आवे, थारा दर्शन को नर नारी
जो लाये घृत सिंदूरा, पा जाये वो फल पूरा॥ २ ॥
सीता का हरण हुआ तो, श्रीराम पर विपदा आई
तुम जा पहुँचे गढ़ लंका, माता की खबर लगाई
बानर मिलकर सब तेरे, करे नाम की जय-जयकारा॥ ३ ॥

जब शक्ति बाण लगा तो, लक्ष्मण को मुर्छा आई
बानर सेना घबराई, रोये रामचन्द्र रघुराई
तुम लाय संजीवन बूँटी, लक्ष्मण के प्राण उबारा॥ ४ ॥
प्रभु बीच भँवर के माँही, मेरी नाव हिलोरा खाती
नहीं होता तेरा सहारा, तो डूब कभी की जाती
अब दे दो इसे किनारा, तुम बनकर खेवनहारा॥ ५ ॥
प्रभु तारे भक्त अनेकों, चाहे नर हो या नारी
अब बोलो पवन कुमारा, कब आयेगी मेरी बारी
ये "भक्त-मण्डल" के बालक, चाहते हैं तेरा सहारा॥ ६ ॥

(९४)

चालो-चालो आपां सारा मिलकर चालां
मन का कलेस छोड़ो, छोड़ो भावकारा
बालाजी के द्वार बुलावां जी मेले........
सालासर जावां साग थाने भी ले जावां
बालाजी के मन्दिरिया में जोत जगावां
पूनम-२ रात जगावां जी मेले में........आपां पूनम॥ १ ॥
नारियल चढावां आपां पेड़ा भी चढावां
चूरमो चढावां और लाडु भी चढावां
जडुला-२ जात जगावां जी मेले में........ ॥ २ ॥
बालक जावां और बूढ़ा भी ले जावां
नर-नारी सब मिलकर जावां
जाकर-२ दर्शन पावां जी........ ॥ ३ ॥
भक्त मण्डली अर्जी सुणावे
सारा भक्त मिल मंगल गावे.......
लाल निरंजन गावें जी मेले में.......
चालो बालाजी के द्वार........ ॥ ४ ॥

(९५)

छम छम नाचै देखो वीर हनुमाना।
कहते हैं लोग इसे राम का दिवाना॥ टेर॥
पाँव में घुँघरू बाँध के नाचै।
रामजी का नाम इसे प्यारा लागै।
राम ने भी देखो इसे खूब पहचाना॥ १ ॥
जहाँ जहाँ कीर्तन होता श्रीराम का।
लगता है पहरा वहाँ वीर हनुमान का।
राम के चरण में है इनका ठिकाना॥ २ ॥
नाच-नाच देखो श्रीराम को रिझाये।
'हनुमान' रात दिन नाचता ही जाये।
भक्तों में भक्त बड़ा दुनियां ने माना॥ ३ ॥

(९६)

जय श्री सालासर हनुमान अनोखी थारी झाँकी।
अनोखी थारी झाँकी और महिमा थारी बाँकी॥ जय श्री०॥
थारे काना कुण्डल साजे, माथे पर मुकुट विराजे।
बाबा गले बिराजे हार, अनोखी थारी झाँकी॥ जय श्री०॥
थारे हाथा लाडू साजे, माथे पर मुकुट विराजे।
बाबा रोम-रोम में राम, अनोखी थारी झाँकी॥ जय श्री०॥
थारे पगा घूँघरा साजे, चलबा में रिमझिम बाजे।
बाबा चलगत की बलिहारी, अनोखी थारी झाँकी॥ जय श्री०॥
लक्ष्मण के शक्ति लागे, तब लेन संजीवन भागे।
बाबा लाये पहाड़ उठाय, अनोखी थारी झाँकी॥ जय श्री०॥

जब रावण मार गिरायो, तब राज विभीषण पायो।
बाबा सीताजी से मिलाया, अनोखी थारी झाँकी॥ जय श्री०॥
दूर-दूर से यात्री आवे, चरणों में शीश नवावे।
बाबा हमारो भी संकट काट, अनोखी थारी झाँकी॥ जय श्री०॥

(९७)

थारी सांचो है दरबार, थारी महिमा अपरम्पार।
बाबा म्हारे घरां आवोनी, आवोनी बाबा॥
म्हारे घरां आवोनी॥ टेर॥
सालासर में बण्यो देवरो, महिमा थारी भारी,
दूर-दूर से दर्शन करने, आवे दुनिया सारी।
गूँजे थारी जयजयकार, सुनल्यो म्हारी भी पुकार,
बाबा दर्श दिखाद्यो जी, आवोनी बाबा..... ॥ १ ॥
चैत सुदी पुनम को बाबा मेलो लागे थारे,
लाखों ही नर-नारी आशा लेकर आवै द्वारे।
बाजै घंटा और घड़ियाल, थे तो भक्तां रा प्रतिपाल
बाबा भूल मत ज्याज्यो जी, आवोनी बाबा..... ॥ २ ॥
मां अंजनी का लाडला जी, प्यारा पवन दुलारा,
राम सिया का भजन सुनावां, थानै प्यारा-प्यारा।
थे तो राम भक्त हनुमान, थारो रूप अति बलवान
थे तो उत्सव माहिं आज्योजी, आवोनी बाबा..... ॥ ३ ॥
लाल लंगोटे वाला बाबा, एक बार म्हारे आज्यो,
'भक्तमण्डल' कहवे भक्तां ने, आकर दरश दिखाज्यो,
म्हारी नैया कर द्यो पार, सुनल्यो भक्तां री पुकार
म्हारी बिगड़ी बणाज्योजी, ओ बाबा म्हारा,
म्हारे घरां आवोनी॥ ४॥

(९८)

थारे झांझ नगारा बाजे रे, सालासर के मन्दिर में
हनुमान विराजे रे॥ टेर॥

भारत राजस्थान में जी, सालासर इक धाम।
सूरज सामी बण्यो दिवालो, महिमा अपरम्पार।
थारे लाल ध्वजा फहरावे रे। सालासर के....॥ १॥ थारे०
नारेलां की गिनती नहीं बाबा, सुवरण छत्र अपार।
दूर देश का दर्शन करने आवे है नर नार।
बाबो अटक्यो काज संवारे रे, सालासर के....॥ २॥ थारे०
चैत सुदी पूनम को मेलो, भीर लगे अति भारी।
नर नारी तेरा दर्शन करने, आवे बारी बारी।
थारे जात जरूला लागे रे, सालासर के....॥ ३॥ थारे०
रामदूत अंजनि के सुत का धरो हमेशा ध्यान।
"शिव मण्डल" चरणों का चाकर लाज रखे हनुमान।
बाबो बेड़ा पार लगावे रे, सालासर के....॥ ४॥ थारे०

(९९)

दुनिया चले न श्रीराम के बिना।
रामजी चले न हनुमान के बिना॥
जब से रामायण पढ़ ली है,
एक बात मैंने समझ ली है,
रावण मरे न श्रीराम के बिना,
लंका जले न हनुमान के बिना॥ दुनिया चले....
लक्ष्मण का बचना मुश्किल था,
कौन बूटी लाने के काबिल था,
लक्ष्मण बचे न श्रीराम के बिना,
बूटी मिले न हनुमान के बिना॥ दुनिया चले....

सीता हरण की कहानी सुनो,
बनवारी मेरी जुबानी सुनो,
सीता मिले न श्रीराम के बिना,
पता लगे न हनुमान के बिना॥ दुनिया चले....
बैठे सिंहासन पर सियाराम जी,
चरणों में बैठे देखो हनुमान जी,
मुक्ति मिले न श्रीराम के बिना,
भक्ति मिले न हनुमान के बिना,
शक्ति मिले न हनुमान के बिना॥
दुनिया चले न श्रीराम के बिना।
रामजी चले न हनुमान के बिना॥

(१००)

दुनिया में देव हजारों हैं, बजरंग बली का क्या कहना।
इनकी शक्तिका क्या कहना, उनकी भक्तिका क्या कहना।
दुनिया में देव हजारों ....
ये सात समुन्द्र लांघ गये, और गढ़ लंकामें कूद गये।
रावण को डराना क्या कहना, लंका को जलाना क्या कहना।
दुनिया में देव हजारों ....
जब लक्ष्मण जी बेहोश हुए, संजीवनी लाने ये ही गए।
पर्वतको उठाना क्या कहना, लक्ष्मण को जिलाना क्या कहना।
दुनिया में देव हजारों ....
बजरंगबली के सीने में ही, सिया राम की जोड़ी बसी है।
ये राम दीवाना क्या कहना, गुण गाये जमाना क्या कहना।
दुनिया में देव हजारों ....

(१०१)

ना स्वर है ना सरगम है, ना लय ना तराना है!
हनुमान के चरणों में, एक फूल चढ़ाना है!!
तुम बाल रूप में प्रभु, सूरज को निगल डाले।
अभिमानी सुरपति के, सब दर्प मसल डाले॥
बजरंग हुए तब से संसार ने जाना है॥ १॥
सब दुर्ग ढहा करके, लंका को जलाये तुम।
सीता की खबर लाये, लक्ष्मण को बचाये तुम।
प्रिय भरत सरिस तुमको, श्रीराम ने माना है॥ २॥
जब राम नाम तुमने, पाया ना नगीने में।
तुम फाड़ दिये सीना, सियाराम थे सीने में।
विस्मत जग ने देखा, कपि राम दिवाना है॥ ३॥
हे अजर अमर स्वामी, तुम हो अन्तर्यामी।
ये दीन हीन 'चंचल' अभिमानी अज्ञानी।
तुमने जो नजर फेरी, फिर कौन ठिकाना है॥ ४॥

(१०२)

प्रभु मेरा बजरंग बाला है,
पवन पुत्र हनुमान देव सालासर वाला है.......
सिया की सुध लेने को, प्रभु लंका को ध्याये
सिया को देके निशानी प्रभु जी मन में हरषाये
वीर तुम हो ऐसे बंका तोड़ी सोने की लंका
बजा दिया तुमने डंका
हो...जला के लंका वीर ने संकट को टाला है॥ १॥

शक्ति लक्ष्मण के मारी दुखी है सेना भारी
संजीवन लेने जावो, लखन के प्राण बचाओ
वीर द्रोणा गिरी धाये, जाके संजीवन लाये
लखन को घोल पिलाये, राम मन में हरषाये
हो…जय-२ कार हुई बजरंग की गले में माला है ॥ २ ॥
लंका में हुई लड़ाई रावण की शामत आई
लड़े हैं दोनों भाई विभीषण देत बधाई
बजरंग ने गदा उठाई, रावण सेना थर्राई
राम की जीत कराई सेना में खुशियां छाई
हो…राम मण्डल एक राम की सच्ची माला है ॥ ३ ॥

(१०३)

बालासा म्हारे कीर्तन में आवोजी,
इक बार थे आ जावो, म्हे धोक लगावाजी ॥
थारे नैणा माही राम, थारे हृदय माही राम,
थारे रोम रोम में राम बोलो राम राम राम,
चरणां की धूली इक बार पावांजी-२
श्रीरामके प्यारे, भव से तर जावाजी ॥ टेर ॥
थारे राम नामकी भक्ति, थारे राम नामकी शक्ति,
थारो राम चरण में धाम, बोलो राम राम राम,
थारे ढोल नगाड़ा शंख बजावा जी-२
संकट सारा काटो, थारी बाट निहारा जी ॥ टेर ॥
थे रामसियाका प्यारा, थे भरत समान दुलारा,
थारे राम शरण ही धाम, बोलो राम राम राम,
चरणां में थारे वारि वारि जावाजी-२
इक बार थे आ जावो, थारी आरती गावाजी ॥ टेर ॥

कोई भक्त नहीं है ऐसो, श्री हनुमान के जैसो,
गावे भक्त सभी गुणगान बोलो राम राम राम,
सियारामजी से, म्हाने मिला दो जी-२
भक्तो के संग मिलकर नाचा और गावा जी॥ टेर॥

(१०४)

भरत भैया कपि से उरिन हम नाहीं॥ टेर॥
सौ जोजन मरिजाद सिन्धु की कूद गयो छन माहीं।
लंका जारि सिया सुधि लायो, गर्व नहीं मन माहीं॥ १॥
शक्ति बाण लग्यो लछमन के, शोर भयो दल माहीं।
द्रोनांगिरि कर पर धरि लायो, भोर होन नहिं पाई॥ २॥
अहि रावण की भुजा उखारी, पेठि गयो मठ माहीं।
जे कहुँ भैया हनुमत नहिं होतो, कौन लातो जग माहीं॥ ३॥
आग्या भंग कबहुँ नहिं कीन्हीं, जहँ पठयउँ तहँ जाई।
'तुलसीदास' मारुत सुत महिमा, निज मुख करत बड़ाई॥ ४॥

(१०५)

मंगल-मूरति राम दुलारे
आन पड़ा अब तेरे द्वारे
हे बजरंग बली हनुमान, हे महावीर करो कल्याण……
तीनों लोक तेरा उजियारा
दुखियोंका तूने काज सँवारा
हे जग वन्दन, केसरी नन्दन-२
कष्ट हरो हे कृपा निधान, मंगल मूरति……………
तेरे द्वारे जो भी आया
खाली नहीं कोई लौटाया

दुरगम काज बना बनवारे-२
मंगल मय दिज्यो वरदान, मंगल मूरति.............
तेरा सुमिरन हनुमत वीर
न ढेरो हरो सब पीर
राम लखन सीता, मन बसिया-२
शरण पड़े तो कीजे ध्यान, मंगल मूरति.............

(१०६)

मेरी विनती सुनो हनुमान, धरूँ मैं तेरा ध्यान,
पवन का प्यारा, अंजनी के लाल दुलारा॥ टेर॥
सिर मुकुट गले फूल माला, श्री लाल लंगोटे वाला।
थारे कुण्डल झलके कान, चन्द्र उजियारा॥ १ ॥
शिव शंकर के अवतारी, श्रीराम के आज्ञाकारी।
हो पवन-पुत्र बलवान, तेज अति भारी॥ २ ॥
लक्ष्मण के प्राण बचाये, अहिरावण मार गिराये,
श्रीराम के भक्त सुजान, करो निस्तारा॥ ३ ॥
नित नाम रटूँ मैं तेरा, दुःख संकट हरियो मेरा,
कहे 'भगत' करो कल्याण, मैं दास तुम्हारा॥ ४ ॥

(१०७)

मोह माया और काम वासना, तज हरि के चरण निहारे।
तन मन अपने वार दिये, वो परमेश्वर के प्यारे॥ टेर॥
एक बार कर स्नान महल में, जनक दुलारी आई।
हनुमान वहाँ जाकर बोला, घाल कलेवा माई।
सीता बोली कपड़े पहनूं, जरा ठहर जा भाई।
उठ करके श्रृंगार भाल, बिन्दी सिन्दूर लगाई।
कपि कलेवा भूल गये, और बिन्दी की ओर निहारे॥ १ ॥

जब वो कुछ नहीं समझ सका, तो माता से बतलावे।
इसका मतलब बता मात तूँ, बिन्दी काहे लगावे।
यह सुनकर के तान सिया ने, लाड सहित समझावे।
इस बिन्दी से मालिक अपनो, ज्यादा प्यार बढ़ावे।
यह सुनकर पवन सुत ने, अपने मन में विचारे॥ २ ॥
मन में निश्चय किया कपि ने, बनू राम का प्यारा।
सिया करने लागी काम, कपि ने चारों ओर निहारा।
लेकर डिब्बा हाथ पवनसुत, पटक जमी पे मारा।
भर भर मुट्‌ठी लेई सिन्दूर की, रंग लिया तन को सारा।
मन प्रसन्न होय बाहर आया, देख हँसे नर सारे॥ ३ ॥
प्रभु दर्शन की प्यास लेकर, कपि दरबार में आया।
अद्‌भुत शोभा देख राम ने, अपने पास बुलाया।
प्रेम सहित परमेश्वर बोले, किसने रंग लगाया।
उत्तर दिया कपि ने, जैसा माता ने बतलाया।
सूखा रंग उतर जायेगा, यूँ श्रीराम उच्चारे॥ ४ ॥
मंगल और शनिश्चर के दिन, घृत सिन्दूर मिलावे।
उसपर कृपा करूँ मैं ज्यादा, जो तेरे लाय चढ़ावे।
ध्वजा नारियल और चूरमा, जो कोई भोग लगावे।
उसपर हम तुम कृपा करेंगे, अन्त अभयपद पावे।
दास "बिहारी" श्री चरणों पर, अपने तन मन वारे॥ ५ ॥

(१०८)

लाल लँगोटो हाथ में घोटो, थारी जय हो पवनकुमार,
वारी जाऊँ बालाजी॥ टेर॥
सालासर थारो देवरो, मेंहन्दीपुर भी देवरो,
थारै नौपत बाजे द्वार॥ वारी जाऊँ॥

चैत सुदी पुन्यू को मेलो,
थारे आवै भगत अपार॥ वारी जाऊँ॥
गठजोड़ा की जात जडुला,
थारे देवे लाखों नर-नार॥ वारी जाऊँ॥
ध्वजा नारियल चढ़े चूरमों,
थारे सिर पर छत्तर हजार॥ वारी जाऊँ॥
घर-घर में थारी जोत जगे है,
थारा भगत करै जय जयकार॥ वारी जाऊँ॥
घृत सिन्दूर चढ़ावै थारे,
मंगल और शनिवार॥ वारी जाऊँ॥
भगतों का थे कारज सारो,
थारी महिमा अपरम्पार॥ वारी जाऊँ॥
'भक्त मण्डल' कहे बाबा म्हारी,
नैया लगा दिज्यो पार॥ वारी जाऊँ॥

(१०९)

वीर हनुमाना अति बलवाना, राम नाम रसियो रे,
प्रभु मन बसियो रे॥ टेर॥
जो कोई आवै, अर्जी लगावै, सबकी सुणियो रे,
प्रभु मन बसियो रे॥ १॥
बजरंग बाला, फेरूँ तेरी माला, संकट हरियो रे,
प्रभु मन बसियो रे॥ २॥
ना कोई संगी, हाथ की तंगी, जल्दी हरियो रे,
प्रभु मन बसियो रे॥ ३॥
अर्जी हमारी, मर्जी तुम्हारी, किरपा करियो रे,
प्रभु मन बसियो रे॥ ४॥

(११०) श्रीहनुमानचालीसा

दोहा—श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥
राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै॥
संकर सुवन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग बंदन॥
बिद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लषन सीता मन बसिया॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचंद्र के काज सँवारे॥
लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा॥
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना। लंकेस्वर भए सब जग जाना॥
जुग सहस्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रच्छक काहू को डर ना॥
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक तें काँपै॥
भूत पिसाच निकट नहीं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै॥
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै॥
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा॥
और मनोरथ जो कोइ लावै। सोइ अमित जीवन फल पावै॥
चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा॥
साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता॥
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा॥
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै॥
अंत काल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई॥
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्ब सुख करई॥
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा॥
जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरु देव की नाईं॥
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई॥
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा॥

दोहा—पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप॥

॥ इति ॥

(१११) श्रीसंकटमोचन हनुमानाष्टक

मत्तगयन्द छन्द

बाल समय रबि भक्षि लियो तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो।
ताहि सों त्रास भयो जग को यह संकट काहु सों जात न टारो॥
देवन आनि करी बिनती तब छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो॥ १॥

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब चाहिय कौन बिचार बिचारो॥
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दास के सोक निवारो।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो॥ २॥

अंगद के सँग लेन गये सिय खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो॥
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय सिया-सुधि प्रान उबारो।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो॥ ३॥

रावन त्रास दई सिय को सब राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो॥
चाहत सीय असोक सों आगि सु दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो॥ ४॥

बान लग्यो उर लछिमन के तब प्रान तजे सुत रावन मारो।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो॥
आनि सजीवन हाथ दई तब लछिमन के तुम प्रान उबारो।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो॥ ५॥

रावन जुद्ध अजान कियो तब नाग कि फाँस सबै सिर डारो।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो यह संकट भारो॥
आनि खगेस तबै हनुमान जु बंधन काटि सुत्रास निवारो।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो॥ ६॥

बंधु समेत जबै अहिरावन लै रघुनाथ पताल सिधारो।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो॥
जाय सहाय भयो तब ही अहिरावन सैन्य समेत सँहारो।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो॥ ७॥

काज किये बड़ देवन के तुम बीर महाप्रभु देखि बिचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को जो तुमसों नहिं जात है टारो॥
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो।
को नहिं जानत है जग में कपि संकटमोचन नाम तिहारो॥ ८॥

दोहा—लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लँगूर।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर॥
॥ इति संकटमोचन हनुमाष्टक सम्पूर्ण॥

मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी॥
दीन दयाल बिरदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी॥
सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी॥
प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदयँ राखि कोसलपुर राजा॥
हरि ब्यापक सर्वत्र समाना। प्रेम तें प्रकट होहिं मैं जाना॥
मंगल भवन अमंगल हारी। उमा सहित जेहि जपत पुरारी॥
जय सीयाराम जय जय सीयाराम। जय सीयाराम जय जय सीयाराम॥

श्रीकृष्णाजी

(११२)

भये प्रगट कृपाला, दीन दयाला, यशुमति के हितकारी।
हर्षित महतारी, रूप निहारी, मोहन मदन मुरारी॥
कंसासुर जाना अति भय माना, पुतना बेगि पठाई।
सो मन मुसकाई हर्षित धाई, गई जहाँ यदुराई॥
तेहि जाइ-उठाई हृदय लगाई, पयोधर मुख में दीन्हां।
तब कृष्ण-कन्हाई मन मुसकाई, प्राण तासु हर लीन्हां॥
जब इन्द्र रिसायो मेघ बुलायो, बस करि ताहि मुरारी।
गौवन हितकारी मुनिमन हारी, नख पर गिरिवर धारी॥
कंसासुर मारे अति हुंकारे, बत्सासुर संहारे।
बक्कासुर आयो बहुत डरायो, ताकर उदर विडारे॥
अति दीन जानी प्रभु चक्रपाणी, ताहि दीन्ह निज लोका।
ब्रह्मा सुर राई अति सुख पाई, मगन भये गये शोका॥
यह छन्द अनूपा है रस-रूपा, जो नर याको गावै।
तेहि सम नाहिं कोई त्रिभुवन सोई, मनवांछित फल पावै॥

॥ दोहा ॥

नन्द यशोदा तप कियो, मोहन सो मन लाय।
देखन चाहत बाल सुख, रहे कछुक दिन आय॥

(११३)

नन्द घर आनन्द भयो, जै कन्हैया लाल की॥
अखिल ब्रह्माण्ड के, अधिपति लाल की॥

जय हो नन्दलाल की, जय हो बृजलाल की।
गैया चराने वाले जय हो गोपाल की॥
जय यशोदा लाल की, जय कन्हैया लाल की।
आनन्द उमंग भयो, जय हो नन्दलाल की॥
जै यशोदालाल की, जै दाऊलालकी, जै बोलो गोपाल की॥

(११४)

आज बधैय्या बाज रही रे, नन्दरानी के अँगना
रानी के अँगना हो बाबा के अँगना.......आज
नौबत संग में ढोल मंजीरा
और शहनाई बाज रही रे...नन्द
सखियाँ मिल कुल देवा पुजाबे,
गवरी गणेश मनाय रही रे...नन्द
ढाढनियाँ मिल जुल कर आई,
नाचे और नचाय रही रे...नन्द
मन चाही सोगात है पावे,
झोली सभी झलकाय रही है...नन्द
कर पुष्पन बरसात शारदा,
लाला की महिमा बखान रही है...नन्द
गुरुमण्डल कछु चाह नहीं अब,
तन मन सब जब वार दियो रे...नन्द

(११५)

आली जसुमति लाला जायो हे बीर, दरशण करबा म्हे जास्याँ।
म्हारे हरष घणेरो छायो हे बीर, दरशण करबा म्हे जास्याँ॥

हिल मिल मङ्गल गावो री गुजरियाँ,
आली म्हारे सूरज ऊग्यो है सवायो हे बीर॥ १॥
मानिक मोतियन चोक पुरावो,
आली वाँरो लाड कराँ मनचायो हे बीर॥ २॥
जग प्रतिपालक बनि आयो बालक,
आली वो तो सन्तन के मन भायो हे बीर॥ ३॥
अलख निरंजन भयो दुख भंजन,
आली वो तो नन्दजी को कुँवर कहायो हे बीर॥ ४॥
इन्दरपुरी में बाजत नगारा,
आली वाँरो तिरलोकी में जस छायो हे बीर॥ ५॥
शिव ब्रह्मा ज्याँरो पार न पावे,
आली ज्यांने वेद पुराणा में गायो हे बीर॥ ६॥

(११६)

जुग-जुग जिओ री यशोदा मैया तेरो ललना॥
बड़भागिन तू मातु यशोदा ऐसो सुत तैने जायो।
पूरण ब्रह्म जगत को स्वामी सो तैंने गोद खिलायो॥
ताको डार झुलावै पलना॥ तेरो........

धन्य घड़ी जय होय यशोदा मैया कहकर बोले।
नूपुर बाँध दोऊ चरणन में घुटवन-घुटवन डोले॥
पकड़ै बाबा की उँगरिया॥ तेरो........

आशा लेकर बड़ी दूर से दर्शन कारण आयो।
मेरो इष्ट जगत को स्वामी सो तैंने गोद खिलायो॥
जाके दरश बिना मोहि परै कल ना॥ तेरो........

जो माँगें सोई ले-ले बाबा भोजन साज जुटाऊँ॥
तेरो वेष देख डरपैगौ बालक नाँय दिखाऊँ॥
मेरौ छोटौ सो ललनवा सोवै पलना॥ तेरो........
माया काल डरै जाके डर भगतन को हितकारी।
अपने सुत को मरम न जाने तू भोली महतारी॥
जगमें नाहै याकी तुलना॥ तेरो........

(११७)

जय बोलो जसोदा नन्दन की।
नन्दन की जग बन्दन की॥ जय॥ टेर॥
भाल बिशाल माल मोतियन की,
खौर बिराजत चन्दन की॥ १॥
मोर मुकुट कटि काछनि राजै,
भक्त बछल भव भञ्जन की॥ २॥
घन्टा ताल पखावज बाजे,
भीर भई सब सन्तन की॥ ३॥
ले बसुदेव चले गोकुलको,
बेड़ी कट गई फन्दन की॥ ४॥
चन्द्रसखी भजु बालकृष्ण छबि,
चरण कमल रज बन्दन की॥ ५॥

(११८)

बाजे-बाजे रे बधाई मैया तौरे अँगना।
ओ मैया तोरे अँगना॥ टेर॥
बड़ो अनोखो तेने लाला जायो,
श्याम रंग सबके मन भायो।

ब्रजवासी को मन हुलसायो,
अरे उमग-उमग कर चली नन्द घर बाँधे बँधना॥ १॥
ब्राह्मण अपने वेद पढ़त है,
नन्द बाबा जुँ दान करत है।
पाग बिछोना ग्वाल लेत है,
गोपीन को दिये लहंगा, फरिया, रत्न जड़ित कंगना॥ २॥
नाच-नाच के प्रेम दिखायो,
अरे नन्द भवन में धूम मचायो।
देई आशीष सबन मन भायो,
अरे यशोदा रानी थारो जीयो ललना॥ ३॥

(१११)

ब्रज में है रही जय जयकार नन्द घर लाल जायौ है॥ टेर॥
यूथ के यूथ नन्द घर आवैं।
ग्वाल बाल सब हिल मिल गावैं॥
ब्रह्मानन्द समान आज सुख सबनें पायौ है॥ टेर॥
मांगलीक सब वस्तु ले ली।
गावें गीत सभी अलबेली
नन्द द्वार और मारग में दधि कीच मचायौ है॥ टेर॥
ब्रज चौरासी कोस में भइया।
सब कहैं धन्य यशोदा मइया॥
पूरण ब्रह्म प्रकटे हैं घर सुत ऐसो जायौ है॥ टेर॥
शिव ब्रह्मा सनकादिक आये।
सिद्ध मुनि सब देव सिहाये॥
घर ग्वालन को रूप सबनि मिल मंगल गायो है॥ टेर॥

नन्द यशोदा भाग्य बड़ाई।
सबही देने लगे बधाई॥
शारदा शेष सके नहिं गाई
ऐसी अद्भुत सुत तौ काहू और न पायौ है॥

(१२०)

यशोदा के हुयो नन्दलाल, बधाई सारा भक्ता ने।
बधाई सारा भक्ता ने, बधाई सारा भक्ता ने॥ टेर॥
आज म्हारो आंगणो धन्य हुओ है, कान्हा को तो जनम हुओ है।
नाचो रे दे दे ताल बधाई सारा भक्तां ने॥ बधाई.....
खुशखबरी आ सब ने सुनावा, झूमा नाचा मैं मौज मनावा
कान्हा ने लियो अवतार बधाई सारा भक्ता नें॥ बधाई.....
महलो में अंगना, अंगना में पलना, पलना में झूल रहयो यशोदा
का ललना, निजरा उतारो बारम्बार॥ बधाई.....
चालोजी—चालोजी माता यशोदा घर चाला
कानूडा ने निरखया, राई लूण उतारो
आओ सजाओ पूजन थाल॥ बधाई.....

(१२१)

मैं आरती तेरी गाउँ ओ केशव कुंज बिहारी॥ टेर॥
मैं नित नित शीश नवाऊँ, ओ मोहन कृष्ण मुरारी॥ टेर॥
है तेरी छबि अनोखी, ऐसी ना दूजी देखी।
तुझसा ना सुन्दर कोई, ओ मोर मुकुट धारी॥ टेर॥
जो आये शरण तिहारी, विपदा मिट जाये सारी।
हम सब पर किरपा रखना, ओ जगत के पालन हारी॥ टेर॥

श्रीकृष्णजी भोगके भजन

(१२२)

अरोगो नरसिंह महाप्रभु अरोगो नरसिंह दयाकर अरोगो, गोपीनाथजी-२
छप्पन भोग छत्तीसों व्यंजन-२, नानाविध के अन्न महाप्रभु, अरोगो नरसिंह....
राधाजी भोजन आप बनावे-२ लक्ष्मीजी भोजन आप संवारे
मन में बड़ी ही उमंग महाप्रभु, अरोगो नरसिंह दयाकर अरोगो....
नारद मुनी पनवाड़ो लाव-२ जल भर लाव श्री गंग, महाप्रभु, अरोगो....

कीजे कृपानिधान, अचमन कीजे कृपानिधान-२
जमना जल झारी भर लाई-२, गंगा बहत सुजान
अचमन कीजे कृपानिधान, अचमन कीजे कृपानिधान
पनवाड़ो भक्तन को दीजे, पनवाड़ो संतन को दीजे
नारद कहत सुजान अचमन कीजे कृपानिधान

श्रीमद युगल किशोर मनाऊँ-२, गावत जन कल्याण
अचमन कीजे कृपानिधान-२ बीड़ी लावनी बनाई रसपान पान की
काथो चूनो लोंग सुपारी-२, बीड़ी बनाई नागर पान पान की
बीड़ी लेओ नी ठाकुर जी नागर पान पान की
आओ ठाकुर हर चोपड़ खेलो आओ कृष्ण हर चोपड़ खेलो
बाजी लगाओ हर के नाम नाम की बीड़ी लेओनी ठाकुर........
नंद बाबाजी रा कुँवर कन्हैया, संग बेटी वृष भान भान की
बीड़ी लेओ 'नी ठाकुर जी नागर पान पान की
चन्द्र सखी भज बालकृष्ण छवि जोड़ी बनी है राधेश्याम की
बीड़ी लेओ नी ठाकुर.........

1783 Bhajan Sudha_Section_5_2_Front

(१२३)

आरोगो म्हारा सांवरा परोस लाई थाली
मन्दिर थारे चलकर मैं तो बड़ी दूर से आई-२
लड्डू बर्फी दूध मलाई, रस की भरी मिठाई
मेवा मिश्री केशर भरकर मोहन खीर बनाई॥ आरोगो
चावल दाल चटपटी सब्जी भाजी कढ़ी बनाई
लोंजी चटनी, मिर्ची, पापड़, गरम कचोरी लाई॥ आरोगो
कत्था, चूना, पान, सुपारी, बीड़ी बनाकर लाई
गंगाजी पर जाकर पानी छान छान भर लाई॥ आरोगो
राधा मोहन जीमो थाकी झाकी लागे प्यारी
जीमो और जीमाओ म्हाने भक्त तुम्हें है पुकारी॥ आरोगा

(१२४)

काना लाडुड़ो सो लेवो रे मोहन प्यारा, लाडुड़ो सो लेवोरे।
माता ने मईड़ो बिलोमा क्यों नहीं दोरे,
मोहन प्यारा मईड़ो विलोमा क्यों नहीं दोरे॥ १॥ काना
म्हारे लालजी आड़यो मान्ड़यो, म्हारे हाथ दुवारी हेरिए।
वासन कुशल म्हारे ललता मांझे, बाल भोग री त्यारी रे॥ २॥ काना
प्यालो भरीयो दुध दही सूं, इतनो हट ना करोरे हेरिए।
माखन मिश्री म्हारे सब रस मेवा ऊपर बूरो घणो लोरे॥ ३॥ काना
सीरो पूड़ी भात कारे साग सलूणों लोरे हेरिए।
सोवा मेथी म्हारे और पालको, रूच रूच भोग लगावोरे॥ ४॥ कान्हा
रोय रोय अंखिया राती किनी आंसू झगलो भीनो हेरिऐ।
सूरदास था पर बारी हो यशोदा मैया जो सोई भावे सो लोरे॥ ५॥ काना

(१२५)

कान्हा ने माखण भावे रे,
व्हाला ने मिसरी भावे रे॥ टेर॥
घारी धराऊ न घुघरा धरू, घेवर धराऊ सई
मोहन थाल ने मालपुआ, पण माखण जेवा नहीं॥ १ ॥
शिरो धराऊ ने श्रीखण्ड धरू, सुत्तर फेणी सई
ऊपर ताजा घी भरू, पण माखण जेवा नहीं॥ २ ॥
जात जात ना मेवा धराऊ, दूध साकर ने दही
छपन भोग सामग्री धरू, पण माखन जेवा नहीं॥ ३ ॥
गोपीए माखन धरूए अणे हाथ जोड़ ऊबी रही
दीनानाथ रीझयो तिहारे नाचया थेई थेई थेई॥ ४ ॥

अर्थ : व्हाला=प्यारा, घारी=मिठाई, घुघरा=गुझिया

(१२६)

छप्पन भोगका थाल सजाया, चौकी है तैयार जी,
जीमो म्हारा सांवरिया, जीमावें भक्ता आज जी॥ टेर॥
दाल चूरमो बून्दी भुजिया, पेड़ा मोतीपाक जी,
गो धीरत री पूड़ी बनाई, पंचमेले रो साग जी
गरम समोसा गरम जलेबी, कचोड़ी उड़द दाल की
जीमो म्हारा साँवरिया.................
बाजरे री रोटी बनाई, काचर चटनी राब जी
दही बड़ा के साथ सांवरिया, सीरो और पकौड़ा जी
फीणी मिक्सचर सोन पापड़ी, मिर्चा को अचार जी
जीमो म्हारा साँवरिया.................

राजभोग रसभरी मलाई, कुल्फी केसर पिस्ता की,
माखन मिसरी भर-भर मटकियां ठण्डे जल की झारी जी
पान सुपारी लौंग इलायची, बिड़लो है तैयार जी
जीमो म्हारा साँवरिया.................

छप्पन भोग छतीसो व्यञ्जन, भोग लगावो सांवरा,
धणे चाव से थाने जीमावा, बार-बार मनुहार करा
भक्तां से कोई भूल होवे तो, सांवरिया कीज्यो माफ जी
जीमो म्हारा साँवरिया.................

(१२७)

जीमो श्याम सुन्दर जलेबी गरम है
ताजो ताजो लाई यो हलवो नरम है॥ टेर॥

केशर इलायची की देखो बहार है,
दूध की जलेबी या बनी मजेदार है
कचोरी मैं लाई ये गरमा गरम है॥ टेर॥

राज भोग चम चम कलाकंद खिलाऊं,
पिस्ता बदाम की मैं बरफी जिमाऊं,
किसमिस की लोंजी किसीसे न कम है॥ टेर॥

धेवर के संग में रसीली है नुक्ती
ताजी ताजी गरमा गरम है इमरती
केशरीया भात घी में तरवा तरम है॥ टेर॥

माल पुआ खीर के संग पूड़ी नरम है,
केशर की चक्की और भुजिआ गरम है,
लच्छेदार रबड़ी ये नरमा नरम है॥ टेर॥

मीरा जैसी भक्ति हमारे प्रभु दीजो
विनती है आपसे श्री नाथ जी सुन लिजो
ये भक्त मण्डल तुम्हारी शरण है॥ टेर॥

(१२८)

थाली भरके ल्याई खीचड़ो, ऊपर घी की बाटकी।
जीमो म्हारा श्याम धणी, जिमाव बेटी जाटकी।—॥
बाबो म्हारो गाँव गयो है, ना जाने कद आवगो,
ऊँके भरोसे बेठ्यो रह्यो तो, भूखो ही रह जाव लो।
आज जिमाऊँ तनें खीचड़ो, काल राबड़ी घाट की,
जीमो म्हारा........
बार बार मन्दिर ने जुड़ती, बार बार मैं खोलती,
कँईया कोनी जीमे रे मोहन, करड़ी करड़ी बोलती।
तूँ जीमें तो जद मैं जीमूँ मानूँ ना कोई लाटकी,
जीमो म्हारा........
पड़दो भूल गई साँवरिया, पड़दो फेर लगायो जी,
धाबलिये की ओट बैठकर, श्याम खीचड़ो खायोजी।
भोला भाला भक्ताँ से, साँवरिया के काँई आँटजी,
जीमो म्हारा........
भक्ति हो तो करमा जैसी, साँवरियो घर आवेलो,
"सोहनलाल" लोहाकर प्रभु का, हरख हरख गुण गावेलो।
साँचो प्रेम प्रभु से हो तो मूरत बोले काठ की,
जीमो म्हारा........

(१२९)

थे तो अरोगोजी मदन गोपाल,
कटोरो ल्याई दूध को भर्‌यो॥ टेर॥
दूदाजी म्हाने दी भोलावण, जद मैं आई चाल॥
धोली धेनु को दूध गरम कर, ल्याई मिसरी घाल॥
क्यांन रूस्या हो थे नंदजी का लाल॥ १॥
किण विध रूठ रह्या हो लाला, कारण कहो महाराज।
दूध कटोरो धर्‌यो सामने पीवन की काँई लाज॥
भूखाँ मरताँ रा चिप जासी थाराँ गाल॥ २॥
श्याम सलोने दूध अरोगो, साँची बात बताऊँ।
बिना पियाँ यो दूध कटोरो, पाछी मैं नहीं जाऊँ॥
देऊँ साँवरिया चरणाँ में देही डाल॥ ३॥
करुणा सुनकर डरिया प्रभुजी, मन्द-मन्द मुसकात।
गट-गट दूध पीवण ने लाग्या, चार भुजा रा नाथ॥
साँवरो राखे है भगताँरी जाती लाज॥ ४॥
मीरा नृत्य करे प्रभु आगे, हरख्यो सारो साथ।
भक्ताँ के बस में गिरधारी, चार भुजा रो नाथ॥
प्यारो लागेजी वो गिरधारी लाल॥ ५॥

(१३०)

म्हारो मदन मोहन घनश्याम, कलेवो करतो ही मुलके
श्याम सुन्दर नन्दलाल, कलेवो करतो ही मुलके॥ टेर॥
दुध बताशा म्हारो श्याम, पीवे है बालो गट गट के॥ १॥
माखण मिसरी रो भोग, रोटी तो यांके गले अटके॥ २॥

मुख माही दंतुली सी दोय, नासा पर मणि मोती चिलके ॥ ३ ॥
मोर मुकुट गल माल, कुण्डल कानां माही भलके ॥ ४ ॥
ठुमक-ठुमक ज्यांरी चाल, मनड़ों तो लीन्हों वश करके ॥ ५ ॥
हाथों में छड़ी है गुलाब, छटा तो चहुं दिसि छिटके ॥ ६ ॥
बन्शी की मीठी मीठी तान, सुनत म्हारों हीयो धड़के ॥ ७ ॥
मुरली की मधुरी सी तान, सुनत म्हारो हीयो धड़के ॥ ८ ॥
सुन्दर श्याम शरीर पिताम्बर ज्यांके अंग झलके ॥ ९ ॥
नटखट जसोदारो लाल, निरख्या हीम्हारो जियो अटके ॥ १० ॥
मन्द मन्द मुसकाय, बतलावे म्हानें हंस हंस के ॥ ११ ॥

(१३१)

श्याम रसिया मेरे मन बसिया
रुचि रुचि भोग लगाओ रसिया ॥ टेर ॥
सबरी के बेर सुदामा के तन्दुल,
प्रेम से भोग लगाओ रसिया ॥
दुरयोधन के मेवा त्यागे,
साग विदुर घर पाओ रसिया ॥
जो यह भोग प्रसादी पावे,
उनको पार लगाओ रसिया ॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर,
बाँकी छबि दरसाओ रसिया ॥

(१३२)

हे गिरधर गोपाल लाल तू आजा म्हारे आंगना,
माखन मिसरी तने खिलाऊँ, और झूलाऊँ पालना॥ टेर॥
गंगाजल से कलश भरा है, दतवन शीशा कंघा है,
वस्त्र पहनाऊँ रंग रगीला, दुपट्टा भी पचरंगा है,
खेलन में मैं देऊँ खिलौना, खेलो ना मन चावना
माखन मिसरी तने.......... ॥
कंचन बरणो थाल सजायो, खीर चूरमा बाटकी,
दूध मलाई मटकी भरी है, आजा जीमले डाट की
तेरी ही इच्छा के माफिक, भावे सो ही खावना॥ टेर॥
मधुर मधुर तने गीत सुनाऊँ, मनभावन ये झाँकी है,
आना ही है आज साँवरिया, भगत सेवा में हाजिर है
मुरली की आ तान सुनाजा लागे बहुत सुहावना॥ टेर॥
धन्ना जाट ने तूझे पुकारा, रूखा सूखा खाया तू
करमाबाई ल्याई खीचडो, रूच रूच भोग लगाया तू
सांवरिया है प्रेम का भूखा, भक्तों का मान बढावना॥ टेर॥
माखन मिसरी तने........... ॥

अर्पण करे जो फूल, फल, जल, पत्र मुझको प्रेम से।
लेता प्रसन्नचित्त भक्त की वह भेट मैं अनुरक्ति से॥

श्रीकृष्णजी

(१३३) मधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ १॥
वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ २॥
वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ३॥
गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ४॥
करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ५॥
गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ६॥
गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ७॥
गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ८॥

इति श्रीमद्वल्लभाचार्यकृतं मधुराष्टकं सम्पूर्णम्।

(१३४)

अच्युतं केशवं कृष्ण दामोदरम्।
राम नारायणं जानकी वल्लभम्॥
कौन कहते हैं भगवान् आते नहीं।
हम मीरा के जैसे बुलाते नहीं॥
अच्युतं केशवं........

कौन कहते हैं भगवान् खाते नहीं।
बैर शबरी के जैसे खिलाते नहीं॥
अच्युतं केशवं........

कौन कहते हैं भगवान् सोते नहीं।
माँ यशोदा के जैसे सुलाते नहीं॥
अच्युतं केशवं..................

कौन कहते हैं भगवान् नाचते नहीं।
गोपियों की तरह हम नचाते नहीं॥
अच्युतं केशवं..................

(१३५)

अपना चन्दा सा मुखड़ा दिखाये जा......२
मोर मुकुटवाले, घुंघराली लटवाले, ओ अपना....
तुम बिन मोहन चैन पड़े ना, नैनों से उलझाये नैना
ओ मेरी अंखियन बीच समाये जा...
मोर मुकुटवाले...
बेदर्दी तोहे दरद न आये, काहे जले पे नोन लगाये
ओ आजा प्रीत की रीति निभायेजा...
मोर मुकुटवाले...
बांसुरी अधरन धर मुस्काये, घायल कर क्यों नैन चुराये
आजा श्याम पिया आयजा आयजा....
मोर मुकुटवाले...
काहे तो संग प्रीत लगाई, निष्ठुर निकला तू हरजाई
ओ लागा प्रीत का रोग मिटाये जा....
मोर मुकुटवाले...
टेढ़ी तोरी लकुटी कमरिया, टेढ़ो तू चितचोर सांवरिया
ओ टेढ़ी नजरों के तीर चलाये जा....
मोर मुकुटवाले...

कांधे पे तोरी काली कमरिया, अलकें हैं जैसे बदरियाँ
ओ कान्हा प्रेम सुधा बरसाये जा
मोर मुकुटवाले...

(१३६)

अपनी वाणी में अमृत घोल, ओ रसना राधे-राधे बोल।
ये बोल बड़े अनमोल ओ रसना राधे-राधे बोल॥
राधाजी बरसाने वाली, राधा जी वृषभानु दुलारी।
दो अक्षर आधार जगत के।
ये अक्षर है अनमोल, ओ रसना........।
राधाजी महारास रचावे, राधाजी नन्दलाल नचावे।
इस छवि को भर नयनयन में।
अन्दर के पट खोल, ओ रसना.......॥
बिन राधा नहीं सजे बिहारी।
बिन राधा नहीं मिले बनवारी।
इनके चरण पकड़ अनमोल, ओ रसना......॥

(१३७)

आज हरि आये विदुर घर पाहुणा॥टेर॥
विदुर नहीं घर थीं विदुरानी, आवत देख्या सारंगपाणी।
फूली अंग समावे नाहीं, भोजन कहाँ जिमावणा॥ १॥
केला बड़े प्रेमसे लाई, गिरी गिरी सब देत गिराई।
छिलका देत श्याम मुख माहीं, लागे बहुत सुहावणां॥ २॥
इतने मांहि विदुर घर आये, खरे खोटे बचन सुणाये।
छिलका देत श्याम मुख माहीं, कहाँ गमाई भावना॥ ३॥

केला दिये विदुर कर माहीं, गिरी देत गिरधर मुख माहीं।
कहे कृष्णजी सुणो विदुरजी, वो सवाद नहिं आवणा॥४॥
बासी-खूसी रूखे-सूखे, हम तो विदुरजी प्रेमके भूखे।
'शम्भु सखी' धन धन विदुरानी, भक्तोंका मान बढ़ावणा॥५॥

(१३८)

आजा मनमोहन मीरा, मेड़तणी बुलावे,
मीरा बुलावै थाने, दासी बुलावे रे दासी बुलावे॥टेर॥
बाबासा मायड़ म्हाने लाड़ लड़ाई,
राम जाणे राणा संग क्यूँ परणाई।
थारी या प्रीत राणा, म्हाने दाय न आवे रे-दाय न आवे॥१॥
तुलसीकी कंठी माला, सेवा सालिगराम की,
जप तप नेम छोड्या, धुन घनश्याम की।
भगवां उतारो मीरा, राणो समझावे रे-राणो समझावे॥२॥
पत्थर ने काँईं पूजो, यूँ बोल्यो राणो,
ठाकुर ने जिमाओ जद, सांची प्रीत जाणूँ।
झूठी कपटी तू कुल को, दाग लगावे रे-दाग लगावे॥३॥
दूध को कटोरो भर ल्याई मीरा बाई
पीवो म्हारा श्याम थान, मीरा की दुहाई।
दासी उदासी मीरा, आँसु ढलकावे रे-आँसु ढलकावे॥४॥
मीरा की पुकार सुणकर, श्याम धणी आयो,
दूधको कटोरो भर्‌यो, सारो गटकायो।
मीराकी प्रतिज्ञा राखी, लाज बचाई रे, लाज बचाई॥५॥
अमर सुहागण भागण, राठौडा री जाई,
पीहरियो सासरियो दोनों, तार्‌यो मीरा बाई।

दासी मीरा की ओल्यूँ, भगत सब गावे-रे
भगत सब गावे-आजा मनमोहन मीरा मेड़तणी बुलावे ॥ ६ ॥

(१३९)

आना मदन गोपाल हमारे घर कीर्तनमें
आना सुंदर श्याम हमारे घर कीर्तनमें ॥ टेर ॥
आप भी आना, संग राधाजी को लाना,
आकर रास रचाना हमारे हरि कीर्तनमें ॥ टेर ॥
आप भी आना, संग गोपियों को लाना,
आकर बंसी बजाना, हमारे हरि कीर्तनमें ॥ टेर ॥
आप भी आना, संग अर्जुन को लाना
गीता ज्ञान सुनाना हमारे घर कीर्तनमें ॥ टेर ॥
आप भी आना, संग ग्वालों को लाना
आकर माखन लुटाना हमारे हरि कीर्तनमें ॥ टेर ॥

(१४०)

आली! म्हाँने लागे बृंदाबन नीको।
घर-घर तुलसी ठाकुर पूजा दरसण गोबिंदजीको ॥
निरमल नीर बहत जमनामें भोजन दूध दहीको।
रतन सिंहासण आप बिराजै मुगट धर्‍यो तुलसीको ॥
कुंजन कुंजन फिरत राधिका शब्द सुनत मुरलीको।
मीराके प्रभु गिरधर नागर भजन बिना नर फीको ॥

(१४१)

आवोजी कृष्ण मेरे प्राणके बचानेवाले।
मानव-तनमें प्रकटाये मथुरासे गोकुल आये।
यशोदाके लाल भव-भय-जालके मिटानेवाले ॥ आवोजी० ॥ १ ॥

छल करके पूतना आई वाको सुरधाम पठाई।
असुरनको मार भूमि भारको मिटानेवाले॥ आवोजी० ॥ २॥
राजा इन्द्र बरसाये नखपर गिरिराज उठाये।
जमुनामें कूद कालीनागको नथानेवाले॥ आवोजी० ॥ ३॥
बन बनमें धेनु चराये कुंजनमें रास रचाये।
गोपियनके प्राणप्यारे माखनके चुरानेवाले॥ आवोजी० ॥ ४॥
पाण्डवकी नार पुकारे दुःशासन चीर उतारे।
आओ बलबीर मेरे चीरको बढ़ानेवाले॥ आवोजी० ॥ ५॥
सनकादिक ध्यान लगावे ब्रह्मादिक अन्त न पावे।
नारायणदास नैया पारके लँघानेवाले॥ आवोजी० ॥ ६॥

(१४२)

आवो मनमोहना, आवो नन्दनन्दना।
गोपीजन प्राण धन राधा उर चन्दना॥टेर॥
कैसे तुम गणिका के अवगुण निवारे नाथ।
कैसे तुम भीलनी के जूठे बेर खावना॥ १॥
कैसे तुम द्वारिका में द्रोपदी की टेर सुनी।
कैसे तुम गज काज नंगे पाँव धावना॥ २॥
कैसे तुम सुदामा के छिन में दरिद्र हरे।
कैसे तुम उग्रसेन बन्दी से छुड़ावना॥ ३॥
कैसे तुम भारत में भीषम को प्रण राख्यो।
कैसे वसुदेवजी के बन्धन छुड़ावना॥ ४॥
करुणा निधान श्याम मेरी बेर मुंदे कान।
असरण सरण श्याम सूर मन भावना॥ ५॥

(१४३)

आओ कन्हैया, आओ मुरारी, तेरे दर पे आया सुदामा भिखारी॥ टेर॥
क्या मैं बताऊँ, क्या मैं सुनाउँ, एक दुःख नहीं जो मन में छिपाऊँ।
घट-घट की जानत हो, तुम हे मुरारी, तेरे दरपे आया सुदामा भिखारी॥ १॥
ना तो डगर है, ना कोई घर है, फटे हुए कपड़े हैं, तुझे सब खबर है।
क्या तुम परीक्षा, लेते मुरारी, तेरे दरपे आया सुदामा भिखारी॥ २॥
नैनोंमें आँसू, उठे ना कदम है, आवो कन्हैया अब तो होठों पे दम है।
आकर के देखो, दशा तो हमारी, तेरे दरपे आया सुदामा भिखारी॥ ३॥
आवाज मेरी, पहुँची नहीं क्या, दरबान ने तुझ को खबर नहीं दी क्या।
जरा आके देखो, दशा तो हमारी, तेरे दरपे आया सुदामा भिखारी॥ ४॥
क्या मुझमें दोष हुआ, हुआ क्या गुनाह है, दीनों के नाथ क्यों निठुर बना है।
पाप किया क्या, है मैंने भारी, तेरे दरपे आया सुदामा भिखारी॥ ५॥
आओ कन्हैया, छूटे अब तो दम है, अगर अब ना आये तो माँ की कसम है।
सुनके कसम पहुँचे, मिलने मुरारी, तेरे दरपे आया सुदामा भिखारी॥ १॥

(१४४)

इतना तो करना स्वामी! जब प्राण तनसे निकले।
गोविन्द नाम लेकर, फिर प्राण तनसे निकले॥ १॥
श्रीगंगाजीका तट हो, यमुनाका बंशी-वट हो।
मेरे साँवरा निकट हो, जब प्राण तनसे निकले॥ २॥
श्रीवृन्दावनका स्थल हो, मेरे मुखमें तुलसी-दल हो।
विष्णु-चरणका जल हो, जब प्राण तनसे निकले॥ ३॥
सन्मुख साँवरा खड़ा हो, मुरलीका स्वर भरा हो।
तिरछा चरण धरा हो, जब प्राण तनसे निकले॥ ४॥
सिर सोहना मुकुट हो, मुखड़े पै काली लट हो।
यही ध्यान मेरे घट हो, जब प्राण तनसे निकले॥ ५॥

हे कृष्ण कन्हैया, रास रचैया, दाऊजी के भैया,
जहर पीकर, जो नाम तेरा लीन्हा, तर गई संसार से॥ तेरी॥
जब जब होगी धर्म की हानि, मैं भारत में आऊँगा।
भक्तों की रक्षा हेतु मैं, चक्र सुदर्शन चलाऊँगा।
हे नन्दनन्दन, असुर निकन्दन, काटो मेरे फन्दन
अब तो आजा तू दर्श दिखाजा, बड़ी शान से॥ तेरी॥
'श्यामसुन्दर' भगत मण्डल की ये अर्जी सुनकर आ जावो।
दीन दयालु, दया के सागर, आकर दर्श दिखा जावो।
हे बनवारी गिरवर-धारी, जय जय रास-बिहारी,
पाप सारे कटेंगे हमारे तेरे ही गुणगान से॥ तेरी॥

(१४७)

ओ जी म्हारा नटवर नागरिया, भगतों के क्यू नहीं आयो रे,
ओ जी म्हारा नटवर॥ टेर॥

धन्ना भगत की भगती पुरबली, जिणरो खेत नीपजायों रे,
बीज ले साधुओं ने बाट्यो, बिना बीज निपजायो रे॥ ओ जी...... ॥
सेन भगत कांई सुसरो लागे, जिणरो कारज सार्‌यो रे,
बिना रसोंणी नाई बण ने, नृप रो शीश सवांर्‌यो रे॥ ओ जी...... ॥
कबीरो कांई थारे काको लागे, जिण घर बालद लायो रे,
खाण्ड खोपरा गिरी छुआरा, आप लदावण आयो रे॥ ओ जी...... ॥
भीलणी कांई थारे भुआ लागे, जिणरो झूठन खायो रे,
ऊँच नीच की शंका नहीं कीन्ही, रूच रूच भोग लगायो रे॥ ओ जी...... ॥
मीरां कांई थारे मासी लागे, जिणरो विषड़ो पी गयो रे,
राणे विष रा प्याला भेज्या, विष रो अमृत कर डाल्यो रे॥ ओ जी...... ॥
करमां कांई थारे काकी लागे, जिणरो खीचड़ खायो रे,
धाबलिया रो परदो कीन्हो, रूच रूच भोग लगायो रे॥ ओ जी...... ॥

थारी जीभ चटोकड़ी बाला, म्हारे नहीं छै चाटो रे,
नानी बाई रो मायरो भरतां, घर सू लागे दाम रे॥ ओ जी...... ॥
कहे नरसीलो सुण साँवरिया, आणो है तो आइजो रे,
ब्याही सगों में भूण्डा लागे, यूं कांई शान गमावे रे॥ ओ जी...... ॥
टेर सुणी नरसीजी री, किशनो, राधा रूकमणी संग आयो रे,
भोला भक्तां री लाज बचावण, दौड्या दौड्या आयो रे॥ ओ जी...... ॥

(१४८)

ओजी हो साँवरिया थाँरी, दासी बण ज्यावाँ जी।
दासी बणज्यावाँ थाँरे चरणाँ में रमजावाँ जी॥ टेर ॥
कहो तो साँवरिया थाँरा, कुण्डल बणज्यावाँजी।
कुण्डल बणज्यावाँ थाँरे, काना में रमजावाँ जी॥ १ ॥
कहो तो साँवरियाँ थाँरा, कङ्कण बणज्यावाँ जी।
कङ्कण बणज्यावाँ थाँरे, हाथाँ में रमजावाँ जी॥ २ ॥
कहो तो साँवरिया थाँरी, मुँदरी बणज्यावाँ जी।
मुँदरी बणज्यावाँ थारी, अँगुली में रमजावाँ जी॥ ३ ॥
कहो तो साँवरिया थाँरी, माला बण ज्यावाँ जी।
माला बणज्यावाँ थारे, हिवड़े पर बसज्यावाँ जी॥ ४ ॥
कहो तो साँवरिया थाँरी, मुरली बणज्यावाँ जी।
मुरली बणज्यावाँ थाँरे अधराँ पर रम ज्यावाँ जी॥ ५ ॥
कहो तो साँवरिया थाँरी, पैंजणियाँ बणज्यावाँ जी।
पैंजणियाँ बणज्यावाँ थाँरे, चरना में रमजावाँ जी॥ ६ ॥
कहो तो साँवरिया थाँरी, कोयलियाँ बणज्यावाँ जी।
कोयलियाँ बणज्यावाँ थाँने, मीठा सबद सुणावाँ जी॥ ७ ॥
कहो तो साँवरिया थाँरी, मालिनियाँ बणज्यावाँ जी।
मालिनियाँ बणज्यावाँ थाँरा गजरा गूँथर ल्यावाँ जी॥ ८ ॥

कहो तो साँवरिया थाँरी, गोपी बणज्यावाँ जी।
गोपी बणज्यावाँ थाँरे संग में रास रचावाँ जी॥ ९ ॥
कहो तो साँवरिया थाँरी, राधाजी बणज्यावाँ जी।
राधाजी बणज्यावाँ थाँरी, प्रेम धजा फहरावाँ जी॥ १० ॥

(१४९)

ओ कुण सिनगार्‌यो, ओ कुण सिनगार्‌यो।
लाला ने बनड़ो बना दियो, ओ कुण सिनगार्‌यो॥ टेर॥
बागा से फुलड़ा लाया, और कुण कर साज सजाया।
ये जचा जचा पहराया, याके राइ नौन उतारो॥
ओ कुण.....

म्हारा गुरुजीने बाग लगाया, यामें फुलड़ा घणा लगाया।
ये केशर तिलक लगाया जी, सिनगार कुण सिनगार्‌यो॥
ओ कुण.....

ये कुण थारा मुकुट लगाया, ये कुण थारा छत्र धराया।
याने देख देख शरमायाजी, यो चांद रो उजियारो-२॥
ओ कुण.....

थारा दासों ने मुकुट धराया, थारा भक्तों ने छत्र धराया।
दर्शन कर सब कुछ पाया जी, सिनगार लाग्यो प्यारो॥
ओ कुण.....

(१५०)

कलियुग में एक बार कन्हैया, ग्वाले बन कर आओ रे,
आज पुकार करे तेरी गैया, आ के कण्ठ लगाओ रे।
जिनको मैंने दूध पिलाया, वो ही मुझको सताते हैं,

चीर फाड़ कर मेरे बेटे, मेरा ही मांस बिकाते हैं।
अपनों के अभिशाप से मुझको, आकर आज बचाओ रे॥
कलियुग में एक बार..........

चाबुक से जब पीटी जाऊँ, सहन नहीं कर पाती मैं,
उबला पानी तन पर फेंके, हाय हाय चिल्लाती मैं,
बिना काल मैं तिल तिल मरती, करुणा जरा दिखाओ रे॥
कलियुग में एक बार..........

काहे हमको मूक बनाया, घुट घुट कर यू मरने को,
उस पर हाथ दिये ना तूने, अपनी रक्षा करने को,
भटक गयीं, सन्तान हमारी, रस्ता आन दिखाओ रे॥
कलियुग में एक बार..........

एक तरफ तो बछड़े मेरे, अन्न धन को उपजाते हैं,
उसी अन्नको खानेवाले, मेरा वध करवाते हैं।
श्याम जरा तुम माँ के वध को, आके रोक लगाओ रे॥
कलियुग में एक बार....

(१५१)

कीर्तन की है रात बाबा आज थाने आनो है
कोल निभानो है, कीर्तन की है रात॥ टेर॥
दरबार सांवरिया, ऐसो सजो प्यारों, दयालु आपको
सेवा में साँवरिया, सगला खड्या है, हुकुम बस आपको
सेवा में थारी, म्हाने आज बिछ जानो है॥ १॥
कीर्तन की है त्यारी कीर्तन करा जमकर, प्रभु क्यों देर करो।
वादो थारो दाता, कीर्तन में आने को, घणी क्यू देर करो
भजना सूं थाने, म्हाने आज रिझानो है॥ २॥

जो कुछ बन्यों म्हा सूं अर्पण प्रभु सारो, प्रभु स्वीकार करो
नादान सूं गल्ती, होती ही आयी है, प्रभु मत ध्यान धरों
'भक्त मण्डल' साँवरिया, थारो दास पुरानो है ॥ ३ ॥

(१५२)

कृष्ण गोविंद गोपाल गाते चलो
अपनी मुक्ति का मार्ग बनाते चलो
काम करते रहो नाम जपते रहो
पाप करने से हरदम तुम डरते रहो
नाम धन का खजाना बढ़ाते चलो, कृष्ण.....

लोग कहते हैं भगवान आते नहीं,
द्रोपदी की तरह तुम बुलाते नहीं
टेर गज की तरह से सुनाते चलो ॥ कृष्ण.....

लोग कहते हैं भगवान खाते नहीं,
शबरी की तरह तुम खिलाते नहीं
साग विदुर के जैसे खिलाते चलो ॥ कृष्ण.....

सुख में भूलो नहीं दुःख में रोवो नहीं,
अपने दिलसे प्रभु को बिसारो नहीं
माया जालों को दिल से हटाते चलो ॥ कृष्ण.....

दया आयेगी उनको कभी न कभी,
दास पायेगा दर्शन कभी न कभी
यही विश्वास अपने दिलमें जमाते चलो ॥ कृष्ण.....

सभी आये अनाथों का तू नाथ है,
अपने भक्तों के रहता तू पास है
मन को विषयों के विष से हटाते चलो ॥ कृष्ण.....

(१५३)

कन्हैया कन्हैया पुकारा करेंगे,
लताओं में ब्रज की गुजारा करेंगे, कन्हैया ..... ॥ टेर॥
कहीं तो मिलेंगे वो बाँके बिहारी,
उन्हीं के चरण चित लगाया करेंगे, कन्हैया.... ॥ १ ॥
बना करके हृदय में हम प्रेम मन्दिर,
वहीं उनको झूला झुलाया करेंगे, कन्हैया.... ॥ २ ॥
उन्हें हम बिठावेंगे आँखों में, दिल में,
उन्हीं से सदा लौ लगाया करेंगे, कन्हैया.... ॥ ३ ॥
जो रूठेंगे हमसे वो बाँके बिहारी,
चरण पड़ उन्हें हम मनाया करेंगे, कन्हैया.... ॥ ४ ॥
उन्हें प्रेम डोरी से हम बाँध लेंगे,
तो फिर वो कहाँ भाग जाया करेंगे, कन्हैया.... ॥ ५ ॥
उन्होंने छुड़ाये थे गजके वो बन्धन,
वही मेरे संकट मिटाया करेंगे, कन्हैया.... ॥ ६ ॥
उन्होंने नचाये थे ब्रह्माण्ड सारे,
मगर अब उन्हें हम नचाया करेंगे, कन्हैया.... ॥ ७ ॥
भजेंगे जहाँ प्रेम से नन्द-नन्दन,
कन्हैया छबि को दिखाया करेंगे, कन्हैया.... ॥ ८ ॥

(१५४)

कन्हैया, एक बार सुना दे थारी बाँसुरी-३
म्हारे हिवड़े में उठेरे हिलोर....कन्हैया!...!!
कन्हैया, बंशी सुण राधा हो गई बावरी-३
प्यारी लागे थारी बंशी नन्दकिशोर!! कन्हैया!!

कन्हैया, थार बिना ना म्हान आवड़-३
म्हारी आँखड़ल्याँ री नीन्दड़ली लई चोर!! कन्हैया!!
कन्हैया पल भर ना बिसराँ थारी बाँसुरी-३
थारी बाँसुरी म्हारी कालजड़ री कोर!! कन्हैया!!
कन्हैया जादू भरी थारी बाँसुरी-३
सुण कर नाचे म्हारे हिवड़े रो मोर!! कन्हैया!!
कन्हैया मिनखारी काँई बात है-३
आ बाँसुरी सुण इन्द्र आसन छोड़!! कन्हैया!!
कन्हैया शंकर रो डमरु थारी बाँसुरी-३
जग में नाच नचायो चारूँ ओर!! कन्हैया!!
कन्हैया 'भक्त मण्डल' की या विनती-३
कर दे जग में सुहानी भोर!! कन्हैया!!

(१५५)

कहाँ जायगो रे लीन्यो श्याम पकड़के॥ टेक॥
नरम कलैया हरिकी पकड़ी पकड़ी बाँह जकड़के।
अब तो हाथ छुड़ावन लाग्यो ऐंठ ऐंठ बल करके।
दाव मेरो लग गयो रे, लीन्यो श्याम पकड़के॥ १॥
सास ननद मोय बुरी बतावे नाम धरे गिन गिनके।
ऐसी बहू अचम्भे मिल गई खाय गई घरमें घुसके।
जो कछु पाय गयो रे, लीन्यो श्याम पकड़के॥ २॥
मात यशोदा यों उठि बोली श्याम गयो मोसे लड़के।
'परमानन्द' दासको ठाकुर मोरमुकुट सिर धरके।
छवि दरसाय गयो रे, लीन्यो श्याम पकड़के॥ ३॥

(१५६)

कानूड़ा लाल घड़ियो म्हारो भर दे रे
बनवारी लाल घड़ियो म्हारो भर दे रे
तू मत जाणी कान्हा बिना गाँव री-२
गढ गोकुल म्हारो घर छः रे—कानूड़ा लाल
तू मत जाणी कान्हा आई हूँ अकेली-२
सात सहैल्याँ म्हारे संग छः रे—कानूड़ा लाल
तू मत जाणी कान्हा अखण्ड कुँवारी-२
कृष्ण मुरारी म्हारो वर छः रे—कानूड़ा लाल
चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छवि
हरि चरणाँ में म्हारो चित छः रे—कानूड़ा लाल

(१५७)

किशोरीजी इतना तो कीजो, लाड़ली इतना तो कीजो,
जग जंजाल छुड़ाय बास बरसाने को दीजो॥ टेर॥
भोर होत महलन के द्वारे, सेवा के मिस जाऊँ।
ठाकुरजी के दरशन पाऊँ, जीवन सफल बनाऊँ,
किशोरी मोहे सेवा में लीजो, लाड़ली सेवा में लीजो,
जग जंजाल छुड़ाय बास बरसाने को दीजो॥ टेर॥
पड़ी रहूँ मैं द्वार तिहारे, भक्तों के दरशन पाऊँ।
भगतन की पग धूरि मिले तो, अपने शीश चढ़ाऊँ॥
किशोरी मोहे द्वारे रख लीजो, लाड़ली द्वारे रख लीजो।
जग जंजाल छुड़ाय बास बरसाने को दीजो॥ टेर॥

भूख लगे तो बृजवासिन के, भीख मांग कर खाऊँ।
कबहु प्रसादी श्रीमहलन की, कृपा होय तो पाऊँ॥
किशोरी मेरी विनय मान लीजो, लाड़ली विनय मान लीजो।
जग जंजाल छुड़ाय बास बरसाने को दीजो॥ टेर॥
राधे राधे रटू निरतंर, तेरे ही गुण गाऊँ।
तेरो ही गुण गाय गाय मैं, तेरो ही रह जाऊँ॥
किशोरी मोहे अपनो कर लीजो, लाड़ली अपनो कर लीजो।
जग जंजाल छुड़ाय बास बरसाने को दीजो॥ टेर॥

(१५८)

कैसी लागी लगन, मीरा हो गई मगन
वो तो गली गली हरि गुण गाने लगी॥
महलों में पली बनके जोगन चली
मीरा रानी दिवानी कहाने लगी॥
कोई रोके नहीं, कोई टोके नहीं
मीरा गोविंद गोपाल गाने लगी
बैठी संतों के संग, रंगी मोहन के रंग
मीरा प्रेमी प्रीतम को मनाने लगी॥
वो तो गली गली...........
राणा ने विष दिया, मानो अमृत पिया
मीरा सागर में सरिता समाने लगी
दुःख लाखों सहे, मुख से गोविन्द कहे
मीरा गोविंद गोपाल गाने लगी॥
वो तो गली गली..........

(१५९)

कोई कहे गोविंदा, कोई गोपाला।
मैं तो कहुँ साँवरिया बाँसुरिया वाला॥
राधाने श्याम कहा, मीरा ने गिरधर।
कृष्णा ने कृष्ण कहा, कुब्जा ने नटवर॥
ग्वालों ने तुझको पुकारा गोपाला।
मैं तो कहुँ साँवरिया बाँसुरिया वाला॥ धृ०॥
घनश्याम कहते हैं बलराम भैया।
यशोदा पुकारे कृष्ण कन्हैया॥
सुरा की आँखों के तुम हो उजाला।
मैं तो कहुँ साँवरिया बाँसुरिया वाला॥ १॥
भीष्म ने बनवारी, अर्जुन ने मोहन।
छलिया भी कह कर के बोला दुर्योधन॥
कन्सा तो जलकर के कहता है काला।
मैं तो कहुँ साँवरिया बाँसुरिया वाला॥ २॥
भक्तों के भगवान, संतों के केशव।
भोले कन्हैया तुम मेरे माधव॥
ग्वालिनिया तुझको पुकारे नंदलाला।
मैं तो कहुँ साँवरिया बाँसुरिया वाला॥ ३॥

(१६०)

गोकुल जिनका ग्राम है, कृष्ण जिनका नाम है।
ऐसे श्याम सुजान को, बारम्बार प्रणाम है॥
माँ जसुमति के लाल हैं, नंदबाबा के लाल हैं।
ऐसे कोमल कान्हा को, बारम्बार प्रणाम है॥

श्याम सलोने प्यारे हैं, अनुपम नंद दुलारे हैं।
बालरूप भगवान् को, बारम्बार प्रणाम है॥
गाय चराने जाते हैं, नित नव खेल रचाते हैं।
यमुना तट के मान को, बारम्बार प्रणाम है॥
मुरली मधुर बजाते हैं, दिनभर धेनु चराते हैं।
मधु मुरली के गान को, बारम्बार प्रणाम है॥
माखन नित्य चुराते हैं, ग्वाल बाल मिल खाते हैं।
माखन प्रेम महान को, बारम्बार प्रणाम है॥
कुंजन रास रचाते हैं, सबका मन भरमाते हैं।
सब पर कृपा निधान को, बारम्बार प्रणाम है॥
शिव-ब्रह्मा भी आते हैं, दर्शन को ललचाते हैं।
ऐसे दर्शन मान को, बारम्बार प्रणाम है॥
कंस मारने आये हैं, सबके भाग्य जगाये हैं।
जन-जन कल्याण को, बारम्बार प्रणाम है॥
गोकुल जिनका ग्राम है, कृष्ण जिनका नाम है।
ऐसे श्रीभगवान्को, बारम्बार प्रणाम है॥

(१६१)

गोविन्द जय जय, गोपाल जय जय,
राधारमण हरि गोविन्द जय जय॥
ब्रह्मा की जय जय, विष्णु की जय जय,
उमापति शिवशंकर की जय जय॥
राधा की जय जय, रुक्मिणी की जय जय,
मोर मुकुट बंशीवाले की जय जय॥
गंगा की जय जय, यमुना की जय जय,
सरस्वती, प्रयाग, त्रिवेणी की जय जय॥

रामजी की जय जय, सीताजी की जय जय,
दशरथ कुँवर चारुँ भैया की जय जय॥
गोविन्द जय जय! गोपाल जय जय!
राधारमण हरि गोविन्द जय जय!
मोहन की जय जय! माधव की जय जय!
कान्हा की जय! कृष्ण केशव की जय जय!
बाबा की जय! नन्द बाबा की जय जय!
जय जय जसोदा मैय्या की जय जय!
मथुरा की जय जय! मधुवन की जय जय!
गोकुल की जय! गोवर्द्धन की जय जय!
गैय्या की जय! गैय्या मैय्या की जय जय!
गैय्याचरय्या कन्हय्या की जय जय!
लकुटी की जय जय! बंशी की जय जय!
कान्हा की काली कमलिया की जय जय!
गोपीजनों गोपबालों की जय जय!
प्रभु की कृपा पाने वालों की जय जय!
गोविन्द जय जय! गोपाल जय जय!
राधारमण हरि गोविन्द जय जय!

(१६२)

गोपाल हो तुम मैं बाल सखा, तुम और नहीं मैं और नहीं।
मैं बालक हूँ तुम मात-पिता, तुम और नहीं मैं और नहीं॥ १॥
तुम हित हो मैं हितकारी हूँ, तुम कर्म हो मैं क्रमकारी हूँ।
तुम ठाकुर हो मैं पुजारी हूँ, तुम और नहीं मैं और नहीं॥ २॥

तुम कमल हो मैं रस-भौंरा हूँ, तुम चन्दा हो मैं चकोरा हूँ।
तुम मेरे हो मैं तुम्हारा हूँ, तुम और नहीं मैं और नहीं ॥ ३ ॥
तुम दीपक हो मैं उजियाला हूँ, तुम दाता मैं दरवाला हूँ।
तुम गायत्री मैं माला हूँ, तुम और नहीं मैं और नहीं ॥ ४ ॥
तुम परदे में मैं जाहिर हूँ, तुम भीतर हो मैं बाहिर हूँ।
तुम नारायण हो मैं नर हूँ, तुम और नहीं मैं और नहीं ॥ ५ ॥
यह दुंईका भेद मिटा प्यारे, अब देर है क्या आ जा प्यारे।
इस दास को दर्श दिखा प्यारे, तुम और नहीं मैं और नहीं ॥ ६ ॥

(१६३)

घनश्याम म्हारे हिवड़े में रम ज्यावो प्यारा श्याम (२)
घनश्यामजी ओ ऽऽ जी प्यारा श्याम ऽऽ ॥ टेर ॥
जीवन नैया दास की, डूब रही मझधार
जाणै कैयाँ पहुँच स्यूँ जी, भवसागर से पार
घनश्याम म्हारो बेड़ा पार लगाओ प्यारा श्याम ॥ १ ॥
मोह माया के जाल में, दुःख पाऊँ दिन रैन
दर्शन द्योजी साँवरा, म्हारा ब्याकुल छै दो नैन
घनश्याम थाँको नटवर रूप दिखावो प्यारा श्याम ॥ २ ॥
करुणासागर आप हो, शरणागत प्रतिपाल
मैं शरणागत दास हूँ जी, काटो भव जंजाल
घनश्याम म्हारो आवागमन छुड़ावों प्यारा श्याम ॥ ३ ॥
ई थाँका ब्रह्माण्ड में, लख चौरासी जूण
करनी बस सब भोगता जी, पायी मिनखा जूण

घनश्याम अब तो थारे धाम बुलाओ प्यारा श्याम ॥ ४ ॥
जै मुरलीधर मोहना, जय जय नन्दकिशोर
जै जै नटवर प्राणधन, जय जय नन्दकिशोर
घनश्याम म्हारो बेड़ो पार लगाओ प्यारा श्याम ॥ ५ ॥

(१६४)

घनश्याम थारी झाँकी प्यारी लागे जी म्हाने
घनश्याम जी, ओ म्हारा श्याम ॥ टेर ॥
शीश किलंगी पागड़ी, रतन जड़ित सिर पेच,
कानों में मोती सोहे, मनमोहन थारो भेष।
जी घनश्याम थारी चितवन, प्यारी लागे जी म्हाने ॥ १ ॥
कण्ठो हीरा को सोहे, गल मोतियन की माल,
बीटीं मेंहदी कांगनों, शोभा बनी विशाल।
जी राधावर थारो लटको, प्यारी लागे जी म्हाने ॥ २ ॥
अचकन झिलमिल कर रही, दे रही अजब बहार,
दुपट्टा सोहे जरी को, मन मोहे घनश्याम।
जी नन्दलाल थारी चलगत, प्यारी लागे जी म्हाने ॥ ३ ॥
राधे की शोभा घणी, म्हाँसू कही न जाय,
प्रगट भई बृजभूमि सु, श्रीमुख दियो दिखाय।
जी केसरिया थाँकी जोड़ी, प्यारी लागे जी म्हाने ॥ ४ ॥

(१६५)

घणी दुरसु दोडों आयो गाडोली रे लारे, गाड़ी में बिढ़ाले बाबा, जाणो है नगर अजार, घणी........
नरसी बोल्यो मारे संग तु के करसी। ओढन कपडो नाय बठे सीया मरसी ॥
भागी टूटी गाडोली, आ पैदल चालन हार-२, गाडी........
ज्ञानदासजी बोल्या ओ गाडी तोडे लो, सूरदासजी बोल्या तूम्बडा, फोडोलो ॥

घणी भीड़ सु टुटे मारे इकतारा रो तार-२, गाडी........
थेले माय सु काढ़, बासुलो और पाती। किसनो मारो नामा जात रो हूँ खाती॥
भागी टूटी गाडोली ने करदूला तैयार-२, गाडी........
जुँअर उपर बैठ हाकंसु हलाकार। थे करजो आराम दाबसु पग थारा॥
घडी पलक मे बेगा पहुँचा देऊ नगर अंजार-२, गाडी........
नानी बाई रो भात देखवा चालू लो। पुण पावलो थाली माही घालू लो॥
चार दिनों तक चोखा जीमा जीमणरी मनवार-२, गाडी........
टूटोड़ी गाड़ी भी आज विमान बणी, नरसी गावे भजन सुणे खुद श्यामधणी॥
सुरिया थारी पीठ थपोडे, जीवता रे मोटियार-२, गाडी........
कुणसा ऐसा भगत जो हरी ना आया, श्याम सुन्दर मुस्कायपकड मोटा पाया॥
दीन जानकर रक्षा कीजो, त्रिलोकी रा नाथ-२, गाडी........

(१६६)

चालो श्रीजी रे शरणे चालो, दरशण रा लाभ उठालो
कृपा करोनी म्हारा साँवरा, ओ कान्हा कृपा..........
नाचे गावे धूम मचावे, मीठी तान सुनावे ओ
मटकी फोड़े छाछ है ढोले, माखण सूँ रास रचावे औ
ओतो ग्वालो सँग धूम मचावे, गिरधर गोपाल कहावे
कृपा करोनी म्हारा सांवरा ....
कुंजन-कुंजन राधा डोले, सखिया डोले मधुवन में ओ
गायो तरसे सांवरिया ने, लुक छिप देखे मोहन ने ओ
कहाँ छिपे गोवर्धन धारी, गोविन्द कृष्ण मुरारी
कृपा करोनी म्हारा सांवरा ....
मीरा सुदामा द्रोपदी, असूँवन सूँ चरण पखारे ओ
मान यशोदा हरखे-निरखे, पलको सूँ नजर उतारे ओ
नटवर नंदलाल कहावे, ब्रज वासी सुख धन पावे
कृपा करोनी म्हारा सांवरा ....

जतीपुरा गोकुल वृन्दावन, बैकुण्ठ धाम कहावे ओ
श्री बल्लभ आचार्य महाप्रभु, वैष्णव मंत्र उचारे ओ
बोलो जै जै गिरिराज धरण की, जै जै यमुना मैया की
कृपा करोनी म्हारा सांवरा ....
चालो श्री जी रे शरणे चालो, दरशण रा लाभ उठालो
कृपा करोनी म्हारा सांवरा ....

(१६७)

छुप-छुप आये श्याम लेके ग्वाल बाल है।
ऐसो री यशोदा ढीठ तेरो नन्दलाल है।
ऐसो री हटीलो मैया तेरो नन्दलाल है॥टेर॥
ग्वाल बाल संग लेके, घर मेरे आ गये।
माखन को खाय मेरी मटकी गिरा गये।
अँगूठा दिखावे चाले टेढ़ी-टेढ़ी चाल है॥ १ ॥
देख री यशोदा श्याम तेरो बड़ो रारी है।
डगर चलत मेरी गागर फोर डारी है।
फिर भी दिखावे मोहे आँखें लाल-लाल है॥ २ ॥
तोसे कछु कहें तो तूँ कान से निकार दे।
बार-बार श्याम की बलैयाँ लेके टार दे।
द्वार पै पुकारे खड़े सभी गोप ग्वाल है॥ ३ ॥
बोली यूँ यशोदा मोते कीमत धराय ले।
एक-एक गागर की सौ-सौ तूँ भराय ले।
गारी मत दीजे मो गरीबनी को लाल है॥ ४ ॥

(१६८)

छैल छबीलो प्यारो नन्दजीको लालो,
म्हारै मन बस गयो गिरधारी॥ टेर॥
मथुरामें हरि जनम लियो है गोकुलकी छबी है न्यारी।
नन्द घराँ आनन्द भयो है मंगल गावैं सखियाँ सारी॥ १॥
कंसराय भेजी समझा कै नार पूतना हुँसियारी।
स्तन पानकर प्राण हर्‌यो है स्वर्ग पठा दी सुरनारी॥ २॥
ग्वाल-बाल संग गेंद रमत हैं तट यमुना बिच जाय डारी।
कालीदहमें नाग जो नाथ्यो देखन आवे नर-नारी॥ ३॥
लेकर चीर कदम्बपर चढ़ गये ठण्ड लगत मुझको भारी।
चीर हमारो देवोनी साँवरा लाज लगत मुझको थारी॥ ४॥
मैं दधि बेचन जात बृन्दाबन दधिकी मथनियाँ फोर डारी।
जाय पुकारूँ कंसरायने लूट लेवे गोकुल सारी॥ ५॥
बृन्दाबनमें धेनु चरावे मारग रोक्यो गिरधारी।
जमुनाके नीराँ तीराँ ठाडोरे कन्हैयो बंसी बजावै हद प्यारी॥ ६॥
इन्द्र कोप कियो ब्रज ऊपर वर्ष रह्यो मूसलधारी।
बाँये नखपर गिरवर धार्‌यो वृजकी लाज रखी सारी॥ ७॥
बृन्दाबनमें रास रच्यो है सहस्त्र गोप्याँ बिच गिरधारी।
सूरदास प्रभु दोउ कर जोड़े चरणकमलपर बलिहारी॥ ८॥

(१६९)

छोटी छोटी गइया छोटे छोटे ग्वाल
हरि छोटो सो मेरो मदन गोपाल॥ टेर॥
आगे आगे गइया पीछे पीछे ग्वाल,
बीच में म्हारो मदन गोपाल॥ टेर॥

काली काली गइया, गोरे गोरे ग्वाल,
श्यामवर्ण म्हारो मदन गोपाल ॥ टेर ॥
छोटी छोटी लकुटी छोटे छोटे हाथ,
बंसी बजावे म्हारो मदन गोपाल ॥ टेर ॥
घास खावे गइया, दूध पीवे ग्वाल,
माखन खावे म्हारो मदन गोपाल ॥ टेर ॥
छोटी छोटी सखियाँ मधुबन बास,
रास रचाते म्हारो मदन गोपाल ॥ टेर ॥
बाँकी बाँकी चितवन टेढ़ी-मेढ़ी चाल,
चैन चुरावे म्हारो मदन गोपाल ॥ टेर ॥
लम्बी लम्बी बाँसुरी छेड़े मीठी तान,
बंसी बजावे म्हारो मदन गोपाल ॥ टेर ॥
बंसी सुने गोपियाँ, मुरली सुने ग्वाल,
दीनों की टेर सुने मदन गोपाल ॥ टेर ॥

(१७०)

जग जननी गौमाता को अरे जबर उजालो रे,
ओ त्रिलोकी को नाथ गाय हित बन्यो ग्वालो रे।
उठ सवाँरे सबसु पैला गौ मुख देखण जावे रे।
ओ नन्दबाबा को लाल गाय हित बन्यो ग्वालो रे।
अरे बन्यो ग्वालो, बन्यो ग्वालो, बन्यो ग्वालोरे,
ओ नन्दबाबा को लाल.................
गौ-गौ करतो सारे जावे, पावे जमुना पानी रे।
मुरली बजावे गाय बुलाये बैठ कदम की डाली रे,
गोचर में वो खेले कूदे-२ मन मतवालो रे।
ओ नन्दबाबा को लाल.................

गो माता री सेवा करनी कान्हा रे मन भावे रे,
सुबह शाम गायो रे लारे उधरणा पग जावे रे
अरे गो माता की रक्षा खातिर-२गिरिराज उठायो रे
ओ नन्दबाबा को लाल.................

गाया आगे गाया लारे, गायों में म्हारो मन लागे
अरे भगत बने घणा मोटा पण गौ सेवा में नहीं लागे
तन मन धन सु करे गौ सेवा, वो मने सबसु प्यारो रे
ओ नन्दबाबा को लाल.................

(१७१)

जमुना जल में केसर घोलू, स्नान कराऊँ साँवरा, ॥ टेर ॥
हल्के हाथो अंग मैं पोंछू,लाड़ लड़ाऊँ साँवरा ॥
कुमकुम केरो तिलक लगाऊँ, पीलो पीताम्बर प्यार मां,
अलबेली आँखो में आंजू, अंजन म्हारा वालमां ॥
जमुना जल.......... ।

पग मां रून-झुन पायल बांधू, हाथ में कंगन वालमां,
नजर न लागे श्याम सुन्दर ने, टपका कर देऊँ गाल मां ॥
दूध कटोरो भरी के देऊँ, पीयो न म्हारा साँवरा।
माखन मिसरी तुम्हे खिलाऊँ, अरोगोनी म्हारा साँवरा ॥ टेर ॥
मोर मुकुट माथे पहराऊँ, मुरली देऊँ हाथ मां, ।
हँसते जाऊ, गीत सुनाऊँ, नाँची ऊठु मैं ताल मां ॥
कृष्ण कृपालु निरखी शोभा, वारि वारि जाऊँ साँवरा,
भक्त मण्ड़ली निरखे शोभा, राखो चरणे साँवरा ॥ टेर ॥

(१७२)

जय गोविन्दा गोपाला, मन मोहन श्याम कन्हैया
मुरलीधर गोपाला घनश्याम नन्दके लाला
जग पालक तू रास रचैया, गोवर्धन गिरधारी
कितने नाम तेरे नटवर, श्यामल कृष्ण मुरारी
मोर मुकुट तन हरले मन बलिहारी हर बृजबाला
मुरलीधर........

तू ही सागर में रमता तू ही धरती पाताल
जलमें, नभमें और जगतमें तेरी जै जै कार
मेरे मन-मन्दिर में स्वामी तुझसे ही उजियाला
मुरलीधर.........

जिसका कोई नहीं इस जग में उसका मीत कन्हैया
बंसी बजैया रास रचैया, काली नाग नथैया
राजा हो या दीन भिखारी सबका तू रखवाला
मुरलीधर.........

(१७३)

जमुना किनारे मेरो गाँव, साँवरा आ जाना-२
जमुना किनारे मेरी ऊँची हवेली,
मैं बृजकी गोपिका नवेली,
राधे किशोरी मेरो नाम। साँवरा आ जाना.....
मल-मल के असनान कराऊँ,
घिस-घिस चन्दन तिलक लगाऊँ,
पूजा करूँगी सुबह शाम। साँवरा आ जाना.....
खस-खस का मैं बंगला बनाऊँ,
चुन-चुन कलियाँ सेज बिछाऊँ

धीरे-धीरे दाबूँ तेरे पाँव। साँवरा आ जाना....
देखत रहूँगी बाट तुम्हारी,
जल्दी आइयो कृष्ण मुरारी
झाँकी करेगी बृज बाम हँसी बतरा जाना
जमुना किनारे....

(१७४)

जरा क गाड़ी डाट भगत म्हाने जाणो नगर अंजार
बात मेरी मान ले॥
सुरत्या बोल्या टूटी गाड़ी बूढ़ा बैल बीमार बात मेरी मान ले।
ग्यान दास यूँ कहने लाग्यो म्हारे सागे के करसी,
गाड़ी माहीं भीड़ घणी तेरा तुम्बा कित धरसी,
तुम्बा पड़सी टुट्या सरसी इक तारा को तार,
बात मेरी मान ले॥ १॥
कारीगर सब कामा को किसनो मेरो नाम है,
भक्ताँ की सेवा करनी यो ही मेरो काम है,
बलदा की बीमारी मेटुँ गाड़ी देऊँ सुधार,
बात मेरी मान ले॥ २॥
ध्यान दास यूँ कहने लाग्यो कियाँ या गाड़ी ठीक कर,
मिसल बिठाव बैठने लाग्यो की इ बिना कोनी सर,
नरसीजी थे गाड़ी हाँको मत ना करो अम्बार,
बात मेरी मान ले॥ ३॥
किसनो बोल्यो भक्ताँ थाने चोखा भजन सुनाऊँगा,
थे सगला आराम करो पगल्याँ थारा दबाऊँगा,
थारे सागे मने भी मिलसी चोखी

मानदास जद यूँ बोल्यो यो तो कोई ठगोरो है,
बाता में यो भुला रह्यो बड़ो ही चालु छोरो है,
सगला रह्यो समल के नहीं तो करसी तुमड़ा पार,
बात मेरी मान ले॥५॥

किसनो बोल्यो मैं सोची भात देखन चालूँगा,
जो भी बनसी पुन पावलो, थाली माँही घालूँगा,
इसो मोको फिर कद आसी करूँ थाँरी मनवार,
बात मेरी मान ले॥६॥

इतनी सुन सूरया बोल्या, पहली क्युँ न बात कही,
म्हें भी इतना बेठ्या हाँ, एक आदमी और सही,
लारे-लारे भाग्यो आसी जावगो तू हार
बात मेरी मान ले॥७॥

नरसी की टूटी गाड़ी पल भर माँही ठीक करी,
किसनो भजन सुनाने लाग्यो, सुरीया बोल्या हरि-२
नरसीजी जद पीठ थपेड़ी जीतो रह मोटियार,
बात मेरी मान ले॥८॥

देरी करो न पलभर की नगर अजार में आया है,
म्हारे सारू काम कहो किसनो वचन सुनाया है,
नरसी बोल्यो मिलतो रिजे करके हँसकर बात,
बात मेरी मान ले॥९॥

भीड़ पड़ी जद भक्ताँ पे दौड़या-दौड़या आया है,
ताराचन्द कैवे भक्ताँ का बिगड़ा काम बनाया है,
जो कोई ध्यावे साँचे मन से आवे सरजनहार,
बात मेरी मान ले॥१०॥

(१७५)

जरा इतना बता दे कान्हा, तेरा रंग काला क्यूँ।
तू काला होकर भी जग से निराला क्यूँ॥ टेर॥
मैंने काली रात में जन्म लिया,
और काली गाय का दूध पिया,
मेरी कमली भी काली है इसलिए काला हूँ।
जरा इतना..........
सखी रोज ही घर में बुलाती है,
और माखन मुझे खिलाती है,
सखियों का दिल काला, इसलिए काला हूँ।
जरा इतना..........
मैंने काली नाग पर नाच किया,
और काली नाग को नाथ दिया,
नागों का रंग काला, इसलिये काला हूँ।
जरा इतना..........
सावन में बिजली कड़कती है,
बादल भी बहुत बरसते हैं,
बादल का रंग काला, इसलिये काला हूँ।
जरा इतना..........
सखी नैनों में कजरा लगाती है,
और नैनों में मुझे बिठाती है,
कजरे का रंग काला, इसलिये काला हूँ।
जरा इतना..........

(१७६)

जरीकी पगड़ी बांधे, सुन्दर नैनों वाला।
कितना सुन्दर लागे बिहारी, कितना लागे प्यारा॥
जरी.....

कानों में कुण्डल साजे, सिर मोर मुकुट बिराजे।
सखियाँ पगली होतीं जब जब, होठों पर बंशी बाजे॥
है चन्दा ये साँवरा, तारे हैं ग्वाल-बाल।
कितना सुन्दर० ॥

लट घुंघराले बाल तेरे, कारे कारे गाल।
सुंदर श्याम सलोना, तेरी टेढ़ी-मेढ़ी चाल॥
हवा में सर सर करता, तेरा पीताम्बर मतवाला।
कितना सुन्दर० ॥

मुँह पे माखन मलता, तू बल घुटनोंके चलता।
देख यशोदा भाग्य को, देवों का भी मन जलता॥
माथे पर तिलक है सोहे, आँखों में काजल डाला।
कितना सुन्दर० ॥

जब तू बंशी बजाए, तब मोर भी नाच दिखाए।
यमुना में लहरें उठतीं और कोयल कूँ कूँ गाये॥
हाथ में कंगन पहने, और गल वैजन्ती माला।
कितना सुन्दर० ॥

(१७७)

तुम ढुण्ढ़ो मुझे गोपाल, मैं खोई गैया तेरी-२
सुध लो मोरी गोपाल, मैं खोई गैया तेरी।
तुम ढुण्ढ़ो मुझे........

पाँच विकार से हाँकी जाये, पाँच तत्व की ये देही,
बरबस भटकी दूर कहीं, मैं चैन न पाऊँ अब कहीं,
ये कैसा मायाजाल, मैं उलझी गैया तेरी,
सुध लो मोरी गोपाल, मैं खोई गैया तेरी,
तुम ढुण्ढ़ो..........

यमुना तट ना नन्दनवट ना, गोपीग्वाल कोई दीखे,
कुसुमलता ना तेरी छटा ना, पाँख पखेरू कोई दीखे,
अब साँझ भई घनश्याम, मैं व्याकुल गैया तेरी,
सुध लो मोरी गोपाल, मैं व्याकुल गैया तेरी,
तुम ढुण्ढ़ो..........

कित पाऊँ तरुवर की छाँव, जित साँझे कृष्ण कन्हैया,
मन का ताप श्राप भटकन का, तुम्ही हरो हे रास रचैया,
अब रुक निहारूँ बाट, प्रभुजी मैं गैया तेरी,
सुध लो मोरी गोपाल, मैं खोई गैया तेरी।
तुम ढुण्ढ़ो..........

बंशी के स्वर नादसे टेरो, मधुर तान से मुझे पुकारो,
राधा-कृष्ण गोविन्द हरिहर, मुरली मनोहर नाम तिहारो,
मुझे उबारो हे गोपाल, मैं व्याकुल गैया तेरी,
सुध लो मोरी गोपाल, मैं खोई गैया तेरी
तुम ढुण्ढ़ो..........

(१७८)

तुम हमारे थे प्रभुजी, तुम हमारे हो,
तुम हमारे ही रहोगे, ओ मेरे प्रियतम।
हम तुम्हारे थे प्रभुजी, हम तुम्हारे हैं
हम तुम्हारे ही रहेंगे, ओ मेरे प्रीतम॥

तुम्हें छोड़ सुन नन्ददुलारे, कोई न मीत हमारो,
किस के द्वारे जाय पुकारूँ, और न कोई सहारो।
अब तो आके बाह पकड़ लो, ओ मेरे प्रियतम
तुम हमारे थे......... ॥
तेरे कारण सब जग छोड़ा, तुम संग नाता जोड़ा,
एक बार प्रभु हँसकर कह दो, तुम मेरा मैं तेरा।
सांची प्रीत की रीत बता दो, ओ मेरे प्रियतम,
तुम हमारे थे......... ॥
दासी की बिनती सुन लीजो, ओ बृजराज दुलारे,
आखिरी आस यही जीवन की, पूरण करना प्यारे।
एक बार हृदय से लगालो, ओ मेरे प्रियतम,
तुम हमारे थे......... ॥

(१७९)

तू ही, तू ही, तू ही तो है मेरा नन्दनन्दन,
मैं भी, मैं भी, मैं भी तो हूँ तेरा नन्दनन्दन॥ टेर॥
तू ही मेरा, तू ही मेरा स्वामी नन्दनन्दन,
तू ही मेरा, तू ही मेरा सखा नन्दनन्दन।
तू ही मेरा, तू ही मेरा सुख नन्दनन्दन,
तू ही मेरा, तू ही मेरा प्रिय नन्दनन्दन।
तू ही, तू ही, तू ही.......... ॥ टेर॥
तू ही मेरी गति मति रति नन्दनन्दन,
तेरे सिवा मेरा कोई नहीं नन्दनन्दन।
तू ही मम माता-पिता भ्राता नन्दनन्दन,
तेरा ही कहा हुआ है, यह नन्दनन्दन।
तू ही तू ही...... ॥ टेर॥

माना मैं हूँ अति ही पतित नन्दनन्दन,
तू तो है पतित पावन नन्दनन्दन।
माना मैं हूँ अति दीन-हीन नन्दनन्दन,
तू ही तो है दीनानाथ, मम नन्दनन्दन।
तू ही तू ही......... ॥ टेर ॥
माना मैंने पिछला बिगाड़ा नन्दनन्दन,
अगला तू अब तो बना दे नन्दनन्दन।
माना मैं हूँ सब विधि दोषी नन्दनन्दन,
तू तो है कृपालु कृपा करो नन्दनन्दन।
तू ही तू ही............ ॥ टेर ॥

(१८०)

तेरे बिना श्याम हमारा नहीं कोई रे।
हमारा नहीं कोई रे, सहारा नहीं कोई रे॥ टेर ॥
अमवा को डाली पर, पिंजड़ा टँगाया,
उड़ गया सूवा, पढ़ाया नहीं कोई रे॥ तेरे बिना०॥
गहरी-गहरी नदियाँ, नाव पुरानी,
डूबन लागी नाव, बचाया नहीं कोई रे॥ तेरे बिना०॥
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला,
बिगड़ गयी बात, बनाया नहीं कोई रे॥ तेरे बिना०॥
जब से मैंने तुझको पाया,
तू ने मुझको दर्श दिखाया।
तेरे जैसा लाड़, लड़ाया नहीं कोई रे॥ तेरे बिना०॥
मैंने तुझ पर सब कुछ वारा,
तू मुझको प्राणों से प्यारा।
तेरे जैसा साथ, निभाया नहीं कोई रे॥ तेरे बिना०॥

घर-घर तेरा नाम जपाऊँ,
तेरी महिमा सबको सुनाऊँ।
तेरे जैसा प्रेम, दिखाया नहीं कोई रे॥ तेरे बिना०॥
तुम जैसा दातार न पाऊँ,
तुमको छोड़ मैं किस दर जाऊँ।
तेरे जैसा मान, बढ़ाया नहीं कोई रे॥ तेरे बिना०॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो।
गुरु बिन ज्ञान, बताया नहीं कोई रे॥ तेरे बिना०॥

(१८१)

तेरे लाला ने माटी खाई जसोदा सुन माई।
तेरे लाला ने ब्रज-रज खाई जसोदा सुन माई॥ टेर॥
अद्भुत खेल सखन सँग खेलो, छोटो सो माटी को ढेलो।
तुरत श्याम ने मुखमें मेलो, याँने गटक-गटक गटकाई॥ १॥
दूध दही को कबहुँ न नाटी, क्यों लाला तैनें खाई माटी।
यशुदा समझावे ले साँठी, याँने नेक दया नहिं आई॥ २॥
मात श्याम-मुख अँगुली मेली, निकस पड़ी माटी की ढेली।
भीड़ भई सखियन की भेली, याँने देखे लोग लुगाई॥ ज०॥ ३॥
मोहन को मुखड़ो फड़वायो, तीन लोक वामें दरशायो।
तब विश्वास जसोदहि आयो, यो तो पूरण ब्रह्म कन्हाई॥ ४॥
ऐसो रस नहिं है माखनमें, नहिं मिसरी मेवा दाखन में।
जो रस है ब्रज-रज चाखन में, याँने मुकती की मुकती कराई॥ ५॥
या रज को सुर नर मुनि तरसे, बड़भागी जो नित उठ परसे।
जाकी लगन लगी रहे हरिसे, यह तो घासीराम कथा गाई॥ ६॥

(१८२)

थाँरो भरौसो भारी, सुन मुरली वाला॥ टेर ॥
अजामील गज गणिका तारी, तारी है गौतम नारी॥ सुन० १॥
गज और ग्राह लड़े जल भीतर, लड़त लड़त गज हारी॥ सुन० २॥
जौ भर सूँड़ रही जल बाहर, तब हरि नाम पुकारी॥ सुन० ३॥
गरुड़ छोड़ पैदल होइ भागे, गज को लीन्ह उबारी॥ सुन० ४॥
द्रुपद सुता को चीर बढ़ायो, होने ना दीन्ह उघारी॥ सुन० ५॥
आगे भक्त अनेक उबारे, अबकी बेर हमारी॥ सुन० ६॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कँवल बलिहारी॥ सुन० ७॥

(१८३)

दर्शन दो घनश्याम नाथ मोरी अँखिया प्यासी रे-२
मन्दिर-मन्दिर मूरत तेरी, फिर भी न दीखे सूरत तेरी
युग बीते नहीं आई मिलन की पूरण मासी रे॥ दर्शन०॥
पानी पीकर प्यास बुझाऊँ, नयनों को कैसे समझाऊँ
आँख मिचौनी छोड़ो गिरधर घट-घट बासी रे॥ दर्शन०॥
द्वार खड़ा कब से मतवाला, माँगे प्रभु जी दरश तिहारा
किंकर की यह बिनती सुन लो प्रभु हे नभवासी रे॥ दर्शन०॥
द्वार दया का जब तूँ खोले, पंचम स्वर में गूँगा बोले
अंधा देखे लँगड़ा चलकर पहुँचे काशी रे॥ दर्शन०॥

(१८४)

दूर नगरी बड़ी दूर नगरी
कैसे आऊँ मैं कन्हाई, तोरी गोकुल नगरी
बड़ी दूर नगरी..........
रात को आवुँ तो कान्हाँ डर मोहे लागे-२

दिन को आवुँ तो देखे नगरी.........बड़ी.......
सखि संग आऊँ तो शर्म मोहे लागे-२
अकेली आऊँ भूल जाऊँ डगरी बड़ी......
धीरे-धीरे चलूँ कान्हाँ देर बहुत लागे-२
झट-पट चलूँ तो छलकाये गगरी बड़ी......
बाई मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर
तुम्हारे दरस बिना हो गई बावरी.....बड़ी......

(१८५)

धारा है मुरलीवालेने धारा है बंसीवालेने
अवतार बारम्बार॥टेर॥
मथुरामें हरि जन्म लियो, प्रभु गोकुलमें आनन्द कियो।
कूद गये मझधार, नाग नाथ्यो है बंसीवालेने॥ १॥
इन्दरने व्रजपर कोप कियो, जल बरस्यो सबको कष्ट दियो।
नखपर गिरवर धार नाथ बचा लिये बंसीवालेने॥ २॥
चीर द्रोपदीको खेंच्यो, दुःशासन लज्जा हरनेको।
जब खींचत-खींचत हार गये, बचा लिये बंसीवालेने॥ ३॥
मोहनी रूप मन मोह लियो, बंसीकी धुन सुन मस्त कियो।
मकराकृत कुण्डल धार नाथ, दर्शन दिये बंसीवालेने॥ ४॥
गज औ गनिकाकी सहाय करी, प्रभु मेरी रक्षा आप करो।
है बिनती दासन-दासकी, सरने लियो बंसीवालेने॥ ५॥

(१८६)

नंदगाँव की राह चलो सजनी, मेरो गोरस सब बिक जावेगो
मनमोहन भी मिल जावेगे, नयनों की प्यास बुझावेगो.... ॥ १॥
बृज गोधन को गोपाल लला, बृज ग्वालन संग दिख जावेगो
मेरो स्वारथ भी सध जावेगो, परमारथ भी गति पावेगो.... ॥ २॥

वो ग्राहक बन कर आवेगो, भारी बातनमें भरमावेगो
वो छलिया ठग ले जावेगो, हर हाल में लाभ करावेगो.... ॥ ३ ॥
कछु गोरस मोल करावेगो, कछु दान की मांग धरावेगो
कछु छीन झपट के खावेगो, कछु कपि ग्वालन लुटवावेगो.... ॥ ४ ॥
वो परम कृपा बरसावेगो, मनहारी रूप दिखावेगो
मुरली की तान सुनावेगो, अधरामृत पान करावेगो.... ॥ ५ ॥
यमुना तट पर ले जावेगे, राधा संग रास रचावेगो
बस नेक से गोरस के बदले, लीला अमृत बरसावेगो.... ॥ ६ ॥
यदि गोरस सब बिक जावेगो, तो लाभ यूँही हो जावेगो
यदि गिरधर प्रभु मिल जावेगो, तो जनम सफल हो जावेगो.... ॥ ७ ॥

(१८७)

नटवर नागर नन्दा, भजो रे मन गोविन्दा।
श्यामसुन्दर मुख चन्दा, भजो रे मन गोविन्दा ॥ टेर ॥
तूँ ही नटवर, तूँ ही नागर, तूँ ही बाल मुकुन्दा ॥ १ ॥
सब देवन में कृष्ण बड़े हैं, ज्यूँ तारा बिच चन्दा ॥ २ ॥
सब सखियन में राधाजी बड़ी हैं, ज्यूँ नदियाँ बिच गंगा ॥ ३ ॥
ध्रुव तारे, प्रह्लाद उबारे, नरसिंह रूप धरन्ता ॥ ४ ॥
कालीदाह में नाग ज्यों नाथ्यो, फण-फण निरत करन्ता ॥ ५ ॥
वृन्दावन में रास रचायो, नाचत बाल मुकुन्दा ॥ ६ ॥
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, काटो जम का फन्दा ॥ ७ ॥
भजो रे मन गोविन्दा!!

(१८८)

नथ म्हारी दीज्यो जी गिरधारी-२ ॥ टेर ॥
साँवरियाँ थाँने अरज करे छै राधा प्यारी
नथ म्हारी......

बिंदराबन में रास रच्यो है, रास रमण कुण
जासी म्हारा साँवरा-२
रमता खेलता नथ म्हारी गम गई-२
घणो ओलमो आसी.....नथ म्हारी......
ग्वाल-बाल मिल ढुँढण लाग्या,
सखियाँ भई उदासी म्हारा साँवरा-२
ए जी नथ म्हारी नहीं मिली तो
गायाँ री दलाली में जासी.......नथ म्हारी......
म्हें तो म्हारे पीहर जास्याँ
बाबुल ओर धड़ासी म्हारा साँवरा-२
खारा समुद्र रा मोतीड़ा मँगास्या-२
सोने रो तार पुवास्याँ......नथ म्हारी......
थे मत जाणो आ बरजोरी
थारो मान घटास्याँ म्हारा साँवरा-२
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि
घर बैठ्याँ नथ आसी.....नथ.....

(१८९)

नंदलाल गोपाल दया करके, भवसागर पार उतार मुझे।
विकराल विशाल तरंगों में, करुणा करके कर पार मुझे॥
परसेवा, परउपकार नहीं, सत्संग सुजन सत्कार नहीं,
न विनय, न विवेक न विमल हृदय, मुझमें कोई शुचि संस्कार नहीं,
तुझसे विनती भी कर पाऊँ, इतना भी कहाँ अधिकार मुझे?
नंदलाल.......
मैं दुर्जन और दयामय तू, मैं कृपण, कुमति, करुणामय तू,
मैं वंचित हूँ, तू वत्सल है, मैं आश्रित हूँ और आश्रय तू,

मैं अधम, अधम-उद्धारक तू, इस नाते ही नाथ! उबार मुझे!
नंदलाल.......
मैं धिक्कृत हूँ, प्रभु! धन्य है तू, मैं अणु हूँ, नाथ अनन्य है तू,
तज तुझको, भला मैं किधर जाऊँ? शरणागत हूँ मैं, शरण्य है तू,
मैं विषमय, तू विषहारी है, मत कर रे! अस्वीकार मुझे!
नंदलाल.......

(१९०)

नाचे नन्दलाल नचावे हरि की मैया॥ टेर॥
मथुरा में हरि जनम लियो है,
गोकुल में पग धरे री कन्हैया॥
रुनक-झुनक पग नूपुर बाजे,
ठुमुक-ठुमुक पग धरे री कन्हैया॥
धोती ना बाँधे लाला जामो ना पहिरे,
पीताम्बर को बड़ो री पहरैया॥
टोपी ना ओढ़े लाला फेंटो ना बाँधे,
मोर मुकुट को बड़ो री ओढ़ैया॥
दूध ना भावे याँने दही नहीं भावे,
माखन मिसरी को बड़ो री खवैया॥
खेल न खेले खिलौना न खेले,
चन्द्र खिलौना को बड़ो री खेलैया॥
सीटी न भावे याँने पीपी न भावे,
हरिसी बाँसुरी को बड़ो री बजैया॥
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि,
हँस हँस कंठ लगावे हरि की मैया॥

(१९१)

निकुञ्ज में बिराजे घनश्याम राधे-राधे॥
श्याम राधे-राधे, घनश्याम राधे-राधे। निकुञ्ज ॥ टेक॥
जमुना जी में राधे-राधे, ब्रज चौरासी राधे-राधे,
कुंड-कुंड में राधे-राधे॥ १॥ राधे-राधे,
राधे तू श्याम से मिला दे।
वृन्दावन में राधे-राधे बरसाने में राधे-राधे।
मथुरा जी में राधे-राधे॥ २॥ राधे-राधे।
धेनु चराता राधे-राधे, चन्द्र सरोवर राधे-राधे।
गिरिराज जी में राधे-राधे॥ ३॥ राधे-राधे॥
गोवर्धन में राधे-राधे, महवर वन में राधे-राधे।
जतीपुरा में राधे-राधे॥ ४॥ राधे-राधे॥
कृष्ण वियोगी राधे-राधे, वल्लभ वैष्णव राधे-राधे।
युगल चरण में राधे-राधे॥ ५॥ राधे-राधे।
नंदगांव में राधे-राधे, कामवन में राधे-राधे।
राधाकुण्ड में राधे-राधे॥ ६॥ राधे-राधे॥

(१९२)

पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे॥
मैं तो मेरे नारायणकी आपहि हो गइ दासी रे।
लोग कहै मीरा भई बावरी न्यात कहै कुळनासी रे॥
बिषका प्याला राणाजी भेज्या पीवत मीरा हाँसी रे।
मीराके प्रभु गिरधर नागर सहज मिले अबिनासी रे॥

(१९३)

फूलों से सज रहे हैं, श्री वृन्दावन बिहारी।
और साथ सज रही हैं, वृषभान की दुलारी॥ टेर॥
टेढ़ा सा मुकुट सिर पर, रखा है किस अदा से।
करुणा बरस रही है, करुणा भरी निगाह से।
बिन मोल बिक गयी हूँ, जब से छबि निहारी॥ १॥
बैंयां गले में डाले, जब दोनों मुस्कुराते।
सबको ही प्यारे लगते, सबके ही मन को भाते।
इन दोनों पे मैं सदके, इन दोनों पे मैं वारी॥ २॥
शृंगार तेरा प्यारे, शोभा कहूँ क्या उसकी।
इतपे गुलाबी पटका, उतपे गुलाबी साड़ी॥ ३॥
नीलम से सोहे मोहन, स्वर्णिम सी सोहे राधा।
इत नन्द का छै छोरा, उत भानु की दुलारी॥ ४॥
चुन चुन के कलियाँ जिसने, बंगला तेरा बनाया।
दिव्य आभूषणों से जिसने तुझे सजाया।
उन हाथों पे मैं सदके, उन हाथों पे मैं वारी॥ ५॥

(१९४)

बंशी बजाय गयो श्याम, मुझसे नैना मिलायके।
दिलमें समाय गयो श्याम, मुझसे नैना मिलायके॥
बंशी बजाय........
मथुरासे बृन्दावन आयो, निर्दयी छलिया चैन चुरायो।
निन्दिया चुराय गयो श्याम, मुझसे नैना मिलायके॥
बंशी बजाय........

जादू कर गई उसकी अंखियाँ रस्ता रोका मोरी पकड़ी बहियाँ।
मटकी गिराय गयो श्याम, मुझसे नैना मिलायके॥
बंशी बजाय........

लूटा मोर मुकुट की छटा ने उन केशों की इन्द्र घटा ने।
तीर चलाय गयो श्याम, मुझसे नैना मिलायके॥
बंशी बजाय........

श्याम नामकी ओढ़ी चुनरिया श्यामकी चूड़ी, श्यामकी बिन्दियाँ।
रास रचाय गयो श्याम, मुझसे नैना मिलायके॥
बंशी बजाय........

(१९५)

बनवारी, ओ कृष्ण मुरारी बता कुण मारी,
पूछे यशोदा मात रे, कान्हा कहो थारे मनड़ेरी बात रे.... ॥
भेज्यो थो कान्हा तने गाय चरावण, रोवतड़ो घर क्यूँ आयो,
किण रे संग झगड़ो कर लिन्यो, माटी में तन भर दिन्यो।
कुण तने मार्‌यो, नाम बता दे, मैया जद पुचकार्‌यो,
कान्हो रोव, दर्‌द घणों होव, जद फेरे मैया हाथ रे।
कान्हा कहो थारे मनड़ेरी बात रे॥ १ ॥

बैठयो थो मैया मैं तो कदमके नीचे, बोली गुजरिया बंशी बजाय,
नट गयो मैं तो, नहीं बजाऊँ, छीनी बंशी दिनी बगाय।
आज गुजरिया, मारी मने, सारी ही मिलकरियाँ,
बंशी तोड़ी, कलाई भी मरोड़ी और मारी मेरे लात रे।
कि मैया कोई भी सुणी ना मेरी बात रे....बनवारी.... ॥ २ ॥

सुन कर बाताँ कान्ह कुँवर की, मैया रो हिवड़ो भर आयो,
माटी झाड़ी सारे बदन की, अपने हिवड़े सूँ लिपटायो।
भोलो ढालो, कुछ ना जाने, मेरो यो नन्दलाल,

गुजरी खोटी, पकडूँगी जाकर चोटी, यूँ मैया झुँझलाय रे॥
कान्हा कहो थारे मनड़ेरी बात रे॥ ३॥
मैया री बाताँ सुण-सुण मोहन, मन ही मन मुस्कावे,
'ताराचन्द' कहे इस छलिये को, भेद कोई भी ना पावे।
कोई ना जाने, माया इसकी, यो ही बेद बखाणे,
पच-पच हारया, ऋषि मुनि सारा, के दिन और रात रे॥
कान्हा कहो थारे मनड़ेरी बात रे॥ ४॥

(१९६)

बड़ी देर भई नन्दलाला, तेरी राह तके ब्रजबाला।
ग्वाल बाल इक-इक से पूछे, कहाँ है मुरली वाला॥
कोई न जाये कुँज गलिन में, तुझ बिन कलियाँ चुनने को।
तरस रहे हैं यमुना के तट, धुन मुरली की सुनने को।
अब तो दरस दिखाजा नटखट, क्यों दुविधा में डाला रे॥
बड़ी देर भई......
संकट में है आज ये धरती, जिस पर तूने जन्म लिया।
पूरा कर दे आज वचन वो गीता में जो तूने दिया।
कोई नहीं है तुझ बिन मोहन भारत का रखवाला रे॥
बड़ी देर भई......

(१९७)

बनवारी रे जीने का सहारा तेरा नाम रे।
मुझे दुनियाँ वालों से क्या काम रे॥टेर॥
झूठी दुनियाँ, झूठे बन्धन, झूठी है यह माया।
झूठा श्वास का आना जाना, झूठी है यह काया।
ओ ऽऽऽ यहाँ साँचो तेरो नाम रे॥ १॥

रंग में तेरे, रंग गई गिरधर, छोड़ दिया जग सारा।
बन गई तेरे, प्रेम की जोगन, लेकर मन इकतारा।
ओ ऽऽऽ मुझे प्यारो तेरो साथ रे॥ २॥
दर्शन तेरा, जिस क्षण पाऊँ, हर चिन्ता मिट जाये।
जीवन मेरा, इन चरणोंमें निश दिन ज्योत जलाये।
ओ ऽऽऽ मेरी बाँह पकड़ लो श्याम रे॥ ३॥

(१९८)

बार-बार जब कहे ब्राह्मणी, हुए सुदामा त्यार
चावल की पोटली ले, आये हैं मोहन के द्वार। टेर।
पहुँचे द्वारिका जाय कन्हैयो कहाँ बसे
देख हाल बेहाल नगर का सभी हँसे
इतने में एक मिल्यो दयालु दीन्यो महल बताय॥ १॥
द्वारपाल जा कह्यो आदमी इक आयो
फाट्या कपड़ा नाम सुदामा बतलायो
सुनते ही नंगे पैरों दौड़ें प्रभु कृष्ण मुरार॥ २॥
लिन्यो गले लगाय सिंहासन बैठायो
देख हाल बेहाल जीवड़ो दुःख पायो
अँसुवन जल से पैर धो रहें जग के पालनहार॥ ३॥
करी खातिरी खूब सुदामा शरमावे
चावल की वह पोट काँखमें छिपकावे
नजर पड़ी जब कृष्ण चन्द्र की लीनी भुजा पसार॥ ४॥
दो मुट्ठी गये खाय तीसरी खाने लगे
रुकमण पकड़्यो हाथ प्रभु क्या करने लगे
तीन लोक जो दिये इन्हीं को हो गये बेघर-बार॥ ५॥

रह्यो दोय दिन चार कही जब विदा कियो
मुख से माँग्यो नाय प्रभु कुछ नाहीं दियो
लगे सोचने क्या कहेगी घर वाली वो नार॥ ६ ॥
पहुँचे नगरी माय झोपड़ी मिली नहीं
मन में करे विचार ब्राह्मणी कहाँ गई
दासी आकर कहने लगी बुला रही घर नार॥ ७ ॥
चकित भये यूँ देख कन्हैयो खूब करी
महिमा अपरमपार दास यूँ गावे हरी
भक्त मण्डल सब हिल मिल गावे दाता तेरे द्वार॥ ८ ॥

(१९९)

बंसीवारा आज्यो म्हारे देश, थारी साँवरो सूरत व्हालो वेश॥ टेर॥
सावन आवन कह गयो साँवरा, कर गयो कौल अनेक।
गिनताँ गिनताँ घिस गयी जी, म्हारी आँगलियाँकी रेख॥ १ ॥
कागद नाहिं स्याही नाहिं, साँवरा, लेखण नाहिं इण देश।
पंछीको परवेस नहीं है, किस बिध लिखूँ सँदेश॥ २ ॥
साँवर ने ढूँढण मैं गई हेली, कर जोगणका भेस।
ढूँढत ढूँढत जुग भया हे जी, धोला हो गया केश॥ ३ ॥
मोर मुकुट तन काछनी हो, साँवरा घुँघरवारा केश।
'मीरा' ने गिरधर मिल्या हे हेली, कर नटवर का भेष॥ ४ ॥

(२००)

बाँसुरिया कहाँ भूल गये प्यारे कुँअर कन्हैया॥ टेर॥
भोर भयो जब लाला जागे, दुहवे सारी गैयाँ।
माखन मिसरी करे कलेवा, बैठे दोनों भैया॥ १ ॥

आगे आगे श्याम चलत है, पीछें दाऊ भैया।
उनके पीछें ग्वाल बाल हैं, जिनके पीछें गैयाँ॥ २॥
ग्वाल बाल सब धेनु चरावे, आप कदम की छैयाँ।
तेरी बन्शी ऐसी बाजे, दौड़ी आवे गैयाँ॥ ३॥
ग्वाल बाल के सँगमें खेले, नाचे कुँअर कन्हैया।
तबला बाज सरंगी बाजे, अरु बाजे शहनैयाँ॥ ४॥
साँझ भई जब घरको आये, सँगमें सारी गैयाँ।
'चन्द्रसखी' भजु बाल कृष्ण छबि, जसुमति लेत बलैयाँ॥ ५॥

(२०१)

बाँसुरी बजाई आज रंग से मुरारी।
पशु पक्षी जीव मोहे मोही नगरी सारी।
गोकुल के ग्वाल मोहे मोही ब्रज नारी।
बाँसुरी बजाई...... ॥
ब्रह्मा भूले ग्यान मान इन्द्र अहंकारी।
नारद जी भूले गान, ध्यान त्रिपुरारी।
बाँसुरी बजाई...... ॥
भोगी भूले भोग जोगी जोग-तप धारी।
वेद पढ़त भूल गये विद्या ब्रह्मचारी।
बाँसुरी बजाई...... ॥
यमुना जी राह भूली उलट चली न्यारी।
तुलसीदास तीनों लोक सुध बुध हारी।
बाँसुरी बजाई...... ॥

(२०२)

बसो मेरे नयननमें नन्दलाल!
साँवरी सूरत माधुरी मूरति राजिवनयन विशाल॥
मोरमुकुट मकराकृत कुण्डल अरुण तिलक दिये भाल।
अधरन बंसी करमें लकुटी कौस्तुभमणि बनमाल॥
बाजूबन्द आभूषण सुन्दर नूपुर शब्द रसाल।
दासगोपाल मदनमोहन प्रिय भक्तनके प्रतिपाल॥

(२०३)

बापू म्हाने भुलाय गयो पूजा, वो गाँव गयो दूजा,
जीमोना काँई आँट की।
कर्मा म्हारो नाम, यो ही तो म्हारो गाँव,
बेटी जाट की॥टेर॥
उठ सी मं स्नान मैं कीन्हों, मन्दिर खोल बुहारी दीन्हों।
ल्याई धोलरी गाय रो दूध, उठो प्रभु मुन्डो धोय कर पील्यो।
फेर जीमो खीचड़ो आप, घी की तो काँई बात,
कढ़ी तो घालूं छाछ की॥ १॥
काल थारे ताँई सीरो बणाऊँ, पाणी मीठोड़े कुवे रो ल्याऊँ।
मूँगा की दाल, ज्याँ में घी की नाल
थाने छोटा-छोटा फलका जिमाऊँ।
थाने भावे सोई ले लीज्यो, म्हाने कह दीज्यो,
कमी तो काँई बात की॥ २॥
थारा कया-कया हुकुम उठाऊँ, थे जीमल्यो तो मैं भी रोटी खाऊँ।
धाबलिया रो परदो लगाऊँ जी, मैं पूठ फेर बैठ ज्याऊँ
प्रभु रुच-रुच भोग लगावे, देखती जावे,
सुरतिया श्याम की॥ ३॥

पड़दो उठाय कर्मा बोली, थे जीमल्यो तो चालु कराऊँ।
काल जीमण न बेगा आज्यो जी, डोबा की राबड़ी बनाऊँ,
प्रभु कहवे आज मैं जाऊँ, काल बेगो आऊँ,
बात बड़ी प्रेम की॥ ४॥

बापू बाहर गाँव से आयो, करमाँ सारा हाल सुनायो।
वो सुनके अचम्भो ल्यायो जी, करमा किस दिन माधव आयो,
इतने में प्रभुजी आ ज्यावे, भरम मिट ज्यावे,
अरज 'शिवलाल' की॥ ५॥

(२०४)

बिन काज आज महाराज लाज गइ मेरी।
दु:ख हरो द्वारकानाथ शरण में तेरी॥ टेक॥
दु:शासन वंश कुठार महा दु:खदाई।
कर पकरत मेरो चीर लाज नहिं आई॥
अब हुआ धर्म का नाश पाप रह्यो छाई।
लखि अधम सभा की ओर नारि बिलखाई॥
शकुनि दुर्योधन कर्ण खड़े खल घेरी॥ १ ॥
तुम दीनन की सुधि लेत देवकी नन्दन।
महिमा अनन्त भगवन्त भक्त दुखभंजन॥
तुम किया सिया दुख दूर शम्भु धनु खण्डन।
अति आरत मदनगोपाल मुनिन मन रंजन॥
करुणानिधान भगवान करी क्यों देरी॥ २ ॥
तुम सुनि गजन्द की टेर विश्व अविनाशी।
ग्राह मारि छुटाई बन्ध कटी पग फाँसी॥

मैं धरयो तिहारो ध्यान द्वारका वासी।
अब कहे राज समाज करावत हाँसी॥
अब कृपा करो यदुनाथ जान चित चेरी॥ ३ ॥
तुम पत राखी प्रहलाद दीन दुख टारयो॥
भये खम्भ फाड़ नरसिंह असुर संघारयो।
वन खेलत केसी आदि बकासुर मारयो॥
मथुरा मुष्टिक चारण कंस को मारयो।
तुम मात पिता की प्रभु छुड़ाई बेड़ी॥ ४ ॥
भक्तन हित लिये अवतार कन्हाई तुमने।
नलकूबर की जड़योनि छुड़ाई तुमने॥
जल डूबत प्रभुता अगम दिखाई तुमने।
नख पर गिरवर धार ब्रज को बचाई तुमने॥
अब विलम्ब रहे कहाँ नाथ हमारी बेरी॥ ५ ॥
बैठे हैं राज समाज नीति जिन खोई।
नहि करत धरम की बात सभा में कोई॥
पाँचों पति बैठे मौन कौन गति होई।
ले नन्दनन्दन को नाम द्रोपदी रोई॥
कर कर विलाप सन्ताप सभा में टेरी॥ ६ ॥
सुनि दीनबन्धु भगवान भक्त हितकारी।
हरि चीर रूप भये आय हारयो दुख भारी॥
खैंचत हारयो मतिमन्द बीर बलकारी।
रख लई दीन की लाज आप बनवारी॥
हरषत सुर बरसत सुमन बजावत भेरी॥ ७ ॥
क्या करी द्वारिका नाथ मनोहर माया।
तिहुँ लोक चतुर्दश भुवन चीर दर्शाया॥

भक्तों के काज हित कोटि रूप बनाया।
बन्दित गणेश प्रसाद विष्णु गुन गाया।
दीन के दीनानाथ विपत हरो तुम मेरी॥ ८ ॥

(२०५)

बीरा बेगा २ थे तो आज्यो, थे मत ना बार लगाज्यो जी॥
बीरा भात भरण ने थे आज्यो, भावज रुकमण ने लाज्यो जी॥ बीरा०॥
बीरा भात मोकलो ल्याज्यो, म्हारे सासरिया में मान बढाज्यो जी,
बीरा बाँध पागड़ी आज्यो, म्हाने लाल चुनड़ी ओढाज्यो जी॥ बीरा०॥
म्हारो बाबुल भोलो ढालो, भोले भगताँ री लाज बचाज्यो जी।
म्हारी नाँव बीच में अटकी, थे आकर पार लगाज्यो जी॥ बीरा०॥
बीरा थाँरे भगत घणेरा, म्हाँने भूल बिसर मत जाज्यो जी।
थारो ताराचन्द यश गावे म्हाने भी दरश दिखाज्यो जी॥ बीरा०॥

(२०६)

बनवारी म्हारा कृष्ण मुरारी रे, गिरधारी॥ टेक॥
थाँरे तो खातिर साँवरा गंगाजल लाई, भर सोने की झारी रे॥ १॥
थाँरे तो खातिर साँवरा बाग लगायो, बिच केसर की क्यारी रे॥ २॥
थाँरे तो खातिर साँवरा महल चिनायो, बिच बिच राखी बारी रे॥ ३॥
थाँरे तो खातिर साँवरा भोजन बनायो, छप्पन भोग की त्यारी रे॥ ४॥
थाँरे तो खातिर साँवरा हिंडोलो घलायो, झूलो कुंजबिहारी रे॥ ५॥
थाँरे तो खातिर साँवरा सब कुछ छोड्या, आई शरण तिहारी रे॥ ६॥
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि, चरन कमल बलिहारी रे॥ ७॥

(२०७)

भूल गयो भक्तारो भीड़ी बाटड़ली म्हारी आजा-२
गिरधारी, आजा-२, बनवारी॥ टेर॥
ताल्यां पीटे लोग नगर का, ताना मारण आवे है।

देखो रे नरसी रो गिरधर रोकड़ लद कर आवे है
म्हारा सुरिया स्वामी लाज मरे है अजी हो ....
मैं कब तक आस लगाऊँ, ओ गोवर्धनधारी
आजा २ .... भूल .... ॥ टेर॥

छत पर ऊभी नानी बाई थारी बाट निहारे है
कागा उड़जा सुगन मना दे, कद म्हारो श्याम पधारे है
म्हारी फड़के हैं नित दिन आँखड़ली अजी हो...........
आ मायं बिना री छोरी, ताना सुन-सुन हारी
आजा २ .... भूल .... ॥ टेर॥

निरधनिया रो कुण धणी छ, आ मिल जा म्हारा साँवरिया
नानी बाई को मायरो आकर, भरजा नटवर नागरिया
ओ बाप बेचारो कांई कर जी, अजी हो ....
पिता पल्ले पइसो नाहीं, पर भरोसो है भारी
आजा .... भूल .... ॥ टेर॥

टेर सुनी नरसिले भक्त की, मोहन री अखियाँ छलकी
राधा रूकमण ने ली सँग में, देर न की पलभर की
नानी बाई रा बीर बन्या थे, अजी हो ....
मंगल गान गीताँ सू, सत्कार करो भारी
आजा २ .... भूल .... ॥ टेर॥

(२०८)

मन्दिर जाती मीरा न साँवरियो मिल गयो रे।
कि गिरधर जादू कर गयो रे॥ टेर ॥
राणों मीरा नै बतळावै, के होग्यो थारै क्यूँ न बतावे।
फीका पड़ गया नैण, फरक बोली में पड़ गयो रे॥ गिर०॥

आज मिल्यो म्हांनै बनवारी, पलपल मैं जाऊँ बलिहारी।
चुरा लिया म्हारा नैण कि, दिल पर ताळो जड़ गयो रे॥ गिर०॥
राणों मीरो ने समझावे, बड़े घराँ की रीत बतावै।
कुल के लाग्यो दाग, पति जीवतड़ो मर गयो रे॥ गिर०॥
मन मोहन है पति हमारो, सारे जग को है रखवारो।
कहता "राधेश्याम" मीरा नै मोहन मिल गयो रे॥ गिर०॥

(२०९)

स्याम! मने चाकर राखो जी, गिरधारीलाल चाकर राखो जी॥ टेक॥
चाकर रहसूँ, बाग लगासूँ, नित उठ दरसण पासूँ।
ब्रिंद्राबनकी कुञ्जगलिनमें, तेरी लीला गासूँ॥ १ ॥
चाकरीमें दरसण पाऊँ, सुमिरण पाऊँ खरची।
भाव भगति जागीरी पाऊँ, तीनूँ बाता सरसी॥ २ ॥
मोर मुगट पीतांबर सोहै, गल बैजंती माळा।
ब्रिंदाबनमें धेनु चरावे, मोहन मुरलीवाळा॥ ३ ॥
हरे हरे नित बाग लगाऊँ, बिच-बिच राखूँ क्यारी।
साँवरियाके दरसण पाऊँ, पहर कुसुम्मी सारी॥ ४ ॥
जोगी आया जोग करणकूँ, तप करणे संन्यासी।
हरी भजनकूँ साधू आया ब्रिंदाबनके बासी॥ ५ ॥
मीराके प्रभु गहिर गँभीरा, सदा रहो जी धीरा।
आधी रात प्रभु दरसन दीन्हें, प्रेमनदीके तीरा॥ ६ ॥

(२१०)

म्हारा कानुड़ा गिरधारी, खीचड़ खा ले रे बनवारी।
करमा विनती कर कर हारी, बेटी जाटाँ री॥ टेर॥
बापू दूजे गाँव सिधायो, थारो मन्दरियो सम्हलायो,
सारो पूजा ढंग सिखायो, बेटी जाटाँ री।

बेटी तड़के उठ कर अईये, म्हारे गिरधर ने न्हवईये,
पूजा करके भोग लगईये, बेटी जाटाँ री॥ म्हारा०॥
मीठे पानी से नहलायो, ऊँचे आसन पर बैठायो,
लम्बो चन्दन तिलक लगायो, बेटी जाटाँ री।
जड़ कर मन्दरिये में ताली, करमा गीत गाँवती चाली,
ल्याई खीचड़लो भर थाली, बेटी जाटाँ री॥ म्हारा०॥
तड़के छाछ राबड़ी ल्याऊँ, मीठे गुड़ री खीर बणाऊँ,
उठ कर भोराँ भोर जिमाऊँ, बेटी जाटाँ री।
म्हारी भूल बता द्यो सारी, क्यूँ थे रुठ्या कुंज बिहारी,
म्हाने गाल्याँ पड़सी खाणी, बेटी जाटाँ री॥ म्हारा०॥
बापू बाहर गाँव से आवे, म्हाने मुक्याँ से धमकावे,
करमा आँसुड़ा ढलकावे, बेटी जाटाँ री।
आगे गर्दन काट चढ़ाऊँ, या मैं जहर खाय मर जाऊँ,
तो भी थाने आज जिमाऊँ, बेटी जाटाँ री॥ म्हारा०॥
पड़ दो धाबलिये रो कीन्हो, मोहन खीचड़लो खा लीनों,
भोला भक्ताँ दरशन दीन्हों, बेटी जाटाँ री।
बोल्या ठाकुर मीठी बाणी, म्हाने प्यादे ठण्डो पाणी,
करमा थारी प्रीत पिछाणी, बेटी जाटाँ री॥ म्हारा०॥
पाछे गाँव चौधरी आयो, करमा सारी हाल सुणायो,
सुनकर घणो अचम्भो आयो बेटी जाटाँ री।
थारो दास भँवर हर्षावे, भोला भक्ताँ रा गुण गावे,
म्हारी नैया पार लगावे, बेटी जाटाँ री॥ म्हारा०॥

(२११)

मन मोहन घनश्याम, प्रीत लगाकर चले गये।
ओ सुन्दर मुखड़े श्याम, दरस दिखाकर चले गये॥टेर॥
तेरे बिना बृज-मण्डल सूना, सूनी जमुना तीर।
गऊओं ने भी चरना छोड़ा, नैण बहाये नीर,
नैण बहाये नीर॥ १॥
साँवरिया तेरी मैना पुकारे, आज्या मोहन आज्या
कोयल कूक-कूक कर कहती, एक बार दरस दिखा ज्या,
एक बार दरस दिखा ज्या॥ २॥
मात यशोदा रो के पुकारे, कहाँ गया कुँअर कन्हैया।
माखन-मिसरी किसे खिलाऊँ, किसकी लेउँ बलैया,
किसकी लेउँ बलैया॥ ३॥
बंशी बजाकर रास रचाई, दिल में आग लगाई
कुब्जा को पटरानी कीन्ही, म्हारी सुध बिसराई।
म्हारी सुध बिसराई॥ ४॥
एक बार दरस दिखा ज्या मोहन, विनती करूँ कर जोर।
'सूर' कहे प्रभु एक तुम्हीं हो, नागर नन्द-किशोर,
नागर नन्द-किशोर॥ ५॥

(२१२)

माई री मैं तो लियो गोबिंदो मोल।
कोई कहै छाने, कोई कहे छुपके, लियो री बजंता ढोल॥ १॥
कोई कहै मुँहघो, कोई कहै सुहँघो, लियो री तराजू तोल।
कोई कहै काळो, कोई कहै गोरो, लियो री अमोलक मोल॥ २॥

कोई कहै घरमें, कोई कहै बनमें, राधाके संग किलोल।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, आवत प्रेमके मोल॥ ३॥

(२१३)

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो ना कोई रे।
दूसरो ना कोई म्हारे दाय न आवे कोई रे।
जाके है सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई रे॥
तात मात भ्रात बन्धु, आपणू न कोई रे।
सन्तन संग बैठ बैठ लोक लाज खोई रे॥
चूनड़ी के टूक किये ओढ़ लीन्ही लोई रे।
मोतीड़ा मूँगा उतार तुलसी माला पोई रे॥
आँसूड़ा जल सींच सींच प्रेम बेलि बोई रे।
अब तो बेलि फैलि गई, आनन्द फल होई रे॥
दूध की मथनियाँ मैं प्रेम से बिलोई रे।
माखन माखन काढ़ लीन्हो, छाछ पीवो कोई रे॥
भगत देख राजी हुई, जगत देख रोई रे।
मीराके प्रभु गिरधरनागर, तारो अब मोही रे॥

(२१४)

मेरा आपकी कृपा से, सब काम हो रहा है।
करते हो तुम कन्हैया, मेरा नाम हो रहा है॥ टेर॥
पतवार के बिना ही, मेरी नाव चल रही है।
हैरान है जमाना, मंजिल भी मिल रही है॥
करता नहीं मैं कुछ भी, सब काम हो रहा है।
मेरा आपकी कृपा से०॥

तुम साथ हो जो मेरे, किस चीज की कमी है।
किसी और चीज की अब, दरकार भी नहीं है॥
तेरे साथ से गुलाम अब, गुलफ़ाम हो रहा है।
मेरा आपकी कृपा से०॥
मैं तो नहीं हूँ काबिल, तेरा पार कैसे पाऊँ।
टूटी हुई बाणी से, गुणगान कैसे गाऊँ॥
तेरी प्रेरणा से ही सब, कमाल हो रहा है।
मेरा आपकी कृपा से०॥
तूफ़ान आँधियों में, तुमने ही मुझको थामा।
तुम कृष्ण बन के आये, मैं जब बना सुदामा॥
तेरे करम से अब ये, सरे आम हो रहा है।
मेरा आपकी कृपा से०॥
जीवन की उलझनों में, मैंने जब पुकार राधा।
तुम शक्ति बन के आयी, टूट गयी वो बाधा॥
(हरि) राधे शरण से जीवन, आसान हो रहा है।
मेरा आपकी कृपा से०॥

(२१५)

मेरे सिर पर रख दो बाबा, अपने ये दोनों हाथ।
देना हो तो दीजिए, जन्म जन्म का साथ॥१॥
देने वाले श्याम प्रभु, तू धन और दौलत क्या मांगे।
श्याम प्रभु से मांगे तो फिर नाम और इज्जत क्या मांगे।
मेरे जीवन में अब करदे तू कृपा की बरसात।
देना हो तो दीजिए, जन्म जन्म का साथ॥२॥

श्याम तेरे चरणों की धूल, धन दौलत से भी महंगी है।
एक नजर कृपा की बाबा, नाम इज्जत से महंगी है।
मेरे दिल की तमन्ना यही है, करू सेवा तेरी दिन रात।
देना हो तो दीजिए, जन्म जन्म का साथ॥ ३॥
झुलस रहे हैं गम की धूप में, प्यार की छाया करदे तू।
बिन मांझी के नाव चले ना, अब पतवार पकड़ ले तू।
मेरा रास्ता रोशन कर दे, छाई अंधियारी रात।
देना हो तो दीजिए, जन्म जन्म का साथ॥ ३॥
सुना है हमने शरणागत को, अपने गले लगाते हो।
ऐसा हमने क्या मांगा, जो देने में घबराते हो।
चाहे जैसे रख बनवारी, बस होती रहे मुलाकात।
देना हो तो दीजिए, जन्म जन्म का साथ॥ ४॥

(२१६)

मोहे लगी श्याम संग प्रीत, ये दुनिया क्या जाने।
मुझे मिल गया, मन का मीत, ये दुनिया क्या जाने॥
क्या जाने कोई क्या जाने, मेरी लगी............
छबि लगी मेरी श्याम की जब से
भई बावरी मैं तो तब से
बांधी प्रेम की डोर मोहन से
नाता तोड़ा मैंने जग से
ये कैसी पागल प्रीत,
ये दुनिया क्या जाने॥ १॥

मोहनकी सुन्दर सुरतिया
मन में बस गई मोहनी मुरतिया
लोग कहे मैं भई बावरिया
जब से ओढ़ी श्याम चुनरिया
मैंने छोड़ी जग की रीत
ये दुनिया क्या जाने॥ २॥

हरदम अब तो रहूँ मस्तानी
लोक-लाज दीनी बिसरानी
रूप राशि अंग-अंग समानी
तैरत हैरत रहूँ बिरानी
मैं तो गाऊँ खुशी के गीत
ये दुनिया क्या जाने॥ ३॥

मोहन ने ऐसी बंशी बजाई
सब ने अपनी सुध बिसराई
गोप-गोपियाँ भागी आईं
लोक-लाज कुछ काम न आई
प्रिय बाज उठा संगीत
ये दुनिया क्या जाने॥ ४॥

भूल गयी कहीं आना-जाना
जग सारा लागे बेगाना
अब तो केवल श्याम को पाना
रूठ जाये तो उन्हें मनाना
अब होगी प्यार की जीत
ये दुनिया क्या जाने॥ ५॥

(२१७)

मोहन मुरली वाले, तुमको लाखों प्रणाम॥
नन्द की आँखों के तारे, मात यशोदा के हो दुलारे,
धेनु चरानेवाले, तुमको लाखों प्रणाम।
दैत्य बकासुर को तुमने मारा, कंसराज को तुमने पछाड़ा,
गिरवर उठानेवाले, तुमको लाखों प्रणाम।
यमुना जी पर खेल रचाया, काली नागको नाथ पठाया,
तुम हो भोले भाले, तुमको लाखों प्रणाम।
वृन्दावन में रास रचाया, गोप गोपिका मिलकर गाया,
रास रचानेवाले, तुमको लाखों प्रणाम।
द्रुपदसुता का चीर बढ़ाया, दुर्योधन का गर्व मिटाया,
मुरली बजानेवाले, तुमको लाखों प्रणाम।
भक्त मण्डल है दास तुम्हारा, भवसागर से कर दो पारा,
बिगड़ी बनानेवाले, तुमको लाखों प्रणाम।

(२१८)

मुकुटपर वारी जाऊँ नागरनन्दा॥
डाल डालमें पात पातमें, तुमरो ही नाम गोविन्दा॥ १॥
देवनमें महादेव बड़े हैं, तीरथमें श्रीगङ्गा॥ २॥
सहस्र गोपिन बिच आप बिराजो, ज्यूँ तारन बिच चन्दा॥ ३॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, बिच केसरका बिन्दा॥ ४॥
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि, हरिके चरण चित लैंदा॥ ५॥

(२१९)

मीठे रस से भरोड़ी राधा रानी लागे, महारानी लागे,
म्हाने खारो खारो (२) जमुनाजी रो पानी लागे॥टेर॥
जमुनाजी तो कारी कारी राधा गोरी गोरी,

वृन्दावन में धूम मचावे बरसाने की छोरी,
बृजधाम राधाजी की रजधानी लागे-२ ॥ म्हाने० ॥ १ ॥
ना भावे म्हाने माखन मिश्री, अब न कोई मिठाई,
जिभरिया म्हारी न भाव राधा नाम मलाई,
वृषभान की लली तो गुड़धानी लागे-२ ॥ म्हाने० ॥ २ ॥
राधा-राधा नाम जपत है, जो नर आठो याम,
तिनकी बाधा दूर करत है, राधा-राधा नाम,
राधा नाम में सफल जिंदगानी लागे-२ ॥ म्हाने० ॥ ३ ॥
कान्हा नित मुरली ने टेरत, सुमिरत बारम्बार,
कोटिन रूप धरे नन्द-नन्दन, तबहूँ न पायो पार,
रूप छैल छबीली राधारानी लागे-२ ॥ म्हाने० ॥ ४ ॥

(२२०)

मैं तुझ बिन कृष्ण कन्हैया, किसे अपनी कहूँ कहानी।
मेरा ना कोई रखवाला, सारी दुनियाँ हुई विरानी ॥
जब सबको दूध पिलायी, मैं गो माता कहलायी,
फिर किस अपराध के बदले मुझे काटे आज कसाई,
मेरा कोई साथ न देता, मैंने सबकी प्रीत पहचानी,
मेरा ना कोई रखवाला.........
जब जाऊँ कसाई खाने, चाबुक से पीटी जाती,
फिर उबले जलसे मेरी, चमड़ी उतार ली जाती,
जब अन्त मौत का आता, मत पूछो मेरी कहानी,
मेरा ना कोई रखवाला.........
जिसे अपनी कहते थे प्रभु, वो आज हुई है पराई,

सच्चिदानन्दघन तुमने, कैसी लीला दिखलाई,
कटती बाजार सड़कोंपर, करते हैं सब मनमानी,
मेरा ना कोई रखवाला.........

मैं माँ बन दूध पिलाती, तुम माँ का माँस भी खाते,
क्यों जननी के चमड़े से, तुम जूते आज बनाते,
गौ हत्या बन्द करो रे, रहने दो वंश निशानी,
मेरा ना कोई रखवाला.........

(२२१)

मैं तो गोवर्धन को जाऊँ मेरी बीर, नाँय मानै मेरौ मनुवा।
नाँय मानै मेरो मनुवा, एरी बीर नाँय माने मेरो मनुवा॥टेर॥
नाँय चाहिये मोय पार-परोसन, इकली-दुकली धाऊँ मेरी बीर॥ १॥
सात कोस की दऊँ परकम्माँ, शान्तनु कुंड में न्हाऊँ मेरी बीर॥ २॥
चक्रेश्वर के दरसन करिके, मानसी गङ्गा नहाऊँ मेरी बीर॥ ३॥
सात सेर की करी कढ़ैया, सन्तन न्योति जिमाऊँ मेरी बीर॥ ४॥
गिरि गोवर्धन देव हमारौ, पल पल सीस नवाऊँ मेरी बीर॥ ५॥
प्रेम सहित गिरिराज पुजाऊँ, मन वांछित फल पाऊँ मेरी बीर॥ ६॥

(२२२)

मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो॥
भोर भयो गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो री।
चार पहर बंसीबट भटक्यो, साँझ परे घर आयो री॥ १॥
मैं बालक बहिंयनको छोटो, छींको किस बिध पायो री।
ग्वाल बाल सब बैर परत हैं, बरबस मुख लिपटायो॥ २॥
तूँ जननी जिय की अति भोरी, इनके कहे पतियायो री।
जिय तेरे कछु भेद परत है, जानि परायो जायो री॥ ३॥

यह ले री तेरी लकुटि कमरियाँ, तैं मोहि नाच नचायो री।
'सूरदास' तब हँसी जसोदा, लै निज कंठ लगायो॥ ४ ॥
मैं माखन नहिं खायो मेरी मैया, मैं माखन नहिं खायो री॥ ५ ॥

(२२३)

मुरली प्रेम री बजाई रे नन्दलाल।
नन्दलाला रे, गोपाल लाला कि मुरली प्रेम री...॥ टेर॥
मुरली री आवाज म्हे तो बागां में सुणी थी-२।
कि फूलड़ा तोड़ती छोड़ आई रे नन्दलाला॥ टेर॥
मुरली री आवाज म्हे तो पनघट पे सुणी थी-२।
कि पाणी भरती छोड़ आई रे नन्दलाला॥ टेर॥
मुरली री आवाज म्हे तो रसोई में सुणी थी-२।
कि फलका पोवती छोड़ आई रे नन्दलाला॥ टेर॥
मुरली आवाज म्हे तो गौशाला में सुणी थी-२।
कि बछड़ा चुंगता छोड़ आई रे नन्दलाला॥ टेर॥
मुरली री आवाज म्हारे मन में समाई-२।
कि मैं तो दौड़ी-दौड़ी आई रे नन्दलाला॥ टेर॥
कि मुरली म्हारे मन भायी रे नन्दलाला॥ टेर॥

(२२४)

मीरा नाचे रे, आ मेड़तणी नाचे रे।
कि घुंघरू छमछमाछम छन्न्न्न् बाज रे, बाजे रे।
हरि मंदिर रे माय बाई मीरा नाचे रे॥ टेर॥
साँप पिटारा राणा भेजिया देवो मीरा ने जाय-२।
खोल पिटारी देखीयो रे, माय बैठा गोपाल॥ टेर॥
कि घुंघरू.........

जहर रा प्याला राणा भेजिया, देवो मीरा ने जाय-२।
कर चरणामृत पी गई रे, तू जाणे गोपाल॥ टेर॥
कि घुंघरू.........
मीरा नाचे मेड़ते ने सखियाँ मंदिर माय-२।
मीरा बजावे घुंघरा रे सखियाँ बजावे ताल॥ टेर॥
कि घुंघरू.........
मीरा बाई री बीनती रे सुणजो सिरजनहार-२।
सब भक्तों ने दरशन दीजो, द्वारिका रा नाथ॥ टेर॥
हे द्वारिका रा नाथ कि घुंघरू.........

(२२५)

म्हारी अबके अबके अटकी नैया, पार लगा दो जी
ओ आज्यो साँवरिया होऽऽ नटवर नागरिया॥ टेर॥
इक दिन तो थारो भगत साँवरो, अरबपति कहलायो
परणा कर जद सीख दी करोड़ा रो माल लुटायो
मैं आज बनी निर्धन री बेटी, लाज राख जो जी॥ १॥
सास ननद और देराणी जेठानी, नित की ट्योडी बोले
देवरियो नादान न माने, भरे घाव ने छोले
म्हारे बाबाजी रे विष्णु धर्म री, लाज राखजो जी॥ २॥
म्हारी आन भी राखो साँवरा, हिवड़ो धारे धीर नहीं
मैं अबला अभागन हूँ म्हारे, माँ को जायो बीर नहीं
म्हारी लाड़ कँवर ने, मामा चूंदड़ी, आय ओढ़ाद्यो जी॥ ३॥

(२२६)

मुरली बजा के मोहना, क्यों कर लिया किनारा।
अपनो से हाय कैसा, व्यवहार है तुम्हारा॥ टेर॥

ढूंढा गली गली में, खोजा डगर डगर में
मन में यही लगन है, दर्शन मिले दुबारा॥ १॥
मधुवन तुम्ही बताओ, मोहन कहाँ गया है
कैसे झुलस गया है, कोमल बदन तुम्हारा॥ २॥
यमुना तुम्हीं बताओ, छलिया कहाँ गया है।
तू भी छली गयी है, कहती है नील धारा॥ ३॥
दुनिया कहे दीवानी, पागल कहे जमाना
पर तुमको भूल जाना, हमको नहीं गवाँरा॥ ४॥
राधा तुम्ही बताओ, तेरा श्याम कहाँ गया है
तू भी द्रवित हुई है, कहती है अश्रुधारा॥ ५॥
राधा की पीर मृदुल, व्याकुल हृदय ही जाने
समझेगा क्या भला वो, जिसको न गम पियारा॥ ६॥
भक्ताँ तुम्ही बताओ, भगवन (गोविन्द) कहाँ छुपा है
अपना ही मन टटोलो, हर दिल में वो बसा है॥ ७॥

(२२७)

मेरे बाँके बिहारी लाल, तू इतना ना करियो श्रृंगार।
नजर तोहे लग जायेगी.......

तेरी मुरलिया पे मन मेरा अटका
प्यारा लगे तेरा पीला पटका
तेरी टेड़ी मेढ़ी चाल, तू इतना ना करियो श्रृंगार।
नजर तोहे लग जायेगी.......

तेरी सुरतिया पे मन मेरा अटका
प्यारा लगे तेरा नीला पटका
तेरे घुँघर वाले बाल, तू इतना ना करियो श्रृंगार।
नजर तोहे लग जायेगी.......

तेरी कमरियां पे मन मेरा अटका
प्यारा लगे तेरा काला पटका
तेरे गले बैजयन्ती माल, तू इतना ना करियो श्रृंगार।
नजर तोहे लग जायेगी.......
तेरी पायलिया पे मन मेरा अटका
मीरा को लग गया, तेरा चसका
तेरे चरणों में जाऊँ बलिहार, तू इतना ना करियो श्रृंगार।
नजर तोहे लग जायेगी.......

(२२८)

मैं श्री राधे राधे गाऊँरे, श्याम तेरी गलियन में॥ टेर॥
जिन गलियन में घुटवन चाले, खेले दौड़े संग ले ग्वाले
मैं पग पग शीश नवाऊँरे, श्याम तेरी गलियन में॥
जिन गलियन में माटी खाई, जो रज तूने अंग लगााई
वो रज शीश चढ़ाऊँरे, श्याम तेरी गलियन में॥
जिन गलियन में गैया चराई, जिनको तूने बाँसूरी सुनाई,
मैं भी वो रस पाऊँ रे, श्याम तेरी गलियन में॥
जिन गलियन में माखन खायो, जिन गलियन में फाग उडायो
मैं भी रंग रंग जाऊँ रे, श्याम तेरी गलियन में।
जिन गलियन में रास रचायो, ऊँगली पर गोवर्धन उठायो
वो दरशन मैं पाऊरे, श्याम तेरी गलियन में॥
इतनी कृपा भक्तों पर कर दो, हाथ दया का सिरपर रख दो
बार बार मैं जाऊँ रे, श्याम तेरी गलियन में॥ टेर॥

(२२९)

मैं तुमको श्याम बुलाऊँ , सादर घर में पधराऊँ॥
नैनो से स्वागत गाऊँ, सरबस दे तुम्हे रिझाँऊ।
आँखियन-जल पैर धुलाऊँ, हिय झूले तुम्हे झूलाऊँ॥
प्रेमामृत-रस नहलाऊँ, भोजन-रस मधुर कराऊँ।
हिय कोमल सेज सुलाऊँ, सुरभित अति पवन डुलाऊँ॥
कोमलकर चरण दबाऊँ, छबि निरख निरख सुख पाऊँ।
छिन-छिन मन मोद बढ़ाऊँ, नाचूँ गाऊँ हरषाऊँ॥
नख-शिख पर बलि बलि जाऊँ, मैं न्योछावर हो जाऊँ।
मैं तुमको श्याम बुलाऊँ, सादर घर में पधराऊँ॥

(२३०)

मैं तो गोविन्द का गुण गाऊँ ऐ माय, म्हारो मन लाग्यो सांवरिया से
सांवरिया से ही सांवरिया से मैं तो गोविन्द का गुण.....म्हारो मन

ना चइये म्हाने महल अटारी
मैं तो हरि चरणा रह जाऊं ऐ माय.....म्हारो मन
हार सिंगार न मन के भाये
मैं तो चन्दन तिलक लगाऊं ऐ माय .....म्हारो मन
ले तम्बूर खरताल मंजीरा
मैं तो गिरधर लाल रिझाऊ ऐ माय.....म्हारो मन
मैं गिरधर की गिरधर म्हारो
मैं तो नातो ये ही निभाऊं ऐ माय.....म्हारो मन
गुरूमण्डल घनश्याम छबि पर
मैं तो तन मन वार लुटाऊं ऐ माय.....म्हारो मन

(२३१)

मैंने ओढ़ी री माई! अनमोल,
चुनरी कृष्ण नाम की॥ टेर॥
कृष्ण नाम की माई! श्याम नाम की,
मेरे सद्‌गुरु ने दी अनमोल,
चुनरी कृष्ण नाम की॥ टेर॥
तन न्योछावर, मन न्योछावर,
इस पर मणि-कंचन न्योछावर,
प्राणों का स्पदंन न्योछावर,
सारा जीवनधन न्योछावर,
सारे जगसे है माई! अनमोल,
चुनरी कृष्ण नाम की॥ टेर॥
बचपन ओढूँ, यौवन ओढूँ,
अब ओढूँ, चौथेपन ओढूँ,
घर ओढूँ, बाजार में ओढूँ,
हर पल ओढूँ, हर छन ओढूँ,
जाऊँ जगसे तो ओढूँ, अनमोल,
चुनरी कृष्ण नाम की॥ टेर॥
ऐसी चुनरिया ओढ़ो मेरी गोरिया!
ओढ़ो मेरी गोरिया! सारी उमरिया,
रंग न छूटें, तार न टूटें,
रीझें अपने श्याम साँवरिया,
जो दे सब भव-बन्धन खोल,
चुनरी कृष्ण नाम की॥ टेर॥

(२३२)

यशोमती मैया से बोले नन्दलाला राधा क्यों गोरी मैं क्यूँ काला
बोली मुस्काती मैया, ललन को बताया
कारी अंधियारी आधी रात में तू आया
लाडला कन्हैया मेरा हो लाडला कन्हैया मेरा
काली कमली वाला इसीलिये काला॥ १॥
बोली मुस्काती मैया सुन मेरे प्यारे
गोरी–गोरी राधिका के नैन कजरारे
काले नैनों वाली ने हो काले नयनो वाली ने
ऐसा जादू डाला, इसीलिये काला॥ २॥
इतने में राधा प्यारी आई इठलाती
मैंने नहीं जादू डाला बोली बलखाती
लाड़ला कन्हैया तेरा हो लाड़ला कन्हैया तेरा
जग से निराला इसीलिये काला॥ ३॥

(२३३)

यो तो मीठी बेन बजावेरे, गोकुल का कांकड़ में कान्हो गाय चरावेरे॥ टेर॥
काली काली कामली ओढ़े, ग्वाल्या चारो मेर
बांस की बांसुरिया जाके फुंदा चारो मेर
यो तो राग सुरीली गावे रे॥ गोकुल का॥
जमुनाजी के नीरा तीरा बरसानों नंद गाँव
छाने से छुपके से आके, पूंछन लाग्यों नाम
यो तो ऐड़िया मचकावे रे॥ गोकुल का॥

नन्द महर को लाड़लो यो मतवालो छे कान्ह
आती जाती गुजरियां से, मांगे दही रो दान
यों तो घूंघट ने उघड़ावे रे॥ गोकुल का॥
राजा इन्द्र को मान घटायों, गिरवर लियो उठाय
केस पकड़ प्रभु कंस पछाड़्यो, मथुराजी के माय
यो तो घेरी धूम मचावे रे॥ गोकुल॥

(२३४)

ये तो प्रेम की बात है ऊधौ,
बन्दगी तेरे बस की नहीं है।
यहाँ सरदे के होते हैं सौदे,
आशिकी इतनी सस्ती नहीं है॥ १॥
प्रेमवालों ने कब वक्त पूछा,
उनकी पूजा में सुन लेओ ऊधौ,
यहाँ दम दममें होती है पूजा,
सर झुकाने की फुरसत नहीं है॥ २॥
जो असलमें हैं मस्ती में डूबे,
उन्हें क्या परवाह जिन्दगी की,
जो उतरती है चढ़ती है मस्ती,
वो हकीकतमें मस्ती नहीं है॥ ३॥
जिसकी नजरों में हैं श्याम प्यारे,
वो तो रहते हैं जग से न्यारे,
जिसकी नजरों में मोहन समाए,
वो नजर फिर तरसती नहीं है॥ ४॥

(२३५)

यमुना किनारे, झिलमिल करे तारे,
जहाँ बाँसुरी बजावे, यशोदा का ललना, नन्दजी का ललना।
जिसे सुन-सुन राधाजी का दिल धड़का॥
पाँवोंमें पैंजनियाँ, पहन चोरी-चोरी।
घरसे चली रे देखो, राधे गोरी-गोरी।
आई कदम्ब के नीचे, घूंघट पट खींचे।
जहाँ बाँसुरी बजावे, यशोदा का ललना, नन्दजी का ललना।
जिसे सुन-सुन राधाजी का दिल धड़का॥
यमुना किनारे........
नटखट था बड़ा कन्हैया, पकड़ी राधाजीकी बईयाँ।
राधाजी का नरम करेजवा, नाचे ताता थैया।
लो प्रीत गगरिया छलकी, माथेसे चुनरिया ढलकी।
जहाँ बाँसुरी बजावे, यशोदा का ललना, नन्दजी का ललना।
जिसे सुन-सुन राधाजी का दिल धड़का॥
यमुना किनारे........
राधा मोहनके, मधुर मिलनकी छटा देखकर।
उठी गगनमें घटा, पवन जो हटा, मेघ जो फटा।
बरसने लगा रे मुसलाधार।
गोकुल भीगा, मधुबन भीगा, भीगे कृष्ण मुरार।
भीग गई रे कुंवर राधिका, भीगा उनका प्यार।
पंछी भोर को पुकारे, खुले नयन रतनारे।
जहाँ बाँसुरी बजावे, यशोदा का ललना, नन्दजी का ललना।
जिसे सुन-सुन राधाजी का दिल धड़का॥
यमुना किनारे........

(२३६)

राधा का नाम अनमोल बोलो राधे राधे।
श्यामा का नाम अनमोल, बोलो राधे राधे।
ब्रह्मा भी बोले राधे, विष्णु भी बोले राधे।
शंकर के डमरु से आवाज, आई राधे राधे॥ १॥
गंगा भी बोले राधे, यमुना भी बोले राधे।
सरयु की धार से आवाज आई राधे राधे॥ २॥
चन्दा भी बोले राधे सुरज भी बोले राधे।
तारों के मण्डल से आवाज आई राधे राधे॥ ३॥
गैया भी बोले राधे बछड़े भी बोले राधे।
दूध की धार से आवाज आई राधे राधे॥ ४॥
गोपी भी बोले राधे ग्वाले भी बोले राधे।
बृज के नर नार से आवाज आई राधे-राधे॥ ५॥
तन भी बोले राधे मन भी बोले राधे।
सासों के तार से आवाज आई राधे राधे॥ ६॥

(२३७)

राधे तेरे चरणों की, अगर धूल जो मिल जाये।
सच कहता हूँ मेरी, तकदीर सँवर जाये॥ राधे॥
सुनते हैं तेरी रहमत, दिन रात बरसती है।
एक बूँद जो मिल जाये, मेरे मन की कली खिल जाये॥ राधे॥
यह मन बड़ा चंचल है, कैसे तेरा भजन करूँ।
जितना इसे समझाऊँ, उतना ही बदल जाये॥ राधे॥
नजरों से गिराना नहीं, चाहे जितनी सजा देना।
नजरों से जो गिर जाये, मुश्किल ही सम्हल पाये॥ राधे॥

राधे इस जीवन की, बस एक तमन्ना है।
तुम सामने हो मेरे, और प्राण निकल जाये॥ राधे॥

(२३८)

राधाके मनमें बस गये श्याम बिहारी॥
श्यामके रंगमें रंग गयी राधा
कृष्णके रंगमें रंग गयी राधा
भूली सुध-बुध सारी...........।
राधाके मनमें बस गये श्याम बिहारी॥ टेर॥
श्याम नामकी चूनड़ ओढ़ी, श्याम नामकी चूड़ियाँ।
अंग-अंगमें श्याम समाये, मिट गयी सारी दूरियाँ॥
कानोंमें कुण्डल, गले वैजन्ती माला लागे प्यारी।
राधाके मनमें बस गये श्याम बिहारी॥ टेर॥
बैठ कदमकी डार कन्हैया, मुरली मधुर बजाये।
सांझ सकारे मुरलीके स्वर, राधा राधा गाये॥
इस मुरलीकी तान पे जाए, ये दुनिया बलिहारी।
राधाके मनमें बस गये श्याम बिहारी॥ टेर॥
अधर सुधा रस मुरली राजे, कान्हा रास रचाये।
कृष्ण रचैया राधा रचना, प्रेम सुधा बरसाये॥
प्रेम मगन हो सब ही बोलो, जय हो बांके बिहारी।
राधाके मनमें बस गये श्याम बिहारी॥ टेर॥

(२३९)

राधिका गोरी से, बिरज की छोरी से, मैया करा दे मेरो ब्याह।
उमर तेरी छोटी है, नजर तेरी खोटी है, कैसे करा दूँ तेरो ब्याह॥
जो ना ब्याह कराये, तेरी गैयां नांय चराऊँ।
आज के बाद ओ मैया, तेरी देहरी पे न आऊँ॥

आयेगाऽऽ रे मजा अब जीत हार का।
राधिका गोरी से०॥
चन्दन की चौकी पे, मैया तुझको बिठाऊँ।
अपनी राधिका गोरी से, चरण तेरे दबवाऊँ॥
भोजन मैं बनवाऊँगा, छप्पन प्रकार के।
राधिका गोरी से०॥
छोटी-सी दुल्हनियाँ, तेरे अँगना में डोलेगी।
तेरे सामने मैया, वो घूँघट ना खोलेगी॥
दाऊ से जा कहियो, बैठेंगे द्वार पर।
राधिका गोरी से०॥
सुनकर बातें कान्हा की, मैया बैठी मुस्काए।
लेकर के बलैया, मैया हिवडे से अपने लगाये॥
नजर कहीं लग जाय ना, मेरे लाल को।
राधिका गोरी से०॥

(२४०)

राणोजी (सीसाद्यो) रूठे तो म्हारो काँई करसी,
म्हे तो गोविन्दरा गुण गास्याँ हे माय॥
राणोजी रूठे तो अपनो देश राखसी,
म्हे तो हरि रुठ्याँ कठे जास्याँ हे माय॥
लोक-लाजकी काण न माना,
म्हे तो निर्भय निशान घुरास्याँ हे माय॥
राम-नामकी जहाज चलास्याँ,
म्हे तो भवसागर तिर जास्याँ हे माय॥
हरि-मन्दिरमें नृत्य करास्याँ,
म्हे तो घूँघरिया छमकास्याँ हे माय॥

यह संसार बाड़ का कान्टा,
म्हे तो ज्या संगत नहीं जास्याँ हे माय॥
चरणामृत रो नेम हमारो,
म्हे तो नित उठ दर्शन पास्याँ हे माय॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
म्हे तो हरि चरणा चित्त ल्यासाँ हे माय॥

(२४१)

राधा ढुण्ढ़ रही, किसी ने मेरा श्याम देखा,
गैया चराते हुए किसी ने मेरा श्याम देखा-२
श्याम देखा ओ राधेश्याम देखा
गैया चराते.........
राधा तेरे श्याम को वृन्दावन में देखा
गैया चराते.........
राधा तेरे श्याम को गोकुल में देखा
मक्खन चुराते.........
राधा तेरे श्याम को मथुरा में देखा
मुरली बजाते हुए.........
राधा तेरे श्याम को यमुना तट पे देखा
रास रचाते.........

(२४२)

राधे-राधे जपो चले आएँगे बिहारी-२॥ टेर॥
राधे-राधे रटो चले आएँगे बिहारी-२॥ टेर॥
आएँगे बिहारी चले आएँगे बिहारी-२,
राधे-राधे रटो चले आएँगे बिहारी॥
राधा मेरी चंदा, चकोर है बिहारी-२॥ राधे॥

राधा रानी मिश्री, तो स्वाद है बिहारी-२,॥ राधे॥
राधा मेरी गंगा, तो धार है बिहारी-२,॥ राधे॥
राधा रानी तन है, प्राण है बिहारी-२,॥ राधे॥
राधा रानी सागर, तरंग है बिहारी-२,॥ राधे॥
राधा रानी मोहिनी, तो मोहन बिहारी-२,॥ राधे॥
राधा मेरी गोरी, तो साँवरे बिहारी-२,॥ राधे॥
राधा रानी भोली भाली, चंचल बिहारी-२,॥ राधे॥
राधा रानी नथनी, तो कंगन बिहारी-२,॥ राधे॥
राधा रानी मुरली, तो तान है बिहारी-२,॥ राधे॥

(२४३)

राधे रानी म्हे तो थांरे ब्रज बृन्दावन आया हो,
म्हारी किरति कुमारि, बृषभानु की दुलारि॥ म्हे०॥ टेर॥
राधेरानी थे तो म्हाने, श्यामसुन्दर सूँ मिला दो हो॥ म्हा०॥
नैया म्हारी भवसूँ पार लगा दो हो मेरी माय॥ १॥
राधेरानी चाहो तो म्हाने ब्रज की रेणु बना दो हो॥ म्हा०॥
लता पता की कोई एक डाली बना दो हो मेरी माय॥ २॥
राधेरानी सगलाँने तज शरण आपरी आया हो॥ म्हा०॥
कर कमलाँरी करज्यो छत्तर छाया हो मेरी माय॥ ३॥
राधे रानी म्हे तो थाँरे ब्रज वृन्दावन आया हो,
म्हारी कीरतकुमारि, वृषभानुकी दुलारि, अलबेली सरकार॥ म्हे०॥

(२४४)

रे माखन की चोरी छोड़ साँवरे मैं समझाऊँ तोय। टेर।
मैं जान्यो यो गयो गैयनमें, रयो खिरक में सोय।
कोउ एक ग्वारिन ने बतरायो, दई कमरियाँ खोय। टेर।
नवलख धेनु नन्द घर दूझे, नित नयो माखन होय।

बड़ौ नाम तेरे नन्द बाबा को, हँसी हमारी होय। टेर।
बरसाने तेरी भई सगाई, नित नई चरचा होय।
बड़े घरन की राजदुलारी, नहीं वरैगी तोय। टेर।
यह चौरी नहिं छूटे मैया, होनी हो सो होय।
'सूरश्याम' मैया के आगे, दियो नयन भर रोय। टेर।

(२४५)

रंग दे चुनरिया हे गिरधारी
कोई कहे इसे मैली चदरिया, कोई कहे इसे पाप गठरिया
अपने हो रंग में रंग दे मुरारी। रंग दे चुनरिया०
मोह माया में मन भटकाया, सुमिरन तेरा ना कर पाया
प्रभु ये बन्धन खोलो मेरे, आया हूँ मैं द्वारे तेरे
जाऊँ कहाँ तज शरण तुम्हारी.......
ये जीवन धन तुमसे पाया, प्रभु तुम्हीं से ये स्वर पाया
तेरी महिमा जाने न कोई, मन की माला मन में सोई
सुमिरन ज्योति जला हितकारी.......
तुम स्वामी हम बालक तेरे, सुनो पुकार तुम्हीं हो मेरे
जनम जनम का तुमसे नाता, तूही जग का एक विधाता
एक तुम्हीं से प्रीत हमारी.......

(२४६)

वृन्दावन की टिकट कटा दे, बैठ रेल में आऊँ रे
म्हारा साँवरिया॥ टेर॥
जहाँ बिराजे श्री बाके बिहारी, चरणों में शीश नवाऊँ रे
म्हारा साँवरिया॥
जमुनाजीका दर्शन करके, मानसी गंगा नहाँऊ रे
म्हारा साँवरिया॥

सात कोस की देऊँ परकम्मा, तन मन ताप मिटाऊँ रे
म्हारा साँवरिया॥ टेर॥
गरम जलेबी, हलवा, पूरी, छप्पन भोग लगाऊँ रे
म्हारा साँवरिया॥
पान चढ़ाऊ फल फूल चढाऊ, संतन न्योत जीमाऊँ रे
म्हारा साँवरिया॥
गिरधारी के दर्शन करके, बैठ प्रसादी पाऊँ रे,
म्हारा साँवरियाँ॥ टेर॥
म्हे गिरधरकी गिरधर म्हारो, नातो ये ही निभाऊँ रे
म्हारा साँवरिया॥
भक्त मण्डल की यही है विनती, सखियाँ संग में आऊँरे
म्हारा साँवरिया॥

(२४७)

श्यामा आन बसो वृंदावन में मेरी उमर बीत गई गोकुल में॥ टेर॥
श्यामा रस्ते में बाग लगा जाना, फूल बिनूँगी तेरी माला के लिए।
तेरी बाट निहारूँ कुंजन में॥ श्यामा आन बसो०॥
श्यामा रस्ते में कुआँ खुदवा जाना, मैं तो नीर भरूँगी तेरे लिए।
मैं तुझे नहलाऊँगी मल-मल के॥ श्यामा आन बसो०॥
श्यामा मुरली मधुर सुना जाना, मोहे आके दरश दिखा जाना।
तेरी सूरत बसी है अँखियन में॥ श्यामा आन बसो०॥
श्यामा वृन्दावन में आ जाना, आकर के रास रचा जाना।
सूनी गोकुल की गलियन में॥ श्यामा आन बसो०॥
श्यामा माखन चुराने आ जाना, आकर के दही बिखरा जाना।
बस आप बसो मेरे मन में॥ श्यामा आन बसो०॥

(२४८)

श्याम तेरी बंशी पुकारे राधा नाम-२
लोग करें मीरा को यूँ ही बदनाम-२
साँवरे की बंशी को बजने से काम-२
राधा का भी श्याम वो तो मीरा का भी श्याम-२
ओ ऽ ऽ ओ जमुना की लहरें बंसी बट की छईयाँ
किसका नहीं है कहो कृष्ण कन्हैया
श्याम का दिवाना-२ तो सारा बृजधाम
लोग करें मीरा को यूँ.........
साँवरे की बंशी.........
कौन जाने बाँसुरिया किसको बुलाये
जिसके मन भाए वो उसी के गुण गाये
कौन नहीं बंशी-२ की धुन का गुलाम
राधा का भी श्याम.........॥ श्याम तेरी.................।

(२४९)

श्याम पिया मोरी रंग दे चुनरिया,
कृष्ण पिया मोरी रंग दे चुनरिया, श्याम पिया ओ ऽऽ ॥ टेर॥
ऐसी रंग दे रंग नहीं छूटे ओ ऽऽ
धोबिया धोये चाहे सारी उमरिया॥ श्याम० ॥
लाल न ओढूँ पीली न ओढूँ, ओ ऽऽ
मैं तो ओढूँ श्याम काली कमलिया॥ श्याम० ॥
गागर भर दे सर पर रख दे ओ ऽऽ
चल के बता दे श्याम तोरी नगरिया॥ श्याम० ॥
बिना रँगाये घर नहीं जाऊँ ओ ऽऽ
बीत जाये चाहे सारी उमरिया॥ श्याम० ॥

एक दिन म्हारो भोलो बाबुल, अरब पति कहलायो थो,
अन्न धन रा भण्डार घणेरा, और छोर नहीं पायो थो,
ऊँचा-ऊँचा महल मालिया, नगर सेठ कहलायो थो,
अन-गिनती का नौकर चाकर, याद मने सब आवे है॥ १॥
लाड़ प्यार में पली लाडली, बड़ा घराँ जद ब्याही थी,
दान दायजो हाथी घोड़ा, दास-दासियाँ ल्याई थी,
सोना, चाँदी, हीरा, मोती, गाडा भर-भर ल्याई थी,
बीती बाताँ याद करूँ जद, हिवड़ो भर-भर आवे है॥ २॥
तेरे भरोसे सेठ साँवरा, भोलो बाबुल आयो है,
गोपी चन्दन और तुमड़ा, साधा ने संग ल्यायो है,
घर-घर माँगत फिरे सूरीया, म्हारो मान घटायो है,
देवरियो म्हाने ताना मारे, नणदल जीव जलावे है॥ ३॥
और सगा ने महल मालिया, टूटी टपरी नरसी ने,
और सगा ने शाल दुशाला, फटी गुदरी नरसी ने,
और सगा ने माल मलीदा, रूखी सूखी नरसी ने,
डूब मरूँ पर घर नहीं जाऊँ, बाबुल मने लजावे है॥ ४॥
विकल होय जद नानी बाई, श्याम प्रभु ने ध्यायो है,
राधा रूकमण संग लेयकर, सेठ साँवरो आयो है,
भात भरण ने दान दायजो, गाडा भर-भर ल्यायो है,
साँवरिया ने निरख बावली, बाताँ यूँ बतलावे है॥ ५॥
कुण से नगर पधारोला थे, कुण का हो लणिहार जी,
नानी बाई को भात-भरणनें, जासाँ नगर अंजार जी,
नरसीजी म्हारो सेठ पुरानो, म्हारौ अन्नदातार जी,
नानी बाई म्हारी धरम बहिन, यों साँवरियों समझावे है॥ ६॥
बात सुनी जब साँवरिया की, सारो दुखड़ो दूर हुयो,

रंग बधावा गाती गाती, घर-घर यों संवाद करयो,
'शिव मण्डल' थारी महिमा गावे कबसे बाट उड़ीक रहयो,
भक्तां सब मिलकर प्रभु का, हरष-हरष गुण गावे है॥ ७॥

(२५४)

साँवरा आओ तो सही, मोहन आओ तो सही।
माधो रे मन्दिर में, मीरा ऐकली खड़ी॥ टेर॥
थे कहो तो साँवरा, मैं जल-जमुना बण ज्याऊँ।
न्हावण लाग्यो साँवरो, थारे अंग अंग सूँ लग ज्याऊँ॥
थे कहो तो साँवरा, मैं मोर मुकुट बण ज्याऊँ।
पहरण लाग्यो साँवरो, थारे माथे सूँ लग जाऊँ॥
थे कहो तो साँवरा, मैं पायलड़ी बण ज्याऊँ।
थे बजाओ घूँघरा, थारे चरणाँ सूँ लग ज्याऊँ॥
थे कहो तो साँवरा, थारी बाँसुरी बण ज्याऊँ।
थे बजाओ साँवरा, थारे होठों सूँ लग ज्याऊँ।
थे कहो तो साँवरा, मैं काजलियो बण ज्याऊँ।
सारण लाग्यो साँवरो, थारे नैणा सूँ लग ज्याऊँ॥
थे कहो तो साँवरा, फूलाँ रा हार बण ज्याऊँ।
थे पहन लो साँवरा, थारे हिवड़ा सूँ लग ज्याऊँ॥
"मीरा" हरि की लाडली, हूँ चरणा की दासी।
माधो रे मन्दिर में मीरा, बाँध घुँघरा नाची॥

(२५५)

साँवरियाऽऽ मीठी-मीठी लागे मधुर तेरी बाँसुरिया।
प्यारो लागे बृन्दावन धाम, जहाँ है मेरो कुंजबिहारी॥ टेर॥
तेरी मुरलिया मीठी-मीठी बाजे
भेद जीवनके सारे ही खोले

इसमें छिपा है गीताका ज्ञान
इसमें छिपा है सृष्टिका ज्ञान
साँवरियाऽऽ.............

नख ऊपरमें गोवरधन धारो
इन्द्रको मान भंग कर डार्‌यो
बृजवासिनको कष्ट निवारो
लीलाधारी है मुरलीवालो
साँवरियाऽऽ.............

राधाके संग रास रचावे
यमुना तट पे धेनु चरावे
करमें मुरलिया कांधे कमलिया
झांके झरोखेमें बांके
बिहारी साँवरियाऽऽ.............

(२५६)

साँवरिया है सेठ, म्हारी राधाजी सेठानी है
आ तो सारी दुनिया जानी है॥ टेर॥
राजाओं के राजा, महारानी की रानी
सिर मोर-मुकुट साजे है,
दरबार निराला, हर बात निराली
सारे जग में बिराजे है, होऽऽऽ
सुणे पल में सेठ, सुणे पल में सेठानी है॥ १॥
ना अन्न की कमी है, ना धन की कमी है
भरया भण्डार है, होऽऽऽ
दिलदार सांवरियो, दिलदार राधाजी

लुटावे प्यार है, होऽऽऽ
करे नहीं देर, करे सबकी रखवाली है॥ २॥
सांवरियो राधाजी, राखे भगता ने राजी
करे घणो लाड है, होऽऽऽ
भण्डार लुटावे, हर बात बणावे
भगता री ठाठ है, होऽऽऽ
देवें छप्पर फाड़, नहीं इनसो कोई दाणी है॥ ३॥
सुख दुख में सांवरियो, सुख दुख में राधाजी
सदा मेरे साथ है, होऽऽऽ
मेरी चिन्ता दूर करे, मेरी पीड़ा दूर करे
रख ले वे मेरी बात है, होऽऽऽ
भगतां रो तो काम, प्रभु की महिमा नित गानी है॥ ४॥

(२५७)

सुन सुन रे म्हारा प्यारा रे साँवरा
कद म्हारे आँगणियें पधारो ला, कद म्हारे आँगणियें पधारो ला॥ टेर॥
साँवरी सूरत थाँरी लागे प्यारी, गल वैजन्तीमाला न्यारी,
कद म्हानें दरश दिखाओ ला॥ १॥
ढूँढ़ रही थाँने बृजकी बाला, रूस रया क्यूँ नन्दजीरा लाला,
कद थाँरी झलक दिखाओ ला॥ २॥
याद करे थाँने राधा प्यारी, बेगा आओ श्याम मुरारी,
कद थाँरी बाँसुरी बजाओ ला॥ ३॥
म्हे दासी चरणाँरी थाँरी, देर करो मत श्याम बिहारी,
कद म्हारी बिथा मिटाओ ला॥ ४॥

(२५८)

श्री कृष्णः शरणम् ममः श्री कृष्णः शरणम् ममः।
नीलमणी गोपाल भज मन श्री कृष्णः शरणम् ममः॥ टेर॥
कदम्ब केरी डाली बोले, श्री कृष्णः शरणम् ममः।
श्री यमुनाजी री पाल्याँ बोले, श्री कृष्णः शरणम् ममः॥
गोकुल केरी गलियाँ बोले श्री कृष्णः शरणम् ममः।
वृन्दावन के वृक्ष बोले, श्री कृष्णः शरणम् ममः॥
कमल कमल पर मधुकर बोले, श्रीकृष्णः शरणम् ममः।
डाल-डाल पर पक्षी बोले, श्रीकृष्णः शरणम् ममः॥
कुण्ड-कुण्ड री सीढ़ी बोले, श्री कृष्णः शरणम् ममः।
कुन्ज-कुन्ज वन उपवन बोले, श्रीकृष्णः शरणम् ममः॥
ब्रज चोरासी कोस बोले श्री कृष्णः शरणम् ममः।
गोर्वधन की रज रज बोले, श्री कृष्णः शरणम् ममः॥
गाय चरावत ग्वाला बोले, श्री कृष्णः शरणम् ममः।
रास रमत सब गोप्याँ बोले, श्री कृष्णः शरणम् ममः॥
ललिता और विशाखा बोले, श्री कृष्णः शरणम् ममः।
प्रेम मणी श्री राधे बोले, श्री कृष्ण शरणम् ममः॥
तुलसी जी री क्यारी बोले, श्री कृष्णः शरणम् ममः।
कृष्णदास अनुरागी बोले, श्री कृष्णः शरणम् ममः॥

(२५९)

श्री राधे गोविन्दा मन भजले हरि का प्यारा नाम है
गोपाला हरि का प्यारा नाम है,
नन्दलाला हरि का प्यारा नाम है॥ टेर॥
मोर मुकुट सिर गले बनमाला, केशर तिलक लगाए
वृन्दावन की कुंज गलिन में, सबको नाच नचाए॥ १॥

यमुना किनारे धेनु चरावे, माधव मदन मुरारी
मधुर मुरलिया जदि बजावे, हर ले सुध बुध सारी॥ २॥
गिरधर नागर कहती मीरा, सूर को श्यामल भाया
तुकाराम और नामदेव ने, विट्ठल विट्ठल गाया॥ ३॥
राधा शक्ति बिना न कोई, श्यामल दर्शन पाए
आराधन कर राधे-राधे, कान्हा भागे आए॥ ४॥
सुमिरन का रस जिसको आया, वो ही जाने मन में
निराकार साकार होता है, भक्तों के आँगन में॥ ५॥
नरसी ने करताल बजाकर, सावरियाँ को रिझाया
शबरी ने अपने हाथों से, प्रभु को बेर खिलाया॥ ६॥
नाम कन्हैया भव सागर से, सबको पार लगाए
नाम से देखो गणिका तर गई, तोता घर में पढ़ाए॥ ७॥

(२६०)

श्री राधे गोविन्दा गोपाला तेरा प्यारा नाम है॥ टेर॥
मोर मुकुट माथे तिलक विराजे, गल वैजयंतीमाला।
कोई कहे बसुदेव का नन्दन, कोई कहे नन्दलाला॥ १॥
जमुना किनारे कृष्ण कन्हैया, मुरली मधुर बजावे।
ग्वाल बाल के संग में कान्हा, माखन मिसरी खावे॥ २॥
अजामिल के अन्त समय में तेरा नाम जब आया।
यमदूतों से मुक्त कराके, अपने धाम पठाया॥ ३॥
जल में गज को ग्राह ने घेरा, जल में चक्र चलाया।
जब जब पीड़ पड़ी भक्तन पर, नंगे पाँवो आया॥ ४॥
द्रोपदी ने जब तुम्हें पुकारा साड़ी आन बढ़ाई।
भक्तों के खातिर आप बने प्रभु, आकर सेना नाई॥ ५॥
अर्जुन का रथ तुमने हांका, भारत भई लड़ाई।

नाम को लेकर विष भी पी गई, देखो मीराबाई॥ ६॥
जो नर भजन करे नहीं भाई, उमर वो बिरथा खोता।
राम नाम से गणिका तर गई, पढ़ा-पढ़ा कर तोता॥ ७॥
नरसी के सब काम संवारे, मुझके मत बिसरा रे।
जनम जनम से तेरा 'सारंग' तेरा नाम पुकारे॥ ८॥

(२६१)

श्रीराधे गोविन्द गोपाल, काटो भव जाल,
गोवर्धनधारी, मैं आया शरण तिहारी॥ टेर॥
माथे पर मुकुट बिराजत है, अंग पर पीताम्बर राजत है।
गलबीच बैजन्ती माला प्यारी, मैं आया शरण तिहारी॥ १॥
कानोंमें कुण्डल सोहत है, बाजूबन्द मन को मोहत है।
कटि रत्नजड़ित करधनियां की छवि न्यारी, मैं आया शरण तिहारी॥ २॥
छबि ललित त्रिभंगी राजत है, पायनमें नूपुर बाजत है।
चरणोंकी आशा अरुण कमल अबुहारी, मैं आया शरण तिहारी॥ ३॥
कर कमलन मुरली सोह रही, मुस्कान मधुर मन मोह रही।
भक्तनके जीवन प्राण और अति प्यारी, मैं आया शरण तिहारी॥ ४॥
मैं निश दिन ध्यान लगाता हूँ, श्रीगोविन्द तुम्हें बुलाता हूँ।
आ जाओ मोहन लेकर गरुड़ सवारी, मैं आया शरण तिहारी॥ ५॥
जिस-जिसने तुमको ध्याया है, उन्हें प्रगट हो दरश दिखाया है।
अब क्यों कर रखी देर हमारी बारी, मैं आया शरण तिहारी॥ ६॥
चरणोंमें शीश झुकाता हूँ, और सविनय विनय सुनाता हूँ।
कर देना भवसे नैया पार हमारी, मैं आया शरण तिहारी॥ ७॥
गणिका तारी अहिल्या तारी और तारे तुमने बहु नर-नारी।
अब कहाँ छुपकर बैठे हो, हे गिरधारी, मैं आया शरण तिहारी॥ ८॥

यह कुन्ती (दासी) शरण तुम्हारी है, चरणों पर बलिहारी है।
रख लेना मेरी लाज आप बनवारी, मैं आया शरण तिहारी॥ ९॥
श्रीराधे गोविन्द गोपाला..........................

(२६२)

श्रीराधे रानी दे डारो नी बाँसुरी मोरी।
काहेसे गाऊँ राधे काहेसे बजाऊँ काहेसे लाऊँ गैया घेरी।
मुखड़ेसे गावो कान्हा ताल बजावो चिटियासे लावो गैया घेरी॥ १॥
या बंशीमें मेरे प्राण बसत हैं सो बंशी गई चोरी।
नहीं तो सोनेकी राधे नहीं तो रूपेकी हरे बाँसकी पोरी॥ २॥
कबको खड़ो जी राधे अरज करत हूँ देखो गरीबी मोरी।
चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छबि चिरंजी रहो यह जोरी॥ ३॥

(२६३)

हे म्हारा घट मा बिराजता श्रीनाथजी, यमुनाजी, महाप्रभुजी॥
म्हारू मनडु छे गोकुल बन्दरावन।
म्हारा तन ना आंगणिया मा तुलसी ना वन।
म्हारा प्राण जीवन॥ हे म्हारा घट०॥
हे म्हारा आतम ना आंगणे श्रीमहाप्रभुजी।
म्हारी आंखो दीसे गिरधारी रे धारी।
म्हारू तन मन थयु जेने वारि रे वारि।
म्हारा श्याम मुरारी॥ हे म्हारा घट०॥
म्हारा प्राण थकी मने वैष्णव व्हाला।
नित करता श्रीनाथजी ने काला रे वाला।
म्हे तो बल्लभ प्रभुजी ना कीधा छे दरशन।
म्हारू मोहि लीधुं मन॥ हे म्हारा घट०॥

हूँ तो नित्य विट्ठलवर नी सेवा रे करू।
हूँ तो आठो समा केरी झांकी रे करू।
मैं तो चितड़ु श्रीनाथजी ने चरणे धर्युं।
जीवन सफल कर्युं॥ हे म्हारा घट०॥
आवो जीवन मा लावो फरी कदी ना मले।
वारे वारे मानव देह कदी ना मले।
फेरो लाख रे चौरासी नो म्हारो रे पड़े।
मने मोहन मले॥ हे म्हारा घट०॥

(२६४)

हे गोविन्द हे गोपाल अब तो जीवन हारे.....।
हे गोविन्द रखो शरण अब तो जीवन हारे॥ टेक॥
नीर पीवन हेतु गयो सिन्धु के किनारे (२)
सिंधु बीच बसत ग्राह चरन गहि पछारे.....हे गोविन्द
चार पहर युद्ध भयो लई गयो मझधारे (२)
नाक कान डूबन लागे कृष्ण को पुकारे.....हे गोविन्द
द्वारिका में शब्द गयो शोर भयो भारे (२)
शंख चक्र गदा पद्म गरुड़ लई सिधारे हे गोविन्द.......।
'सूर' कहे श्याम सुनो शरण हौं तिहारे (२)
अबकी बार पार करो नंद के दुलारे हे गोविन्द.......।

(२६५)

हे कान्हो बैठो कदम केरी डालियाँ रे।
ओ तो बंसरी बजावे दे दे तालियाँ रे॥ टेर॥
हे आवो साँवरिया आपा बागां में चाला-२।
आप चम्पों ने म्हे तो डालियाँ रे॥ टेर॥

हे आवो साँवरिया आपा पनघट चाला-२।
आप घड़ो ने म्हे पणिहारियाँ रे॥ टेर॥
हे आवो साँवरिया आपा महलां में चाला-२।
आप झरोख म्हे तो जालियाँ रे॥ टेर॥
हे आवो साँवरिया थाने भोजन करावा-२।
आप जीमों म्हे पुरसनवालियाँ रे॥ टेर॥
आप साँवरिया राधाजी रा प्यारा-२।
तो आप जीजाजी म्हे तो सालियाँ रे॥ टेर॥
आप साँवरिया सब रे मन में बिराजो-२।
हो आप जीत्यां ने म्हे तो हारिया रे॥ टेर॥

(२६६)

हो हो मैं तो गिरिधर के रंग राती रे, मैं तो मोहन के रंग राती रे
सांवरा ओ सांवरा........हो हो ....॥ टेर॥
पचरंग चोला पहन सखीरी झुरमुट खेलन जाती रे जाती
झुरमुट में मोहि मिलियोसांवरो, खोल मिली मन गाती रे गाती॥ १॥
और सखी मद पी-पी माती, मैं बिन पिये रहु माती रे माती
मैं रस पीऊ प्रेम भट्टी को, छकी रहूँ दिन राती रे राती॥ २॥
कोई के पिया परदेश बसत है लिख-लिख भेजत पाती रे पाती
मेरे पिया मेरे घट में बिराजे बात करू दिन राती रे राती॥ ३॥
सुरत निरत का दिवला सँ जोऊँ, मनसा की करलू बाती रे बाती
अगम घाणी से तेल कढ़ाऊँ, बाल रही दिन राती रे राती॥ ४॥
पीहर रहु ना सासरे मैं, प्रभु से सैन लगाती रे लगाती
मीरा कह प्रभु गिरिधर नागर, शरण रहु दिन राती रे राती॥

(२६७)

लोरी लालनै देसों। लोरी पोढो लोरी लालने देस्यो भोले श्यामने देस्या मदनगोपालने देस्या गिरधर लालने देस्या लक्ष्मीनाथने देस्या भोले श्यामने देस्या॥ टेर॥ चंदनका पावडिया घडिया ऊपर मीनाकारी लालरे ऊपर मीनाकारी हेआवेलो म्हारो रंग रंगीलो माताने बलिहारी रे कानुडा सोजा रे॥ लोरी॥ सिर पे सोहे टोपली रे हाथोंमें कडिया लाल रे पांवोंमें घुंघरिया हे रमझम करते आवे लाडलो माताने बलिहारी कानुडा सोजा रहे॥ लोरी॥ धोली घुमर गाय बियाई गाय बियाई गोरी दूध पिलायों गोद खिलायों माताने बलिहारी कानूडा हो हो सांवरा सोजारे॥ लोरी॥ असुर संहारन भक्त ऊबारन खेले बाल मुकुन्दा लाल रे खेले बाल मुकुन्दा लाल रे खेले बाल मुकुन्दा॥ सूरदास बलिहारी रे यशोदा दूर करो दुख भंजा कानूडा हो हो सो जा रे॥ लोरी॥

(२६८) देवउठनी ग्यारस भजन

जागो हर जी द्वारका रणछोड़ ॥ टेर॥

द्वारकामें झालर बाजे
शंखनकी घनघोर जागो.......

मात यशोदा खड़ी पुकारे
जागो नी अंग मरोड़ जागो.......

बहन सोदरा करे आरती
सखिया मंगल गाय जागो.......

रुकमणीजीके रंग चौकमें
झारी छप्पन किरोड़ जागो.......

थे जागो थोरा सेवग जागो

जागे नगर रो लोग जागो.......

सूर कहे लक्ष्मीनाथजी जागो

अरज करूँ कर जोड़ जागो.......

(२६९)

पोढ़ो हरजी द्वारका रणछोड़ ॥ टेर ॥

द्वारका में झालर बाजे द्वारिका में शंख बाजे

शंखन की घनघोर....... थे पोढ़ो हरजी........ ॥

अगर चंदन रो बणियो ढ़ोलियो

रतन जड़ित प्रभु रो बन्यो ढ़ोलियो

बिणियो है रेशम डोर.... थे पोढ़ो हरजी..... ॥

मुखमल रा हरि रे गादी जी तकिया-२

मलमल री मौसोड़...... थे पोढ़ो हरजी...... ॥

रुकमणीजी के रंगमहलमें-२

दीपक लाख करोड़ .... थे पोढ़ो हरजी ॥

रूकमणीजी हरि रा चरण चापे-२

सखियाँ करत किलोल....... थे पोढ़ो हरजी.... ॥

थे पोढ़ो थारा सेवक पोढ़े, थे पोढ़ो थारा भगत पोढ़े,

पोढ़े जगत रा लोग....... थे पोढ़ो हरजी...... ॥

सूर केवे लक्ष्मीनाथ पोढ़ो, सूर केवे दीनानाथ पोढ़ो

अरज करूँ कर जोड़....... पोढ़ो हरिजी...... ॥

(२७०) गोपिकागीत

गोप्य ऊचुः

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः
श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि।
दयित दृश्यतां दिक्षु तावका-
स्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते॥ १॥

गोपियाँ विरहावेशमें गाने लगीं—'प्यारे! तुम्हारे जन्मके कारण वैकुण्ठ आदि लोकोंसे भी व्रजकी महिमा बढ़ गयी है। तभी तो सौन्दर्य और मृदुलताकी देवी लक्ष्मीजी अपना निवासस्थान वैकुण्ठ छोड़कर यहाँ नित्य-निरन्तर निवास करने लगी हैं, इसकी सेवा करने लगी हैं। परन्तु प्रियतम! देखो तुम्हारी गोपियाँ जिन्होंने तुम्हारे चरणोंमें ही अपने प्राण समर्पित कर रखे हैं, वन-वनमें भटककर तुम्हें ढूँढ़ रही हैं॥ १॥

शरदुदाशये साधुजातसत्
सरसिजोदरश्रीमुषा दृशा।
सुरतनाथ तेऽशुल्कदासिका
वरद निघ्नतो नेह किं वधः॥ २॥

हमारे प्रेमपूर्ण हृदयके स्वामी! हम तुम्हारी बिना मोलकी दासी हैं। तुम शरत्कालीन जलाशयमें सुन्दर-से-सुन्दर सरसिजकी कर्णिकाके सौन्दर्यको चुरानेवाले नेत्रोंसे हमें घायल कर चुके हो। हमारे मनोरथ पूर्ण करनेवाले प्राणेश्वर! क्या नेत्रोंसे मारना वध नहीं है? अस्त्रोंसे हत्या करना ही वध है?॥ २॥

विषजलाप्ययाद् व्यालराक्षसाद्
वर्षमारुताद् वैद्युतानलात्।
वृषमयात्मजाद् विश्वतोभया-
दृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः॥ ३॥

पुरुषशिरोमणे! यमुनाजीके विषैले जलसे होनेवाली मृत्यु, अजगरके रूपमें खानेवाले अघासुर, इन्द्रकी वर्षा, आँधी, बिजली, दावानल, वृषभासुर और व्योमासुर आदिसे एवं भिन्न-भिन्न अवसरोंपर सब प्रकारके भयोंसे तुमने बार-बार हमलोगोंकी रक्षा की है॥ ३॥

न खलु गोपिकानन्दनो भवा-
नखिलदेहिनामन्तरात्मदृक्।
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये
सख उदेयिवान् सात्वतां कुले॥ ४॥

तुम केवल यशोदानन्दन ही नहीं हो; समस्त शरीरधारियोंके हृदयमें रहनेवाले उनके साक्षी हो, अन्तर्यामी हो। सखे! ब्रह्माजीकी प्रार्थनासे विश्वकी रक्षा करनेके लिये तुम यदुवंशमें अवतीर्ण हुए हो॥ ४॥

विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते
चरणमीयुषां संसृतेर्भयात्।
करसरोरुहं कान्त कामदं
शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम्॥ ५॥

अपने प्रेमियोंकी अभिलाषा पूर्ण करनेवालोंमें अग्रगण्य यदुवंशशिरोमणे! जो लोग जन्म-मृत्युरूप संसारके चक्करसे डरकर तुम्हारे चरणोंकी शरण ग्रहण करते हैं, उन्हें तुम्हारे करकमल अपनी छत्र-छायामें लेकर अभय कर देते हैं। हमारे प्रियतम! सबकी लालसा-अभिलाषाओंको पूर्ण करनेवाला वही करकमल, जिससे तुमने लक्ष्मीजीका हाथ पकड़ा है, हमारे सिरपर रख दो॥ ५॥

व्रजजनार्तिहन् वीर योषितां
निजजनस्मयध्वंसनस्मित ।
भज सखे भवत्किंकरीः स्म नो
जलरुहाननं चारु दर्शय॥ ६॥

व्रजवासियोंके दुःख दूर करनेवाले वीरशिरोमणि श्यामसुन्दर! तुम्हारी मन्द-मन्द मुसकानकी एक उज्ज्वल रेखा ही तुम्हारे प्रेमीजनोंके सारे मान-मदको चूर-चूर कर देनेके लिये पर्याप्त है। हमारे प्यारे सखा! हमसे रूठो मत, प्रेम करो। हम तो तुम्हारी दासी हैं, तुम्हारे चरणोंपर निछावर हैं। हम अबलाओंको अपना वह परम सुन्दर साँवला-साँवला मुखकमल दिखलाओ॥ ६॥

प्रणतदेहिनां पापकर्शनं
तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम्।
फणिफणार्पितं ते पदाम्बुजं
कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम्॥ ७॥

तुम्हारे चरणकमल शरणागत प्राणियोंके सारे पापोंको नष्ट कर देते हैं। वे समस्त सौन्दर्य, माधुर्यकी खान हैं और स्वयं लक्ष्मीजी उनकी सेवा करती रहती हैं। तुम उन्हीं चरणोंसे हमारे बछड़ोंके पीछे-पीछे चलते हो और हमारे लिये उन्हें साँपके फणोंतकपर रखनेमें भी तुमने संकोच नहीं किया। हमारा हृदय तुम्हारी विरहव्यथाकी आगसे जल रहा है तुम्हारी मिलनकी आकांक्षा हमें सता रही है। तुम अपने वे ही चरण हमारे वक्षःस्थलपर रखकर हमारे हृदयकी ज्वालाको शान्त कर दो॥ ७॥

मधुरया गिरा वल्गुवाक्यया
बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण।
विधिकरीरिमा वीर मुह्यती-
रधरसीधुनाऽऽप्याययस्व नः॥ ८॥

कमलनयन! तुम्हारी वाणी कितनी मधुर है! उसका एक-एक पद, एक-एक शब्द, एक-एक अक्षर मधुरातिमधुर है। बड़े-बड़े विद्वान् उसमें रम जाते हैं। उसपर अपना सर्वस्व निछावर कर देते हैं। तुम्हारी उसी वाणीका रसास्वादन करके तुम्हारी आज्ञाकारिणी दासी गोपियाँ मोहित हो रही हैं। दानवीर! अब तुम अपना दिव्य अमृतसे भी मधुर अधर-रस पिलाकर हमें जीवन-दान दो, छका दो॥ ८॥

तव कथामृतं तप्तजीवनं
कविभिरीडितं कल्मषापहम्।
श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं
भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः॥ ९॥

प्रभो! तुम्हारी लीलाकथा भी अमृतस्वरूप है। विरहसे सताये हुए लोगोंके लिये तो वह जीवन सर्वस्व ही है। बड़े-बड़े ज्ञानी महात्माओं—भक्त कवियोंने उसका गान किया है, वह सारे पाप-ताप तो मिटाती ही है, साथ ही श्रवणमात्रसे परम मंगल—परम कल्याणका दान भी करती है। वह परम सुन्दर, परम मधुर और बहुत विस्तृत भी है। जो तुम्हारी उस लीला-कथाका गान करते हैं, वास्तवमें भूलोकमें वे ही सबसे बड़े दाता हैं॥ ९॥

प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं
विहरणं च ते ध्यानमङ्गलम्।
रहसि संविदो या हृदिस्पृशः
कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि॥ १०॥

प्यारे! एक दिन वह था, जब तुम्हारी प्रेमभरी हँसी और चितवन तथा तुम्हारी तरह-तरहकी क्रीडाओंका ध्यान करके हम आनन्दमें मग्न हो जाया करती थीं। उनका ध्यान भी परम

मंगलदायक है, उसके बाद तुम मिले। तुमने एकान्तमें हृदयस्पर्शी ठिठोलियाँ कीं, प्रेमकी बातें कहीं। हमारे कपटी मित्र! अब वे सब बातें याद आकर हमारे मनको क्षुब्ध किये देती हैं॥ १०॥

चलसि यद् व्रजाच्चारयन् पशून्
नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम्।
शिलतृणांकुरैः सीदतीति नः
कलिलतां मनः कान्त गच्छति॥ ११॥

हमारे प्यारे स्वामी! तुम्हारे चरण कमलसे भी सुकोमल और सुन्दर हैं। जब तुम गौओंको चरानेके लिये व्रजसे निकलते हो तब यह सोचकर कि तुम्हारे वे युगल चरण कंकड़, तिनके और कुश-काँटे गड़ जानेसे कष्ट पाते होंगे, हमारा मन बेचैन हो जाता है। हमें बड़ा दुःख होता है॥ ११॥

दिनपरिक्षये नीलकुन्तलै-
र्वनरुहाननं बिभ्रदावृतम्।
घनरजस्वलं दर्शयन् मुहु-
र्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि॥ १२॥

दिन ढलनेपर जब तुम वनसे घर लौटते हो, तो हम देखती हैं कि तुम्हारे मुखकमलपर नीली-नीली अलकें लटक रही हैं और गौओंके खुरसे उड़-उड़कर घनी धूल पड़ी हुई है। हमारे वीर प्रियतम! तुम अपना वह सौन्दर्य हमें दिखा-दिखाकर हमारे हृदयमें मिलनकी आकांक्षा—प्रेम उत्पन्न करते हो॥ १२॥

प्रणतकामदं पद्मजार्चितं
धरणिमण्डनं ध्येयमापदि।
चरणपंकजं शन्तमं च ते
रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन्॥ १३॥

प्रियतम! एकमात्र तुम्हीं हमारे सारे दुःखोंको मिटानेवाले हो। तुम्हारे चरणकमल शरणागत भक्तोंकी समस्त अभिलाषाओंको पूर्ण करनेवाले हैं। स्वयं लक्ष्मीजी उनकी सेवा करती हैं और पृथ्वीके तो वे भूषण ही हैं। आपत्तिके समय एकमात्र उन्हींका चिन्तन करना उचित है, जिससे सारी आपत्तियाँ कट जाती हैं। कुंजविहारी! तुम अपने वे परम कल्याणस्वरूप चरणकमल हमारे वक्षः-स्थलपर रखकर हृदयकी व्यथा शान्त कर दो॥ १३॥

सुरतवर्धनं शोकनाशनं
स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम्।
इतररागविस्मारणं नृणां
वितर वीर नस्तेऽधरामृतम्॥ १४॥

वीरशिरोमणे! तुम्हारा अधरामृत मिलनके सुखको—आकांक्षाको बढ़ानेवाला है। वह विरहजन्य समस्त शोक-सन्तापको नष्ट कर देता है। यह गानेवाली बाँसुरी भलीभाँति उसे चूमती रहती है। जिन्होंने एक बार उसे पी लिया, उन लोगोंको फिर दूसरों और दूसरोंकी आसक्तियोंका स्मरण भी नहीं होता। हमारे वीर! अपना वही अधरामृत हमें वितरण करो, पिलाओ॥ १४॥

अटति यद् भवानह्नि काननं
त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम्।
कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते
जड उदीक्षतां पक्ष्मकृद् दृशाम्॥ १५॥

प्यारे! दिनके समय जब तुम वनमें विहार करनेके लिये चले जाते हो, तब तुम्हें देखे बिना हमारे लिये एक-एक क्षण युगके समान हो जाता है और जब तुम सन्ध्याके समय लौटते

हो तथा घुँघराली अलकोंसे युक्त तुम्हारा परम सुन्दर मुखारविन्द हम देखती हैं, उस समय पलकोंका गिरना हमारे लिये भार हो जाता है और ऐसा जान पड़ता है कि इन नेत्रोंकी पलकोंको बनानेवाला विधाता मूर्ख है॥ १५॥

पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवा-
नतिविलङ्घ्य तेऽन्त्यच्युतागताः।
गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः
कितव योषितः कस्त्यजेन्निशि॥ १६॥

प्यारे श्यामसुन्दर! हम अपने पति-पुत्र, भाई-बन्धु और कुल-परिवारका त्यागकर, उनकी इच्छा और आज्ञाओंका उल्लंघन करके तुम्हारे पास आयी हैं। हम तुम्हारी एक-एक चाल जानती हैं, संकेत समझती हैं और तुम्हारे मधुर गानकी गति समझकर, उसीसे मोहित होकर यहाँ आयी हैं। कपटी! इस प्रकार रात्रिके समय आयी हुई युवतियोंको तुम्हारे सिवा और कौन छोड़ सकता है॥ १६॥

रहसि संविदं हृच्छयोदयं
प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम्।
बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते
मुहुरतिस्पृहा मुह्यते मनः॥ १७॥

प्यारे! एकान्तमें तुम मिलनकी आकांक्षा, प्रेम-भावको जगानेवाली बातें करते थे। ठिठोली करके हमें छेड़ते थे। तुम प्रेमभरी चितवनसे हमारी ओर देखकर मुसकरा देते थे और हम देखती थीं तुम्हारा वह विशाल वक्षःस्थल, जिसपर लक्ष्मीजी नित्य-निरन्तर निवास करती हैं। तबसे अबतक निरन्तर हमारी लालसा बढ़ती ही जा रही है और हमारा मन अधिकाधिक मुग्ध

होता जा रहा है॥ १७॥

व्रजवनौकसां व्यक्तिरङ्ग ते
वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमङ्गलम्।
त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां
स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम्॥ १८॥

प्यारे! तुम्हारी यह अभिव्यक्ति व्रज-वनवासियोंके सम्पूर्ण दुःख-तापको नष्ट करनेवाली और विश्वका पूर्ण मंगल करनेके लिये है। हमारा हृदय तुम्हारे प्रति लालसासे भर रहा है। कुछ थोड़ी-सी ऐसी ओषधि दो, जो तुम्हारे निजजनोंके हृदयरोगको सर्वथा निर्मूल कर दे॥ १८॥

यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु
भीताः शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु।
तेनाटवीमटसि तद् व्यथते न किंस्वित्
कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः॥ १९॥

तुम्हारे चरण कमलसे भी सुकुमार हैं। उन्हें हम अपने कठोर स्तनोंपर भी डरते-डरते बहुत धीरेसे रखती हैं कि कहीं उन्हें चोट न लग जाय। उन्हीं चरणोंसे तुम रात्रिके समय घोर जंगलमें छिपे-छिपे भटक रहे हो! क्या कंकड़, पत्थर आदिकी चोट लगनेसे उनमें पीड़ा नहीं होती? हमें तो इसकी सम्भावनामात्रसे ही चक्कर आ रहा है। हम अचेत होती जा रही हैं। श्रीकृष्ण! श्यामसुन्दर! प्राणनाथ! हमारा जीवन तुम्हारे लिये है, हम तुम्हारे लिये जी रही हैं, हम तुम्हारी हैं॥ १९॥

झूलेके भजन

(२७१)

आवो आवो नी राधा संग श्याम, झूलाउँ, थाने झूलन में॥ टेक॥
आवो आवो नी सांवरिया घनश्याम, झुलाउँ थाने झूलन में,
आवो-आवो कुंज बिहारी कुंज सजाऊँ
राधा जी निकुंज माही झूला बंधाऊं।
कुंज निकुंज सजाय, झूलाउँ थाने झूलन में॥ १॥
आवो-आवो रास बिहारी रूप संजाउँ,
राधा जी रे सोलहों शृङ्गार धराउं।
अंग-अंग रूप सजाय, झूलाउं थाने झूलन में॥ २॥
आवो-आवो प्रीयतम थारा नयन सजाउं
राधा जी रे नयनों में काजलियों लगाउं
नजर थांरी उतराय, झूलाउं थाने झूलन में॥ ३॥
आवो-आवो राधा मोहन झूले में झूलाउं,
नयना में बसाउं, थारे वारि वारि जाउं।
मन रे हिंडोले में बिठाय, झुलाउं थाने झूलन में॥ ४॥
आवो-आवो प्रीतम झूले में झूलाउं,
राधा जी री प्रीतरा गीत सुनाउं,
गिरधर गीत सुनाउ झूलाऊँ थाने झूलन में॥ ५॥

(२७२)

कन्हैया हिण्डो घाल्यो रे हरिहर बाग में, बाग में, बाग में।
आई-आई रे सावणिया री तीज॥ टेर॥
कन्हैया सावण सुरंगो प्यारो मास रे।
चमके चमके रे आभा में बीज॥ टेर॥

कन्हैया रिमझिम बरसे रे प्यारो मेहड़ो।
म्हारी तारा छाई चूनड़ जावे भीज॥ टेर॥
कन्हैया संग की सहेल्यां जोवे बाट रे।
बांकी सासू और जिठाण्या जावे खीज॥ टेर॥
कन्हैया राधा दिवानी थाँरा नाम की।
वाँकी कँचन जैसी काया जावे छीज॥ टेर॥
कन्हैया 'मित्र मण्डल' की या विनती।
थे भोळोड़ा भक्तां पर जावो रीझ॥ टेर॥

(२७३)

घनश्याम थारी झूलन छबि पर वारी, म्हारा श्याम॥ टेक॥
वृन्दावन की कुंजमें, झोटा दें ब्रजवाम।
झूला डार कंदम की, शोभा बनी रसाल।
गोपाल थारी चलगत पर बलिहारी, म्हारा श्याम॥ १॥
दादुर मोर सुहावना, कोयल कूक सुहाय।
बंशी मधुर बजावता, मोहि सकल ब्रजनार।
मनमोहन थारो झूलो प्यारो लागे म्हारा श्याम॥ २॥
जोड़ी राधाकृष्णन की, उपमा कहीं न जाय।
मुखड़ो पूनम चन्द्रमा मन्द मंद मुसकाय।
लटपटिया थारी जोड़ी, लागे प्यारी म्हारा श्याम॥ ३॥
राधा मोहन साथ में झूले प्रेम बढ़ाय।
उर आनंद मनावती, प्रीत रूप सरमाय।
लटपटिया थारी सत्य चरण बलिहारी, म्हारा श्याम॥ ४॥

(२७४)

चालो ऐ सखियाँ चालां, माधव वन के मांई ओ राज।
कन्हैया हिण्डोलो घाल्या, राधा झुलन आई ओ राज॥ १॥
चंदन की पटड़ी घड़ाई, रेशम डोर बंटाई ओ राज।
कदम की डाली झुलो घाल्यो, फूलां से सजायो ओ राज॥ २॥
राधाजी झूलन लागी, झोंटा देवे गिरधारी ओ राज।
ऐसा झोंटा दिया श्याम ने, राधाजी थर-थर कांपी ओ राज॥ ३॥
श्री श्याम ने बंशी बजाई, राग मल्हार सुनाई ओ राज।
काली तो बदली आई, घटा छाई मतवाली ओ राज॥ ४॥
रिमझिम-२ बरसण लाग्यो, पवन चले पुरवाई ओ राज।
सखियाँ सब गावण लागी, गावै राग मल्हार ओ राज॥ ५॥
राधा कृष्णजी झुलन लाग्या, माधव बन के मांई ओ राज।
सुन्दर जोड़ी देख-देख कर, देवां फूल बरसाया ओ राज॥ ६॥
'भक्त मण्डल' हिण्डोलो गायो, सुन्दर दरश दिखाओ राज।
'दीनदयाल' थारी शरण में आयो, दुखड़ो दूर भगावोजी राज॥ ७॥

(२७५)

जरा चलके वृन्दावन देखो, श्याम बंशी बजाते मिलेंगे।
संग झूल रही होगी राधारानी, श्याम झूला झुलाते मिलेंगे॥ १॥
जरा चलके वृन्दावन..........
जहां बाँके बिहारी की झाँकी, टेढ़ी चितवन अनोखी बाँकी।
वो तो पहने पीताम्बर पीला, वो तो माखन चुराते मिलेंगे॥ २॥
जरा चलके वृन्दावन..........
जहाँ आये थे राधा के प्यारे, करते भक्तों को यूँ थे इशारे।

कृष्ण नाम से चितवन को धो लो, वो तो बाँहें पसारे मिलेंगे॥ ३॥
जरा चलके वृन्दावन..........

जहाँ आयी मीरा दीवानी, श्याम सुन्दर के मन की थी रानी।
बोली राणा से मुझको न रोको, श्याम सुन्दर हमारे मिलेंगे॥ ४॥
जरा चलके वृन्दावन..........

कर दो नैया को उनके हवाले, वो डुबोये या हम को संभाले।
उन्हें अपना बना के तो देखो, बन के केवट वो आते मिलेंगे॥ ५॥
जरा चलके वृन्दावन..........

जरा चलके वृन्दावन देखो, श्याम रंग उड़ाते मिलेंगे।
संग खेल रही होगी राधारानी, श्याम रंग लगाते मिलेंगे॥ ६॥
जरा चलके वृन्दावन..........

(२७६)

झूला झुलावो कान्हा बाग में (कोई) आई आई सावण बहार।
वारी जाऊँ साँवरिया, झिरमिर बरसे काना मेवडो।
(कोई) चाले चाले ठण्डी रे फँवार, वारी जाऊँ साँवरिया॥ टेर॥

ठण्डी ठण्डी हवा चले, बागन में हरियाली है।
डार डार रेशम झूला, लचक रही सब डारी है।
भीज रह्यो रे म्हारो लहरियों (कोई) भीजे भीजे म्हारो रे सिंगार॥ १॥

खनक खनक कंगना बोले मेघन झड़ी लगाई है।
मस्ती मस्ती मदमाती सखियाँ मिलजुल आई है।
धड़क धड़क जियो डोलता (कोई) आनन्द बढ्यो अपार॥ २॥

शुक पिक चातक कोयलियां मधुर मधुर गुंजार करे।
मन्द मन्द मुस्कान भरी, हुलस हुलस मन मोद भरे।
'मित्रमण्डल' की बिनती, (थांका) चरणां पर बलिहारी॥ ३॥

(२७७)

झूलत राधा प्यारी जी, संग गोवरधन गिरधारी जी।
रतन जड़ित को बन्यो हिंडोरो, रेशम डोरी डारी जी॥ १॥
सावन मास सुहावन आयो, रिमझिम बरसे वारी जी॥ २॥
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल कदम की डारी जी॥ ३॥
ललिता विशाखा सखियाँ झुलावे, गावत गीत मल्हारी जी॥ ४॥
भाँति भाँति के फूल खिले हैं, आवत महक अपारी जी॥ ५॥
नभ से देव सुमन बरसावे, बोले जय जयकारी जी॥ ६॥
भोली गोपी बलि बलि जावे, रसिकन की फुलवारी जी॥ ७॥

(२७८)

झूले में सज रहे हैं, श्रीवृन्दावन बिहारी।
और संग में सज रही हैं, वृषभानु की दुलारी॥ टेर॥
फूलों का सोहे झूला, फूलों की सेज प्यारी।
उसपे बिराजे आकर, राधारमण बिहारी॥ १॥
श्रृंगार तेरा प्यारे, शोभा कहूँ क्या उसकी।
इसपे गुलाबी पटका, उसपे लहरिया साड़ी॥ २॥
उज्ज्वल किरण सी राधा, नीलम में सोहें मोहन।
इत नन्द का है छोरा, उत भानु की दुलारी॥ ३॥
टेढ़ी-सी तेरी चितवन, हर इक अदा है बाँकी।
बाँके के बाँके नयना, मारे जिगर कटारी॥ ४॥
चुन-चुन के कलियाँ जिसने, झूला तेरा बनाया।
उन हाथों पे मैं सदके, उन हाथों पे मैं वारी॥ ५॥

(२७९) [तर्ज : उड़ उड़रे म्हारा]

झूलो रे म्हारा प्यारा साँवरा, थानै झुलावै राधा प्यारी ॥ टेर ॥
रिमझिम-रिमझिम बदरी बरसे, रेशम चीर सुरंगो सरसे।
मन में लगन लगी भारी, थाने झुलावे राधा प्यारी ॥ झूलो.... ॥
सावन मास सुहानो आयो, चाव चौगुणो मन हरषायो,
झूम चली ब्रज की नारी, थाने झुलावैं राधा प्यारी ॥ झूलो.... ॥
थारो पीताम्बर उड़-उड़ जावै, म्हारा मन में प्रीत जगावै,
सखियाँ हँस देवे तारी, थाने झुलावे राधा प्यारी ॥ झूलो.... ॥
वन-वन पंछी करत कोलाहल, 'सत्य' शरण मैं, थे प्रतिपालक।
चरण कमल की बलिहारी ॥ झूलो.... ॥

(२८०)

झूलने में झूले नन्दलाल झुलाओ री सखी झूले में ॥ टेर ॥
झूलना झूलाओ, मंगल भी गावो, देकर के तनमन की ताल।
झूलाओ री ....
चन्दन का पलना, नीलम सा ललना, झिलमिल है रत्नों की माल,
झूलाओ री ....
श्यामल है सूरत, मोहन है मूरत, ललना के नयना विशाल,
झूलाओ री ....
कोमल अधर है, मुखड़ा मधुर है, फूलों से प्यारे प्यारे गाल,
झूलाओ री ....
घुँघराली अलकें, सीपी सी पलकें, पूनम के चन्दा सा भाल,
झूलाओ री ....
माखन से कोमल, झरने से चंचल, ललना रसीले रसाल,
झूलाओ री ....

मैया झूलाये, बाबा झूलाएँ, देख देख छवि को निहाल,
झूलाओ री ....
जो जग को डुलाते, ये उनको झूलाते, गोकुल के गोपी-गोपाल
झूलाओ री ....

(२८१) [तर्ज : ये तो आरोगो नी मदन गोपाल]

झूलो झूलोजी वृषभानु दुलारी, झुलावे थाने गिरधारी॥ टेक॥
साँवन की ऋतु आई साँवरा, मन में उमंग अपार।
तीज रमण चाली बृजवनिता, कर सोलह शृङ्गार।
आई आई है सावणियों री तीज॥ १॥ झुलावे थाने॥
मणि कंचन के खंभ बन्यो है, मोतिन झूमक लाए।
नन्ही नन्ही बूंद परत है उपर, श्याम घटा मन भाए।
राधा झूले है झुलावे चितचोर॥ २॥ झुलावे थाने॥
मोर मुकुट केसरिया सोहे, तिलक विराजे भाल।
राधा के सिर चुनर सोहे, किंकिणी शब्द रसाल।
हिल मिल झोटा दे विशाखा ललिता री॥ ३॥ झुलावे॥
बरसत सुमन गगन से सुर मुनि देखि देखि हरषाए।
झूलन छबि पर वारि गए सब आनंद मंगल गाए।
मन भावन सावन सुखकारी॥ ४॥ झुलावै प्यारे॥

(२८२)

राधा धीरे झूलो चूंदड़ी सरक जावेली।
थारे नथियाँ की पतियाँ बिखर जावेली॥
थारे मोतियन की लुमाझूमा टुट जावेली॥ राधे धीरे०॥
झूलो डाल्यो कदम की डाल उसमें झूले कृष्ण मुरार।
थाके श्रीकृष्णजी की नजर लग जावेली॥ राधे धीरे०॥
बादल उडे पवन की ओट उसमें नाचे दादर मोर।
थाका गोरा सा मुखड़ा पर मिट्टी छाय जावेली॥ राधे धीरे०॥

राधा झूलण ने मत जाय बठै सासरिया का लोग।
थाका झूला की बदनामी सारे होय जावेली॥ राधे धीरे०॥
कहे सब सखियाँ बृजबाम, राधे केणो म्हारो मान।
श्रीकृष्ण की बाँसुरिया थाने मोह लेवेली॥ राधे धीरे०॥

(२८३)

रिमझिम रिमझिम बरखा बरसे, ओ मेरे मन बसिया।
आई तीज मेरे रसिया, सावन की॥ टेर॥
झूले पड़ गये कदम्ब की डाली, गीत गाये कोयलिया प्यारी।
ग्वाल बाल सब मन हरषावें, मुस्काई हैं सखियाँ।
आई तीज मेरे रसिया, सावन की॥ टेर॥
झूला झूले आज हम संग में, भीग जायें प्रेम के रंग में।
हिलमिल के सब झूला झूलें, आज कदम की छैयां॥
आई तीज मेरे रसिया, सावन की॥ टेर॥
प्यारी लागे साँवल गौर जौरी, सारी सखियाँ मगन हो बोली।
युँ लागे ज्यों बादल के बिच, चमके है बिजुरियां॥
आई तीज मेरे रसिया, सावन की॥ टेर॥
दोऊ गावे है राग मल्हारी, ऐसी जोड़ी पे जाऊँ बलिहारी।
'मित्रमण्डल' को घायल कर गई, मनमोहन की अंखियां॥
आई तीज मेरे रसिया, सावन की॥ टेर॥

(२८४)

श्याम श्यामा की झूलन अति प्यारी है,
प्रिया प्रीतम की झूलन अति प्यारी है।
झूलन पे बलिहारी है॥ श्याम श्यामा०॥

मोर मुकुट माथे, गले में बैजन्ती माल
है कर में मुरली लिये,
माथे पर तिलक विशाल और है घुंघराले बाल
कानों में कुण्डल झलके
सुन्दर नयन विशाल, मुस्कान अति प्यारी है।
मुस्कान पे बलिहारी है॥ श्याम श्यामा०॥
केशों के समूहों में, श्रीजी के इत्र लगे,
माथे पर बिंदिया चमके
कानों में झूमके हैं, कर कमलों में श्रीजी के
है कंगन गजब लगे
इस झूलन की छबि पर जीवन तन, मन, धन वारी है
झूलन पे बलिहारी है॥ श्याम श्यामा०॥
हृदय का बना पालना, नैनों की लागी डोर
झूलत हैं युगलकिशोर
श्रीराधाजी की कृपा, श्रीहरिजी की कृपा
छाई है कृपा चहुँ ओर
शरणागति ही सार शरणागति सुखकारी है
झूलन पे बलिहारी है॥ श्याम श्यामा०॥

(२८५)

श्याम म्हाने वृन्दावन ले चालो,
गिरधारी म्हाने कुंजनवन ले चालो॥ टेर॥
रिमझिम रिमझिम मेघा बरसे,
आँगण होय रह्यो आलो-२

भीजे राधाजी री सुरंग चुनडिया-२
भीजेजी राज रो दुशालो॥ श्याम म्हाने॥
चम्पा री डाल कदम्ब केरी छैया-२
डोल हिंडोलो घाल्यो
राधा रुकमण दोनों जी हिंडे-२
दे दे पग रो मचोलो॥ श्याम म्हाने॥
इसड़ो हिंडोलो म्हारे दाय नहीं आवे
हिवड़े हिंडोलो घालो-२
एक हिन्डोलो तो दूजो मचोलो-२
तीजे में पार उतारो॥ श्याम म्हाने॥
इसड़ी चाल म्हारे दाय नहीं आवे
धीमा-धीमा चालो-२
म्हें तो राज रे लारे लारे चाला-२
पाँव में पड़ गयो छालो॥ श्याम म्हाने॥
बादल गरजे बिजली चमके
महलाँ में डरे राधा प्यारी-२
आवो-२ श्याम आवो गिरधारी-२
आय म्हाने हिवड़े लगालो॥ श्याम म्हाने॥
कनक कटोरो इमरत भरियों तो
हाथ लियो भर प्यालो-२
हेलो मारु तो लाज आवत है-२
दे दे हाथ रो तालो॥ श्याम म्हाने॥

होलीके भजन और धमाल

(२८६)

अ र र र ...... लारो छोड़ दे, साँवरिया
थारे पाये लागु रे के .....लारो छोड़ दे......।
मैं जल जमना भरणे जाऊ, लारे लारे आवे रे,
लुक-छिप आय मटकी फोड़ी, एड़ो नागो रे ..
लारो छोड़ दे॥
दही बेचण मैं जाऊँ रे वृन्दावन, ओ काई लारे लाग्यो रे
कंकड़ मार मटकी फोड़ी, कर दिया बागो रे ....
लारो छोड़ दे॥
दही ढोल माखण खा जावे, और मचावे हाँको रे,
ग्वालों री टोली में अपणो राखे ठागो रे ....
लारो छोड़ दे॥
जाय कहुँ मैं नन्दराणी ने, जायो पूत संवायो रे
थारे लाल ने तू समझा दे, लागे दागो रे.......
लारो छोड़ दे॥
दास भक्त युँ कहे रे ग्वालिन, भाग तिहारो जागो रे,
तीन लोक रा नाथ श्याम ने, मत कर आगो रे.......
लारो छोड़ दे॥

(२८७)

आज बिरज में होरी रे रसिया
होरी नहीं बरजोरी रे रसिया॥ आज॥
चोवा-चोवा चन्दन और अरगजा,
केसर मृगमद घोरी रे रसिया॥ आज॥

कौन गांव के कुंवर कन्हाई,
कौन गांव राधा गोरी रे रसिया॥ आज॥
नंद गांव के कुंवर कन्हाई,
बरसाने की राधा गोरी रे रसिया॥ आज॥
कौन के हाथ कनक पिचकारी,
कौन के हाथ कमोरी रे रसिया॥ आज॥
श्याम के हाथ कनक पिचकारी,
राधा के हाथ कमोरी रे रसिया॥ आज॥
पाँच बरस के कुंवर कन्हैया,
सात बरस राधा गोरी रे रसिया॥ आज॥
राधे पे श्याम बहुत रंग डार्‌यो,
श्याम पे राधे गोरी रे रसिया॥ आज॥
अपने अपने भवन ते निकसी,
कोई श्यामल कोई गोरी रे रसिया॥ आज॥
कै मन लाल गुलाल मंगाई,
कै मन केशर घोरी रे रसिया॥ आज॥
सौ मन लाल गुलाल उड़ाई,
दस मन केशर घोरी रे रसिया॥ आज॥
उड़त गुलाल लाल भये बांदर,
केशर कीच मच्योरी रे रसिया॥ आज॥
चन्द्र सखी भज बालकृष्ण छबि,
चिरंजीव रहो यह जोरी रे रसिया॥ आज॥

(२८८)

आया होली का त्यौहार, उड़े रंगों की फुहार।
आज तो रंगीले दोइ लाल हैं॥ टेर॥
दोई माथे पै सोहे मुकटिया, जिनमें हीरा रे मोती जड़िया।
गल फूलन के हार, प्यारो प्यारो सिंगार॥ आया० ॥
उमड़ी ग्वालों की संग में टोली सखियाँ बोलत है रस की बोली।
हिलमिल नाचे दै दै ताल गालन मलते गुलाल॥ आया० ॥
बाजे ढोलक झाँझ मँजीरा, मिल गावत है आज कबीरा।
ऐसी छाइ है गुलाल धरती, अम्बर हो गये लाल॥ आया० ॥
नन्द अँगना में फाग रच्यो है कूँकू केसर को कीच मचो है।
ठाडे नर नारी है द्वार करते जय जयकार॥ आया० ॥
'मित्रमण्डल' बिरज की होरी, मन मोहे युगल की जोरी।
मैं तो जाऊँ बलिहार कौन पावे याको पार॥ आया० ॥

(२८९)

उठ मिलन भरत भैया हर आयो रे उठ मिलन!
हर आयो रे किसन आयो रे उठ मिलन—हो॥ १ ॥
रामजी आया आया लक्ष्मण जी आया रे।
सीता रे माता ने संग ले आया रे उठ मिलन॥ २ ॥
भुजा रे पसार मिल्या रे दोनूं भाई रे।
नयना रो नीर छलक आयोरी, उठ मिलन॥ ३ ॥
कहो रे भाईड़ा थे तो बन-खंड री बांता हो।
कैसी-कैसी विपदा भुगत आया रे, उठ मिलन॥ ४ ॥
पान ही खाता भैया पान ही बिछाता रे।
ऐसी-ऐसी विपदा भुगत आया रे, उठ मिलन॥ ५ ॥

(२९०)

उड़ती कुरजलीयां संदेशो म्हारो लेती जाइजे रे।
उड़ती कुरजलीयां॥ टेर॥
एक तो संदेशो म्हारो रणक भंवर ने दीजो रे।
रणक भंवर रा गजानन्द जी आया रहिजो रे॥ टेर॥
एक तो संदेशो म्हारे सालासर में दीजो रे।
सालासर रा हनुमान जी आया रहिजो रे॥ टेर॥
एक तो संदेशो म्हारे देशनोक में दीजो रे।
देशनोक रा करणी माता आया रहिजो रे॥ टेर॥
एक तो संदेशो म्हारे रामदेवरा में दीजो रे।
रूणीचे रा रामदेवजी आया रहिजो रे॥ टेर॥
एक तो संदेशो म्हारे (अपने) शहर में दीजो रे।
(अपने इष्ट देवताका नाम) आया रहिजो रे॥ टेर॥
उड़ती कुरजलीयां॥ टेर॥

(२९१)

ओढ़ चुनड़ मैं तो गई रे सत्संग में।
सांवरियों रंगाई म्हानै गैरा गैरा रंग में॥ टेर॥
सोच रही मन में समझ रही मन में।
थारौ म्हारौ ब्याव हुवैलौ सत्संग में॥ १॥
संत की संगत म्हारा गरूसा पधार्‌या।
सुन सुन ज्ञान, हुयी जी मगन मैं॥ २॥
संत की संगत म्हारा रामजी पधार्‌या।
कर कर दर्शन हुयी जी मगन मैं॥ ३॥
संत की संगत म्हारी सहेलियां भी आई।
तो गाय गाय हरिगुण हुयी जी मगन मैं॥ ४॥

संत की संगत मांय अमृत बरसै।
तो पीव पीव प्याला हुयी जी जगन मैं॥ ५॥
सत री संगत में ज्योति जलत हैं।
कर-कर दर्शन, हुयी जी मगन मैं॥ ६॥

(२९२)

ओ तीखा नैणावाली श्याम ने रिझायजे रे.........
तीखा नैणा वाली...... ॥
तीखे-तीखे नैणा में झीणो-झीणो कजरो
हाँ ऐ राधे, नैणा सु नैण मिलाइजे रे.......
तीखा नैणा वाली...... ॥
गोरी-गोरी बहियाँ में हरी-हरी चूड़ीयाँ
हाँ ऐ राधे, श्याम मिलण न जाइजे रे ....
तीखा नैणा वाली...... ॥
गोरी-गोरी हथलियाँ में रच रही मेहन्दी
हाँ ऐ राधे, झालो दे दे श्याम ने बुलाइजे रे.....
तीखा नैणा वाली...... ॥
गोरे-गोरे पगल्यां में बज रही पायल
हाँ ऐ राधे, नाच नाच हरि ने रिझाइजे रे ......
तीखा नैणा वाली...... ॥
चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छवि
हाँ ऐ राधे, हिवड़ा सु मनड़ो मिलाइजे रे ....
तीखा नैणा वाली...... ॥

(२९३)

कठे सु आयो कन्हैयो कठे सु राधे गोरी।
कठे सु आई रे........आ सखिया री टोली॥ टेर॥
ओ खेले लालो होली खेलावे राधे गोरी।
ओ नन्दजी को छैल छबीलो खेले म्हासु होली॥
ओ खेले लालो०
गोकुल सु आयो कन्हैयो, बरसाने सुं राधे गोरी।
डीठोडा रे आई रे.....सखियो री टोली॥
ओ खेले लालो०
कठे सुं आई गुलाल कठे सु आई केसर कोरी।
कठे सु आई रे.....आ रंग री पिचकारी॥
ओ खेले लालो०
बरसाने सु आई गुलाल कश्मीर सु केशर कोरी।
वृन्दावन सुं आई रे........आ रंग री पिचकारी॥
ओ खेले लालो०
बाजे ताल मृदंग.....अनहद रे शहनाई।
अरे साँवरिये की बंशी..बाजे सारे ब्रज रे मांही॥
ओ खेले लालो०

(२९४)

कान्हा फाग रमण ने आइजो, कान्हा फाग रमण ने आइजो।
म्हारे मनड़े री आस पुराईजोजी॥ कान्हा०॥
कान्हा थे आया मे हरख्या थाने फाग रमन्ता ने परख्याजी।
थाने होली खेलता ने परख्याजी, कान्हा फाग रमण ने आइजो॥
थारे कमर पीताम्बर सोहे, थारे मुख पर मुरली मोहे।
थारी छमछम पायल बाजे रे॥ कान्हा०॥

थारे माथे मुकुट बिराजै, कानों में कुण्डल साजे।
हाथों रा कंगन मोहित रे॥ कान्हा० ॥
थे निपट अनाडी कान्हा....लागो राधा के संग बाना।
थाने सखिया दे रही ताना रे॥ कान्हा० ॥
कान्हा रंग रा माट भराईजो, रंग रसिया फाग खेलाईजी।
म्हासु होली खेलण ने आईजोजी॥ कान्हा० ॥
कान्हा मारे रंग पिचकारी.....म्हारी कमर पे जद थो मारी।
म्हारी भीजे रेशम साडी रे॥ कान्हा० ॥
कान्हा मुरली थारी बाजे, कान्हा सखिया सारी नाचे।
बंशी की तान सुनाईजोजी॥ कान्हा० ॥
थारा चन्द्रसखी गुण गावे, थारा भक्त सभी गुण गावे।
सखिया संग फाग खेलाईजोजी॥ कान्हा० ॥

(२९५)

कान्हा होरी में मरोरी भुज मोरी मैं खेलूं कैसे होरी रे
घर से चली तो मेरी बाजी पायलिया
बाजी पायलिया तो बोली ननदिया
कहां जाओ री भौजाई, चोरी-चोरी
मैं खेलूं कैसे होरी रे०
होरी के खेल में रंगो है मेरो मनवा
धरती तो कहां रंग डारूं गगनवा,
श्याम पावैं तो लगाऊं रंग रोरी,
मैं खेलूं कैसे होरी रे०
भरी है ढीठ सखी नंद को लंगर वा,
काले कलुटवा को लागे है डरवा,

खेलूं कारे से रहूं ना कभी गौरी,
मैं खेलूं कैसे होरी रे०

भोरी हूँ 'मूल चंद', तो भी सोचूं हित कूं,
चित चोर नाम कहीं ले चोर चित्त कूं,
बर जोरी पे करे क्या कमजोरी,
मैं खेलूं कैसे होरी रे०

(२९६)

कीर्तन मैं उडे गुलाल, सखी री कीर्तन में।
होली खेल रहे नन्दलाल, सखी री कीर्तन में॥ टेर॥
भर भर झोली केसर रोली, तैयार खड़ी भगतो की टोली।
कितना लाल गुलाल उड़ाया, नर नारी भर-भर के झोली॥
अरे मिल रहे बाँहा घाल॥ सखी री कीर्तन०॥
भगत जनों की पकड़ कलैया, नाच रहे हैं कृष्ण कन्हैया।
भवसागर से तारने वाले, बंशी बजईया नाग नथैया॥
देख रे देख रे हुआ कमाल॥ सखी री कीर्तन०॥
साज सुरीले भजन रसीले, छम-छम नाचै छैल छबीले।
भांत-भांत के रंग उड़ाये, लाल हरे और नीले-पीले॥
मिल-मिल के बैरागी सुरताल॥ सखी री कीर्तन०॥

(२९७)

कोनी मान रे यशोदा थांरो नन्द लालो रे
कोनी मान ऐ०

घर का तो छोड़ो यो कानो माखन मिश्री।
गुजरी की राबड़ी लागे री प्यारी॥
कोनी मान ऐ०

1793 Bhajan Sudha_Sections_9_12_Front

घर का तो छोड़ायों कानो महल मालिया।
गुजरी री झोपड़ी लागे रे प्यारी रे॥
कोनी मान ऐ०
घर का तो छोड़या कानो सीरख पथरणा।
गुजरी की गुदड़ी लागे है प्यारी॥
कोनी मान ऐ०
गोकुल छाड़यो कानो वृंदावन छाड़यो रे।
बरसाणे की गुजरी ने करली राजी रे॥
कोनी मान ऐ०
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवी।
हरि चरणों में म्हारे चित छे रे॥
कोनी मान ऐ०

(२९८)

खेलोजी खेलो घनश्याम मों संग होली खेलो॥ टेर॥
भवन हमारे आवो, सखां ने संग में लावो
फिर देखो होली का कमाल.... मो संग होली खेलो॥
पावों को पीछे धरना, ऐसी ना हरकत करना
देखी चतुराई तेरी श्याम......॥ टेर॥
अबीर गुलाल मेली, केशर ने कुमकुम घोली,
ले लो पिकचारी तोरे हाथ .... मो संग॥ टेर॥
सबसे तुम जीते बिहारी, पर खबर है आज तिहारी,
महिमा सुनी व्रजमां ..... मो संग॥ टेर॥
जीती है राधे प्यारी हारे है कृष्णमुरारी,
दास भगत बलिहारी ..... मो संग॥ टेर॥

(२९९)

गोपालनाथ म्हे तो थारे बृज वृंदावन आयो हो।
वासुदेवजी रा लाल, म्हारा मदन गोपाल, म्हारा नन्दजी रा लाल॥
म्हे तो थांरा दर्शन करवा आयो ओ हरलाल।
गोपालनाथ म्हाने तो एक थांरो ही आसरो॥
ओ म्हारा नन्दजी रा लाल, म्हारा मदन गोपाल।
थे तो म्हाने भूल बिसर मत ज्याजो ओ हरलाल॥
गोपालनाथ सगला न तज शरण तिहारी आयो।
ओ म्हारा नन्दजी रा लाल, म्हारा मदन गोपाल॥
नैया म्हारी भव से पार लगा दो ओ हरलाल।
राधे राणी म्हे ता थारे बृज वृंदावन आयो ओ॥
म्हारी किरत कुमारी वृष भानु दुलार।
म्हेतो थारे बृज वृंदावन आयो मोरी मांय॥
राधे राणी थे तो म्हाने श्याम सुन्दर सूं मिला दो।
ओ म्हारी किरत कुमारी वृष भानु दुलार॥
थे तो म्हाने श्याम सुन्दर सूं मिला दो मोरी मांय।
राधे राणी म्हाने तो थे बृज की रेणु बंणा दो॥
ओ म्हारी किरत कुमारी बृष भानु दुलार।
लता पत्ता की कोई एक डाल बना दो मोरी मांय॥
गोपालनाथ म्हे तो थारे बृज वृंदावन आयो हो॥

(३००)

घनश्याम बुलायै ए राधा तू बेगी आज्या फाग में॥ टेक॥
सरसो फूल रही खेतन में, झुक-झुक झोला खावै।
सांवरिया बाटड़ली जोवे कद म्हारी राधा आवै॥ १॥

बहियां पकड़ गुलाल लगासी, खूब भिजोसी चून्दड़ी।
भीग जाए म्हारी लाल ओढ़नी, मैं नहीं खेलूं होली॥ २॥
राधा थारी यादड़ली म्हाने घड़ी घड़ी सतावे।
बरसाने री लाड़ली तू, बिन खेल्यां क्यूं जावे॥ ३॥
डफ थारो बाजे सांवरिया, कांपे हिबड़ो म्हारी।
जद चालूं जद पायल बाजे, पायलरो झणकारी॥ ४॥
कोरा-कोरा कलस भर्‌या हैं, जिणमें केशर घोली।
थारे बिन सूनी सी लागे, सब सखियां री टोली॥ ५॥
थारे बुलावे आ जाउं पण, सखियां करे ठिठोली।
तू यमुना तट आय मिली जे, धाप खेलस्या होली॥ ६॥

(३०१)

चालो-चालोजी साँवरिया आपाँ खेलाँ होरी।
साथ में सहेल्या आई राधा गोरी॥ टेर॥
फागणियों सुहाणो आयो रंग की बहार।
लाल गुलाब अबीर उड़ायो शोभा बनी अपार।
मैं तो हो गई रे बावरिया, आपां खेलां होरी॥ १॥
श्याम हाथ पिचकारी लीनी, राधा रंग की झोरी।
लपट झपट छिड़कत मुख ऊपर कर कर जोरा जोरी।
पकड़ी-पकड़ी रे कलैया, आपां खेलां होरी॥ २॥
मुस्काई मुख मोड़-मोड़ कर, राधा संग कन्हाई।
मोहन को पीताम्बर लीन्यो, सिर पर चुनरी चढ़ाई।
काली ओढ़ाई कामरिया, आपाँ खेलां होरी॥ ३॥
रंग रंगीलो छैल छबीलो, कैसो है मतवारो।
सुन्दर गोल कपोल श्याम का, लागे प्यारो प्यारो।
मैं तो लागूं जी पाँवरिया, आपाँ खेलां होरी॥ ४॥

(३०२)

तुम झोली भर लो भक्तों रंग और गुलाल से।
होली खेलांगा आपां, गिरधर गोपाल से॥ टेर॥
कोरा कोरा कलश मँगाकर, उसमें रंग घुलवाना।
लाल गुलाबी नीला पीला, केशर रंग मिलवाना।
बच बच के रहना उनकी टेढ़ी मेढ़ी चाल से॥ १॥
लायेंगे वो संग में अपनी, ग्वाल-बाल टोली।
मैं भी रंग अबीर मलूंगी, और माथे पे रोली।
गायेंगे फाग मिलके, झांझ और खड़ताल से॥ २॥
श्याम पिया की बजे बँसुरियाँ ग्वालों के मंजीरे।
चंग बजावे, ललिता नाचे, राधा धीरे-धीरे।
गायेंगे भजन सुहाने हम भी सुरताल से॥ ३॥

(३०३)

नखरालो सांवरिया राधा पर जादू करग्यो।
जादू करग्यो कामण करग्यो टुणा करग्यो रे॥
नखरालो.....
रंग रंगीलो छेलछबीलो मोहन है मतवारो।
सुन्दर गोल कपोल श्याम का लागे प्यारो प्यारो॥
जादूगर सांवरियो...........नखरालो............
ग्वाल बाल सखिया संग सोहे झुण्ड बन्यो है भारी।
एक रूप तो राधा सोहे एक रूप गिरधारी॥
मतवारो ओ मतवारो सावरियो.......नखरालो.....
भीज रही संतरंग चुनडी मोहन को पीताम्बर।
झुमझुमकर मचगी होली लाल होग्यो अम्बर॥
ओ प्यारो सांवरियो.......नखरालो.....

राधा मोहन मोहन राधा जोडी प्यारी प्यारी।
चरणों की चाकर हू थारो सत्यशरण बलिहारी॥
कामण गारो सांवरियो.....नखरालो.....

(३०४)

पगल्यां री पायलड़ी भीज हाथां रो चूड़लो।
कन्हैया यमुना में डर लागे रे, भर लादे घड़लो॥
भर लादे घड़लो रे, उँचादे घड़लो॥ कन्हैया यमुना०॥
देराणी जेठानी म्हारी पिअरीए गई।
तड़के आजा रे नन्दलाल म्हारी सामली पोली॥ टेर॥
सासुजी ने सूजे कोनी नणदुली भोली।
तड़के आजा रे नन्दलाल घालू मीठोड़ो दही॥ टेर॥
पगल्यां री पायलीयां भीजे हाथां रो चुड़लो।
कन्हैया जमुना में डर लागे रे भर लादे घड़लो॥
घड़लो भर दे सिर पर रख दे म्हाने देवो उबार।
कन्हैया डगमग डोले नैया कर दो भव सागर से पार॥
भव सागर से पार॥ कन्हैया यमुना०॥

(३०५)

फाग खेलन बरसाने आये हैं, नटवर नंद किशोर ॥ टेक॥
घेर लई सब गली रंगीली, छाय रही छवि छटा छवीली।
ढफढोल मृदंग बजाये हैं, बंशी की घनघोर॥ १॥
जुर मिल के सब सखियां आई, उमड़ घटा अम्बर में छाई।
जिन अबीर गुलाल उड़ाये है, मारत भर-भर झोर॥ २॥
लै रहे चोट ग्वाल ढालन पे, केशर कीच मलै गालन पे।
हरियल बांस मंगाये है, चलन लगे चहुं ओर॥ ३॥

भई अबीर घोर अंधियारी, दीखत नाहिं कोउ नर अरू नारी।
राधे ने सैन चलाये है, पकड़े माखन चोर॥ ४॥
जो लाला घर जानो चाहे, तो होरी कौ फगुवा लावो।
श्याम ने सखा बुलाये है, बांटत भर-भर झोर॥ ५॥
राधे जू के हा हा खाओ, सब सखियन के घर पहुंचाओ।
घासीराम कथ गाये है, भयो कविता को छोर॥ ६॥

(३०६)

ब्रज में उडे रे गुलाल, होली रो जवाब नहीं॥ जोडी रो०॥
म्हारी राधा नखरे वाली, गैयां वालों रे गोपाल॥ जोडी रो०॥
बरसाने सुं आई रे राधिका, गोकुल सुं आयो गोपाल॥ जोडी रो०॥
सखियो रे संग आई रे राधिका, ग्वालो संग रे गोपाल॥ जोडी रो०॥
होली खेलण आई रे राधिका, धूम मचाये नन्दलाल॥ जोडी रो०॥
पिचकारी भर लाई रे राधिका, रंग डारे रे नन्दलाल॥ जोडी रो०॥
डोली भर के लाई रे राधिका, अंगिया भिगोवे नन्दलाल॥ जोडी रो०॥
म्हारी रे राधिका फुल गुलाबी, श्याम वर्ण नन्दलाल॥ जोडी रो०॥
बदरंग हो गयी सारी रे राधिका, खडो हंसे रे नन्दलाल॥ जोडी रो०॥
भगत मंडल थारा गुण गावे, चरण शरण म्हाने राख॥ जोडी रो०॥

(३०७)

बाबा नन्द के दरबार मची रे होली रे बाबा नन्द के-२
किता मण लाल गुलाल उड़त है-२।
किता मण केशर कस्तुरी रे-२॥
बाबा नन्द.........
नव मण लाल गुलाल उड़त है-२।
दस मण केशर कस्तुरी रे-२॥
बाबा नन्द.........

कितां रे बरसा रो म्हारो कुंवर कन्हैया रे-२।
कितां रे बरसा रो म्हारी राधे गोरी रे-२॥
बाबा नन्द.........

बारह वर्ष रो कुंवर कन्हैयो रे-२।
तेरह बरस री म्हारी राधे गोरी रे-२॥
बाबा नन्द.........

कुण जी रे हाथ में रंग रो कटोरो रे-२।
कुण जी रे हाथ में रंग पिचकारी रे-२॥
बाबा नन्द.........

कानुडे रे हाथ में रंग रो कटोरो रे-२।
राधेजी रे हाथ में रंग पिचकारी रे-२॥
बाबा नन्द.........

भर पिचकारी कान्हो राधाजी पर डारी रे-२।
भीग गई रे चूनर साड़ी रे-२॥
बाबा नन्द.........

(३०८)

भरवा दे रे मदन गोपाल पानीड़ो भरवा दे।
भरवा दे रे नन्दजी रा लाल पानीड़ो भरवा दे॥
तु मत जाणी कान्हा बीना रे नामरी।
म्हारो राधा राणी नाम, पानीड़ो भरवा दे॥
तु मत जाणी कान्हा आई मैं अकेली।
म्हारो सात सहेलीयारो साथ पानीड़ो भरवा दे॥
तु मत जाणी कान्हा अखण्ड कंवारी।
म्हारो श्याम सुन्दर भरतार पानीड़ो भरवा दे॥

सिर पर घड़लो घड़े पर मटकी।
म्हारी पतली कमर लुण जाय पाणीड़ो भरवा दे॥
तु मत जाणी कान्हा बीना गाँव री।
बरसानो म्हारो गाँव, पाणीड़ो भरवा दे॥

(३०९)

भर दे मायरो सांवरिया नानीबाई को रे भरदे मायरो-२
और सगा न सांवरा महल मालीया।
नरसी ले भगत ने टुटोड़ी टपली॥
भर दे मायरो।
और सगा न सांवरा शाल-दुशाला।
नरसी ले भगत ने फाटोडी गुदड़ी रे॥
भर दे मायरो।
और सगा न सांवरा माल-मलीदा।
नरसीले भगत ने सुखेड़ा टुकड़ा रे॥
भर दे मायरो।
केवे नरसीलो सुन रे सांवरिया आणो है तो आज्यारे।
भरी सभा में भुंडा लागा, युं कांई लाज गमावे रे॥
भर दे मायरो।

(३१०)

माखन दुँगी रे साँवरिया थोड़ी बंसरी बजाय।
माखन दुँगी रे.........
ऐसी तो बजाई कान्हा वृंदावन में बाजी रे।
संग की सहेल्या मगन होय जाय॥
माखन दुँगी रे.........

ऐसी तो बजाई कान्हा जमना तट पर बाजी रे।
कोई बहतो नीर तुरंत थम जाय॥
माखन दुँगी रे.........
ऐसी तो बजाई कान्हा मधोवन में बाजी रे।
कोई चरती धेनु मगन होई जाय॥
माखन दुँगी रे.........
चन्द्र सखी भज बालकृष्ण छवि।
मुरली री धुन म्हारे मनड़े ने भाय॥
माखन दुँगी रे.........

(३११)

म्हाने फागणियो रंगा दे, मटकी रंग री भरा दे।
श्याम फाग रमण न आऊँली॥ टेर॥

मोहक मस्त महिनो फागण आयो रे, म्हारे आज आनन्द घणो छायो रे।
म्हारा मनड़ा रा जीवड़ा कद आवोला जी, हो कद आवोला।
थारी साँवरी सूरत मनमोहनी मूरत॥ श्याम फाग...॥
राधा फागणियो लागे, थारो प्यारो जी, म्हारो मनड़ो नहीं थांसु न्यारो जी।
होली खेलण ने मनड़ो तरसे जी (जीव हरसे जी)।
रंग पिचकारी मँगा दूँ, केशर अतर मिला दूँ॥ श्याम फाग...॥
सखी दौड़ दौड़ कर आई रे, झोली अबीर गुलाल भर लाई रे।
दोनों हिलमिल के, होली खेलाँजी रंग खेलाँजी।
कान्हा मानो बात हमारी मैं हाथ जोड़कर हारी॥ श्याम फाग...॥
सखी फाग रमण रो, म्हाने चाव रे, कर आई नणद सूँ होड़ रे।
चाहे मानो न मानो, कान्हा मरजी थारी थाँसू अरजी रे।
थारी बलिहारी, प्रभुजी राखो लाज हमारी॥ श्याम फाग...॥

(३१२)

म्हारी चुनरी बसन्ती रंगा दे म्हारा साँवरिया।
रंगा दे म्हारा साँवरिया, मैं होरी कैंया खेलूँगी॥ टेर॥

राधा—घर स्यूँ चाल कर मधुवन आई।
संग की सहेल्याँ म्हारे सागे ही ल्याई॥
म्हाने रंग का माट भरा दे म्हारा साँवरिया।
भरादे म्हारा साँवरिया॥
मैं होरी कैंया खेलूँगी.....

कृष्ण—फाग खिलाऊँ राधा आनन्दकारी।
साँचो रूप थारी शोभा भारी॥
म्हाने पायलिया की तान सुनादे म्हारी राधा ए।
सुनादे म्हारी राधा ए॥
मैं होरी कैंया खेलूँगी.....

राधा—मैं तो जाणूँ म्हारे सनमुख बोले।
म्हारो हिवड़ो डगमग डोले॥
म्हाने साँवरी सुरतिया दिखादे म्हारा साँवरिया।
दिखादे म्हारा साँवरिया॥
मैं होरी कैंया खेलूँगी.....

कृष्ण—राधा तू म्हारे मन में समाई।
म्हारी खोई दौलत पाई॥
(थारा) हिंवड़ा सूँ परदो हटादे म्हारी राधा ए।
हटादे म्हारी राधा ए॥
मैं होरी कैंया खेलूँगी.....

मान-मान म्हारी बात कन्हाई।
जीव ब्रह्म की जोड़ी बनाई॥

थारे चरण कमल चित्त ल्यादे म्हारा साँवरिया।
ल्यादे म्हारा साँवरिया॥
मैं होरी कैंया खेलूँगी.....

(३१३)

मुरली वाले ने घेर लई अकेली पनियाँ गई,
वंशीवाले ने घेर लई, अकेली पनियाँ गई॥ टेक॥
मैं तो गई थी यमुना तट पे, कान्हो खड़ो थोरी पनघट पे
बड़ी मुझको देर भई, अकेली पनियाँ गई॥ टेक॥
श्याम ने मेरी चुनडी झटकी, सर से गिर गई मेरी मटकी
मेरी बहियाँ मरोड़ दई, अकेली पनियाँ गई॥ टेर॥
बड़ा नटखट है श्याम साँवरिया भिगोई मोरी कोरी चुनड़ियाँ,
मोरी मटकी फोड़ दई, अकेली पनियाँ गई॥ टेक॥
लाख कही पर एक ना मानी, भरने ना देवे मोहे पानी
मारी लाज के मैं मर गई, अकेली पनिया गई॥ टेक॥

(३१४)

रंग में कैसे होली खेलुँगी या साँवरिया के संग।
सावरिये के संग अरे वो गिरधारी के संग॥
रंग में कैसे........
कोरे कोरे कलश मंगाये, केशर घोरो रंग।
और भर पिचकारी मेरे सन्मुख मारी॥
चुनरी हो गई तंग।
रंग में कैसे........
साड़ी सरस सभी मेरो भीज्यो, भीज गयो सब अंग।
और या ब्रजमारको कहाँ भीगाऊ, कारी कामर अंग॥
रंग में कैसे........

तबला बाजे सारंगी बाजे और तो बाजे चंग।
और श्याम सुन्दर की बंशी बाजे, राधेजू के संग॥
रंग में कैसे........

घर घर से ब्रज बनिता आई लियो किशोरी संग।
चन्द्र सखी हँसी यो उठ बोले, लगो श्याम के अंग॥
रंग में कैसे........

(३१५)

रंग डाल गयो री नन्दलाल, राधा जी की चुनड़ पे॥ टेर॥
राधा के संग चन्द्रसखी और सखियाँ नई नवेली।
बरसाने से आई खेलने, वृन्दावन में होली।
कान्हो डाल गयो री गुलाल राधाजी की चुनड़ पे॥ १॥
फागुन की अलमस्त बहारें, वृन्दावन में छाई।
जादू डाल गयो री नन्दलाल, राधाजी की चुनड़ पे॥ २॥
हिल मिल होली खेल रहे, ब्रज के ग्वाल गुजरियाँ।
श्याम के संग में छैल छबीले, नई उमर के रसियाँ।
कान्हो रंग बरसा गयो री, राधाजी की चुनड़ पे॥ ३॥
नन्द के द्वार मची होली है, खेलत सब नर नारी।
वृन्दावन की इस होली पर, जाऊँ मैं बलिहारी।
कान्हो कर गयो देखो री कमाल, राधाजी की चुनड़ पे॥ ४॥
बृज की देखो गली गली में, खूब मची है होली।
रंग गुलाल अबीर से, सबकी भरी है झोली।
कान्हो कर गयो सबने निहाल, राधाजी की चुनड़ पे॥ ५॥

(३१६)

रंग मत डारे रे साँवरिया म्हारो गुजर मारे रे।
रंग मत डारे रे....
मैं गुजरी नादान यो गुजर मतवालो रे।
रंग मत डारे रे.....उई रंग मत डारे रे.....
होली खेलन कान्हा बरसाने में आइजे रे।
राधा और रूकमणी ने साथे लेतो आइजे रे॥
रंग मत डारे रे.....उई रंग मत डारे रे.....
घर मत आइजे कान्हा मेरी सास बुरी है।
नणंदुली नादान मने ताना मारे रे॥
रंग मत डारे रे.....उई रंग मत डारे रे.....
कुण रंग डारियो ओ किसो रंग डारियो।
काले ने कर दियो ओ लाल-गुलाबी रे॥
रंग मत डारे रे.....उई रंग मत डारे रे.....
सास बुरी छे म्हारी नणद हठिली।
परणीया नादान म्हाने मोसा मारे रे॥
रंग मत डारे रे.....उई रंग मत डारे रे.....

(३१७)

राधे रानी की नथ पे मोर, नाचे थई थई॥ टेर॥
लाल रंग लहंगा, सुरंग रंग साड़ी
वा पे गोटे की लग रही कोर॥ १॥
गोरे-गोरे मुखड़े पर लाल-लाल बिंदिया
वा पे गाजर की लग रही कोर॥ २॥
गोरी-गोरी बईयों में हरि हरि चूड़ियां
हाथा मेहन्दी लगी है चितचोर॥ ३॥

कोरे कोरे कलशी में केसर घोरी
होरी है मची है घनघोर ॥ ४ ॥
राधे हमारी भोरी-भारी, छलियां माखन चोर ॥ ५ ॥
राधे हमारी प्राणन प्यारी, नैना चन्द्र चकोर ॥ ६ ॥

(३१८)

लक्ष्मण के बाण लग्यो रे शक्ति रे लक्ष्मण के।
लग्यो रे शक्ति रे पड़यो रे धरती, लक्ष्मण के॥
ऐसो कोई वीर है जो लक्ष्मण ने जीवावे रे।
आधो-आधो राज सवाई धरती रे लक्ष्मण के॥
लक्ष्मण के बाण..........
के तो जीवाव माता सीता सतवन्ती रे।
के ता जीवाव हनुमान जती रे लक्ष्मण के॥
लक्ष्मण के बाण..........
काहे सुं जीवावे माता सीता सत्वन्ती रे।
काहे सुं जीवावे हनुमान जती रे, लक्ष्मण के॥
लक्ष्मण के बाण..........
तप से जीवावे माता सीता सत्वन्ती रे।
जप से जीवावे हनुमान जती रे लक्ष्मण के॥
लक्ष्मण के बाण..........

(३१९)

श्याम म्हारी गलियन आइज्योजी।
आज म्हारी गलियन आइज्योजी।
म्हाने फाग रमण रो कोड, सांवरा बेगा आइज्योजी॥
भर पिचकारी मुख पर मारी।
भीजी रेशम साड़ी, सखी री भीजी रेशम साड़ी।

कहा करू कित जाऊँ सजनी, ऐसा निपट अनाड़ी॥
श्याम म्हारी गलियन........

रंग बसन्ती रूप बसन्ती।
सब शृंगार सजावे, सखी री सब शृंगार सजावे।
फाग राग रंग आनन्दकारी, मृदंग ताल बजावे॥
श्याम म्हारी गलियन........

खेलत फाग परस्पर हिलमिल।
शोभा बरनी न जाये, सखी री शोभा बरनी न जाये।
सत्यदास पर कृपा कीजो, जन्म जनम फल पाये॥
श्याम म्हारी गलियन........

(३२०)

(तर्ज—बाईसारा बीरा जयपुर जाज्योजी)

साँवरिया आपां होली खेलां जी।
फागणियों आय गयो, साँवरिया गिरधारी॥ टेर॥
साँवरिया थाने रंग में रंग देस्यां जी।
थारे भर भर कर मारां, म्हें रंग की पिचकारी॥ १॥
ढ़फली पर थाने, नाच नचास्यां जी।
पग बाँध देवा घुँघरू, साँवरिया गिरधारी॥ २॥
थारी बंशी बाजे, राधिका नाचे रे।
थारा भक्त भी नाचे रे, दे देकर के ताली॥ ३॥
बंशी पर थाने भजन सुणास्यां जी।
"बनवारी" चरणां पर मैं जाऊँ बलिहारी॥ ४॥

(३२१)

[तर्ज—छोटी-छोटी गैया, छोटे-छोटे ग्वाल]

होली खेलण आयो नन्दजी का लाल।
संग में लायो देखो सारा ग्वाल बाल॥
कैसे-कैसे रंग लायो नन्दजी को लाल।
कैसे हो रंग लायो रे गुलाल॥
केसर रंग लायो नन्दजी को लाल।
लाल गुलाबी संग में लायो है गुलाल॥
नाचे सारी सखियाँ नाचे ग्वालबाल।
बीच में नाचे म्हारो मदन गोपाल॥
भर पिचकारी छोड़े नन्दजी को लाल।
राधा को भीग गयो रेशमी रूमाल॥
बिरज में होली खेले नन्दजी को लाल।
होली खेलाके सबने करग्यो निहाल॥

(३२२)

होलिया में उड़े रे गुलाल, होली रो जवाब नहीं।
बिरज में राधा और श्याम, जोड़ी रो जवाब नहीं।
राधा संग खेले घनश्याम, जोड़ी रो जवाब नहीं॥ टेर॥
म्हारी राधा बरसाने वाली, गोकुलवालो नन्दलाल॥ टेर॥
म्हारी राधा छैल छबीली, मतवालो घनश्याम॥ टेर॥
म्हारी राधा रंग रंगीली, श्याम सुन्दर घनश्याम॥ टेर॥
म्हारी राधा चूनड़वाली, पीताम्बर घनश्याम॥ टेर॥
म्हारी राधा नथलीवाली, मोर मुकट वालो श्याम॥ टेर॥
म्हारी राधा बिंदियावाली, तिलकधारी घनश्याम॥ टेर॥

म्हारी राधा पायलवाली, बंशी बजैया घनश्याम॥ टेर॥
म्हारी राधा गोरी-गोरी, सांवरियो नन्दलाल॥ टेर॥
म्हारी राधा भोली-भाली, छलियो है घनश्याम॥ टेर॥
सब सखिया मिल मंगल गावे, दर्शन दो राधेश्याम॥ टेर॥
जोड़ी रो जवाब नहीं।

(३२३)

हाँ रे महीनो फागण रो साँवरिया,
थारी ओलु आवे रे, महिनो फागण रो॥
इत गोकुल, उत मथुरा नगरी
अघबीच फाग रमाई जा रे .....महिनो फागण रो।
तू आईजे रे ग्वाला ने लाइजे
धूम मचाई जारे ....॥ टेर॥
सब सखियाँ थारे संग में लाइजे
हँस-हँस फाग खेलाइजा रे........
तू न आयो तो आण राधाजी री,
आणो पड़सी रे..........॥ टेर॥
लिख-लिख पतिया भेज दई हुँ
बेगो आयो रेइजे रे ......
म्हे जोवुं थरी बाट साँवरिया
बेगो आइजे रे...... ॥ टेर॥

विविध

(३२४)

अब सौंप दिया इस जीवनका, सब भार तुम्हारे हाथोंमें।
है जीत तुम्हारे हाथोंमें, और हार तुम्हारे हाथोंमें॥ ध्रुव॥
मेरा निश्चय बस एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अर्पण कर दूँ दुनिया भरका, सब प्यार तुम्हारे हाथोंमें॥ १ ॥
जो जगमें रहूँ तो ऐसे रहूँ, ज्यों जलमें कमलका फूल रहे।
मेरे सब गुण दोष समर्पित हों, करतार तुम्हारे हाथोंमें॥ २ ॥
यदि मानवका मुझे जन्म मिले, तो तव चरणोंका पुजारी बनूँ।
इस पूजककी इक रग-रगका, हो तार तुम्हारे हाथोंमें॥ ३ ॥
जब-जब संसारका कैदी बनूँ, निष्काम भावसे कर्म करूँ।
फिर अन्त समयमें प्राण तजूँ, निराकार (साकार) तुम्हारे हाथोंमें॥ ४ ॥
मुझमें तुझमें बस भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो।
मैं हूँ संसारके हाथोंमें, संसार तुम्हारे हाथोंमें॥ ५ ॥

(३२५)

अजब रचा है खेल खिलौना माटीका।
भगवान रचाया खेल खिलौना माटीका॥ टेर॥
पिता है ईश्वर प्रकृती माता, जिसमें सब ब्रह्माण्ड समाता।
संस्कार अनमेल॥ १ ॥
संस्कार जीवोंका जैसा, ढाँचा रचा दिया है वैसा।
मानुष जनम दुहेल॥ २ ॥
पाँच तत्त्वका बना खिलौना, शादी कर फिर किया है गौना।
नाकमें पड़ी नकेल॥ ३ ॥
माटीकी गुड़िया सँग आई, खरचा ज्यादा थोड़ी कमाई।
माँगे तेल फुलेल॥ ४ ॥

राम नाम मुखसे नहिं लीना, नारायणका भजन न कीना।
रहा मुसीबत झेल॥ ५ ॥
कंचन जैसी काया तेरी, इक दिन हो माटीकी ढेरी।
करले प्रभुसे मेल॥ ६ ॥

(३२६)

आसरा इस जहाँ का मिले ना मिले।
मुझको तेरा सहारा सदा चाहिये॥
चाँद तारे गगन में दिखे ना दिखे।
मुझको तेरा नजारा सदा चाहिये॥ टेर॥
यहाँ खुशियाँ हैं कम और ज्यादा है गम।
जहाँ देखो वहीं है, भरम ही भरम॥
तेरी महफिल में शमाँ जले ना जले।
मेरे दिल में उजाला तेरा चाहिये॥ टेर॥
कभी बेराग है, कभी अनुराग है।
जहाँ बदले हैं वाणी वही बात है॥
मेरी चाहत की दुनिया बसे ना बसे।
मेरे दिल में बसेरा सदा चाहिये॥ टेर॥
मेरी धीमी है चाल और पथ है विशाल।
हर कदम पर मुसीबत अब तू ही सँभाल॥
पैर मेरे थके हैं, चले ना चले।
मेरे दिल में इशारा तेरा चाहिये॥ टेर॥

(३२७)

आप आये नहीं और सुबह हो गई,
मेरी पूजा की थाली धरी रह गई।
भोग रखा रहा फूल मुरझा गये,

आरती भी धरी की धरी रह गई।
आप आये नहीं ....

हमसे रूठे हो क्यू आप आते नहीं,
मेरा अपराध क्या है बताते नहीं।
दिन होते ही साँसें भी रुकने लगीं
क्या बुलाने में मेरे कमी रह गई
आप आये नहीं ....

ज्ञान भी हो गया, ध्यान भी हो गया,
फिर भी दर्शन की आशा धरी ही रही।
इतना होते हुए भी मैं समझ ना सकी,
कौन सी भावना में कमी रह गई॥
आप आये नहीं ....

दीनबन्धु, दयासिंधु कहलाते हो,
करते दीनों में अब तुम दया क्यों नहीं।
हो तो अनाथों के ही हो नाथ तुम,
क्या लगन में मेरे कोई कमी रह गई।
आप आये नहीं ....

(३२८)

इक इक बार सभी संग बीती,
तुम जानो हमरे संग बीती॥ टेर॥
सूर्य चन्द्रमा रहत गगनमें-२
ग्रहण लगा उनके संग बीती॥ टेर॥
पाँचो पाँडव संग द्रोपदी-२
चीर हरण उनके संग बीती॥ टेर॥

राम लखन और संग जानकी-२
सीता हरण उनहीं संग बीती॥ टेर॥
राजा हरिश्चन्द्र और ताराने-२
पुत्र वियोग उनके संग बीती॥ टेर॥
सूरदास प्रभु एक तुम्हीं हो-२
नैन गये हमरे संग बीती॥ टेर॥

(३२९)

इस योग्य हम कहाँ हैं, भगवन! जो तुम्हें मनायें।
फिर भी मना रहे हैं, शायद तू मान जाये॥ टेर॥
जबसे जन्म लिया है, विषयोंने हमको घेरा।
छल और कपटने डाला, इस भोले मन पे डेरा।
सद्बुद्धिको अहम्ने, हरदम रखा दबाये॥ १ ॥
निश्चय ही हम पतित हैं, लोभी हैं, स्वार्थी हैं।
जब तेरा ध्यान लगायें, माया पुकारती है।
सुख भोगनेकी इच्छा, कभी तृप्त हो न पाये॥ २ ॥
जगमें जहाँ भी देखा, बस एक ही चलन है।
एक दूसरेके सुखमें, खुदको बड़ी जलन है।
कर्मोंका लेखा जोखा, कोई समझ ना पाये॥ ३ ॥
जब कुछ ना कर सके तो, तेरी शरणमें आये।
अपराध मानते हैं, झेलेंगे सब सजायें।
बस दर्श तूँ दिखा दे, कुछ और हम न चाहें॥ ४ ॥

(३३०)

ईश्वरको अपना मान लो, बस हो गया भजन।
दूजा न कोई जान लो, बस हो गया भजन॥ टेर॥
आया कहाँसे, कौन है तूँ, जायगा कहाँ।
इतना ही दिल विचार लो, बस हो गया भजन॥ १ ॥
अनुकूलता प्रतिकूलता, दोनोंमें सम रहो।
मङ्गल विधान मान लो, बस हो गया भजन॥ २ ॥
नेकी सभीके साथमें, जितनी बने करो।
बदनीतिका मत भार लो, बस हो गया भजन॥ ३ ॥
दृष्टीमें तेरे दोष हैं, दुनिया निहारती।
समताका अंजन आँज लो, बस हो गया भजन॥ ४ ॥
तुझको बुरा बुरा कहे कर 'सूर' तूँ क्षमा।
वाणीके स्वर सँभार लो, बस हो गया भजन॥ ५ ॥

(३३१)

उठ उठ रे म्हारा प्यारा रे जीवड़ा।
दो घड़ी प्रभुरो भजन करो-२॥
प्रभु भजना सू मैल धुपे हैं-२।
करमा री खोटे कटे रे जीवड़ा-२॥ दो घड़ी० ॥
प्रभु भजना सू अनुभव होवे-२।
ज्ञानरो दिवलो जले रे जीवड़ा-२॥ दो घड़ी० ॥
प्रभु भजना सू शांति मिले है-२।
प्रभु सू तार जुड़े रे जीवड़ा-२॥ दो घड़ी० ॥
प्रभु भजना सू मुक्ति मिले हैं।
प्रभु सम तूँ बनजा रे जीवड़ा-२॥ दो घड़ी० ॥

प्रभु भजना सू ज्ञान खुले हैं-२।
पद अरिहन्त मिले रे जीवड़ा-२॥ दो घड़ी०॥
प्रभु भजना सू द्वेष मिटे है-२।
राग रो रंग घटे रे जीवड़ा-२॥ दो घड़ी०॥
प्रभु भँजना सू पाप घटे है-२।
पुण्य री रास बढ़े रे जीवड़ा-२॥ दो घड़ी०॥

(३३२)

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है॥ ध्रु०॥
टुक नींदसे अँखिया खोल जरा, और अपने रबसे ध्यान लगा।
यह प्रीति करनकी रीत नहीं, सब जागत हैं तू सोवत है॥ १ ॥
जो कल करना वो आज कर ले, जो आज करना वो अब कर ले।
जब चिड़ियोंने चुग खेत लिया, तब पछिताये क्या होवत है॥ २ ॥
नादान भुगत अपनी करनी, ऐ पापी! पापमें चैन कहाँ?
जब पापकी गठरी सीस धरी, अब सीस पकड़ क्यों रोवत है॥ ३ ॥

(३३३)

उठ नाम सिमर मत सोय रहो
मन अन्त समय पछतायेगा
जब चिड़ियोंने चुग खेत लिया
फिर हाथ कछु न आयेगा।
हास विलासमें बीती ये उमरिया
बहुत गयी रही थोड़ी उमरिया
जल गया दीपक बुझ गयी बाती
कोई न राह दिखायेगा॥

पाप बोझसे भरली गठरिया
जाना रे तुझको दूर नगरिया
जैसा करेगा वैसा भरेगा
कोई न साथ निभायेगा॥
राम नाम धन भर लो खजाना
रहना नहीं ये देश बेगाना
प्रभुके चाकर होके रहियो
भव सागर तर जायेगा॥

(३३४)

उड़ जायगा रे हंस अकेला, दिन दोयका दर्शन-मेला॥टेर॥
राजा भी जायगा, जोगी भी जायगा, गुरु भी जायगा चेला॥ १ ॥
माता-पिता भाई-बन्धु भी जायेंगे, और रुपयोंका थैला॥ २ ॥
तन भी जायगा, मन भी जायगा, तू क्यों भया है गैला॥ ३ ॥
तू भी जायगा, तेरा भी जायगा, यह सब मायाका खेला॥ ४ ॥
कोड़ी रे कोड़ी माया जोड़ी, संग चलेगा न अधेला॥ ५ ॥
साथी रे साथी तेरे पार उतर गये, तू क्यों रहा अकेला॥ ६ ॥
राम-नाम निष्काम रटो, नर, बीती जात है बेला॥ ७ ॥

(३३५)

ऐ मालिक तेरे बन्दे हम, ऐसे हों हमारे कर्म
नेकी पर चलें और बदीसे टलें, ताकि हँसते हुए निकले दम
॥ ऐ मालिक० ॥
बड़ा कमजोर है आदमी, अभी लाखों हैं इसमें कमी
पर तूँ जो खड़ा, है दयालु बड़ा तेरी कृपासे धरती थमी

दिया तूँ ने हमें जब जन्म, तूँ ही ले लेगा हम सबका गम
नेकी पर चलें और बदीसे टलें ताकि हँसते हुए निकले दम
॥ ऐ मालिक० ॥
ये अँधेरा घना छा रहा, तेरा इन्सान घबरा रहा
हो रहा बेखबर, कुछ न आता नजर, सुखका सूरज छिपा जा रहा
है तेरी रोशनी में जो दम, जो अमावस को कर दे पूनम
नेकी पर चलें और बदीसे टलें ताकि हँसते हुए निकले दम
॥ ऐ मालिक० ॥
जब जुल्मका हो सामना, तब तूही हमें थामना
वो बुराई करें, हम भलाई करें, नहीं बदलेकी हो कामना
बढ़ उठे प्यारका हर कदम, और मिटे बैरका ये भरम
नेकी पर चलें और बदीसे टलें ताकि हँसते हुए निकले दम
॥ ऐ मालिक० ॥

(३३६)

कभी प्यासेको पानी पिलाया नहीं।
बाद अमृत पिलानेसे क्या फायदा ॥ टेर ॥
कभी गिरते हुए को उठाया नहीं।
बाद आँसू बहानेसे क्या फायदा ॥ टेर ॥
मैं मन्दिर गया पूजा आरती की,
पूजा करते हुए यह खयाल आ गया,
कभी माँ-बापकी सेवा की ही नहीं,
फिर पूजा करनेसे क्या फायदा ॥ १ ॥
गंगा नहाने मैं हरिद्वार काशी गया,
गंगा नहाते हुए यह खयाल आ गया,

तनको धोया मगर मनको धोया नहीं,
फिर गंगा नहानेसे क्या फायदा॥ २॥
मैंने दान दिया, मैंने जप तप किया,
दान करते हुए ये ख्याल आ गया,
कभी भूखेको भोजन कराया नहीं,
दान लाखों का करनेसे क्या फायदा॥ ३॥
मैं तो सत्संग गया गुरुवाणी सुनी,
गुरुवाणी को सुनकर ख्याल आ गया।
दीन दुःखियोंकी सेवा तो की ही नहीं,
ऐसे मानुष जन्मसे क्या फायदा॥ ४॥

(३३७)

कछु नहीं मेरा जगत्‌में कछु न मुझको चाहिये।
मैं उसीका वे हमारे, फिर कहो क्या चाहिये॥ टेर॥
मैं तो उनका था सदासे, भूल थी वह मिट गई।
सुरति परगट हो गई अब, क्या रहा जो चाहिये॥ १॥
कछु भी बाकी न रहा अब, प्राप्त करनेके लिये।
समझना करना रहा नहिं, मिट गया सब चाहिये॥ २॥
सुगम सहजहि श्रेष्ठ निरमल, सार गीता सास्त्रका।
सुलभ अति सबके लिये, उपलब्ध करना चाहिये॥ ३॥
शरन प्रभुके हो गये वे, भक्त जीवन मुक्त हैं।
उन महापुरुषोंका दरशन, संग करना चाहिये॥ ४॥

(३३८)

कबीरा जब हम पैदा हुए जग हँसा हम रोये।
ऐसी करनी कर चलो हम हँसें जग रोये॥

चदरिया झीनी रे झीनी
झीनी रे झीनी झीनी झीनी
राम नाम रस भीनी चदरिया
झीनी रे झीनी·······

अष्ट कमलका चरखा बनाया
पाँच तत्त्वकी पूनी
नौ-दस मास बुननको लागे
मूरख मैली कीनी चदरिया
झीनी रे झीनी·······

जब मोरी चादर बन घर आई
रंगरेजको दीनी
ऐसा रंग रंगा रंगरेजने
कि लालो लाल कर दीनी चदरिया·······

चादर ओढ़ शंका मत करियो
ये दो दिन तुमको दीनी
मूरख लोग भेद नहीं जाने
दिन दिन मैली कीनी
चदरिया झीनी रे झीनी·······

ध्रुव प्रह्लाद सुदामाने ओढ़ी
शुकदेवने निर्मल कीनी
दास कबीरने ऐसी ओढ़ी
ज्यूँ की त्यूँ धर दीनी
चदरिया झीनी रे झीनी·······

(३३९)

कहो कैसे तुम्हारी बन जाऊ रसिया।
बन जाऊ रसिया, मेरे मन वसिया॥ टेर॥
मेरी भिलनी जैसी प्रीत नहीं।
तेरी प्रीत की जानू रीत नहीं।
फिर कैसे मैं बेर खिलाऊँ रसिया, कहो....॥
मेरा मीरा जैसा प्यार नहीं।
तेरे प्यारका जानू सार नहीं।
फिर कैसे मैं दर्शन पाऊँ रसिया, कहो....॥
मेरी द्रौपदी जैसी श्रद्धा नहीं।
मेरा प्रेम न वैसा बरखा नहीं।
फिर भरी सभामें कैसे बुलाऊँ रसिया, कहो....॥
मेरा सुदामा जैसा प्रेम नहीं।
तेरे प्रेमका जाना नेम नहीं।
फिर कैसे मैं कन्द खिलाऊँ रसिया, कहो....॥
अपनी बीती आप बताओ॥
अपने मिलनकी राह बताओ॥
फिर रज-रजमें दर्शन पाऊँ रसिया, कहो....॥

(३४०)

करता रहूँ गुणगान, मुझे दो ऐसा वरदान।
तेरा नाम ही लेते-लेते ओऽऽ इस तनसे निकले प्राण॥
तेरी दयासे ए मनमोहन, मैंने ये नरतन पाया।
तेरी सेवामें बाधायें, डाले जगकी मोह माया।
फिर भी अरज करता हूँ-२, हो सके तो देना ध्यान॥

राधा मीरा नरसी जैसी, दुःख सहनेकी शक्ति दो।
विचलित न हूँ पथसे, ऐसी मुझको भक्ति दो।
तेरी ही सेवामें हो-२, इस जीवनकी शाम॥
क्या मालूम कब कौन किस घड़ी तेरा बुलावा आ जाये।
मेरे मनकी इच्छा, मेरे मनमें ही रह जाये।
मेरी इच्छा पूरी करना-२, मेरे मनमोहन घनश्याम॥

(३४१)

क्या तन माँजता रे, एक दिन माटीमें मिल जाना॥ टेर॥
माटी ओढ़न माटी बिछावन, माटी का सिरहाना,
माटीका कलबूत बन्या है, जिसमें भँवर लुभाना॥ १ ॥
मात-पिताका कहना मानो, हरिसे ध्यान लगाना,
सत्य वचन और रही दीनता, सबको सुख पहुँचाना॥ २ ॥
एक दिन दूल्हा बन्या बराती, बाजे ढोल निशाना,
एक दिन जाय जंगलमें डेरा, कर सीधा पग जाना॥ ३ ॥
हरिकी भक्ति कबहुँ नहीं भूलो, जो चाहो कल्याना,
सबके स्वामी पालन करता, उनका हुकुम बजाना॥ ४ ॥

(३४२)

क्या लेके आया बन्दे, क्या ले के जायेगा।
दो दिन की जिन्दगी है, दो दिनका मेला॥ टेर॥
इस जगत सराये में, मुसाफिर रहना दो दिनका।
क्यो बिरथा करे गुमान, मुर्ख इस धन और यौवनका।
नहीं है भरोसा पल का, गफलत में खोया रे-२
दो दिन की........॥
ना छेड़ सका कोई यह, माया गिनी गिनाई है;
वे गढ़ कोठा की नींव, छोड़ गया चिणी-चिणाई है

गिनी और चिणाई से, चला संग नहीं धेला रे-२
दो दिन की........॥
इस काया का है भाग्य, भाग्य बिन पाया नहीं जाता,
अरे बिना नसीब लिखे तोड़ फल खाया नहीं जाता।
अपनी-अपनी करनी का, फल वैसा ही पायेगा रे-२
दो दिन की........॥
यह चोला मनुष्य तन का, हर बार नहीं मिलता,
जो टूट गया, डाली से फिर वो फूल नहीं खिलता,
आके शरण में प्रभु के, नाम भजन कर ले रे।
दो दिन की........॥

(३४३)

क्या पता फिर कभी, ये सफर पायेगा
नाम ले ले प्रभु का, तू तर जायेगा॥
राह में अगर तुम्हारे, जो काँटे मिले,
नाम लेके प्रभु का बढ़ाना कदम,
तेरी मंजिल ये आसान हो जायेगी,
राह से तूँ न अपने, हटाना कदम।
देख जीवन ये तेरा सुधर जायेगा .... नाम ले ले॥ १॥
झूठी माया है, जिसको तूँ अपना कहे,
एक पल में सभी छूट जाये यहाँ,
पाप और पुण्य, जीवन में जो तूँ करे,
साथ तेरे वही एक जाये वहाँ।
झूठा सपना ये तेरा बिखर जाएगा .... नाम ले ले॥ २॥

तेरे जीवन की, घड़ियाँ, ये अनमोल हैं,
झूठे विषयों में पड़कर, गँवाना न तूँ,
'संत जन' कहे, सत्य की राह चल,
पथ अहिंसा का, मन से भुलाना न तूँ।
एक दिन तो, प्रभु की, डगर पायेगा ··· नाम ले ले॥ ३॥

(३४४)

किसीके काम जो आये उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये उसे इन्सान कहते हैं॥
कभी धनवान है कितना कभी इन्सान है निर्धन।
कभी सुख है कभी दुःख है इसीका नाम जीवन है।
जो मुश्किलमें न घबराये उसे इन्सान कहते हैं॥
यह दुनिया एक उलझन है कहीं धोखा कहीं ठोकर।
कोई हँस-हँसके जीता है, कोई जीता है रो रो कर।
जो गिरकर फिर सँभल जाये उसे इन्सान कहते हैं॥
अगर गलती रुलाती है तो राह भी दिखाती है।
बशर गलतीका पुतला है यह अक्सर हो ही जाती है।
जो गलती करके पछताये उसे इन्सान कहते हैं॥
अकेले ही जो खा-खाकर सदा गुजरान करते हैं।
जो बन्दा बाँटकर खाये उसे इन्सान कहते हैं॥

(३४५)

कुण जाणे आ माया रे राम री अजब निराली है।
ओ त्रिलोकी रो नाथ जाटके बन गयो हाली रे॥
सो बीघा को खेत जाट के राम भरोसे खेती रे।
आधे मांही गेहूँ चना आधे में धाणा मेथी रे॥

1783 Bhajan Sudha_Section_10_1_Back

बिना बाड़ रो खेत जाट के राम रुखाली रे।
त्रिलोकी रो नाथ० ॥ टेर ॥

जाट जाटनी सुख से सोवे, सोवे छोरा छोरी रे।
सांवरिये रे पहरे ऊपर, कियां होसी चोरी रे॥
नित का चोर लगावे चक्कर, जावे खाली रे।
त्रिलोकी रो नाथ० ॥ टेर ॥

बाजरे री रोटी खावे ऊपर घी को लचको रे।
पालक री तरकारी खावे भर मूले रो बटको रे॥
छाछ राबड़ी रो करे कलेवो भर भर थाली रे।
त्रिलोकी रो नाथ० ॥ टेर ॥

भूरो सांड चिमकणो जाट के, दोय गाया दोय बछड़ा रे।
बिना बाड़ रो बाड़ो जा में बाँधे न्यारा-न्यारा रे॥
आवे चोर जद ऊभो दीखे, काढ़े गाली रे।
त्रिलोकी रो नाथ० ॥ टेर ॥

(३४६)

कैसे बैठ्यो रे आलसमें, तो से राम कह्यो ना जाय।
राम कह्यो ना जाय, तो पै कृष्ण कह्यो ना जाय॥ १ ॥
भोर भयो मल-मल मुख धोयो, दिन चढ़ते ही उदर टटोयो;
बातन-बातन सब दिन खोयो, साँझ भई पलगाँ पर सोयो।
सोवत-सोवत उमर बीत गई, काल शीश मँडराय॥ कैसे० ॥ २ ॥
लख चौरासीमें भरमायो, बड़े भाग नर देह तू पायो;
अबकी चूक न जाना भाई, लुटने पावै नहीं कमाई।
'राधेश्याम' समय फिर ऐसो, बार-बार नहिं आय॥ कैसे० ॥ ३ ॥

(३४७)

घणा दिन सोय लियो रे, अब तू जाग मुसाफिर जाग॥
पहला सूतो मात गर्भ में, उल्टो दियो लटकाय।
हाथ जोड़कर बाहर निकल्यो, प्रभु ने दियो बिसराय॥
घणा दिन सोय०
दूजो सूतो मात गोद में, हँस-हँस दंत दिखाय।
बहन भुवाजी गोद खिलावे, गावे मंगलाचार॥
घणा दिन सोय०
तीजो सूतो त्रिया सेज में, मन में बहुत उछाव।
त्रिया चरित रो जाल बिछो है, हरि ने दियो बिसराय॥
घणा दिन सोय०
चौथो सूतो श्मशाना में, लम्बा पैर पसार।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, दीन्ही आग लगाय॥
घणा दिन सोय०

(३४८)

चार दिनों का जीना रे वन्दे गया वक्त नहीं आयेगा
सुमिरण कर ले तू प्रभु का भव सागर तर जायेगा
चार दिनों का जीना ....
ये तन है माटी का नश्वर, माटी में मिल जायेगा,
मुट्ठी बाँधे आया था तू हाथ पसार के जायेगा।
धन-दौलत से भरा खजाना पड़ा यहीं रह जायेगा,
चार दिनों का जीना ....
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला, कोई न साथ निभायेगा
मोह माया के जाल में फँसकर अन्त काल पछतायेगा,

जैसा कर्म किया है तुमने वैसा ही फल पायेगा।
चार दिनों का जीना ....

भौतिक सुख और रिश्ते झूठे, पल में सब मिट जायेगा,
सुख में सुमिरण जो तू करेगा, दुःख काहे को आयेगा।
चिन्तन कर ले इन बातों का जन्म सफल हो जायेगा,
चार दिनों का जीना ....

मानव जन्म हैं पाया तुमने, बार-बार नहीं पायेगा,
तेरा मेरा छोड़ दे इक दिन, हंसा तो उड़ जायेगा।
रह जायेगी पाप की दौलत, पुण्य करम संग जायेगा,
चार दिनों का जीना ....

(३४९)

चरन-कमल बंदौं हरि राइ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधेको सब कछु दरसाइ॥
बहिरौ सुनै गूँग पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराइ।
सूरदास स्वामी करुनामय, बार बार बंदौं तिहिं पाइ॥

(३५०)

चलो मन गंगा-जमुना तीर।
गंगा-जमुना निरमल पाणी सीतल होत सरीर।
बंसी बजावत गावत कान्हों, संग लियाँ बल बीर॥
मोर मुगट पीतांबर सोहै, कुंडल झलकत हीर।
'मीराँ' के प्रभु गिरधर नागर, चरण-कँवलपर सीर॥

(३५१)

चाली म्हारी सूरताँ गिगन मण्डलमें रैण दिवस लिव लागी रे॥ टेर॥

सोवणी शिखरमें चमके बिजली, ज्ञान घटा चढ़ आई रे-२
मधुर-मधुर धुन बोले रे पपईयो, बेरन नींद उड़ाई रे॥
चाली म्हारी............

चित्त रे चौकमें झूलो माण्डयो, झूले तीज सवाई रे-२
पाँच पचीस तीस संग सखियाँ, सुन्दर शोभा छाई रे।
चाली म्हारी............

ओम सोमका लाग्या झकोरा, झूलो चढ़्यो नभ माँही रे-२
मैं डरती म्हारे गुरुजीने पकड़्या, जे छोड़ू गिर जाही रे।
चाली म्हारी............

समतासे हार म्हारे गुरुजी पहरायो, सुगंध भई है जग माँहीं रे-२
प्रेम पुष्प म्हारा प्रभुजीने सोवे, नित चौसर हरियाली रे।
चाली म्हारी............

देवनाथ चैत मासिक मिलिया, मैं उनसे गम पाई रे-२
कहे राजा मान आनन्द माँही रहणो, म्हारे तो सावण सहाई रे।
चाली म्हारी............

(३५२)

छोड़ मन तूँ मेरा-मेरा, अन्तमें कोई नहीं तेरा॥ टेर॥

धन कारण भटक्यो फिर्‌यो, रच्या नित नया ढंग॥
ढूँढ-ढूँढ़कर पाप कमाया, चली न कौड़ी संग।
होय गया मालक बहुतेरा॥ छोड़०॥

टेढी बाँधी पागडी, बण्यो छबीलो छैल।
धरतीपर गिणकर पग मेल्या, मौत निमाणी गैल।
बखेर्‌या हाड हाड तेरा॥ छोड॰ ॥
नित साबुनसैं न्हाइयो, अतर फुलेल लगाय।
सजी-सजाई पूतली तेरी पडी मसाणा जाय।
जलाकर किया भसम-ढेरा॥ छोड॰ ॥
मदमातो, करणो, रह्यो, राख्या राता नैन।
आयानें आदर नहिं दीन्यो, मुख नहिं मीठा बैन।
अन्त जमदूत आय घेरा॥ छोड॰ ॥
पर-धन पर-नारी तकी, परचरचास्यूँ हेत।
पाप-पोट माथेपर मेली, मूरख रह्यो अचेत।
हुआ फिर नरकाँमें डेरा॥ छोड॰ ॥
राम-नाम लीन्हों नहीं, सतसंगस्यूँ नहिं नेह।
जहर पियो, छोड्यो इमरतनै, अंत पडी मुख खेह॥
साँस सब वृथा गया तेरा॥ छोड़॰ ॥
दुरलभ देही खो दई, करम कर्‌या बदकार।
हूँ हूँ करतो ही मर्‌यो तूँ गयो जमारो हार।
पड्यो फिर जनम मरण फेरा॥ छोड॰ ॥
काम क्रोध मद-लोभ तज, कर अंतरमें चेत।
'मैं' 'मेरे' को छोड हदैंसे कर श्रीहरिस्यूँ हेत॥
जनम यूँ सफल होय तेरा॥ छोड॰ ॥

(३५३)

जगमें होनहार बलवान,
इसे कोई मत समझो झूठी ॥ टेर ॥
होनहार बलवान, कैकयी महलोंमें रूठी।
राम गये बनवास, देह नृप दशरथकी छूटी ॥ टेर ॥
होनहार बलवान, एक दिन रावणपर बीती।
दियो विभीषण राज, लंकगढ़ सोनेकी टूटी ॥ टेर ॥
होनहार बलवान, एक दिन अर्जुनपर बीती,
वे ही अर्जुन वे ही बाण, गोपियाँ भीलोंने लूटी ॥ टेर ॥
होनहार बलवान, सभीपर इक इक दिन बीती,
घासीराम चेत मन मूरख, चौरासी छूटी ॥ टेर ॥
जगमें..........

(३५४)

जपो राम-नाम सुखदाई, भजन करो भाई,
यह मेला दो दिनका ॥ टेर ॥
यह तन है जंगलकी लकड़ी, आग लगे जल जाई ॥ १ ॥
यह तन है कागजकी पुड़िया, हवा लगे उड़ जाई ॥ २ ॥
यह तन है फूलोंका बगीचा, धूप पड़े मुरझाई ॥ ३ ॥
यह तन है माटीका ढेला, बूँद पड़े गल जाई ॥ ४ ॥
यह तन है भूतोंकी हवेली, मार पड़े भग जाई ॥ ५ ॥
यह तन है सपनेकी माया, आँख खुले कछु नाहीं ॥ ६ ॥

(३५५)

प्रश्न : जलसे पतला कौन है?
कौन भूमिसे भारी?
कौन अग्निसे तेज है?
कौन काजलसे कारी?

उत्तर : जलसे पतला ज्ञान है,
और पाप भूमिसे भारी।
क्रोध अग्निसे तेज है,
और कलंक काजलसे कारी॥

(३५६)

जगत के रंग क्या देखूँ, तेरा दीदार काफी है।
करूँ मैं प्यार किस-किस से, तेरा दीदार काफी है॥ टेर॥
नहीं चाहिये ये दुनिया के, निराले रंग ढंग मुझको।
निराले रंग ढंग मुझको।
चली जाऊँ मैं वृन्दावन, तेरा दरबार काफी है॥
जगत के रंग०
जगत के साज बाजो से, हुए है कान अब बहरे।
हुए है कान अब बहरे।
कहाँ जाके सुनूँ अनहद, तेरी झंकार काफी है॥
जगत के रंग०
जगत के रिश्तेदारों ने, बिछाया जाल माया का।
बिछाया जाल माया का।
तेरे भक्तों से हो प्रीति, तेरा परिवार काफी है॥
जगत के रंग०

जगत की झूठी रोशनी से, है आँखें भर गई मेरी।
है आँखें भर गई मेरी।
मेरी आँखों में हो हरदम, तेरी चमकार काफी है॥
जगत के रंग०

(३५७)

जीयो रे कबीरा ने राम धुन लागी,
राम धुन लागी हरी री माया लागी,
जीयो रे कबीरा ने राम धुन लागी-२
छाछ री संगतिमें दूध बिगड़िया-२
दूध बिगड़िया तो माखन निवड़िया-२
जीयो रे कबीरा······
पारस री संगतिमें लोहा बिगड़िया-२
लोहा बिगड़िया तो कंचन निवड़िया-२
जीयो रे कबीरा······
हरीजी री संगतिमें कबीरा बिगड़िया-२
कबीरा बिगड़िया तो साहेब निवड़िया-२
जीयो रे कबीरा······

(३५८)

जीव तूं मत करना फिकरी, जीव! तूं मत करना फिकरी!
भाग लिखी सो हुई रहेगी, भली-बुरी सगरी॥ टेर॥
तप करके हिनाकुश आयो, वर पायो जबरी।
लोह लकड़ से मर्‌यो नहीं वो मर्‌यो मौत नखरी॥ १॥
सहस्त्र पुत्र राजा सगर के, तप कीनो अकरी।
थारी गति ने तूं हीं जाने, आग मिली ना लकड़ी॥ २॥

तीन लोक की माता सीता, रावण जाय हरी।
राम लक्ष्मण ने लंका घेरी, लंका गई बिखरी॥ ४ ॥
आठ पहर साहेबको रटना, ना करना जिकरी।
कहत कबीर सुनो भई साधो, रहना बे फिकरी॥ ५ ॥

(३५९)

जीवन का भरोसा नहीं, कब मौत आ जायेगी-२,
काया और माया तेरी-२, तेरे साथ न जायेगी॥ टेर॥
काया पे गुमान न कर, ये तो माटी का खिलौना है-२,
चाहा तेरा होना नहीं, लिखा भाग्य का होना है,
तेरा और मेरा छोड़-२, जीवन ज्योति बुझ जायेगी॥ १ ॥ टेर॥
दौलत पे गुमान न कर, ये तो हाथ का मैला है-२,
राजा है तो रंक कोई, सब किस्मत का खेला है,
झूठी है ये मायानगरी-२, ये तो पल में बदल जायेगी॥ २ ॥
दो दिन का मेला है, सब माया का खेला है-२
जावे नहीं साथ कोई, तुझे जाना अकेला है,
पलक झपकते ही, दुनिया तुझे ठुकरायेगी॥ ३ ॥
रिश्ते पे भरोसा न कर, दुनिया से तूं आशा न कर-२,
तरना है जो भवसागर, प्रभुजी का सुमिरण कर,
भक्ति की शक्ति से, जीवन नैया तिर जायेगी॥ ४ ॥

(३६०)

जब संत मिलन हो जाये, तेरी वाणी हरि गुण गाये।
तब इतना समझ लेना, अब हरि से मिलन होगा॥ टेर॥
नहीं क्रोध किसी पे आये, सबमें तो नजर हरि आये,
तब इतना समझ लेना अब हरि से मिलन होगा॥

आँखों से आँसू आए, दिन रात याद हरि आये,
मुख राधे कृष्णा गाये, तब इतना समझ ....
जब मन निर्मल हो जाये, छल कपट तुझे ना भाये
दरशन को मन ललचाये, तब इतना समझ ....
मन सत्संग में रम जाए, हरपल में आनन्द आये।
कोई और न मन में भाये, तब इतना समझ ....

(३६१)

डस गयो कालो रे कँवर रोहितासने
छाती भर आवे बेटा देख्या थारी लाशने
फूल तोड़नने बेटा गयो रे तूँ बागमें
डस गयो कालो बेटा गोरे-गोरे हाथमें
जुलम कियो रे बेटा इस काले नागने॥ छाती भर आवे.....
बोल तूँ बोल बेटा एक बार बोल रे
माता थारी रोवे बेटा अँखिया तूँ खोल रे
छुप गयो चाँद जैसे अंधियारी रातमें॥ छाती भर आवे.....
लेकर लाश राणी श्मशान आई रे
अपने ही हाथों राणी चिता तो बनाई रे
झर-झर रोवे राणी आँसू भरे आँखमें॥ छाती भर आवे·····
इतनेमें राजा हरिश्चन्द्र आये
पहले तो राणी मेरा कर्जा चुकाये
पीछे जलाना राणी चिता और लाशने॥ छाती भर आवे·····
बोलत राणी सुण मेरे राजा
कुछ भी नहीं है कैसे सुधरेगा काजा
चिताको जला दे राजा कँवर तोरे पासमें॥ छाती भर आवे·····

आधी साड़ीसे राणी कफन बनाया
आधी साड़ीसे राणी कर्जा चुकाया
कर्जा चुकाके राणी फूँक रही लाशने॥ छाती भर आवे·····
फूलोंकी वर्षा गगन बीच बरसे
एक पुत्र बिना जिया मोरा तरसे
कथ गायो नानूराम प्रभु तेरे पासमें॥ छाती भर आवे·····

(३६२)

तुम मेरे जीवनके धन हो और प्राणाधार हो।
एक तुम दाता दयालु सबके पालनहार हो॥
जागते सोते कभी भी मैं तुम्हें भूलूँ नहीं,
भेष दो राजाका मुझको या गले कंठ हार हो।
भर रहा धन-धान्यसे ही सबके तू परिवारको,
देते तुम थकते नहीं हो, ऐसी तुम सरकार हो॥
जप रहे तेरा नाम पंछी, गीत गाती है पवन,
रंग रहे रंगोंसे जगको अजब रचनाकार हो।
जिन्दगीकी नाव मैंने, सौंप दी प्रभु आपको,
तुम डुबाओ या बचाओ मेरे खेवन हार हो॥
तुम मेरे जीवनके धन हो और प्राणाधार हो।
एक तुम दाता दयालु सबके पालनहार हो॥

(३६३)

तूने हीरा सो जनम गवायो, भजन बिना बावरा॥ टेर॥
ना तूँ आयो सन्तां शरणे, ना तूँ हरि गुण गायो।
पचि-पचि मर्‌यो बैल की नाईं, सोय रह्यो रे उठ खायो॥ १ ॥

ओ संसार हाट बनिये की, सब जग सौदे आयो।
चातुर माल चौगुना कीन्हा, मूरख मूल गमायो॥ २ ॥
ओ संसार फूल सेमर को, सूवो देख लुभायो।
मारी चोंच निकल गई रूई, सिर धुन-धुनि पछतायो॥ ३ ॥
ओ संसार माया को लोभी, ममता महल चिनायो।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हाथ कछू नहीं आयो॥ ४ ॥

(३६४)

तू प्यारका सागर है तेरी इक बूँदके प्यासे हम
लौटा जो दिया तूने चले जायँगे जहाँसे हम
तू प्यारका सागर है.......
घायल मनका पागल पंछी उड़नेको बेकरार
पंख है कोमल आँख है धुँधली, जाना है सागर पार
अब तू ही इसे समझा राह भूले थे कहाँसे हम।
तू प्यारका सागर है.......
इधर झूमके गाये जिन्दगी, उधर है मौत खड़ी
कोई क्या जाने कहाँ है सीमा, उलझन आन पड़ी
कानोंमें जरा कह दे कि आये कौन दिशासे हम।
तू प्यारका सागर है.......

(३६५)

तूँ मोह मायाने छोड़, क्रोधने तज रे
थारी उमर बीती जाय रामने भज रे॥ टेक॥
थारी डगमग डोले नाँव, धोलारी रख लाज रे
थारे सिरपर घूमे काल, अनाड़ी चल रे..... ॥ १ ॥
थने आंख्या सु सूझे नाय, कान गया रुक रे
थारे गोडा स्यूं चाल्यो न जाय, कमर गई लुल रे..... ॥ २ ॥

थारो तिरया छोड़यो नेह, गई थारी अद रे
थारा बेटा बोले बोल, मरे लो कद रे…… ॥ ३ ॥
यूँ कहता दास कबीर, टांडो जाय लद रे
थारो लेखो लेसी राम, मरे लो जद रे…… ॥ ४ ॥

(३६६)

तूही तूही याद म्हाने आवे रे दरद में,
आवे रे दरद में, प्यारा आवे रे दरद में ॥ टेर ॥
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीलो, भीड़ पड़या भग जावे रे दर में,
तूही, तूही ....।
सुख सम्पत्ति का सब कोई संगी, दुःख में निकट नहीं आवे रे दरद में।
तूही, तूही ....।
लख चौरासी भटकत-भटकत, भटक-भटक मर जावे रे दरद में ॥
तूही, तूही ....।
थारो भरोसो साँचो रे सावरियाँ हरख हरख गुण गाऊँ रे दर में ॥
तूही, तूही ....।

(३६७)

तेरी बन जैहैं गोविन्द गुन गायेसे, रामगुण गायेसे ॥ टेर ॥
ध्रुवकी बन गई, प्रह्लादकी बन गई।
द्रौपदीकी बन गई, चीरके बढ़ायेसे ॥ तेरी० ॥ १ ॥
बालीकी बन गई, सुग्रीवकी बन गई।
हनुमतकी बन गई, सिया-सुधि लायेसे ॥ तेरी० ॥ २ ॥
नन्दकी बन गई, यशोदाकी बन गई।
गोपियनकी बन गई, माखनके खवायेसे ॥ तेरी० ॥ ३ ॥
गजकी बन गई, गीधकी बन गई।
केवटकी बन गई, नाव पै चढ़ायेसे ॥ तेरी० ॥ ४ ॥

ऊधवकी बन गई, भीष्मकी बन गई।
अर्जुनकी बन गई, गीता-ज्ञान पायेसे॥ तेरी०॥ ५॥
तुलसीकी बन गई, सूराकी बन गई।
मीराकी बन गई, गोविन्दके रिझायेसे॥ तेरी०॥ ६॥

(३६८)

तेरे पूजनको भगवान, बना मन-मन्दिर आलीशान॥ टेर॥
किसने जानी तेरी माया, किसने भेद तिहारा पाया,
ऋषि-मुनि, हार करके ध्यान, बना मन-मन्दिर आलीशान॥ १॥
किसने देखी तेरी सूरत, कौन बनावे तेरी मूरत,
तूँ है निराकार भगवान्, बना मन-मन्दिर आलीशान॥ २॥
यह संसार है तेरा मन्दिर, तूँ रमा है इसके अन्दर,
करते ऋषि-मुनि सब ध्यान, बना मन-मन्दिर आलीशान॥ ३॥
तूँ हर गुलमें, तूँ बुलबुलमें, तूँ हर शाखमें तूँ हर पातमें,
तूँ हर दिलमें प्रभुको मान, बना मन-मन्दिर आलीशान॥ ४॥
तूँ ही पलमें, तूँ ही थलमें, तूँ ही वनमें तूँ ही मनमें,
तेरा रूप अनुप महान्, बना मन-मन्दिर आलीशान॥ ५॥
तूँने राजा रंक बनाये, तूँने भिक्षुक राज बिठाये,
तेरी लीला ईश महान्, बना मन-मन्दिर आलीशान॥ ६॥
झूठे जगकी झूठी माया, मूर्ख इसमें क्यों भरमाया,
कर कुछ जीवनका कल्याण, बना मन-मन्दिर आलीशान॥ ७॥

(३६९)

तेरे फूलोंसे भी प्यार तेरे काँटोंसे भी प्यार
जो भी देना चाहे दे दे करतार, दुनियाके पालन हार॥ तेरे॥
चाहे सुख दे या दुःख चाहे खुशी दे या गम

मालिक जैसे भी रखेगा वैसे रह लेंगे हम
ये है दुःख भरा संसार, बहाये आँसुओंकी धार॥ जो भी॥
हमको दोनों है पसन्द तेरी धूप और छाँव
मालिक किसी भी दिशामें ले चल जिंदगीकी नाँव
चाहे हमें लगा दे पार, डुबा दे चाहे मँझधार॥ जो भी॥

(३७०)

तोरा मन दर्पण कहलाये-२
भले बुरे सारे कर्मोंको देखे और दिखाए,
तोरा मन दर्पण·········

मन ही देवता मन ही ईश्वर मनसे बड़ा न कोई
मन उजियारा जब-जब फैले, जग उजियारा होए
इस उजले दर्पण पर प्राणी धूल न जमने पाए
तोरा मन दर्पण·········

सुखकी कलियाँ, दुःखके काँटे, मन सबका आधार,
मनसे कोई बात छिपे न, मनके नैन हजार
जगसे चाहे भाग ले प्राणी, मनसे भाग न पाए
तोरा मन दर्पण·········

तनकी दौलत, ढलती छाया, मनका धन अनमोल
तनके कारण, मनके धनको मिट्टीमें ना रोल
मनकी कदरको भूलने वाले हीरा जन्म गवाएँ
तोरा मन दर्पण·········

(३७१)

द्वार आये दीनको तो, तुमने ठुकराया नहीं,॥ टेर॥
फिर भला ये क्या हुआ जो, मुझको अपनाया नहीं?
प्रभु! तुम्हारी सृष्टिमें, रवि ही नहीं, तारे भी हैं,

दो सुखी सम्पन्न तो शत दीन दुखियारे भी हैं,
दीन दुखियोंको तो तुमने नाथ! बिसराया नहीं,
फिर भला ये क्या हुआ जो, मुझको अपनाया नहीं?॥ १॥
मैं विभीषण-सा न पावन, एक दुखियारा तो हूँ,
मैं सुदामा-सा न स्नेही, किन्तु बेचारा तो हूँ,
कौन शरणागत, जिसे है तुमने दुलराया नहीं?
फिर भला ये क्या हुआ जो, मुझको अपनाया नहीं?॥ २॥
मैं न दृढ़ संकल्प यदि तो, एक टूटा प्रण तो हूँ,
प्रेमका नहिं पात्र तो इक अति अकिंचन जन तो हूँ,
किस अकिंचनने तुम्हारा नेहधन पाया नहीं?
फिर भला ये क्या हुआ जो, मुझको अपनाया नहीं?॥ ३॥
तोड़ जगके मोह बन्धन नाथ! मैं आया यहाँ,
अब तुम्हारा द्वार तजकर मैं भला जाऊँ कहाँ?
भोरका भूला कोई क्या साँझ घर आया नहीं?
फिर भला ये क्या हुआ जो, मुझको अपनाया नहीं?॥ टेर॥॥ ४॥

(३७२)

दीनानाथ दयानिधि स्वामी, कौन भाँति मैं तुम्हें रिझाऊँ।
श्रीगङ्गा चरणोंसे निकली, शुचि नीर कहाँसे प्रभु लाऊँ।
कामधेनु कल्पवृक्ष तुम्हारे, कौन पदारथ भोग लगाऊँ॥
चार वेद तुम मुखसे भाखे, और क्या प्रभु पाठ सुनाऊँ।
अनहद बाजे बजत तुम्हारे, ताल मृदङ्ग क्या शङ्ख बजाऊँ॥
कोटि भानु थारे नखकी शोभा, दीपक ले प्रभु कहाँ दिखाऊँ।
लक्ष्मी थारे चरण की चेरी, कौन द्रव्य प्रभु भेंट चढ़ाऊँ॥
तुम त्रिलोक के कर्ता हर्ता, तुम्हें छोड़ प्रभु कौन पै जाऊँ।
सूरश्याम प्रभु विपद विदारण, मनवांछित प्रभु तुमहीसे पाऊँ॥

(३७३)

दुनियाका बनकर देख लिया, भगवानका बनकर देख जरा।
भगवानमें कितनी शक्ति है, तू दर्शन पाकर देख जरा॥ टेर॥
मायाकी जालमें फँस करके, कई जन्म तूने बरबाद किया।
अब शरणमें आजा गोविन्दकी, तू नाम सिमरकर देख जरा॥
दुनियाका बनकर............
प्रभु प्रेम में कितनी मस्ती है, पूछो ये प्रेम दिवानों से।
श्रद्धा और प्रेमका प्याला पी, एक बार तो पीकर देख जरा॥
दुनियाका बनकर............
भक्तिकी राह जो चलते हैं, जगमें वो अमर हो जाते हैं।
है सच्चा प्यार गोविन्दका, तू नींदसे जगकर देख जरा॥
दुनियाका बनकर............
प्रभु चरणकमलसे चित्त लगा, पावेगा सच्चा सुख सदा।
गोविन्दकी आज्ञामें चलकर भगवानको मनमें खोज जरा॥
दुनियाका बनकर देख लिया, गोविन्दका बनकर देख जरा॥

(३७४)

दूसरों का दुखड़ा दूर करने वाले तेरे दुख दूर करेंगे राम।
किए जा जग में भलाई का काम तेरे दुख दूर करेंगे राम॥ टेर॥
सतका ये पग है धरम का मारग, संभल २ चलना प्राणी,
पग-पग पर है यहां रे कसौटी, कदम कदम पर कुर्बानी,
मगर तू डाँवाँडोल न होना तेरी सब पीड़ा हरेंगे राम॥ १॥
क्या तूने पाया क्या तूने खोया, क्या तेरा लाभ क्या हानी,
इसका हिसाब करेगा वो ईश्वर तू क्यों फिकर करे प्राणी,
तू बस अपना काम किए जा, तेरा भण्डार भरेंगे राम,
पोंछले तू अपने आँसू तमाम तेरे दुःख दूर करेंगे राम॥ २॥

(३७५)

नन्हा-सा फूल हूँ मैं, चरणोंकी धूल हूँ मैं,
आया हूँ मैं तो तेरे द्वार,
प्रभुजी मेरी पूजा करो स्वीकार-२
गुरुजी मेरी पूजा करो स्वीकार-२
हो ऽऽऽ मैं तो निर्गुणिया हूँ बस
इतनी-सी बात है
मेरे जीवनकी डोरी, अब तेरे हाथ है-२
थोड़ा-सा गुण मिल जाये, निर्धनको धन मिल जाए
मानू तुम्हारा उपकार
प्रभुजी मेरी बिनती करो स्वीकार-२
सुन लो हमारी अर्ज़ी, मुझको कुछ ज्ञान दो
जीवनको जीना सीखूँ, ऐसा वरदान दो-२
सूरज-सी शान पाऊँ, चन्दा-सा मान पाऊँ-२
इतना-सा दे दो उपहार
प्रभुजी मेरी पूजा करो स्वीकार
गुरुजी मेरी पूजा करो स्वीकार

(३७६)

नमस्कार प्रभु बारम्बारा।
असंख्य कोटि ब्रह्माण्डके स्वामी, जड-चेतन सब रूप तुम्हारा॥ १॥
तूँ है सबमें सब तेरेमें, यही सगुण प्रभु रूप तुम्हारा॥ २॥
ना तूँ किसीमें ना तेरेमें, ऐसा निर्गुण रूप तुम्हारा॥ ३॥
भीतर, बाहर, ऊपर, नीचे, जहाँ देखूँ वहाँ रूप तुम्हारा॥ ४॥

राम, कृष्ण, ॐकार, हरी, हर, वेदोंमें तेरा नाम अपारा॥ ५॥
सच्चे मनसे ध्यान लगावे, तब दर्शन हो नाथ तुम्हारा॥ ६॥

(३७७)

नहीं चाहिये रंग महल, ना धन दौलत की शान
हम तो माँगे तुझसे मालिक, एक सन्तोष का दान
कि घर-घरमें खुशहाली हो, सदा सुखकी हरियाली हो··· ॥ टेर॥
तूने हमको जन्म दिया है, तू ही पालन हार
तेरी कृपासे फूले फले हम सबका घर संसार
कभी न हम हाथ फैलाएँ अपनी मेहनतका ही खायें
इतना दो वरदान, हम तो माँगे तुझसे मालिक
एक सन्तोषका दान··········
सुखके बदले दुःख देनेकी अगर कामना तेरी-२
दुःखको सहने की शक्ति दो, यही प्रार्थना मेरी
नहीं चाहिए हीरे मोती, ना रथका व्यापार
हम तो माँगे तुझसे मालिक··········

(३७८)

नाथ! थारे सरणै आयोजी!
जचे जिसतराँ, खेल खिलाओ, थे मन-चायो जी॥ १॥
बोझो सभी उतर्‌यो मनको, दुख बिनसायो जी।
चिंता मिटी, बड़े चरणाँको सहारो पायो जी॥ २॥
सोच फिकर अब सारो थारै ऊपर आयो जी।
मैं तो अब निस्चिन्त हुयो अंतर हरखायो जी॥ ३॥
जस-अपजस सब थारो, मैं तो दास कुहायो जी।
मन-भँवरो थारै, चरण-कमलमें जा लिपटायो जी॥ ४॥

(३७९)

नाथ! थारै सरण पड़ी दासी।
(मोय) भवसागरमें त्यार काटद्यो जनम-मरण फाँसी॥ टेक॥
नाथ! मैं भोत कष्ट पाई।
भटक-भटक चौरासी जूणी मिनख-देह पाई।
मिटाद्यो दुःखाँकी रासी॥ १ ॥

नाथ! मैं पाप भोत कीना।
संसारी भोगाँकी आसा दुःख भोत दीना।
कामना है सत्यानासी॥ २ ॥

नाथ! मैं भगति नहीं कीनी।
झूठा भोगाँकी तृसनामें उम्मर खो दीनी।
दुःख अब मेटो अबिनासी॥ ३ ॥

नाथ! अब सब आसा टूटी।
(थारे) श्रीचरणाँकी भगति एक है संजीवन-बूटी।
रहूँ नित दरसणकी प्यासी॥ ४ ॥

(३८०)

नाथ मैं थारो जी थारो!
चोखो, बुरो, कुटिल अरु कामी, जो कुछ हूँ सो थारो॥ १॥
बिगड़्यो हूँ तो थारो बिगड़्यो, थे ही मनै सुधारो।
सुधर्‌यो तो प्रभु सुधर्‌यो थारो, थाँ सूँ कदे न न्यारो॥ २॥
बुरो, बुरो, मैं भोत बुरो हूँ, आखर टाबर थारो।
बुरो कुहाकर मैं रह जास्यूँ, नाँव बिगड़सी थारो॥ ३॥
थारो हूँ, थारो ही बाजूँ, रहस्यूँ थारो, थारो!!।
आँगळियाँ नुह परै न होवै, या तो आप बिचारो॥ ४॥

मेरी बात जाय तो जाओ, सोच नहीं कछु म्हारो।
मेरे बड़ो सोच यो लाग्यो, बिरद लाजसी थारो॥ ५॥
जचै जिसतराँ करो नाथ! अब, मारो, चाहै त्यारो।
जाँघ उघाड़्याँ लाज मरोगा, ऊँडी बात बिचारो॥ ६॥

(३८१)

नाम हरि का जप ले बन्दे, फिर पीछे पछतायेगा-२॥ टेर॥
तू कहता है मेरी काया कायाका अभिमान क्या।
चाँद-सा सुन्दर यह तन तेरा मिट्टीमें मिल जायेगा॥ १ ॥
वहाँसे क्या तू लाया बन्दे यहाँसे क्या ले जायेगा।
मुट्ठी बाँध के आया जगमें हाथ पसारे जायेगा॥ २ ॥
बालापन ये खेलमें खोया आयी जवानी मस्त रहा।
बूढापनमें रोग सताया आप बड़ा पछतायेगा॥ ३ ॥
जपना है सो जप ले बन्दे आखिरमें मिट जायेगा।
कहत कबीर सुनो भाई साधो करनीका फल पायेगा॥ ४ ॥

(३८२)

प्रभु! मैं द्वार तुम्हारे आया॥ टेर॥
साथ नहीं कुछ लाया
तुमने दिया घट मणि कंचन का,
लेकर मैं इतराया (प्रभुजी!)
ठोकर लगी बिखर गयी मणियाँ,
हाथ नहीं कुछ आया
मूरख मन पछताया,॥ १॥
तुमने दिया उपवन केसर का
सो पशु-यूथ चराया (मैंने)

मायावन की मृगतृष्णा में,
अटक-भटक भरमाया
निष्फल जन्म गँवाया॥ २॥
तुमने किया उपकार दयामय!
मैं कुछ समझ न पाया (स्वामिन्)
काम, क्रोध, मद-मोह, लोभ ने,
मिलकर नाच नचाया,
धरम-करम बिसराया॥ ३॥
मैं अज्ञान, दयामय तुम प्रभु!
अगम तुम्हारी माया (स्वामिन्!)
पार करो, उद्धार करो,
ज्यों सबको पार लगाया
चरण-शरण मैं आया॥ ४॥

(३८३)

प्रभु तुम साँचे मनके मीता॥ टेर॥
कब शबरी काशी कर आई, कब पढ़ आई गीता।
जूठे बेर बिसंभर चाखे, कीन्ही प्रेम पुनीता॥ १॥
यज्ञ दान गणिका कब कीन्ही, कब तीरथ जल पीता।
बाँह पकड़ हरि पार उतारी, मनहीके परतीता॥ २॥
कब करमा बाइ भोर सुमरिया, जप तप संजम कीता।
नंदलाल गोपाल प्रभूको खिचड़ी भोग धरीता॥ ३॥
साँच समान और जग नाहीं, जुग जुग संत भणीता।
कहत कबीर सांच घट जाके, सकल जगत तिन्ह जीता॥ ४॥

(३८४)

प्रभु तेरी महिमा केहि विध गाऊँ।
तेरो अन्त कहीं नहीं पाऊँ॥ टेक॥
अलख निरंजन रूप तुम्हारो किस विध ध्यान लगाऊँ।
वेद पार अजहूँ नहिं पायो मैं कैसे बतलाऊँ॥ १ ॥
गंगा यमुना नीर बहाये मज्जन किमि करवाऊँ।
वृक्ष बगीचे रचना तेरी कैसे पुष्प चढ़ाऊँ॥ २ ॥
पाँच भूतकी देह न तुम्हरी चन्दन किमि लिपटाऊँ।
सकल जगतके पालन कर्ता किस विध भोग लगाऊँ॥ ३ ॥
हाथ जोड़कर अरज करूँ मैं बार बार शिर नाऊँ।
'ब्रह्मानन्द' मिटा दे पड़दा घट घट दर्शन पाऊँ॥ ४ ॥

(३८५)

प्रबल प्रेमके पाले पड़कर, प्रभुको नियम बदलते देखा।
अपना मान भले टल जाये, भक्तका मान न टलते देखा॥ टेर॥
जिनकी केवल कृपा दृष्टीसे, सकल विश्वको पलते देखा।
उनको गोकुल गौरस पर, सौ-सौ बार मचलते देखा॥ १ ॥
जिनके चरण कमल कमलाके, करतलसे न निकलते देखा।
उनको बृज करील कुंजमें, कंटक पथ पर चलते देखा॥ २ ॥
जिनका ध्यान विरंची शम्भु, सनकादिकसे न सम्भलते देखा।
उनको ग्वाल सखा मण्डलमें, लेकर गेंद उछलते देखा॥ ३ ॥
जिनकी वक्र भृकुटिके भयसे, सागर सप्त उबलते देखा।
उनको ही जसोदाके भयसे, अश्रु 'बिन्दु' दृग ढलते देखा॥ ४ ॥

(३८६)

प्रभु मेरे अवगुन चित न धरो।
समदरसी प्रभु नाम तिहारो, अपने पनहि करो॥ टेर॥
इक लोहा पूजामें राखत, एक घर बधिक परो।
सो दुबिधा पारस नहिं जानत, कंचन करत खरो।
एक नदियाँ एक नार कहावत, मैलो नीर भरो।
जब मिलिकै दोउ एक बरन भए, सुरसरि नाम परो॥
एक जीव इक ब्रह्म कहावत, सूर स्याम झगरो।
अबकी बेर मोहि पार उतारो, नहिं पन जात टरो॥

(३८७)

पायोजी म्हे तो राम रतन धन पायो।
बस्तु अमोलक दी म्हारे सतगुरु, किरपा कर अपनायो॥
जनम जनमकी पूँजी पाई, जगमें सभी खोवायो।
खरचै नहिं कोई चोर न लेवे, दिन-दिन बढ़त सवायो॥
सतकी नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, हरख हरख जस गायो॥

(३८८)

पिंजरेके पंछी रे.................
तेरा दरद न जाने कोई-२
बाहरसे तो खामोश रहे तू
भीतर भीतर रोए रे-२
तेरा दरद..........
कह न सके तू अपनी कहानी
तेरी भी पंछी क्या जिन्दगानी रे-२
विधिने तेरी कथा लिखी है,

आँसूमें कलम डुबोय।
तेरा दरद..........
छुपके छुपके रोनेवाले
रखना छुपाके दिलके ताले रे-२
ये पत्थरका देश है पगले
कोई न तेरा होय।
तेरा दरद..........

(३८९)

बँगला अजब बन्या महाराज जा में नारायण बोले॥ टेर॥
पाँच तत्त्व की ईंट बनाई तीन गुनु का गारा।
छत्तीसुकी छात बनाई, चेतन है चेजारा॥ १ ॥
इस बँगले के दस दरवाजा, बीच पवन का खम्भा,
आवत जावत कछु नहीं दीखै, ये भी एक अचम्भा॥ २ ॥
इस बँगले में चोपड़ माँडी, खेले पाँच पचीसा,।
कोई तो बाजी हार चल्यो है, कोई चल्या जुग जीता॥ ३ ॥
इस बँगले में पातर नाचे, मनवा ताल बजावे,।
निरत सुरतका बाँध घुँघुरु, राग छतीसुँ गावे॥ ४ ॥
कहे मछन्दर सुन जती गोरख, जिन ये बँगला गाया,।
इस बँगले का गावनहारा, बहुरी जनम नहीं पाया॥ ५ ॥

(३९०)

बाँधा था द्रोपदी ने, तुम्हें चार तार में।
कुबजा ने प्रभु को बाँध लिया, पुष्प हार में॥ टेर॥
बाँधा था भिलनी ने, तुम्हें बेर चार में।
मीरा ने प्रभु को बाँध लिया, विष आहार में॥ १ ॥
बाँधा था प्रह्लाद ने, एक राम नाम में।

ध्रुव जी ने प्रभु को बाँध लिया, बाल्यकाल में॥ २॥
बाँधा था पवन सुत ने, तुम्हें संजीवन पत्ते में।
केवट ने प्रभु को बाँध लिया, पद पखार में॥ ३॥
मेरी तरफ भगवन् जरा, कुछ गौर तो करो।
प्रभु कर दो बेड़ा पार, नैया है मझधार में॥ ४॥

(३९१)

बोल सूवा राम राम, बलि बलि जाऊँ रे॥ टेर॥
सोने केरी तार सूवा, पींजरो बणाऊँ रे,
पींजरे रे मोतीडाँरी, झालरी लगाऊँ रे॥ १ ॥
घिरत मिठाई मेवा, लापसी जिमाऊँ रे,
आँवलेरो रस तत्रें, घोल घोल पावूँ रे॥ २ ॥
चम्पा केरी डाल सूवा, हिंडोलो धलाऊँ रे,
हिंडोले बिठाके तोहे, हातसूं झुलाऊँ रे॥ ३ ॥
पगल्याँ रे माहीं थारे, पैंजण्याँ पहनाऊँ रे,
मीराँ प्रभु गिरधर के शरणे, आयां सुख पावूँ रे॥ ४ ॥

(३९२)

बोल हरि बोल, हरि-हरि बोल, केशव-माधव गोविन्द बोल॥
नाम प्रभु का है सुखकारी, पाप कटेंगे क्षणमें भारी।
नामका पीले अमृत घोल, केशव माधव गोविन्द बोल॥ १॥
शबरी अहिल्या सदन कसाई, नाम जपनसे मुक्ति पाई।
नामकी महिमा है बेतोल, केशव माधव गोविन्द बोल॥ २॥
सुवा पढ़ावत गणिका तारी, बड़े-बड़े निशिचर संहारी।
गिन-गिन पापी तारे तोल, केशव माधव गोविन्द बोल॥ ३॥
नरसी भगतकी हुण्डी सिकारी, बन गयो साँवलशाह बनवारी।
कुण्डी अपने मनकी खोल, केशव माधव गोविन्द बोल॥ ४॥

जो जो शरण पड़े प्रभु तारे, भवसागरसे पार उतारे।
बन्दे तेरा क्या लगता है मोल, केशव माधव गोविन्द बोल॥ ५॥
राम नामके सब अधिकारी, बालक वृद्ध युवा नर नारी।
हरि जप इत-उत कबहुँ न डोल, केशव माधव गोविन्द बोल॥ ६॥
चक्रधारी भज हर गोविन्दम्, मुक्तिदायक परमानन्दम्।
हरदम कृष्ण मुरारी बोल, केशव माधव गोविन्द बोल॥ ७॥
रट ले मन! तू आठों याम, राम नाममें लगे न दाम।
जन्म गँवाता क्यों अनमोल, केशव माधव गोविन्द बोल॥ ८॥
अर्जुनका रथ आप चलाया, गीता कहकर ज्ञान सुनाया।
बोल, बोल, हित-चितसे बोल, केशव माधव गोविन्द बोल॥ ९॥

(३९३)

भगवान भक्तके वशमें होते आये।
भगतोंने जब डाला फंदा आप बने प्रभु नाईनन्दा
नृपके चरण दबाये, भगवान् भ०॥ १॥
द्रौपदी जब दुष्टोंने घेरी राखी लाज न कीनी देरी
सभामें चीर बढ़ाये, भगवान् भ०॥ २॥
दुर्योधन घर मेवा त्यागे भूख लगी तब वहाँसे भागे
शाक विदुर घर पाये, भगवान् भ०॥ ३॥
केश पकड़कर कंस पछारा, साधूरूपमें रावन मारा
राज विभीषण पाये, भगवान् भ०॥ ४॥
भक्तोंके हैं प्रभु हितकारी नरसी भगतकी हुण्डी सिकारी
साँवलसाह बन आये, भगवान् भ०॥ ५॥

(३९४)

भज भज रे भज भज रे म्हारा प्राणी रे बावला,
कद तूँ हरि गुण गावेलो॥ टेर॥
धन जीवन पे क्यों इतरावे, कुटुम्ब कबीला काम न आवे।
हरि ही पार लगावेलो॥ कद तूँ..........

क्यों पड़्यो आलसमें सोवे, नरतन प्राणी विरथा खोवे।
हाथ कभी नहीं आवेलो॥ कद तूँ..........
लख चौरासी काटके आयो, रतन अमोला नरतन पायो।
माटीमें मिल जावेलो॥ कद तूँ..........
शिव मण्डलका यही है कहना, तोताराम शरणमें है रहना।
मुक्ति पदारथ पावेलो॥ कद तूँ..........

(३९५)

भजता क्यूँ ना रे हरिनाम, तेरी कौड़ी लगे न छिदाम॥ टेर॥
दाँत दिया है मुखड़ेकी शोभा, जीभ दई रट नाम॥ १॥
नैणा दिया है दरशण करबा, कान दिया सुण ज्ञान॥ २॥
पाँव दिया है तीरथ करबा, हाथ दिया कर दान॥ ३॥
शरीर दियो उपकार करणने, हरि-चरणोंमें ध्यान॥ ४॥
बन्दा! तेरी कौड़ी लगे न छदाम, रटता क्यों नहिं रे हरिनाम?॥ ५॥

(३९६)

भगवान तुम्हारे मंदिर में मैं, तुम्हें रिझाने आयी हूँ।
वाणी में तनिक मिठास नहीं, पर विनय सुनाने आयी हूँ॥ १॥
प्रभुका चरणामृत लेने को, है पास मेरे कोई पात्र नहीं।
आँखों के दोनों प्यालों में, कुछ भीख माँगने आयी हूँ॥ २॥
तुमसे लेकर क्या भेंट धरूँ, भगवान! आपके चरणों में।
मैं भिक्षुक हूँ तुम दाता हो, सम्बन्ध बताने आयी हूँ॥ ३॥
सेवा को कोई वस्तु नहीं, फिर भी मेरा साहस देखो।
रो-रोकर आज आँसुओं का, मैं हार चढ़ाने आयी हूँ॥ ४॥

(३९७)

भज मन चरणकँवल अबिनासी॥ टेर॥
जेताइ दीसे धरण गगन बिच, तेताइ सब उठ जासी।
कहा भयो तीरथ-ब्रत कीन्हें, कहा लिये करवत-कासी॥ १॥
इण देहीका गरब न करणा, माटीमें मिल जासी।

यो संसार चहरकी बाजी, साँझ पड्याँ उठ जासी॥ २॥
कहा भयो है भगवा पहर्‌याँ, घर तज, भये संन्यासी।
जोगी होय जुगत नहिं जाणी, उलट जनम फिर आसी॥ ३॥
अरज करूँ अबला कर जोड़े, श्याम तुम्हारी दासी।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, काटो जमकी फाँसी॥ ४॥

(३९८)

भज ले पंछीड़ा हरि नाम, नाम सूँ तिर जासी।
तूँने लियो न हरि नाम, काया रे थारी है काची॥ भजले॥
सुमिरु सरस्वती मात, शारदा है साक्षी।
लागूँ गुरुजी रे पाँव, गुरुजी पोथी बाँची॥ भजले॥
कुण थारो मायड़ बाप, कुण थारो संग साथी।
कुण करैगो मनवार, कुण आड़ो आसी॥ भजले॥
धरती रे मायड़ बाप, धरम म्हारो संग साथी।
कृष्ण करे मनवार, राम आड़ो आसी॥ भजले॥
उलझो सौ मण सूत, सूत कुण सुलझासी।
सतगुरु दियो है बताय, राम थारो सुलझासी॥ भजले॥

(३९९)

भजो रे भैया राम गोविन्द हरी।
जप तप साधन कछु नहिं लागत, खरचत ना गठरी॥ टेर॥
संतत संपति सुख के कारन, जासौं भूल परी॥ १ ॥
गणिका तारी शबरी तारी, गौतम घरनि तरी॥ २ ॥
खग मृग व्याध अजामिल तारे, जिनकी नाव भरी॥ ३ ॥
गज की टेक सुनत उठि धाये, रुके न पलक घरी॥ ४ ॥
और अनेक अधम जन तारे, गिनती न जात करी॥ ५ ॥
कहत कबीर राम नहिं जा मुख, ता मुख धूल भरी॥ ६ ॥

(४००)

भावका भूखा हूँ मैं भाव ही बस सार है।
भावसे मुझको भजे तो भवसे बेड़ा पार है॥ भाव......
अन्न धन और वस्त्र भूषण कुछ न मुझको चाहिए।
आप हो जाए मेरा बस पूर्ण यह सत्कार है॥ भाव......
भाव बिन कुछ भी वो दे डाले तो मैं लेता नहीं।
भावसे एक फूल भी दे तो मुझे स्वीकार है॥ भाव......
भावसे सूनी पुकार मैं कभी सुनता नहीं।
भाव पूरित टेर ही करती मुझे लाचार है॥ भाव......
जो मुझहीमें भाव रखकर मेरी लेता है शरण।
उसके और मेरे हृदयका एक रहता तार है॥ भाव......
भाव जिस जनके नहीं उसकी मुझे चिन्ता नहीं।
भाव वाले भक्तका भरपूर मुझपर भार है॥ भाव......
बाँध लेते मुझे भावुक प्रेमकी जंजीरमें।
इसलिये इस भूमिपर होता मेरा अवतार है॥ भाव......

(४०१)

मत बाँधो गठरिया अपजस की॥ टेर॥
यो संसार बादलकी छाया, करो कमाइ भाई हरि रस की॥ १॥
जोर जवानी ढलक जायगी, बाल अवस्था तेरी दिन दस की॥ २॥
धर्मदूत जब फाँसी डारे, खबर लेवे थारे नस-नस की॥ ३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, जब तेरे बात नहीं बस की॥ ४॥
मत बाँधो गठरिया अपजस की॥

(४०२)

मन तूँ क्यों पछतावै रे।
शिरपर श्रीगोपाल बेड़ा पार लगावै रे॥ टेर॥
निज करनीको याद करूँ जद जीव घबरावै रे।
वाकी महिमा सुन सुन मनमें धीरज आवै रे॥ १ ॥
जो कोई अनन्य मनसे हरिको ध्यान लगावै रे।
वाकै घरको योग क्षेम हरि आप निभावै रे॥ २ ॥
सरणागतकी लाज तो सब ही नै आवै रे।
तीन लोकको नाथ लाज हरि नाहिं गमावै रे॥ ३ ॥
जो मेरा अपराध गिनो तो अन्त न आवै रे।
ऐसा नन्दकिशोर चित्तमें एक न लावै रे॥ ४ ॥
पतितउधारण विरद प्रभूको वेद बतावै रे।
तुम गरीबके काज बिरदको नहीं लजावै रे॥ ५ ॥
महिमा अपरम्पार तो सुर-नर-मुनि गावै रे।
ऐसो नन्दकिशोर भगतकी ओड़ निभावै रे॥ ६ ॥
वो है रमानिवास भगतकी त्रास मिटावै रे।
तूँ मत होय उदास कृष्णको दास कहावै रे॥ ७ ॥

(४०३)

मन लागो मेरो यार फकीरीमें॥ टेर॥
जो सुख पावों नाम-भजनमें, सो सुख नाहिं अमीरीमें॥ १॥
भला-बुरा सबको सुनि लीजै, करि गुजरान गरीबीमें॥ २॥
प्रेमनगरमें रहनि हमारी, भलि बनि आई सबूरीमें॥ ३॥
हाथमें कूँड़ी बगलमें सोंटा, चारो दिसा जगीरीमें॥ ४॥
आखिर यह तन खाख मिलैगा, काहा फिरत मगरूरीमें॥ ५॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, साहिब मिलै सबूरीमें॥ ६॥

(४०४)

म्हारा हरियल बन रा सूवटिया,
तनै राम मिले तो कहिजे रे॥ टेर॥
पाँच तत्त्वको बण्यो पींजड़ो ज्यामें बैठ्यो रहिजे रे।
यो पिंजड़ो सुवा भयो पुरानो, नई नई खबराँ दीजे रे॥ १॥
इस पिंजड़ाके दस दरवाजे, आतो जातो रहिजे रे।
राम नामकी भरलै रे नौका, हरि भजन चित दीजे रे॥ २॥
काम क्रोध मद लोभ छोड़कर, ज्ञान गुरुका लीजे रे।
'मीरा' गावे गिरधर नागर, हरि चरणाँ चित दीजे रे॥ ३॥

(४०५)

म्हारे पतिसा रा प्राण बचाय बा हिरणी हरने अर्ज करे
बावरिये फन्द रातियो चौसठ खूँटी रोप।
मृगी तो बनमें सिधायी मृगकेरा फँस गया चारू पाँव॥
कहवे मिरगली सुण रे बावरिया मन मोरे री बात।
मने पकड़ले पतिने छोड़ दे काया सफल होय जायी॥
कहवे बावरियो सुण रे मिरगली मन मोरे री बात।
थारे पतिजी ने ना छोड़ूँ अब के लाग्यो है म्हारो दाव॥
केवे मिरगलो सुण ए मिरगली मन म्हारे री बात।
थे तो थारे बनमें सिधावो, म्हाने बचासी दीनानाथ॥
हिरणी हरने अर्ज करे बा तीन पगारे तान।
राम लखन रो डोल्यो सिंगासण, बावरियेने डस गयो कालो नाग॥
खूँटी टूटी फन्द कट्या, मृगेरा छूट्या पाँव।
कहत कबीर सुणो भाई साधो, जोड़ी मिलाई दीनानाथ॥
हिरणी हरने अर्ज करे.........

(४०६)

मने इबके बचाले मोरी माय—बटाऊड़ो आयो लेवण न॥
पाँच कोटड़ी दस दरवाजा इण कायाके माँय।
लुकती छिपती हार गई मैं—छिपती न छोड़ी नाय॥
बोली कन्या सुण मेरी माता—एक बर बाहर आव।
हाथ जोड़ बटाऊके आगे, इबके ले मोय बचाय॥
बोली बुढ़िया सुणो पावणा, एक हमारी बात।
मेरी कन्या भोली भाली, इबके तूँ माफ कराय॥
कहे पावणा सुणरी बुढ़िया, तू भी हमारी बात।
हुकुम मालकको हुयो जरूरी, चलकर मैं आयो आधी रात॥
सावणका दिन सतरह बीता, हुई तीज परभात।
खेलनकी मनमें रही मेरे, संगकी सहेल्याँर साथ॥
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीलो, सिरपर फेर हाथ।
पाँच भायाँकी बहन लाडली, कोई न चाल्यो मेरे साथ॥
इन सासरिया सब न जाणो, सुणो सज्जन चित लाय।
कहत कबीर सुणो भाई साधो, हरिसे ले हेत लगाय॥

(४०७)

मन में तो आवे कान्हा, भोग लगाऊँ॥ टेर॥
रूखी-सूखी राम रसोई कैसे जीमाऊँ॥ मन में॥
गऊआँ को दूध लाकर खीर बनाई,
दाख छुआरा केशर, मिश्री मिलाई,
(सुदामा का तन्दुल कान्हा) २ कहाँ से मैं लाऊँ॥ टेर॥
करमा थारो करम सवायो, श्याम धणी तेरे जीमण आयो।
(भक्ति दे कान्हा मैं भी) २ करमाँ बन जाऊँ॥ टेर॥
भक्ति भावों का थाल सजाऊँ, थाल परोसूं, भाव जिमाऊँ।
(जीमो साँवरिया थाने) २ सौगन्ध कढाऊँ॥ टेर॥

(४०८)

माटी कहै कुम्हार से तूँ क्या रूँदै मोहिं।
इक दिन ऐसा होयगा मैं रूँदूँगी तोहिं॥
आये हैं सो जायेंगे राजा, रंक, फकीर।
एक सिंहासन चढ़ि चले, एक बँधे जंजीर॥
दुर्बल को न सताइए जाकी मोटी हाय।
बिना जीवकी स्वाँस से लोह भसम ह्वै जाय॥
चलती चक्की देखके दिया कबीरा रोय।
दो पाटनके बीचमें साबुत बचा न कोय॥
हाड़ जले ज्यूं लाकड़ी केश जले ज्यूं घास।
सब जग जलता देखके भये कबीर उदास॥
साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय साँच है ताके हृदय प्रभु आप॥
दुःखमें सुमिरन सब करें सुखमें करै न कोय।
जो सुखमें सुमिरन करै तो दुःख काहेको होय॥

(४०९)

माटी री आ काया आखिर, माटीमें मिल जावे है।
क्यारो गर्व करे रे मनवा, क्यां पर तू इतरावे है।
जिस तनने मीठा माल खुवा, तू निसदिन पाले पोसे है
आपणे पेट री आग बुझावण, तू किताँ रा मन रोसे है
तू किताँ रा मन रोसे है
लेकिन गटका खायोड़ाने, एक दिन भटका आवे है
क्यारो गर्व करे·········
आ साँसा रो विश्वास नहीं कद आती आती रुक जावे है

जीवनमें झूकणो नहीं जाणे वो, जम रे आगे झुक जावे है
वो जम रे आगे झुक जावे
एक कदम तो उठ्यो दूजो, कुण जाणे उठ पावे है
क्यारो गर्व करे.........
ओ चार दिना रो चाँदणियों, सुन फेर अंधेरी राता है।
थारी टपली टप-टप चोवे है, आ सावण री बरसाता है।
आ सावन री बरसाता है।
थोड़े जीणे रे खातिर क्यूँ, तू भारी पाप कमावे है।
क्यारो गर्व.........
जो बीत गई सो बात गयी, अब पाछल खेती करले तू
संत कहे सद्‌गुण मोत्यां सू, आ खाली झोली भरले तू
आ खाली झोली भरले तू
जो सोवत है वो खोवत है, जो जागत है वो पावत है,
क्यारो गर्व करे.........

(४१०)

मान मेरा कहना नहीं तो पछतायेगा।
माटीका खिलौना माटीमें मिल जायेगा॥ टेर॥
मात पिता तेरा कुटुम्ब कबीला
विपदा पड़े पर कोई न किसीका
इक दिन हंसा अकेला उड़ जायेगा॥ माटीका॥
धन दौलत तेरे कोठी और बंगले
इनसे ममता जोड़ न पगले
सब कुछ तेरा, यहीं धरा रह जायेगा॥ माटीका॥

मनुष्य जन्म तूने पाया है बन्दे
कर्म न कर जगमें तू गन्दे
जैसा बीज बोयेगा, तू वैसा फल पायेगा॥ माटीका॥
मनुष्य जन्म रोज मिलने न पायेगा
करले भजन आवागमन छूट जायेगा
जिस दिन यह ज्ञान, अपने मनको करायेगा॥ माटीका॥
प्रभुकी शरणमें जाके प्रभु गुण गा ले रे
बाकी रहा जीवन अपना सफल बना ले रे
सतसंगतसे जीवन, तेरा धन्य होय जायेगा॥ माटीका॥

(४११)

मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान् तुम्हारे चरणों में।
यह बिनती है पलछिन छिनकी, रहे ध्यान तुम्हारे चरणोंमें॥ टेर॥
चाहे बैरी सब संसार बने, चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गलेका हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥ १ ॥
चाहे अगनी में मुझे जलना हो, चाहे काँटों पे मुझे चलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥ २ ॥
चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अँधेरा हो।
पर मन नहीं डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणोंमें॥ ३ ॥
जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरा ध्यान सुबह और शाम रहे।
तेरी याद तो आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणोंमें॥ ४ ॥

(४१२)

मीठो मीठो बोल थारो काई बिगड़े,
काई बिगड़े थारो काई बिगड़े
या जीवनमें दम नहीं-२

कब निकले प्राण मालूम नहीं
मीठो मीठो बोल..........
सोच समझले, स्वार्थ रो संसार,
लाख जतन कर, छूटे घर परिवार-२
हा तू जानले, पहचानले
संसार किसीको घर नहीं कब निकले
प्राण मालूम नहीं..........
मीठो मीठो बोल..........
प्रभुवनकी महिमा है अपरमपार,
डोलती नैयाके है ये पथवार
हा तू जानले पहचानले संसार
किसीको घर नहीं कब निकले
प्राण मालूम नहीं..........
मीठो मीठो बोल..........
संतजन ये कहते हैं बारंबार
तप संयम है जीवन रो आधार
हा तू जान..........

(४१३)

मुझे है काम ईश्वरसे जगत् रूठे तो रूठण दे॥ टेर॥
कुटुम्ब परिवार सुत दारा, माल धन लाज लोकनकी।
हरीके भजन करनेमें, अगर छूटे तो छूटन दे॥ १ ॥
बैठ सन्तोंकी संगतमें, करूँ कल्याण मैं अपना।
लोग दुनियाँके भोगोंमें, मौज लूटे तो लूटन दे॥ २ ॥
प्रभुका ध्यान करनेकी, लगी दिलमें लगन मेरे।
प्रीत संसार विषयोंसे, अगर टूटे तो टूटण दे॥ ३ ॥

धरी सिर पापकी मटकी, मेरे गुरुदेवने झटकी।
वो 'ब्रह्मानन्द' ने पटकी, अगर फूटे तो फूटण दे॥ ४ ॥

(४१४)

मेरी नैया पड़ी मझधार खेवनहार तुँहीं है॥ टेर॥
ब्रह्मा विष्णु महेश शेष अवतार तुँहीं है।
तेरा कोई नहीं आकार निराकार तुँहीं है॥ मेरी०॥ १॥
तात मात भाइ बन्धु कुटुम परिवार तुँहीं है।
प्रभु मैं बालक नादान मेरा मुख्त्यार तुँहीं है॥ मेरी०॥ २॥
पृथ्वी जल आकाश अग्निका सार तुँहीं है।
चाँद सूरज और तारा पारावार तुँहीं है॥ मेरी०॥ ३॥
तीन लोकमें व्यापक सिरजनहार तुँहीं है।
सब जीव जन्तु पशु पक्षी और नर-नार तुँहीं है॥ मेरी०॥ ४॥
जोगी जंगम जती सती दातार तुँहीं है।
यह 'टीकाराम' कथ कहे भक्त आधार तुँहीं है॥ मेरी०॥ ५॥

(४१५)

मेरे मालिकके दरबारमें, है सबका खाता।
जितना जिसके भाग्यमें होता, वो उतना ही पाता॥ टेर॥
क्या साधू क्या सन्त-गृहस्थी, क्या राजा क्या रानी।
प्रभुकी पुस्तकमें लिखी है, सबकी कर्म कहानी।
वो ही सबके जमा खर्चका, सही हिसाब लगाता॥ १ ॥
बड़े कठिन कानून प्रभुके, बड़ी कड़ी मर्यादा।
किसीको कौड़ी कम नहीं देता, किसीको दमड़ी ज्यादा।
इसीलिये तो दुनियाँमें, यह जगत्सेठ कहलाता॥ २ ॥

करते हैं फैसला सभीका, प्रभु आसनपर डटके।
उनका फैसला कभी ना पलटे, लाख कोई सर पटके।
समझदार तो चुप रहता है, मूर्ख शोर मचाता॥ ३ ॥
नहीं चले प्रभुके घर रिश्वत, नहीं चले चालाकी।
प्रभुके घरमें लेन-देनकी, रीत बड़ी है बाँकी।
पुण्यका बेड़ा पार करे वो, पापकी नाव डुबाता॥ ४ ॥
अच्छी करनी करले रे भैया, कर्म न करियो काला।
हजार आँखसे देख रहा है, तुझे देखनेवाला।
अच्छी करनी करो चतुर जन, समय गुजरता जाता॥ ५ ॥

(४१६)

मैं अपणे सैयाँ सँग साँची।
अब काहेकी लाज सजनी परगट ह्वै नाची॥
दिवस भूख न चैन कबहूँ नींद निसि नासी।
बेध बार पार ह्वैगो ग्यान गुह गाँसी॥
कुल कुटुम्बी आन बैठे मनहु मधुमासी।
दासी मीरा लाल गिरधर मिटी सब हाँसी॥

(४१७)

मैं तो ढूँढ्यो जग सारो, थाँसूं कोई नहीं न्यारो, देख्यो थाँरो ही उणियारो,
अब तो मोर मुकुट सिर धारो हो, गिरधर लुक छिप आप कठे जास्यो,
न्यारा म्हाँने छोड कठे जास्यो॥ टेर॥
थाँने ओलख लीना आज, म्हारी सुनल्यो थे आवाज, क्यूँ भगताँ सूँ रया भाज,
लुकताँ आवे नहीं लाज, अब थे नेड़ा म्हारे क्यूँ नहीं आवो हो गिरधर,
लुक छिप आप कठे जास्यो॥ १ ॥

ढूँढ्या धरणी आकास, थे तो बैठ्या म्हारे पास, प्रभु मैं तो थाँरो दास,
थे हो मालक म्हारा खास, थे तो मीठा मीठा बैण उचारो हो गिरधर,
लुक छिप आप कठे जास्यो ॥ २ ॥
थाँने समझ लीना दूर, थे तो हाजर हजूर, थाँरो झलके छे नूर,
थाँरी किरपा है भरपूर, म्हारे हिवड़े निवास है थाँरो हो गिरधर,
लुक छिप आप कठे जास्यो ॥ ३ ॥
नहीं आवड़ेलो थाँने, हरदम साथ राखो म्हाँने, बाताँ करस्याँ छानें छानें,
थे तो चौड़े करज्यो क्याँने, म्हारे एक आसरो थाँरो हो गिरधर,
लुक छिप आप कठे जास्यो ॥ ४ ॥
म्हारा आप छो अनादी, सब पड़पोतां री पड़दादी, म्हारी बिगड़ी बात बना दी,
म्हारी जिग्यासा जगा दी, म्हारी लालसा लगा दी, म्हाँने गीताजी रटा दी,
म्हारी चौरासी छूटा दी, साधन सामगरी जूटा दी, थारी पाई म्हे परसादी,
थे तो जन हित नर तन धारो हो गिरधर, लुक छिप आप कठे जास्यो,
न्यारा म्हाँने छोड कठे जास्यो ॥ ५ ॥
म्हाँपर किरपा कर दी नाथ, पायो प्रेमीजन रो साथ, म्हारे सिरपर थाँरो हात,
अब तो मिलस्याँ बाथूँ बाथ, थाँरो कीरतन लागे म्हाँने प्यारो हो गिरधर,
लुक छिप आप कठे जास्यो।
न्यारा म्हाँने छोड़ कठे जास्यो।
थाँ बिना घड़ी ए न आवड़े ॥ ६ ॥

(४१८)

मैं तो हूँ भक्ताँको दास, भगत मेरे मुकुट मणी।
मोकू भजे भजू मैं बाँकों, हूँ दासनको दास
सेवा करे करूँ मैं सेवा, हो सच्चा विश्वास
यही तो मेरे मनमें ठणी ॥ १ ॥
जूठा खाऊँ गले लगाऊँ, नहीं जातिको ध्यान
आचार विचार कछु नहीं देखू, देखू हूँ प्रेम सनमान
शरणाहत नारी वणी ॥ २ ॥

पग चापूँ और सेज बिछाऊँ, नौकर बनूँ हजाम
हाँकू बैल बनूँ गडवारा, बिन तनखाको रथवान
अलखकी लखता वणी॥ ३॥
अपना प्रण विसार, भक्तका पूरा प्रण निभाऊँ
साधू याचक बनूँ कहे सो बेचे तो बिक जाऊँ
और क्या कहूँ मैं घणी॥ ४॥
गरुड़ छोड़ बैकुण्ठ त्याग कर, नंगे पैरा ध्याऊँ
जहाँ जहाँ पीड़ पड़े भक्तनपर, तहाँ तहाँ दौड्या जाऊँ
खबर नहीं करूँ अपणी॥ ५॥
जो कोई भक्ति करे कपटसे, उसको भी अपनाऊँ
साम-दाम अरु दण्ड भेदसे, सीधे ही रस्ते ल्याऊँ
नकलसे असल बणी॥ ६॥
जो कुछ बन रही बने यहाँ पे, कर्ता मुझे ठहरावे
नरसी हरि-गुरु-चरण चेरों, और न शीश नवावे
पतिव्रता एक घणी॥ ७॥

(४१९)

मैं तो साँवरेके रंग राची।
साजि सिंगार बाँधि पग घुँघरू, लोक-लाज तजि नाची॥
गई कुमति, लई साधुकी संगति, भगत, रूप भइ साँची।
गाय गाय हरिके गुण निस दिन, कालब्यालसूँ बाँची॥
उण बिन सब जग खारो लागत, और बात सब काँची।
मीरा श्रीगिरधरन लालसूँ, भगति रसीली जाँची॥

(४२०)

मैली चादर ओढ़के कैसे द्वार तुम्हारे आऊँ।
हे पावन परमेश्वर मेरे मन ही मन शरमाऊँ॥

तूने मुझको जगमें भेजा देकर निर्मल काया
आकरके संसारमें मैंने इसको दाग लगाया
जनम-जनमकी मैली चादर कैसे दाग छुड़ाऊँ॥
निर्मल वाणी पाकर तुमसे नाम न तेरा गाया
नैन मूँदकर हे परमेश्वर कभी न तुमको ध्याया
मन वीणाकी तारें टूटीं अब क्या गीत सुनाऊँ॥
इन पैरोंसे चलकर तेरे पास कभी न आया
जहाँ-जहाँ हो रही तेरी पूजा कभी न शीश झुकाया
हे हरिहर मैं हारके आया अब क्या हार चढाऊँ॥

(४२१)

(लागी राम भजनसे प्रीत)२ करमाँ री सगाती राणा
कोई नहीं·······

एक गऊके दो-दो बाछड़ा हो, ज्यारो न्यारो-न्यारो भाग
एक तो शिवजीको नान्दियो हो राम
दूजो बिणजारो री बैल·······करमा·······

एक नारीके दोय दोय बालका हो राम, ज्यारो न्यारो-२ भाग
एक तो भोगे राजगद्दी हो राम
दुजो भीख माँगने जाय·······करमा·······

एक माटीका दो-दो माटला हो राम, ज्यारो न्यारो-२ भाग
एक तो शिवजीके जल चढ़े हो राम
दुजो समसानेमें जाय·······करमा·······

मीरा तो जन्मी मेड़ता हो राम
ब्याही शिव शोद्या री पोल
मीरा न गिरधर मिलाजी नटवर नन्द किशोर
उतरी भव सागरसे पार·······करमा·······

(४२२)

लिख दो म्हारे रोम रोम में, राम राम हो रमापति।
राम राम हो रघुपति, लिख दो जय सियारामजी॥ टेर॥
शीश पे म्हारे शिवजी लिख दो, कानों में कन्हैया राम-२।
नैंनों में म्हारे नरसिंग लिख दो, नाक में नन्दजी रो लाल।
लिख दो जय सियारामजी॥ टेर॥
होठों पर हरिॐ लिख दो, दातों पे दयालु राम-२।
जीभ पे जगदम्बा लिख दो, कान में कमलापति राम।
लिख दो जय सियारामजी॥ टेर॥
गले पे गिरधारी लिख दो, मुख पर मुरलीवाला श्याम-२।
भुजा में भगवान लिख दो, हाथों में हनुमानजी राम।
लिख दो जय सियारामजी॥ टेर॥
छाती पर चतुर्भुज लिख दो, पेट में परमेश्वर राम-२।
नाभि पे नारायण लिख दो, जांघो पे जगदीश हो राम।
लिख दो जय सियारामजी॥ टेर॥
गोडों पे गोविन्द लिख दो, पीन्डीमें परमानन्द हो राम।
एड़ी में सब तीरथ लिख दो, चरणों में प्रभु चारो धाम।
लिख दो जय सियारामजी॥ टेर॥

(४२३)

लेल्योजी थे लेल्योजी थे, लेल्यो हरिको नाम
मैं ब्योपारी राम नामका प्रेमनगर है गाँव
प्रेम नगरसे मैं हूँ आया, हरि नामका सौदा ल्याया
च्यार खूँटमें चली दलाली, आढत चारूँ धाम॥ १॥ मैं०

सोना-चाँदी कुछ नहीं लेता, माल मौफतमें ऐसे ही देता
नाम हरि अनमोल रतन है, कोड़ी लगे न दाम॥ २॥ मैं०
बाट तराजू कुछ नहीं भाई, मोल तोल उसका कुछ नाहीं
करल्यो सौदा संत संगतका, टोटेका नहीं काम॥ ३॥ मैं०
राम नामका खुल्या खजाना कूद पड़्या नर चतुर सुजाना
सुगरा सेन तुरत पहिचाने, नुगरेका नहीं काम॥ ४॥ मैं०
पाँचुकी परतीत न किजे, नाम हरिका निर्मल लीजे
मगन होय हरिके गुण गावो, भजल्यो सीताराम॥ ५॥ मैं०
सस्ता माल नफा है भारी, सहस्रगुनी देव साहुकारी
करल्यो सुरता राम भजनमें मिल जाये राधेश्याम॥ ६॥ मैं०
नाम हरि अनमोल रतन है, सब धनसे यह ऊँचा धन है
कह गिरधारी लाल और धन, मिथ्या जान तमाम॥ ७॥ मैं०

(४२४)

वाह वाह रे मौज फकीरान्दी॥ टेर॥
कभी चबावे चना चबेना, कभी लहरियाँ खीरान्दी॥
कभी तो ओढ़े साल दुसाले, कभी गुदड़ियाँ लीरान्दी॥
कभी तो सोवे रंग महल में, कभी तो गली अहीरान्दी॥
मंग तंग के टुकड़े खान्दे, चाल चले है अमीरान्दी॥
शाह हुसेन फकीर साईंदा सीख लगी गुरु पीरान्दी॥

(४२५)

वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीड पराई जाणे रे।
परदुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे॥
सकळ लोक माँ सहुने वंदे, निंदा न करे केनी रे।
वाच काछ मन निश्छळ राखे, धन-धन जननी तेनी रे॥

समदृष्टि ने तृष्णा-त्यागी, परस्त्री जेने मात रे।
जिह्वा थकी असत्य न बोले परधन नव झाले हाथ रे॥
मोह माया व्यापे नहिं जेने, दृढ़ वैराग्य जेना मनमाँ रे।
राम नाम सूं ताळी लागी, सकळ तीरथ तेरा तनमाँ रे॥

(४२६)

राम नाम अति मीठा है कोई गा के देख ले।
आ जाते है राम कोई बुला के देख ले॥ टेर॥
जिस मनमें अभिमान भरा हो राम कहाँ से आए।
घोर अन्धेरा हो जिस घर में मेहमान कहाँसे आए।
राम-नाम की ज्योति कोई जगा के देख ले।
राम.....
आ जाते है राम तभी जब ही कोई बुलाने वाला।
बिक जाते है राम कोई हो मोल चुकाने वाला।
राम-नाम रस पीकर और पिला के देख ले।
राम.....
जब-जब याद किया भक्तों ने दौड़े-दौड़े आये।
अपने भक्तों के कारण प्रभु कई-कई रूप बनाये।
राम-नाम को हृदय में रमा के देख ले।
राम.....
मन भगवान् का मन्दिर है जहाँ मैल न आने देना।
हीरा जन्म अनमोल मिला है इसे व्यर्थ गँवा न देना।
शीश दिए हरि मिलते हैं झुका के देख ले।
राम.....

(४२७)

राम मिलण कद होसी ओ म्हारा जूना जोशी
राम मिलण कद होसी॥ टेर॥
आओ जोशीजी, म्हारे बैठो आंगणियै-२
बाँच सुणाओ थारी पोथी ओ म्हारा जूना जोशी
राम मिलण.........
सोने रूपेरी जोशी, कलम घड़ावाँ-२,
ऊपर जड़ावाँ माणक मोती ओ म्हारा जूना जोशी,
राम मिलण.........
खीर खांड रा जोशी इमरत भोजन,
नौत जीमावा थाँरा गोती ओ म्हारा जूना जोशी,
राम मिलण.........
पाँच मोहर री जोशी दिखेणा दिरावाँ,
हीरा जड़वाँ थारी पोथी ओ म्हारा जूना जोशी,
राम मिलण.........
बाई मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर,
हरिजी मिल्या सुख होसी ओ म्हारा,
जूना जोशी, राम मिलण कद होसी।
राम मिलण.........

(४२८)

शरणमें आये हैं हम तुम्हारी,
दया करो हे दयालु भगवन्।
सम्भालो बिगड़ी दशा हमारी,
दया करो हे दयालु भगवन्॥
न हममें बल है न हममें शक्ति,

न हममें साधन न हममें भक्ति।
तुम्हारे दरके हैं हम भिखारी,
दया करो हे दयालु भगवन्॥

जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक,
जो तुम हो पालक तो हम हैं बालक।
जो तुम हो ठाकुर तो हम पुजारी,
दया करो हे दयालु भगवन्॥

सुना है हम अंश हैं तुम्हारे,
तुम्हीं हो सच्चे प्रभु हमारे।
तो सुध हमारी है क्यों बिसारी,
दया करो हे दयालु भगवन्॥

बुरे हैं जो हम तो हैं तुम्हारे,
भले हैं जो हम तो हैं तुम्हारे।
तुम्हारे होकरके हम दुःखारी,
दया करो हे दयालु भगवन्॥

प्रदान कर दो महान शक्ति,
भरो हमारेमें ज्ञान भक्ति।
तभी कहाओगे ताप हारी,
दया करो हे दयालु भगवन्॥

(४२९)

सजन रे झूठ मत बोलो,
खुदाके पास जाना है।
न हाथी है न घोड़ा है,
वहाँ पैदल ही जाना है। सजन रे………

लड़कपन खेलमें खोया,
जवानी नींद भर सोया,
बुढ़ापा देखकर रोया-२
यही किस्सा पुराना है। सजन रे.........
तुम्हारे महल चौबारे,
यहीं रह जायेंगे सारे,
अकड़ किस बातकी प्यारे-२
ये सिर फिर भी झुकाना है। सजन रे.........

(४३०)

संध्या सुमिरन करो रे, मन मेरो संध्या सुमिरन करो रे
काहे रो दिवलो, काहे री बाती-२
काहे रो घृत सँजोयो रे-२, मन मेरो.......
सोने रो दिवलो, रेशम की बाती-२
गायाँ रो धीरत सँजोयो रे, मन मेरो.......
काहे री नाव, काहे रो खेवटियो-२
कुण उतारे बेड़ा पार रे-२, मन मेरो.......
सत री नाव धरम रो खेवटियो-२
हरिजी उतारे बेड़ा पार रे, मन मेरो.......
मात-पिता सत्‌गुरुजी री आज्ञा-२
अपने धरममें चालो रे, मन मेरो.......
चोरी, चकारी, पर घर निन्दा-२
तीन बाँता सू टल रे, मन मेरो.......
म्हारे तो आँगन तुलसी रो बिड़लो-२
बैठो माला जप रे, मन मेरो.......

गंगा जमुना और सरस्वती-२
त्रिवेणीमें तर रे, मन मेरो········
चन्द्र सखी भज बालकृष्ण छवि-२
हरि चरण चित्त धर रे, मन मेरो
संध्या सुमिरन कर रे॥

(४३१)

सबसे ऊँची प्रेम सगाई॥ टेर॥
दुरजोधनके मेवा त्यागे, साग बिदुर घर खाई॥ १॥
जूठे फल सबरीके खाये, बहु बिधि स्वाद बताई॥ २॥
प्रेमके बस नृप-सेवा कीन्हीं, आप बने हरि नाई॥ ३॥
राजसु-जग्य युधिष्ठिर कीन्हों, तामें जूँठ उठाई॥ ४॥
प्रेमके बस पारथ-रथ हाँक्यो, भूलि गये ठकुराई॥ ५॥
ऐसी प्रीति बढ़ी बृन्दाबन गोपिन नाच नचाई॥ ६॥
'सूर' कूर केहि लायक नाहीं, कहँ लगि करौं बड़ाई॥ ७॥

(४३२)

साधो! यह जग भर्म भुलाना।
राम नामका सुमिरन छोड्या माया हाथ बिकाना॥
मात पिता भाई सुत बनिता ताके रस लपटाना।
यौवन धन प्रभुताके मदमें अहनिसि रहै दिवाना॥ १ ॥
दीनदयाल सदा दुखभंजन तासो मन न लगाना।
जन नानक कोटिनमें किनहूँ गुरुमुख होय पिछाना॥ २ ॥

(४३३)

साधो! सहज समाधि भली।
गुरु प्रताप जा दिन तैं उपजी, दिन दिन अधिक चली॥ टेर॥
जहँ जहँ डोलूँ सोइ परिकम्मा, जो कछु करौं सो सेवा।
जब सोवौं तब करौं दंडवत, पूजौं और न देवा॥ १ ॥
कहौं सो नाम सुनौं सो सुमिरन, खावौं पिवौं सो पूजा।
गिरह उजाड़ एक सम लेखौं, भाव न राखौं दूजा॥ २ ॥
आँख न मूँदौं कान न रूँधौं, तनिक कष्ट नहिं धारौं।
खुले नयन पहिचानउँ हँसि हँसि, सुन्दर रूप निहारौं॥ ३ ॥
सबद निरंतर से मन लागा, मलिन वासना त्यागी।
ऊठत बैठत कबहु न छूटे, ऐसी तारी लागी॥ ४ ॥
कह 'कबीर' यह उनमनि रहनी, सोउ परगट करि भाई।
दुःख सुख से कोई परे परमपद, तेहि पद रहा समाई॥ ५ ॥

(४३४)

हरिः शरणम् हरिः शरणम् हरिः शरणम् हरिः शरणम्
न भूलें हम, न भूलें हम हरिः शरणम् हरिः शरणम्
प्रभु के हम, प्रभु के हम हरिः शरणम् हरिः शरणम्
चाहे सुख की छटा छाए, चाहे दुःख की घटा आए
खुशी हो या हजारों गम, हरिः शरणम् हरिः शरणम्
न दुनिया में कोई अपना, ये सब इक रात का सपना
सत्य हैं वह अमर प्रियतम, हरिः शरणम् हरिः शरणम्
प्रेम की जोत जग जाए, विरह की आग लग जाए
फिर बरसे प्रेमकी रिमझिम, हरिः शरणम् हरिः शरणम्
यही है विनती अपनी, यही है आरजू अपनी
हरि के होके निकले दम, हरिः शरणम् हरिः शरणम्

(४३५)

सुने री मैंने निरबलके बल राम।
पिछली साख भरूँ संतनकी, आड़े सँवारे काम॥ १॥
जब लगि गज बल अपनो बरत्यो नेक सर्‌यो नहिं काम।
निरबल ह्वै बल राम पुकार्‌यो, आये आधे नाम॥ २॥
द्रुपदसुता निरबल भइ ता दिन, तजि आये निज धाम।
दुस्सासनकी भुजा थकित भई, बसनरूप भये स्याम॥ ३॥
अप-बल, तप-बल और बाहु-बल, चौथो है बल दाम।
'सूर' किसोर कृपातें सब बल, हारेको हरिनाम॥ ४॥

(४३६)

सुवा भजले हरिको नाम, नामसे तिर जासी।
सुवा जीवत आवे काम, मर्‌याँ रे थारे सँग जासी॥ टेर॥
सुवा कुण थारा माय र बाप, कूण थारो सँग साथी।
भाई धरती हमारी मात, धरम म्हारो सँग साथी॥ १ ॥
सुवा छोड़्या माय र बाप, छोड़ दिया सँग साथी।
भाई आयो हँसलो एक, अकेलो उड़ जासी॥ २ ॥
सुवा सत्‌गुरु देवे ज्ञान, कटे जमकी फाँसी।
भाई गावे दास कबीर, जनम थारो रँग जासी॥ ३ ॥

(४३७)

सुखके सब साथी, दुःख में न कोय-२
मेरे राम, मेरे श्याम, तेरा नाम एक साचा
दूजा न कोय……………सुखके………
जीवन आनी जानी काया
झूठी जगकी झूठी माया

फिर काहेको सारी उमरिया-२
पापकी गठरी ढोए.........सुखके..........
ना कुछ तेरा ना कुछ मेरा
ये जग जोगी वाला फेरा
राजा हो या रंक सभीका-२
अंत एक-सा होय.........सुखके..........
बाहरकी तू माटी फाँके
मनके भीतर क्यों नहीं झाँके
उजले तनपर मान किया-२
मनका मैल ना धोय.........सुखके..........

(४३८)

सैंयाँ निकल गये मैं ना लड़ी थी।
इस कायाके दस दरवाजा ना जानूँ कौन खिड़की खुली थी॥
पाँच जेठनियाँ दस देरनियाँ ना जानूँ इनमें से कौन लड़ी थी॥
ना मैं बोली ना मैं चाली ओढ़े दुपट्टा मैं तो सोई पड़ी थी॥
कहै कमाली कबीरकी बेटी इस ब्याही से कुवाँरी भली थी॥
सैंयाँ निकल..........

(४३९)

हम आये शरण तुम्हारी है, ठुकरा न कहीं हमको देना।
भगवान दया के सागर हो, अपराध क्षमा सब कर देना॥ १॥
है पास ने मेरे बल बुद्धि, तप त्याग नहीं मन की शुद्धि।
प्रभु का ही सहारा है लेना, अपराध क्षमा सब कर देना॥ २॥
धन धाम नहीं कुछ भी अपना, मैं देख रहा हूँ क्यों सपना।
प्रभु आकर हमें जगा देना, अपराध क्षमा सब कर देना॥ ३॥

मैं भटक रहा हूँ इधर-उधर, कुछ पता नहीं अब जाँय किधर।
प्रभु, हमको मार्ग बता देना, अपराध क्षमा सब कर देना॥ ४॥
हम लगें डूबने जहाँ कहीं, हो कोई अपना वहाँ नहीं।
प्रभु आकर हमें बचा लेना, अपराध क्षमा सब कर देना॥ ५॥

(४४०)

हरिजी थांरा नाम हजार, काई नाम लिखा कंकोत्री,
थे तो रोज रोज बदलो मुकाम काई धाम लिखा कंकोत्री।
प्रभुजी थारा नाम हजार॥ टेर॥
अवध में रामा, मथुरा में कान्हा,
द्वारिका में राजा रणछोड़, काई नाम लिखा कंकोत्री॥ १॥
कोई केवे कौशल्यानन्दन, कोई केवे देवकीनन्दन,
कोई केवे नन्दजी रा लाल, काई नाम लिखा कंकोत्री॥ २॥
कोई केवे सीतापति, कोई केवे राधापति,
कोई केवे रूक्मणी भरतार, काई नाम लिखा कंकोत्री॥ ३॥
कोई केवे सीताराम कोई केवे राधेश्याम,
कोई केवे मदन गोपाल, काई नाम लिखा कंकोत्री॥ ४॥
नरसीजी रा सेठ साँवरा, शबरीजी रा प्रभु रामा,
मीराजी रा गिरधर गोपाल, काई नाम लिखा कंकोत्री॥ ५॥
थारे संता ने लिखा, थारे भक्तां ने लिखा,
जनम मरण मिट जाय, वो ही नाम लिखा कंकोत्री।
थारे चरणे शरण मिल जाय, वो ही धाम लिखा कंकोत्री॥ ६॥
हरिजी थारा ……………… ।

(४४१)

हरिः शरणम्, हरि शरणम्, हरि शरणम् हरि शरणम्।
सभी मिल प्रेम से बोलो, हरि शरणम्, हरि शरणम्॥
यही उपदेश मीरा को दिया था, श्याम सुन्दर ने।
आई आवाज घुंघरू से, हरि शरणम्, हरि शरणम्॥ १॥
यही उपदेश अर्जुन को दिया था, श्याम सुन्दर ने।
आई आवाज गीता से, हरि शरणम्, हरि शरणम्॥ २॥
यही उपदेश नारद को दिया था, श्याम सुन्दर ने।
आई आवाज वीणा से, हरि शरणम्, हरि शरणम्॥ ३॥
जब मन को ठेस लगती है, तो ठाकुर याद आते हैं।
नहीं होता कोई जिनका कन्हैया ही बचाते हैं।
तुम्हारा नाम सुनकर के, जगत को छोड़ आई हूँ।
मुझे अपना बना लेना, मैं आशा ले के आई हूँ।
हरिः शरणम्, हरि शरणम्, हरि शरणम्, हरि शरणम्॥

(४४२)

हरिका गुण गायले रे, जोगिया जब लग सुखी शरीर।
पीछें याद न आवसी रे, पींजर व्यापे पीर॥ टेर॥
भाग्य बड़ा म्हानें सन्त मिल्यारे, पड़्यो समँदमें सीर।
हंसा होय चुग लीजिये रे, नाम अमोलक हीर॥ १॥
अवसर दिन दिन बीत रयो रे, ज्यूं अँजलीको नीर।
फेर न हंसो आवसी रे, मानसरोवर तीर॥ २॥
जोबन थकाँ भज लीजिये रे, देर न कीजे बीर।
चाल बुढ़ापो आवसी रे, रहे ना मनमें धीर॥ ३॥

सब देवनको देव रामजी, सब पीरन को पीर।
सहजराम भज लीजिये रे, हरि है सुखकी सीर॥ ४ ॥

(४४३)

हेरी मैं तो प्रेम दिवाणी, मेरा, दरद न जाणै कोय॥ टेर।
घायल की गति घायल जाणै, की जिण लाई होय।
जौहरि की गति जौहरि जाणै, की जिन जौहर होय।
सूळी ऊपरि सेज हमारी, सोवण किस बिध होय।
गगन मँडळ पै सेज पिया की, किस बिध मिलणा होय॥
दरद की मारी बन बन डोलूँ, बैद मिळ्या नहिं कोय।
मीराँ की प्रभु पीर मिटेगी, जद बैद साँवळिया होय।

(४४४)

श्री मन्नारायण नारायण नारायण, लक्ष्मी नारायण नारायण नारायण॥ टेर॥
विष्णु पुराण भगवत गीता वालमीकिजी की रामायण। श्रीमन्नारायण...
चारिहुँ वेद पुराण अष्टदश वेदव्यासजी की पारायण। श्रीमन्नारायण...
नारायण के चरण कमल पर, कोटि काम छवि वारायण। श्रीमन्नारायण...
शंख चक्र गदा पद्म बिराजे, गल कौस्तुभ मणि धारायण। श्रीमन्नारायण...
सरयू के तीर अयोध्या नगरी, श्रीरामचन्द्र अवतारायण श्रीमन्नारायण...
यमुना के नीरे तीरे मथुरानगरी, कृष्णचन्द्र अवतारायण। श्रीमन्नारायण...
जो नारायण नाम लेत हैं पाप होत सब छारायण। श्रीमन्नारायण...
जो कोई भक्ति करे माधव की माता पिता कुल तारायण। श्रीमन्नारायण...
माधव दास आश रघुवर की भवसागर भये परायण। श्रीमन्नारायण...

सत्य नारायण नारायण नारायण। श्रीमन्नारायण...
लक्ष्मी नारायण नारायण नारायण नारायण। श्रीमन्नारायण...
ब्रदी नारायण नारायण नारायण नारायण। श्रीमन्नारायण...
भज मन नारायण नारायण नारायण। श्रीमन्नारायण...

(४४५) विविध कीर्तन

१. श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेवाय!
हे नाथ नारायण वासुदेव-२

२. जय राधे जय राधे राधे, जय राधे जय श्री राधे,
जय कृष्णा जय कृष्णा कृष्णा, जय कृष्णा जय श्री कृष्णा

३. राधे कृष्ण राधे कृष्ण कृष्ण, कृष्ण राधे राधे,
राधे श्याम राधे श्याम श्याम श्यामा राधे राधे ·····

४. मेरे तो आधार सीताराम के चरणारविन्द,
राम के चरणारविन्द राघव के चरणाविन्द

५. गोविन्द मेरो है, गोपाल मेरो है।
श्री बाँके बिहारी नन्दलाल मेरो है॥

६. मेरो प्यारो नन्दलाल किशोरी राधे,
किशोरी राधे-किशोरी राधे, मेरो प्यारो नन्दलाल······

७. गोविन्द बोलो हरि गोपाल बोलो
राधा रमण हरि गोविन्द बोलो

८. रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम,
जय रघुनन्दन जय सियाराम, जानकी बल्लभ सीताराम

९. गोविन्द हरे गोपाल हरे, जय जय प्रभु दीन दयाल हरे।

१०. गोविन्द जय जय गोपाल जय जय
राधा रमण हरि गोविन्द जय जय

११. जय गौमाता जय गोपाल, भक्त वत्सल प्रभु दीन दयाल

१२. हमारो धन राधा, श्री राधा श्री राधा
परम धन राधा राधा राधा राधा राधा ......

१३. हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

१४. श्री राधे गोविन्द भज मन श्री राधे,
श्री राधे श्री राधे श्री राधे श्री राधे ......

१५. हरिः शरणम्, हरिः शरणम् हरिः शरणम् हरिः शरणम्।
दयालु राम के शरणम्, कृपालु कृष्ण के शरणम्॥

१६. अच्युतं केशवम् रामनारायणं, कृष्णं दामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिका वल्लभं, जानकी नायकं श्रीरामचन्द्र भजे॥

१७. ॐ गं गणपतयै नमो नमः सिद्धि विनायक नमो नमः।
अष्ट विनायक नमो नमः, गणपति बाप्पा मोरिया॥

१८. ॐ महालक्ष्मियै नमो नमः विष्णुप्रियायै नमो नमः।
धन प्रदायै नमो नमः, विश्व जन्यै नमो नमः॥

१९. गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे, गोविन्द गोविन्द मुकुन्द कृष्णः।
गोविन्द गोविन्द रथांग पाणे, गोविन्द गोविन्द नमो नमस्ते॥

२०. श्री राम जय राम जय जय राम, पतित पावन नाम जय-जय राम।
श्रीराम जय राम जय जय राम, अशरण शरण धाम जय जय राम॥

२१. श्री मन नारायण नारायण हरिः हरिः।
भज मन नारायण नारायण हरिः हरिः।
सत्य नारायण नारायण हरिः हरिः॥

२२. श्री मन नारायण नारायण नारायण, भज मन नारायण नारायण नारायण।
सत्य नारायण नारायण नारायण, श्रीमन नारायण नारायण नारायण॥

बाबा रामदेवजी (रुणीचा)

(४४६)

अर्जी थे म्हारी सुणल्यो रूणीचा रा धनिया
आवो पधारो म्हारे आंगणिये
आस विश्वास करता थारी बाट जोवा हाँ
रामो पीर आसी-आसी करके दीनड़ा खोवा हाँ
राताँ बिताऊँ दे-दे जागणीयाँ॥ १॥
दिन बीत्या रात बीती माला थारी फेरता
वर्षांका वर्ष बीत्या बाबा थाने टेरता
हाथ री दुःखण लागी आंगलीया॥ २॥
सारंगी सरीख बणियो मन इक तारो रे
भोला-सा भक्ता रो बाबा थे तो कारज सारो रे
आवो म्हारी मनड़ा री माला रा मिणिया॥ ३॥
प्रेमकी पुकार सुणके रामो पीर आयो है
दास थारा दर्शन पाके बहुत सुख पायो है
चरणका चाकर छोगा राम बणिया॥ ४॥

(४४७)

खमा खमा हो धणियाँ रूणिचारा रामदेव।
थाने तो ध्यावे आखो मारवाड़ हो आखो गुजरात हो
॥ अजमालजी रा कँवरा॥
पहलो तो परचो माता मेणा दे ने दिन्यो।
कोई उफणतो दूध उतार्‌यो धणियाँ
॥ अजमालजी रा कँवरा॥

दुजो तो परचो लक्ष्मी बणजाराने दिन्यो।
कोई मिसरी रो लूण बणायो धणिया
॥ अजमालजी रा कँवरा॥

तीजो तो परचो रतना राईके ने दिन्यो।
कोई कुँए सुँ बाहर निकाल्यो धणिया
॥ अजमालजी रा कँवरा॥

चौथो तो परचो नेतल राणीने दिन्यो।
कोई फेरामें पगल्या चलायो धणिया
॥ अजमालजी रा कँवरा॥

पाँचवो तो परचो बाई सुगणाने दिन्यो।
कोई हेले सुं भाणुड़ो जिवायो धणिया
॥ अजमालजी रा कँवरा॥

(४४८)

थे युग युग लेवो अवतार कद घर आवोला
मैणादे रा लाडला राणी नेतल रा भरतार॥ टेर॥
थे आईजो घराँ, थारो आदर कराँ, लीले न लाईजो सागे
उनालो बुरो, नहीं पाणी पुरो, तावड़ियो दोरो लागे
सरदी रो नहीं जाबतो, थारो कींकर होसी सार॥ कद घर.......
चोमासो भलो, म्हारे पाणी सलो, थारो मन सूँ करू मिजमानी
थंारे ऊँचो ऊँचो, कर दूला डुचो, म्हारी खेताँरी करो निगरानी
काचर बोर मतीरा मेवा, घणी करूला मनवार॥ कद घर.......
थारे लीले ताँई, घणो लीलो साँई, मत मनमें चिंता करज्यो

म्हारे नेड़ी ठाँणी, घणो मीठो पाणी, मत कोई बात सू डरज्यो
मती लगायो देर, कि म्हांरे, हुलसे हियो अपार॥ कद घर...
बाजरड़ी नुई, गोरी गाय दुई, कर खीर सोगरा खावो
हरजी रे घराँ, थे आइजों सराँ, म्हाने बेगा दरस दिखावो
हम भगत है आपके, गावाँला गुण करतार॥ कद घर...

(४४९) श्रीरामदेव बाबाकी आरती

पिछम धरा सूं म्हारा बापजी पधारिया।
घर अजमल अवतार लियो।
लाछां सुगना करे हर री आरती।
हरजी भाटी चंवर ढुले॥ टेर॥
बीणा रे तंदूरा धणी रे नोबत बाजे।
झालर री झणकार पड़े॥ १॥
घीरत मिठाई हरी रे चढे रे चूरमो।
धूपां री महकार उड़े॥ २॥
गंगा, जमुना बहे रे सरस्वती।
जठे रामदेवबाबा स्नान करे॥ ३॥
दूरां रे देशां रा बाबा आवे थारे जातरी।
दरगा आगे बापजी ने नमन करे॥ ४॥
हरि शरणं में भाटी हरजी रे बोले।
नवों रे खण्डोंमें निशान धुरे॥ ५॥ लाछों सुगना॥

चारों धामकी महिमा

(४५०)

कौन दिशामें जगन्नाथ स्वामी, कौन दिशा रामनाथजी।
कौन दिशा रणछोड़ टीकम, कौन दिशा बद्रीनाथजी॥ १॥
पूर्व दिशा जगन्नाथ स्वामी, दक्षिण दिशा रामनाथजी।
पश्चिम दिशा रणछोड़ टीकम, उत्तर दिशा बद्रीनाथजी॥ २॥
कौन कारण जगन्नाथ स्वामी, कौन कारण रामनाथजी।
कौन कारण रणछोड़ टीकम, कौन कारण बद्रीनाथजी॥ ३॥
भोग कारण जगन्नाथ स्वामी, योग कारण रामनाथजी।
राज कारण रणछोड़ टीकम, तप कारण श्रीबद्रीनाथजी॥ ४॥
का चढ़त श्री जगन्नाथ स्वामी, का चढ़त श्रीरामनाथजी।
का चढ़त रणछोड़ टीकम, का चढत श्री बद्रीनाथजी॥ ५॥
अटका चढत जगन्नाथ स्वामी, गंगा चढत श्री रामनाथजी
माखनमिसरी रणछोड़ टीकम, फल चढ़त श्री बद्रीनाथजी॥ ६॥
कौन पद श्री जगन्नाथ स्वामी, कौने पद श्रीरामनाथजी।
कौने पद रणछोड़ टीकम, कौन पद श्री बद्रीनाथजी॥ ७॥
ऊपर पद जगन्नाथ स्वामी, परम पद श्री रामनाथजी।
अगम पद श्री रणछोड़ टीकम, निगम पद श्री बद्रीनाथजी॥ ८॥
चारधामकी पंचरत्न आरती, निशिदिन जो गावत है।
ध्यान जप तप पूर्ण सिद्धि, आपमें आप समावत है॥ ९॥
चलो हो साधो चलो हो संतों, रेत कुण्ड नहाइये।
दर्श द्यौ केदारनाथ स्वामी, आवागमन मिटाइये।
चलो हो साधो चलो हो संतों, तप्त कुण्ड नहाइये।
दर्श द्यौ श्री बद्रीनाथ स्वामी, आवागमन मिटाइये॥ ९॥

भजन गणगौर

(४५१)

गणपतिको शीश नवाऊँ ए, श्री चरणन ध्यान लगाऊँ ए,
माँ गवरल रा गुण गाऊँ ए, ईशरजीको ध्यान धराऊँ ए।
सखियाँ सब मन हरखाई ए, माँ गवरल पूजण आई ए,
केसर जल भरकर लाई ए, माता गवरलने नहलाई ए।
चंदन रो चौक पुरायो ए, हीराँ रो बाजोट बिछायो ए,
बहु विध शृंगार धरायो ए, माँ गवरल रो रूप सजायो ए।
खूब इत्र सुगंधि लगाई ए, चूनरी कसूंबल ओढाई ए,
हाथोंमें मेंहदी रचाई ए, आभूषण अंग सजाई ए।
शुभ रंग रंगोली बनाई ए, सतरंगी गुलाल लगाई ए,
चित मन रो ध्यान धरोई ए, सब मंगल गीत सुनाई ए।
ईशरजी म्हारे घर आया ए, बाई गवरल रे मन भाया ए,
हेमाचलजी मन हरखाया ए, मैनाजी ने घणा सुहाया ए।
गवरजा ईशरजीने प्यारी ए, वारों रूप अनूपम भारी ए,
गवर ईशर री जोड़ी ए, कैसी अद्भुत अविचल जोड़ी ए।
सोने रो थाल सजायो ए, जामें छप्पन भोग धरायो ए,
कर कर मनुहार जिमायो ए, पानको बीड़ो चढ़ायो ए।
ईशर संग विदा कराई ए, बाई गवरल ने भोळाई ए,
म्हारी अंखियाँ भर भर आई ए, गिरधरने पूजा गाई ए।

गृहस्थके लिये उपयोगी बातें

(४५२)

'आतिथ्य' ही घरका वैभव है।
'प्रेम' ही घरकी प्रतिष्ठा है।
'व्यवस्था' ही घरकी शोभा है।
'समाधान' ही घरका सुख है।
'सदाचार' ही घरका सुवास है।
ऐसे घरमें सदा प्रभुका वास है।
ऋण हो, ऐसा खर्च मत करो।
पाप हो, ऐसी कमाई मत करो।
क्लेश हो, ऐसा मत बोलो।
चिंता हो, ऐसा जीवन मत जीओ।
रोग हो, ऐसा मत खाओ।

(४५३) गृहस्थके लिये महामन्त्र

योगी बनो, पर रोगी नहीं। स्वस्थ बनो, पर मोटे नहीं।
बलवान बनो, पर दुष्ट नहीं। खरै बनो, पर खारे नहीं।
धीर बनो, पर सुस्त नहीं। सरल बनो, पर मूर्ख नहीं।
सावधान बनो, पर वहमी नहीं। उत्साही बनो, पर जल्दबाज नहीं।
न्यायी बनो, पर निर्दयी नहीं। चंगे बनो, पर दुर्बल नहीं।
दृढ़ बनो, पर हठी नहीं। प्रेमी बनो, पर पागल नहीं।
समालोचक बनो, पर निन्दक नहीं। नम्र बनो, पर चापलूस नहीं।
स्पष्ट बनो, पर उद्दण्ड नहीं। चतुर बनो, पर कुटिल नहीं।

(४५४) स्मरणीय बातें

तीन चीजें किसीका इन्तज़ार नहीं करतीं—
समय, मौत और ग्राहक।
तीन चीजें जीवनमें एक बार मिलती हैं—
माँ, बाप और जवानी।
तीन चीजें छिपाने योग्य हैं—
धन, दान और भोजन।
तीन चीजोंसे बचनेका प्रयास करना चाहिये—
बुरी संगत, स्वार्थ और निन्दा।
तीन चीजोंमें मन लगानेसे उन्नति होती है—
ईश्वर, परिश्रम और विद्या।
तीन चीजें कभी नहीं भूलनी चाहिये—
माता, पिता और गुरु।
तीन चीजोंको सदैव वशमें रखना चाहिये—
काम, लोभ और मद।
तीनपर सदा दया करो—
बालक, भूखे और पागल।
तीन चीजें निकल जानेपर वापिस नहीं आतीं—
तीर कमानसे, बात जुबानसे और प्राण शरीरसे।

जीवनके मूल आधार

(४५५)

आनन्दके लिये	—	संगीत
तृप्तिके लिये	—	सन्तोष
खानेके लिये	—	गम
त्यागनेके लिये	—	लोभ

पीनेके लिये	—	क्रोध
करनेके लिये	—	सेवा
निगलनेके लिये	—	अपमान
प्राप्त करनेके लिये	—	यश
व्यवहारके लिये	—	नीति
फेंकनेके लिये	—	ईर्ष्या
लेनेके लिये	—	ज्ञान
छोड़नेके लिये	—	मोह
देनेके लिये	—	दान
रखनेके लिये	—	इज्जत
जीतनेके लिये	—	प्रेम
बोलनेके लिये	—	सत्य
धारनेके लिये	—	धैर्य

सच्ची और पक्की बात

यदि आपको दुःख, अशान्ति, आफत चाहिये तो शरीर-संसारसे सम्बन्ध जोड़ लो, उनको अपना मान लो।

और

यदि सुख, शान्ति, आनन्द, मस्ती चाहिये तो
परमात्मासे सम्बन्ध जोड़ लो,
उनको अपना मान लो।
चुनाव आपके हाथमें है।

—ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराजके प्रवचनसे

(४५६) श्रीगणेशजी

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा
माता जिसकी पार्वती पिता महादेवा॥ जय गणेश देवा०॥
हार चढ़त फूल चढ़त और चढ़त मेवा
लड्डुवन को भोग लागत सन्त करे सेवा॥ जय गणेश देवा०॥
एक दन्त दयावन्त चार भुजा धारी
माथे पे सिन्दुर सोहे (मुसे की सवारी) २
दुखियों के दुख हरे, परमानन्द देवा॥ जय गणेश देवा०॥
अन्धन को आँख देवे कोढ़ीयन को काया
बाँझन को पुत्र देवे (निर्धन को माया) २
भव से पार करो नाथ, भजन करूँ तेरा॥ जय गणेश देवा०॥
जो तेरा ध्यान करे ज्ञान मिले उसको
छोड़ तुझे और भला (ध्याऊँ मैं किसको) २
हे देव कृपा करो, कष्ट हरो मेरा॥ जय गणेश देवा०॥

(४५७) श्रीगणेशजी

गणपति की सेवा, मंगल मेवा, सेवा से सब विघ्न टरैं।
तीन लोक तैंतीस देवता, द्वार खड़े, सब अर्ज करैं॥ टेर ॥
ऋद्धि-सिद्धि दक्षिण बाम विराजे, अरू आनन्द से चँवर करैं।
धूप दीप और लिये आरती, भक्त खड़े जयकार करैं॥ गण०॥
गुड़ के मोदक भोग लगत है, मूषक वाहन चढ़ा करैं।
सौम्य रूप से ये गणपति को, विघ्न विभाज्या दूर परैं॥ गण०॥

भादोमास और शुक्ल चतुर्थी, दिन दोपारां दूर परै।
लियो जन्म गणपति प्रभुजी, सुनि दुर्गा मन आनन्द भरै॥ गण०॥
अद्भुत बाजा बजा इन्द्र का, देववधू जहँ गान करैं।
श्री शंकर के आनन्द उपज्यो, नाम सुन्या सब विघ्न टरै॥ गण०॥
आनि विधाता बैठे आसन, इन्द्र अप्सरा निरत करै।
देख वेद ब्रह्माजी जाको, विघ्नविनाशक नाम धरै॥ गण०॥
एक दन्त गजबदन बिनायक, त्रिनयन रूप अनूप धरैं।
पग थम्बासा उदर पुष्ट है, देख चन्द्रमा हास्य करैं॥ गण०॥
दे श्राप श्री चन्द्रदेव को, कलाहीन तत्काल करैं।
चौदह लोक में फिरै गणपति, तीन भुवन में राज्य करैं॥ गण०॥
उठ प्रभात जप करै ध्यान कोई, ताके कारज सर्व सरै।
पूजा काल गावै आरती, ताके शिर यश छत्र फिरै॥ गण०॥
गणपति की पूजा पहलां करनी, काम सभी निर्विघ्न सरै।
श्री प्रताप गणपतिजी की, हाथ जोड़ स्तुति करैं॥ गण०॥

(४५८) ॥ गौ माता की आरती॥

आरती गैया मैया की, दुलारी कृष्ण कन्हैया की
जहाँ से प्रकट हुई सृष्टि, करे नित पंच गव्य वृष्टि
सकल पर रखती सम दृष्टि, जीवन में रंग, जीने का ढंग
बताती बात बंधैया की, दुलारी कृष्ण कन्हैया की
आरती गैया मैया की, दुलारी कृष्ण कन्हैया की॥ १॥
तुम्ही हो अमृत की नाभि, शमन करती हो विष का भी
तुम्ही माँ मुरत ममता की, तुम्हारी झलक रहे ना अलग
चले पथ नाग नथैया की, दुलारी कृष्ण कन्हैया की।
आरती गैया मैया की, दुलारी कृष्ण कन्हैया की॥ २॥

तुम्ही पर निर्भर है खेती, तुम्ही निर्बल को बल देती
नहीं बदले में कुछ लेती, तुम्हारा गव्य, बनावे भव्य
दिव्यता आवे हैया की, दुलारी कृष्ण कन्हैया की।
आरती गैया मैया की, दुलारी कृष्ण कन्हैया की॥ ३॥
तुम्हीं से सुखी है ये धरती, सभी के दुखड़े तुम हरती।
भागवत गान तुम ही करती, तुम्हीं से संत, करे दुःख अंत।
भव से पार लगैया की, दुलारी कृष्ण कन्हैया की।
आरती गैया मैया की, दुलारी कृष्ण कन्हैया की॥ ४॥

"जय गौ माता-जय गोपाल"

(४५९) जुगलकिसोरजी

आरती जुगलकिसोरकी कीजै, तन मन धन न्योछावर कीजै॥ टेक॥
गौर स्याम मुख निरखन कीजै, प्रेम स्वरूप नयन भर पीजै॥ १ ॥
रबि ससि कोटि बदनकी सोभा, ताहि देखि मेरो मन लोभा॥ २ ॥
कंचन थाल कपूरकी बाती, हरि आये निर्मल भइ छाती॥ ३ ॥
फूलनकी सेज फूलनकी माला, रत्न सिंहासन बैठे नन्दलाला॥ ४ ॥
मोर मुकुट कर मुरली सोहै, नटवर वेष निरख मन मोहै॥ ५ ॥
ओढ़ें पीत नील पट सारी, कुंजन ललना-लालबिहारी॥ ६ ॥
श्रीपुरुषोत्तम गिरिवरधारी, आरति करत सकल ब्रजनारी॥ ७ ॥
नँदनंदन बृषभानु-किसोरी, परमानँद प्रभु अबिचल जोरी॥ ८ ॥

(४६०) आरती कुञ्जबिहारीजी की

आरती कुंजबिहारीकी, श्रीगिरधर कृष्नमुरारीकी ॥ टेर ॥
गलेमें बैजन्तीमाला, बजावे मुरलि मधुर बाला ॥
श्रवनमें कुण्डल झलकाता, नन्दके नन्द, श्रीआनन्दकन्द।
मोहन ब्रज चन्द्र, राधिका रमण बिहारीकी ॥ श्रीगिरधर........ ॥ टेर ॥
गगन सम अंग कान्ति काली, राधिका चमक रही आली।
लतनमें ठाढ़े बनमाली, भ्रमर-सी अलक, कस्तूरी-तिलक।
चन्द्र-सी झलक, ललित छबि स्यामा प्यारीकी ॥ श्रीगिरधर... ॥ टेर ॥
कनकमय मोर-मुकुटबिलसैं, देवता दरसनको तरसैं।
गगनसों सुमन रासि बरसै, बजे मुरचंग, मधुर मृरदंग।
ग्वालिनी संग, अतुल रति, गोपकुमारीकी। श्रीगिरधर... ॥ टेर ॥
जहाँ ते प्रकट भई गंगा, सकल-मल-हारिणि श्रीगंगा।
स्मरन ते होत मोह-भंगा, बसी शिव सीस, जटाके बीच।
हरै अघ कीच, चरन छबि श्रीबनवारीकी ॥ श्रीगिरधर... ॥ टेर ॥
आरती कुंजबिहारीकी, श्रीगिरधर कृष्नमुरारीकी ॥
चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही यमुना तट बेनू।
चहूँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू, हँसत मुख मंद, चाँदनी चंद ॥
कटत भव-फन्द, टेर सुनु दीन भिखारीकी ॥ श्रीगिरधर........ ॥
आरती कुंजबिहारीकी, श्रीगिरधर कृष्नमुरारीकी ॥

(४६१) श्रीजानकीनाथजी

ॐ जय जानकिनाथा, जय श्रीरघुनाथा।
दोउ कर जोरें बिनवौं प्रभु! सुनिये बाता ॥ ॐ ॥
तुम रघुनाथ हमारे प्रान, पिता-माता।

तुम ही सज्जन-संगी, भक्ति-मुक्ति दाता॥ ॐ॥
लख चौरासी काटो, मेटो यम-त्रासा।
निसिदिन प्रभु मोहि राखिये, अपने ही पासा॥ ॐ॥
राम भरत लछिमन सँग शत्रुहन भैया।
जगमग ज्योति विराजै, शोभा अति लहिया॥ ॐ॥
हनुमत नाद बजावत, नेवर झमकाता।
स्वर्ण थाल कर आरती कौसल्या माता॥ ॐ॥
सुभग मुकुट सिर, धनु सर कर शोभा भारी।
मनीराम दर्शन करि पल-पल बलिहारी॥ ॐ॥
जय जानकिनाथा हो प्रभु, जय श्री रघुनाथा।
हो प्रभु जय सीता माता, हो प्रभु जय लक्ष्मण भ्राता,
हो प्रभु जय चारौं भ्राता, हो प्रभु जय हनुमत दासा,
दोऊ कर जोड़े विनवौं, प्रभु मेरी सुनो बाता॥ ॐ॥

(४६२) जानकी बल्लभ

जानकी बल्लभलाल की सखि आरती कीजै।
सुन्दर बदन अलौकिक नयनन फल दीजै॥
कुण्डल ललित कपोल नासा श्रुति अलक विराजै।
कण्ठा कण्ठ सुहावना गल मुक्ता साजै॥ १॥
पाग बनी जरी तार की दुपटा जरी तारे।
पटुका है पचरंग का मणि जड़ित किनारे॥ २॥
सियाजी को सोहे लाली चुनड़ी रविज्योति जलाजै।
रसिक अलोकी स्वामिनी भूषण छवि साजै॥ ३॥

(४६३) श्रीजगदीश्वर

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु! जय जगदीश हरे।
भक्तजनोंके संकट छिनमें दूर करे॥ ॐ जय जगदीश० ॥
जो ध्यावै फल पावै, दुःख विनसै मनका॥ प्रभु० ॥
सुख-सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तनका॥ ॐ जय जगदीश० ॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी॥ प्रभु० ॥
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी॥ ॐ जय जगदीश० ॥
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी॥ प्रभु० ॥
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥ ॐ जय जगदीश० ॥
तुम करुणाके सागर, तुम पालन-कर्ता॥ प्रभु० ॥
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥ ॐ जय जगदीश० ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती॥ प्रभु० ॥
किस बिधि मिलूँ दयामय! मैं तुमको कुमती॥ ॐ जय जगदीश० ॥
दीनबन्धु दुखहर्ता तुम ठाकुर मेरे॥ प्रभु० ॥
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे॥ ॐ जय जगदीश० ॥
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा॥ प्रभु० ॥
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतनकी सेवा॥ ॐ जय जगदीश० ॥
तन, मन, धन, न्यौछावर, सब कुछ है तेरा॥ प्रभु० ॥
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा॥ ॐ जय जगदीश० ॥
पूरण ब्रह्म की आरती, जो कोई नित गावे।
कहत "शिवानन्द" स्वामी, सुख-सम्पति पावे॥ ॐ जय जगदीश० ॥

(४६४) श्रीशिवजी

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥

जय शिव ओंकारा, भज शिव ओंकारा॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धङ्गी धारा॥ ॐ हर ३ महादेव॥
एकानन, चतुरानन, पंचानन राजै।
हंसानन, गरुडासन, वृषवाहन साजै॥ ॐ हर ३ महादेव॥
दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहै।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन-जन मोहै॥ ॐ हर ३ महादेव॥
अक्षमाला बनमाला, रुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी॥ ॐ हर ३ महादेव॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक गरुडादिक भूतादिक संगे॥ ॐ हर ३ महादेव॥
कर मध्ये कमण्डल चक्र शूल धारी।
सुखकारी दुखहारी जग पालन कारी॥ ॐ हर ३ महादेव॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका॥ ॐ हर ३ महादेव॥
त्रिगुण स्वामिकी आरति जो कोइ नर गावै।
भक्त शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावै॥ ॐ हर ३ महादेव॥
जय शिव ओंकारा, शिव पार्वती प्यारा। हो शिवगल रुण्डमाला॥
शिव बैल चढ़न वाला, शिव भूरी जटा वाला, शिव ऊपर जलधारा॥
जटा में गंग विराजत, मस्तक पर चन्द्र विराजत। ओढ़त मृगछाला,
ओ शिव मेटो यम फांसा, ओ शिव दरशन दो भोला॥ ॐ हर ३ महादेव॥

(४६५) आरती कैलाशवासी शंकरजी की

शीश गंग अर्द्धङ्ग पार्वती, सदा विराजत कैलाशी।
नन्दी भृंगी नृत्य करत है, गण भक्तन शिवके दासी॥
शीतल मन्द सुगन्ध पवन बहे, जहाँ बैठे शिव अविनासी।
करत गान गन्धर्व सप्तस्वर, राग रागनी मधुरासी॥
यक्ष रक्ष भैरव जहाँ डोलत, बोलत हैं वनके वासी।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर, भ्रमर करत हैं गुंजासी॥
कल्पद्रुम अरु पारिजात तरु, लाग रहे हैं लक्षासी।
कामधेनु कोटिक जहँ डोलत, करत दुग्धकी वर्षासी॥
सूर्यकान्त सम पर्वत शोभित, चन्द्रकान्त सम हिमरासी।
छहों ऋतु नित फलत रहत हैं, पुष्प चढत हैं वर्षासी॥
देव मुनिजनकी भीड़ पड़त हैं, निगम रहत जो नित गासी।
ब्रह्मा विष्णु हरको ध्यान धरत है, कछु शिव हमको फरमासी॥
ऋद्धि सिद्धिके दाता शंकर, सदा आनन्दित सुखरासी।
जिनको सुमिरन सेवा करता, छूट जाय यमकी फाँसी॥
त्रिशूलधरजीको ध्यान निरन्तर, मन लगायकर जो गासी।
दूर करो विपदा शिव तनकी, जन्म जन्म शिव पद पासी॥
कैलासी काशीके वासी, अविनाशी मेरी सुध लीजो।
सेवक जान सदा चरननको, अपनो जान कृपा कीजो॥
आप तो प्रभुजी सदा सयाने, अवगुण मेरो सब ढकियो।
सब अपराध क्षमा कर शंकर, किंकरकी विनती सुनियो॥
अभय दान दीज्यो प्रभु मोको सकल सृष्टिके हितकारी।
भोलेनाथ बाबा भक्त निरंजन, भव भंजन भव शुभकारी॥
काल हरो हर कष्ट हरो हर, दुःख हरो दारिद्र हरो।
नमामि शंकर भजामि भोले बाबा, हर हर शंकर आप शरणम्॥

(४६६) श्रीलक्ष्मीजी

ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसिदिन सेवत हर-विष्णू-धाता॥ ॐ॥
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ ॐ जय०॥
दुर्गारूप निरंजनि, सुख-सम्पति दाता।
जो कोइ तुमको ध्यावत, ऋधि-सिधि-धन पाता॥ ॐ जय०॥
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधिकी त्राता॥ ॐ जय०॥
जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्‌गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता॥ ॐ जय०॥
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता।
खान-पानका वैभव सब तुमसे आता॥ ॐ जय०॥
शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहिं पाता॥ ॐ जय०॥
महालक्ष्मी (जी) की आरति, जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥ ॐ जय०॥

(४६७) श्रीसत्यनारायणजी

जय लक्ष्मीरमणा, श्रीलक्ष्मीरमणा।
सत्यनारायण स्वामी जन-पातक-हरणा॥ जय०॥
रत्नजटित सिंहासन अद्भुत छबि राजै।
नारद करत निराजन घंटा ध्वनि बाजै॥ जय०॥
प्रकट भये कलि कारण, द्विजको दरस दियो।
बूढ़े ब्राह्मण बनकर कञ्चन-महल कियो॥ जय०॥

दुर्बल भील कठारो, जिनपर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी बिपति हरी॥ जय० ॥
वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्हीं।
सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर अस्तुति कीन्हीं॥ जय० ॥
भाव भक्तिके कारण छिन-छिन रूप धर्‍यो।
श्रद्धा धारण कीनी, तिनको काज सर्‍यो॥ जय० ॥
ग्वाल-बाल सँग राजा वनमें भक्ति करी।
मनवाञ्छित फल दीन्हों दीनदयालु हरी॥ जय० ॥
चढ़त प्रसाद सवायो कदलीफल, मेवा।
धूप-दीप-तुलसीसे राजी सत्यदेवा॥ जय० ॥
(सत्य) नारायणजीकी आरति जो कोइ जन गावै।
तन-मन-सुख-सम्पति मन-वाञ्छित फल पावै॥ जय० ॥

(४६८) श्रीअम्बाजी

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री॥ ॐ जय अम्बे० ॥
माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्ज्वलसे दोउ नैना, चंद्रवदन नीको॥ ॐ जय अम्बे० ॥
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठनपर साजै॥ ॐ जय अम्बे० ॥
केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी॥ ॐ जय अम्बे० ॥
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चंद्र दिवाकर सम राजत ज्योती॥ ॐ जय अम्बे० ॥

शुम्भ निशुम्भ विदारे महिषासुर-घाती।
धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती॥ ॐ जय अम्बे०॥
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥ ॐ जय अम्बे०॥
ब्रह्माणी, रुद्राणी तुम कमलारानी।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी॥ ॐ जय अम्बे०॥
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ।
बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरू॥ ॐ जय अम्बे०॥
तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता।
भक्तनकी दुःख हरता सुख सम्पति करता॥ ॐ जय अम्बे०॥
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मनवाञ्छित फल पावत, सेवत नर-नारी॥ ॐ जय अम्बे०॥
कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती।
(श्री) मालकेतुमें राजत कोटिरतन ज्योती॥ ॐ जय अम्बे०॥
(श्री) अम्बेजीकी आरति जो कोइ नर गावै।
कहत शिवानँद स्वामी, सुख सम्पति पावै॥ ॐ जय अम्बे०॥

(४६९) श्रीज्वाला कालीजी

'मंगल' की सेवा सुन मेरी देवा! हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
पान-सुपारी, ध्वजा-नारियल ले ज्वाला तेरी भेंट धरे।
सुन जगदम्बे! न कर बिलंबे संतनके भंडार भरे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली जै काली कल्याण करे॥ १॥
'बुद्ध' विधाता तू जगमाता मेरा कारज सिद्ध करे।
चरण-कमलका लिया आसरा शरण तुम्हारी आन परे।
जब-जब भीर पड़े भक्तनपर तब-तब आय सहाय करे।
संतन प्रतिपाली०॥ २॥

'गुरु' के बार सकल जग मोह्यो तरुणीरूप अनूप धरे।
माता होकर पुत्र खिलावै, कहीं भार्या भोग करे।
'शुक्र' सुखदाई सदा सहाई संत खड़े जयकार करे।
संतन प्रतिपाली० ॥ ३ ॥

ब्रह्मा विष्णु महेस फल लिये भेंट देने तेरे द्वार खड़े।
अटल सिंहासन बैठी माता सिर सोनेका छत्र फिरे।
वार 'शनिश्चर' कुंकुम बरणी जब लुंकड़पर हुकुम करे।
संतन प्रतिपाली० ॥ ४ ॥

खड्ग खपर त्रैशूल हाथ लिये रक्तबीजकूँ भस्म करे।
शुंभ निशुंभ क्षणहिमें मारे महिषासुरको पकड़ दले।
'आदित' वारी आदि भवानी जन अपनेका कष्ट हरे।
संतन प्रतिपाली० ॥ ४ ॥

कुपित होय कर दानव मारे, चण्ड मुण्ड सब चूर करे।
जब तुम देखौ दयारूप हो, पलमें संकट दूर टरे।
'सोम' स्वभाव धर्‍यो मेरी माता जनकी अर्ज कबूल करे।
संतन प्रतिपाली० ॥ ५ ॥

सात बारकी महिमा बरनी सब गुण कौन बखान करे।
सिंहपीठपर चढ़ी भवानी अटल भवनमें राज्य करे।
दर्शन पावें मंगल गावें सिध साधक तेरी भेंट धरे।
संतन प्रतिपाली० ॥ ६ ॥

ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे शिवशंकर हरि ध्यान करे।
इन्द्र कृष्ण तेरी करैं आरती चमर कुबेर डुलाय करे।
जय जननी जय मातु भवानी अचल भवनमें राज्य करे।
संतन प्रतिपाली० ॥ ७ ॥

(४७०) श्रीजगदम्बानी

ॐ जय आद्यशक्ति मा, जय आद्यशक्ति
देवी जय आद्यशक्ति
अखण्ड ब्रह्माण्ड दीपाव्या, पड़वे पण्डित मा।
ॐ जयो जयो मा जगदम्बे॥
द्वितीया बेय स्वरूप, शिवशक्ति जाणूँ। मा। देवी।
ब्रह्मा गणपति गाये, हर गाये हरि मा॥ ॐ जयो०॥
तृतीया त्रण स्वरूप, त्रिभुवन मा बेठा। मा। देवी।
दया थकी तरवेणी, तू तरवेणी मा॥ ॐ जयो०॥
चौथे चतुरा महालक्ष्मी मा, चचराचर व्याप्या। मा। देवी।
चार भुजा चौदीशा प्रगट्या दक्षिण मा॥ ॐ जयो०॥
पञ्चमी पञ्च ऋषि, पञ्चमी गुण पद्मा। मा। देवी।
पञ्च सहस्त्रत्याँ सोहे, पञ्चे तत्वो मा॥ ॐ जयो०॥
षष्ठी तू नारायणी मा, महिषासुर मार्‍यो। मा। देवी।
नर नारीना रूपे, व्याप्या सघले मा॥ ॐ जयो०॥
सप्तमी सप्त पताल, सावित्री सन्ध्या। मा। देवी।
गौ गङ्गा गायत्री, गौरी गीता मा॥ ॐ जयो०॥
अष्टमी अष्ट भुजा, आई आनन्दा। मा। देवी।
सुरनर मुनिवर जन्म्या देव दैत्यो मा॥ ॐ जयो०॥
नवमी नवकुल नाग, सेवे नव दुर्गा। मा। देवी।
नवरात्रिना पूजन, शिवरात्रिना अर्चन
कीधाँ हरि ब्रह्मा॥ ॐ जयो०॥
दशमी दश अवतार, जय विजया दशमी। मा। देवी।
रामे रावण मार्‍यो, रावण रोड्यो मा॥ ॐ जयो०॥

एकादशी अगियारस, कात्यायनि कामा। मा । देवी।
काम दुर्गा कालिका, श्यामा ने रामा॥ ॐ जयो० ॥
बारस बाला रूप, बौचरी अम्बा। मा । देवी।
बटुक भैरव सोहे, काल भैरव सोहे
तारा छे तुझ मा॥ ॐ जयो० ॥
तेरस तुलजा रूप, तू तारणि माता। मा । देवी।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, गुण तारा गाता॥ ॐ जयो० ॥
चौदसे चौदा रूप, चण्डी चामुण्डा। मा । देवी।
भाव भक्ति काँइ आपो, चतुराई कांइ आपो
सिंहवाहिनि माता॥ ॐ जयो० ॥
पूनमे कुम्भ भर्‍यो सांभलजो करुणा। मा । देवी।
वशिष्ठ देव वखाण्याँ मारकण्डेय देव वखाण्याँ
गावे शुभ कविता॥ ॐ जयो० ॥
सम्बत सोल सत्तावन सोलह तिथि भावे। मा । देवी।
सम्बत सोलह प्रगट्या रेवा ने तीरे॥ ॐ जयो० ॥
त्रम्बावटी नगरी आइ, रूपावती नगरी
मा रूपावती नगरी, देवी मंछावती नगरी
सोलसहस्त्रत्याँ सोहिये, क्षमा करो गौरी
मा दया करो गौरी। ॐ जयो जयो मा जगदम्बे॥
शिव शक्तिनी आरती मा, जे भावे गाशे। मा । देवी।
भणे शिवानन्द स्वामी, रटे शिवानन्द स्वामी
सुख सम्पति पासे हर कैलाशे जाशे॥ ॐ जयो० ॥

(४७१) श्रीकृष्णाजी

साँवलसा गिरधारी भला हो रामा साँवलसा गिरधारी हो।
हरि बिना मोरी गोपाल बिना मोरी लक्ष्मीनाथ बिना मोरी
कौन खबर ले।

मोर मुकुट सिर छत्र विराजै, कुण्डल की छवि न्यारी
भला हो रामा कुण्डल की शोभा न्यारी हो।
हरि बिना मोरी गोपाल बिना मोरी लक्ष्मीनाथ बिना मोरी
कौन खबर ले॥

लटपट पाग केशरिया जामो, हिवडै रो हार हजारी
भला हो रामा गल बिच हार हजारी हो।
हरि बिना मोरी गोपाल बिना मोरी लक्ष्मीनाथ बिना मोरी
कौन खबर ले॥

वृन्दावन में धेनु चरावे माधोवन में गैया चरावे वंशी बजावे
गिरवरधारी भला हो रामा मुरली बजावे चक्रधारी।
हरि बिना मोरी गोपाल बिना मोरी लक्ष्मीनाथ बिना मोरी
कौन खबर ले॥

वृन्दावन में रास रच्यो है सहस्त्र गोपियाँ रो गिरवरधारी
भला हो रामा सहस्त्र गोपियाँ रो गिरवरधारी हो।
हरि बिना मोरी गोपाल बिना मोरी लक्ष्मीनाथ बिना मोरी
कौन खबर ले॥

इन्द्र कोप कियो ब्रज ऊपर नख पर गिरवरधारी
भला हो रामा नख पर गिरवरधारी हो।
हरि बिना मोरी गोपाल बिना मोरी लक्ष्मीनाथ बिना मोरी
कौन खबर ले॥

वृन्दावन में बंध्यो हिंडोलो, माधोवन में बंध्यो रे हिंडोलो
झूला-झूलावे राधा प्यारी भला हो रामा झूला झूलावे गिरधारी।
हरि बिना मोरी गोपाल बिना मोरी लक्ष्मीनाथ बिना मोरी
कौन खबर ले॥
छप्पन भोग छतीसों व्यंजन, छप्पन भोग छतीसों व्यंजन
भोग लगावे राधा प्यारी, भला हो रामा भोग लगावे श्यामा प्यारी हो।
हरि बिना मोरी गोपाल बिना मोरी लक्ष्मीनाथ बिना मोरी
कौन खबर ले॥
बाई मीरा के प्रभु गिरधरनागर मीरा बाई कैवे प्रभु नटवरनागर
चरण कमल बलिहारी भला हो रामा जन्म-जन्म दासी थारी हो।
हरि बिना मोरी गोपाल बिना मोरी लक्ष्मीनाथ बिना मोरी
कौन खबर ले॥
साँवलसा गिरधारी हो भरोसो भारी हो शरण तिहारी हो
लज्जा राखो म्हारी, हो गिरवरधारी हो कुंजबिहारी।
हरि बिना मोरी गोपाल बिना मोरी लक्ष्मीनाथ बिना मोरी
कौन खबर ले॥

(४७२) बालकृष्णाजी

सब आरती उतारो मेरे लालन की
मेरे लालनकी हो मेरे लालन की·······
मात जसोमति करत आरती (२) गिरधर लाल गोपालन की····
कंस निकंदन जय जगवंदन (२) कृष्ण कृपालु दयालन की····
ब्रज जन मिली सब मंगल गावत (२) छबि निरखत नंद लालन की····
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै (२) मुख पर लाली गुलालन की····
मोतिन माल की ओर छटा है (२) ऊपर तुलसी मालन की······
कृष्णदास बलिहारी छबि पे (२) कृष्ण कन्हैया लालन की····

(४७३) राजाराम

हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ॥
आरती उतारूँ तन मन वारूँ॥ हे राजा राम०॥
कनक सिंहासन राजत जोरी–दशरथ नन्दन जनक किशोरी।
युगल छवि को सदा निहारूँ॥ हे राजा राम०॥ १॥
वाम भाग शोभित जग जननी–चरण विराजत है सुत अंजनी।
इन चरणों में जीवन वारूँ॥ हे राजा राम०॥ २॥
चरणों से निकली गंगा प्यारी–पावन करती है दुनिया सारी।
इन चरणों को सदा पखारूँ॥ हे राजा राम०॥ ३॥
आरती हनुमत के मन भावै–रामकथा नित शिवजी गावैं।
मैं सुन सुन निज जनम सँवारूँ॥ हे राजा राम०॥ ४॥

(४७४) श्रीगिरधरजी

हे गिरिधर तेरी आरती गाऊँ।
आरती गाऊँ प्यारे तुमको रिझाऊँ॥
बाँके बिहारी तेरी आरति गाऊँ॥
हे गिरिधर.........।
मोर मुकुट तेरे सीस पै सोहे,
प्यारी बंशी मुनि मन मोहे,
देख छवि बलिहारी जाऊँ,
हे गिरिधर.........।
चरणों से निकली गंगा प्यारी,
जिसने सारी दुनिया तारी,
उन चरणों में शीश नवाऊँ,
हे गिरिधर.........।

दीन जनों के नाथ आप हो,
सुख-दुःख जीवन साथ आप हो,
श्रीचरणों की बलि-बलि जाऊँ,
हे गिरिधर.........।

(४७५) भगवान् गङ्गाधर

ॐ जय गङ्गाधर जय हर जय गिरिजाधीशा।
त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीशा॥
ॐ हर हर हर महादेव॥ १॥

कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुमविपिने।
गुञ्जति मधुकरपुञ्जे कुञ्जवने गहने॥
कोकिलकूजित खेलत हंसावन ललिता।
रचयति कलाकलापं नृत्यति मुदसहिता॥
ॐ हर हर हर महादेव॥ २॥

तस्मिंल्ललितसुदेशे शाला मणिरचिता।
तन्मध्ये हरनिकटे गौरी मुदसहिता॥
क्रीडा रचयति भूषारञ्जित निजमीशम्।
इन्द्रादिक सुर सेवत नामयते शीशम्॥
ॐ हर हर हर महादेव॥ ३॥

बिबुधबधू बहु नृत्यत हृदये मुदसहिता।
किन्नर गायन कुरुते सप्त स्वरसहिता॥
धिनकत थै थै धिनकत मृदङ्ग वादयते।
क्वण क्वण ललिता वेणुं मधुरं नाटयते॥
ॐ हर हर हर महादेव॥ ४॥

रुण रुण चरणे रचयति नूपुरमुज्ज्वलिता।
चक्रावर्ते भ्रमयति कुरुते तां धिक तां॥

तां तां लुप चुप तां तां डमरू वादयते।
अंगुष्ठांगुलिनादं लासकतां कुरुते॥
ॐ हर हर हर महादेव॥ ५॥

कर्पूरद्युतिगौरं पञ्चाननसहितम्।
त्रिनयनशशिधरमौलिं विषधरकण्ठयुतम्॥
सुन्दरजटाकलापं पावकयुतभालम्।
डमरुत्रिशूलपिनाकं करधृतनृकपालम्॥
ॐ हर हर हर महादेव॥ ६॥

मुण्डै रचयति माला पन्नगमुपवीतम्।
वामविभागे गिरिजारूपं अतिललितम्॥
सुन्दरसकलशरीरे कृतभस्माभरणम्।
इति वृषभध्वजरूपं तापत्रयहरणम्॥
ॐ हर हर हर महादेव॥ ७॥

शङ्खनिनादं कृत्वा झल्लरि नादयते।
नीराजयते ब्रह्मा वेदऋचां पठते॥
अतिमृदुचरणसरोजं हृत्कमले धृत्वा।
अवलोकयति महेशं ईशं अभिनत्वा॥
ॐ हर हर हर महादेव॥ ८॥

ध्यानं आरति समये हृदये अति कृत्वा।
रामस्त्रिजटानाथं ईशं अभिनत्वा॥
संगतिमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते।
शिवसायुज्यं गच्छति भक्त्या यः शृणुते॥
ॐ हर हर हर महादेव॥ ९॥

(४७६) श्रीबद्रीनाथस्तुति

पवन मंद सुगंध शीतल,
हेममन्दिर शोभितम्।
निकट गङ्गा बहत निर्मल,
श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥ १॥
शेष सुमिरन करत निशिदिन
ध्यान धरत महेश्वरम्।
श्री वेद ब्रह्मा करत स्तुति
श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥ २॥
इन्द्र चन्द्र कुबेर दिनकर,
धूप दीप निवेदितम्।
सिद्ध मुनिजन करत जय जय,
श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥ ३॥
शक्ति गौरि गणेश शारद,
नारद मुनि उच्चारणम्।
योग ध्यान अपार लीला,
श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥ ४॥
यक्ष किन्नर करत कौतुक,
गान गन्धर्व प्रकाशितम्।
श्रीभूमि लक्ष्मी चँवर डोलैं,
श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥ ५॥
कैलासमें एक देव निरंजन,
शैल-शिखर महेश्वरम्।

राजा युधिष्ठिर करत स्तुति,
श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥ ६ ॥
कोटि ब्रह्मा कोटि विष्णू,
कोटि देव महेश्वरम्।
कोटि ऋषि मुनि करत जय जय,
श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥ ७ ॥
श्रीबद्रीनाथ (जी) की परम स्तुति,
यह पढ़त पाप विनाशनम्।
कोटि तीर्थ सुपुण्य सुन्दर,
सहज अति फलदायकम् ॥ ८ ॥

(४७७) आरती लक्ष्मीनारायण भगवान्‌की

श्रित कमलाकुच मण्डल धृतकुण्डल ए।
कलित ललित वनमाल, जय जय देव हरे ॥ १ ॥
दिनमणिमण्डलमण्डन भवखण्डन ए।
मुनिजनमानस हंस, जय जय देव हरे ॥ २ ॥
कालियविषधरगञ्जन जनरंजन ए।
यदुकुलनलिनदिनेश, जय जय देव हरे ॥ ३ ॥
मुधुमुरनरक विनाशन गरुड़ासन ए।
सुरपुरकेलि निदान जय जय देव हरे ॥ ४ ॥
अमलकमलदललोचन भवमोचन ए।
त्रिभुवनभवननिधान जय जय देव हरे ॥ ५ ॥
जनकसुताकृतभूषण जितदूषण ए।
समरशमितदशकण्ठ जय जय देव हरे ॥ ६ ॥

अभिनवजलधरसुन्दर धृतमन्दिर ए।
श्रीमुखचन्द्रचकोर जय जय देव हरे॥ ७॥
तव चरणें प्रणताः वयमिति भावय ए।
कुरु चरणे प्रणतेषु जय जय देव हरे॥ ८॥
श्रीजयदेवकवेरिदम् कुरुते च मुदम्।
मंगल मञ्जुल गीत जय जय देव हरे॥ ९॥

(४७८) ॥ श्रीभागवतजीकी आरती॥

श्री भागवत मुक्तिकी दाता, जगत की माता।
भवसागर की नौका है जी, कृष्ण मिलन का मौका है जी॥ १॥
ब्रह्माजी बीज दियो नारद नें, नारद वृक्ष लगायो है जी।
वेदव्यास जी करी है पालना, दीन्हा मुनि शुकदेव ने जी॥ २॥
श्री भागवत जी के द्वादस डाला, तीन सौं पैंतीस टहनी है जी।
सहस अठारह साखा कहिजे, पान पुषब बिन गिनती का जी॥ ३॥
कहे परिक्षित सुनो मुनीजी, किन्ह बिध परगट कीन्ही है जी।
जिन्ह बाँची तिन्ह मोहि बताओ, फेर न पावौं मौका है जी॥ ४॥
बरनत सुक मुनि सुनो परिक्षित, गंगा के घाट बँचाई है जी।
गऊकरन धुँधुँकारी कारन, सप्ताह बाँच सुनाई है जी॥ ५॥
ग्यान विराग भगति का बेटा, ज्यांने परगट देखी है जी।
सब मिल देवी देवता पधार्‌या, कृष्ण नाम धुन लागी है जी॥ ६॥
सहस अठासी रिषियन्ह माहीं, सोहत मुनि सुकदेव है जी।
हात जोड़कर करी है प्रार्थना, चरनाँ सीस नवाया है जी॥ ७॥
सात दिनाँ तक सुनी परिक्षित, सुनकर ध्यान लगाया है जी।
बैठ विमान बैकुण्ठ सिधार्‌या, फूलाँ मेह बरषाया है जी॥ ८॥

जो भागवत सुने नर नारी, मुकती भगती पावे है जी।
कृपा करो श्रीकृष्ण मुरारी, पार करो अब नौका है जी॥ ९॥

(४७९)॥ श्री तुलसीजी की आरती॥

नमो नमो तुलसी महारानी, नमो नमो हरि की पटरानी॥ टेक॥
जाके दरश परस अघ नासे, महिमा वेद पुराण बखानी।
साखा पत्र मंजरी कोमल, श्रीपति चरण कमल लिपटानी॥ १॥
धन तुलसि पूरण तप कीन्हा, सालिगराम भई मन भीनी,
शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक खोजत फिरत महामुनि ज्ञानी॥ २॥
छप्पन भोग धरे हरि आगे, बिनु तुलसी प्रभु एक न मानी।
धूप दीप नैवेद्य आरती, पुष्पन की वर्षा बरसानी॥ ३॥
प्रेम प्रीत कर हरि वश कीन्हे, साँवरी सूरत हृदय समानी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, भक्ति दान दीजै महारानी॥ ४॥

(४८०)॥ श्रीरामायणजीकी आरती॥

आरती श्रीरामायनजी की। कीरति कलित ललित सिय पी की॥
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। बाल्मीक बिग्यान बिसारद॥
सुक सनकादि सेष अरु सारद। बरनि पवनसुत कीरति नीकी॥
गावत वेद पुरान अष्टदस। छओ सास्त्र सब ग्रंथन को रस॥
मुनि जन धन संतन को सरबस। सार अंस संमत सबही की॥
गावत संतत संभु भवानी। अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी॥
ब्यास आदि कबिबर्ज बखानी। कागभुसुण्डी गरुड के ही की॥
कलिमल हरनि बिषय रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की॥
दलन रोग भव मूरि अमी की। तात मात सब बिधि तुलसी की॥

(४८१) श्रीहनुमान्‌जी

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की॥ टेक॥
जाके बल से गिरिवर काँपै। रोग-दोष जाके निकट न झाँपै॥ १ ॥
अंजनि पुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सहाई॥ २ ॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सीय सुधि लाये॥ ३ ॥
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई॥ ४ ॥
लंका जारि असुर संहारे। सियारामजीके काज सँवारे॥ ५ ॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि सजीवन प्रान उबारे॥ ६ ॥
पैठि पताल तोरि जम-कारे। अहिरावन की भुजा उखारे॥ ७ ॥
बायें भुजा असुर दल मारे। दहिने भुजा संतजन तारे॥ ८ ॥
सुर नर मुनि आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारे॥ ९ ॥
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरति करत अंजना माई॥ १० ॥
जो हनुमान (जी)की आरति गावै। बसि बैकुंठ परमपद पावै॥ ११ ॥

(४८२) हे रामाः पुरुषोत्तमा

हे रामाः पुरुषोत्तमा नरहरे नारायणाः केशवाः
गोविन्दाः गरुडध्वजाः गुणनिधे दामोदराः माधवाः।
हे कृष्णाः कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते
वैकुण्ठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहि माम्॥
आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं कांचनं
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसंभाषणम्।
बालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनं
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननमेतद्धि रामायणम्॥
आदौ देवकिदेवगर्भजननं गोपीगृहे वर्द्धनम्।
मायापूतनाजीवितापहरणं गोवर्द्धनो धारणम्।

कंसच्छेदनकौरवादिहननं कुन्तीसुतापालनम्
एतद् भागवतपुराणकथितं श्रीकृष्णलीलामृतम्॥

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभम्
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम्।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः॥

फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियम्
श्रीवत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम्।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसङ्घावृतम्
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्याङ्गभूषं भजे॥

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

वंशीविभूषितकरान्नवनीरदाभात्
पीताम्बरादरुणबिम्बफलाधरोष्ठात्।
पूर्णेन्दुसुन्दरमुखादरविन्दनेत्रात्
कृष्णात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥
राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने॥

(४८३) दोहे

जिस घर में हो आरती, चरण कमल चितलाय।
तहाँ हरि बासा करें, जोत अनन्त जगाय॥
जहाँ भक्त कीर्तन करे, बहा प्रेम दरियाव।
तहाँ हरि श्रवण करें, सत्य लोक से आय॥
सब कुछ दीना आपने, भेंट करु क्या नाथ।
नमस्कार की भेंट लो, जोड़ूँ मैं दोनों हाथ॥
शिव समान दाता नहीं विघ्न निवारण हार।
लज्जा सबकी राखियो नन्दी के असवार॥
सिंह चढ़ी दुर्गा मिले गरुड़ चढ़े भगवान।
बैल चढ़े शिवजी मिले पूरन हो सब काम॥
सेवा पूजा वन्दगी सभी आपके हाथ।
मैं तो कछु जानू नहीं थे ही जानो रघुनाथ॥
हाथ जोड़ विनती करूँ सुनियो चित्त लगाय।
दास आ गया शरण में रखियो इसकी लाज॥
मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुबीर।
अस बिचारि रघुबंस मनि हरहु बिषम भव भीर॥
निश्चय प्रेम प्रतीत ते विनय करे सनमान।
तेहि के कारज सकल शुभ सिद्ध करे हनुमान॥

(४८४) पुष्पाञ्जलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु॥ कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः॥

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्सार्वभौमः सार्वायुषान्तादापरार्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति॥

सेवन्तिकां वकुलचम्पकपाटलाब्जैः
पुन्नागजातिकरवीररसालपुष्पैः।
बिल्वप्रवालतुलसीदलमंजरीभिः
त्वां पूजयामि जगदीश्वर विश्वनाथः॥

नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथाकालोद् भवानि च।
पुष्पाञ्जलि मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥
यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥

वृन्दावन बिहारी लाल की जय, कृष्ण कन्हैया लाल की जय
धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो।
गौ माता की जय हो, विश्व का कल्याण हो। हर-हर महादेव हर॥

(४८५) क्षमा-प्रार्थना

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां विधिं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥
पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः।
त्राहि मां पार्वतीनाथ सर्व पाप हरो हर!॥
काल हरो हर कष्ट हरो हर, दुःख हरो दारिद्र्य हरो।
नमामि शङ्कर भवानी गौरी भवभयहरणं तव शरणम्॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥
ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्॥
॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु॥
। सर्वारिष्ट शान्तिर्भवतु। शुभं भवतु।

संसार के आधार हो, हे देव देव! अनन्त हो।
तुम सत् असत् इनसे परे अक्षर तुम्ही भगवन्त हो॥
सत्, चित, घन आनन्दनित, अज, अव्यक्त अपार हो।
अलख, अनादि, अनन्त, अगोचर पूर्ण विश्व आधार हो॥
ज्ञाता तुम्ही हो जाननेके, योग्य भी भगवन्त हो।
संसार में व्यापे हुए हो, देव देव! अनन्त हो॥
हे देव देव! प्रणाम देव! प्रणाम सहसों बार हो।
फिर-फिर प्रणाम! प्रणाम! नाथ प्रणाम! बारम्बार हो॥

॥ श्रीहरिः ॥

पाँच प्रधान साधनामृत

एक बार सरल हृदयसे दृढ़तापूर्वक स्वीकार कर लें कि—

पंचामृत

१. मैं (स्वयं) सर्वकालमें भगवान्का अंश हूँ।

२. मैं सर्वकालमें अविनाशी हूँ।

३. मैं सर्वकालमें चेतन हूँ।

४. मैं सर्वकालमें अमल (निर्दोष) हूँ।

५. मैं सर्वकालमें सहज सुखराशि हूँ।

चतुष्टयामृत

१. भगवान्ने कभी मेरा साथ छोड़ा ही नहीं।

२. भगवान् कभी मेरा साथ छोड़ते ही नहीं।

३. भगवान् कभी मेरा साथ छोड़ेंगे ही नहीं।

४. भगवान् कभी मेरा साथ छोड़ सकते ही नहीं।

त्रयामृत

सब भगवान्के ही हैं! इसलिये—

१. भगवान्के नाते मैं किसीका भी बुरा नहीं समझूँगा।

२. भगवान्के नाते मैं किसीका भी बुरा नहीं चाहूँगा।

३. भगवान्के नाते मैं किसीका भी बुरा नहीं करूँगा।

द्वयामृत

१. मैं केवल भगवान्का ही हूँ।

२. केवल भगवान् ही मेरे अपने हैं।

एकामृत

१. सम्पूर्ण संसार सर्वकालमें एक भगवान् ही हैं, उनके सिवाय और कुछ भी नहीं है—'**वासुदेवः सर्वम्**'

उपर्युक्त पाँचोंमेंसे एक भी साधनामृतका पान (पालन) करनेसे मानव-जीवन सफल हो जायगा।—

श्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराजके वचनामृत